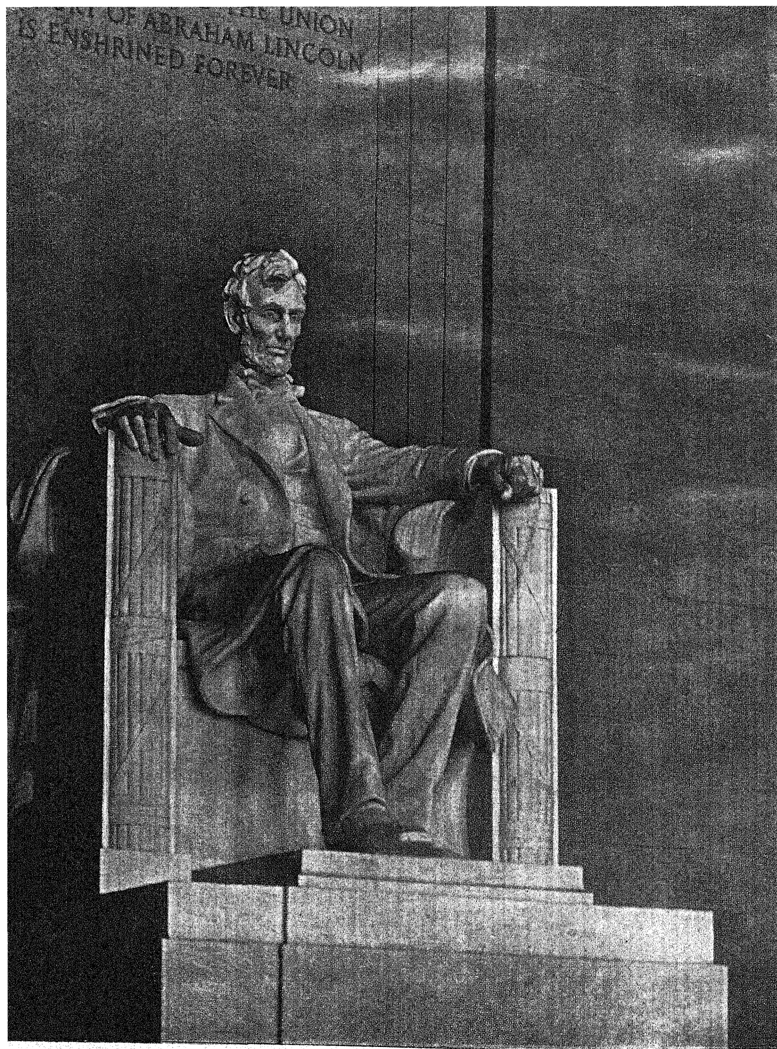
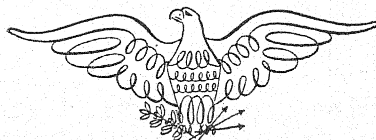


वाशिगटन (डी. सी.) में लिकन का स्मारक ।

अमेरिकन इतिहास
की
रूप-रेखा



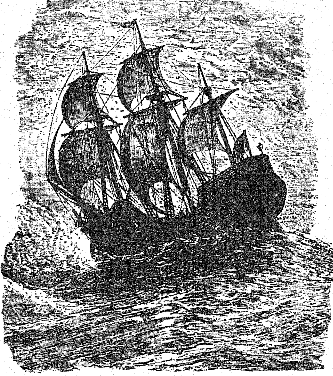
विषय-सूची

यूनाइटेड स्टेट्स इनफ़ॉरमेशन सर्विस से जो बातें बहुधा पूछी जाती हैं उनमें से बहुतों का सम्बन्ध अमेरिकन इतिहास से होता है। इस पुस्तक में उनका उत्तर संक्षिप्त और सुलभ रूप में देने का और इस राष्ट्र के विकास की तथा प्रमुख विचार-धाराओं की दिशा का संकेत करने का यत्न किया गया है। यह यूनाइटेड स्टेट्स का पूर्ण इतिहास नहीं है। इस में जिस ऐतिहासिक काल का विवरण कुछेक पृष्ठों में दे दिया गया है उसका प्रत्येक भाग विद्वानों द्वारा पूर्ण खोज का विषय बन चुका है। पृष्ठ १४८ पर, पाठक की सुगमता के लिए, अमेरिकन इतिहास के पूर्णतया अध्ययनार्थ, कुछ अधिकारी ग्रंथों की सूची दी गई है। आशा है कि यह पुस्तिका अपने विषय का परिचय देने के लिए उपयोगी और ज्ञान का आदान प्रदान करने में तथा अपने पाठकों और यूनाइटेड स्टेट्स की जनता को एक दूसरे को समझने समझाने में सहायक सिद्ध होगी।

औपनिवेशिक काल

"आकाश और पृथ्वी ने मिलकर मनुष्य का इससे अच्छा निवास-स्थान बनाने को कृपा कभी नहीं की थी।"

—जॉन स्मिथ,
वर्जिनिया उपनिवेश का प्रतिष्ठाता, १६०७



मेफ्लावर

सत्रहवीं शताब्दी में और अठारहवीं के आरम्भ में, लगभग सौ वर्ष तक, यूरोप से अमेरिका जाकर बसने का लोगों में एक प्रवाह-सा चलता रहा। लोगों के इतनी बड़ी संख्या में एक स्थान से उठकर दूसरे स्थान पर बसने के उदाहरण इतिहास में कम ही मिलते हैं। इस प्रवाह के प्रेरक कारण अनेक और बलवान् थे। परन्तु इससे एक अज्ञात तथा बियाबान महाद्वीप में एक ऐसे नये राष्ट्र का निर्माण हो गया जिसकी अपनी ही विशेषताएँ और अपना ही भविष्य था।

आज के यूनाइटेड स्टेट्स की सृष्टि, वस्तुतः दो प्रधान शक्तियों से मिलकर हुई है—यूरोपियन लोगों का अपने विविध विचारों, रीतिरिवाजों और राष्ट्रीय विशेषताओं को लिये हुए आगमन और एक नये देश का सामना, जिसने उनकी संस्कृति के यूरोपियन रूप को बदल दिया। अनेक यूरोपियन जातियों के समूह, एक के बाद एक, आने लगे और नई दुनिया में अपने रीतिरिवाज तथा परम्पराएं फैलाने का यत्न करने लगे। परन्तु अमेरिका की विशिष्ट भौगोलिक आवश्यकताओं, विविध जातियों के एक-दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव और नये महाद्वीप में पुरानी दुनिया के तौरतरीकों पर अमल की कठिनाइयों के कारण, वे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने के लिए विवश हो गए। ये परिवर्तन धीरे-धीरे हुए और पहले-पहल प्रायः अप्रकट रहे। परन्तु इन सबका परिणाम एक नये समाज की रचना हुआ, जो अनेक बातों में यूरोपियन समाज से मिलते-जुलते हुए भी, अपनी प्रत्यक्ष अमेरिकन विशेषताएँ रखता था।

उत्तरी अमेरिका की खोज पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में हुई थी। परन्तु जो भू-भाग आज यूनाइटेड स्टेट्स कहलाता है उसमें बसने के अभिलाषी आगन्तुकों से लदे जहाजों ने अटलांटिक समुद्र को पार करना उसके एक सौ वर्ष से भी अधिक काल पश्चात् आरम्भ किया। इस बीच, मैक्सिको, वेस्ट इंडीज और दक्षिण अमेरिका में स्पेनिश बस्तियां बसकर भली भांति फलने-फूलने लगी थीं। उत्तरी अमेरिका के ये यात्री जिन छोटे जहाज़ों में आते थे वे निर्दयता पूर्वक ठूंसकर भरे रहते थे। उनको यात्रा में डेढ़ से तीन महीने तक लग जाते थे और मार्ग में उन्हें स्वल्प आहार पर निर्वाह करना पड़ता था। अनेक जहाज तूफ़ानों में नष्ट हो जाते थे, अनेक यात्री रोग से मर जाते थे और गोद के बालक तो यात्रा

में अपवादरूपेण ही बच पाते थे। कभी-कभी तूफ़ान नौकाओं को धकेलकर उनके मार्ग से बहुत दूर फेंक देते थे और बहुधा हवा रुक जाने से यात्रा अत्यन्त विलम्बित हो जाती थी।

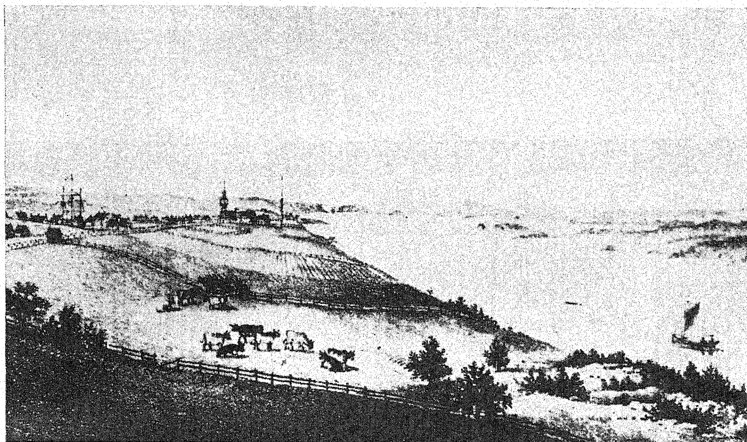
अमेरिकन तट के दर्शन-मात्र से, परेशान यात्रियों को, ऐसा सुख मिलता था कि उसे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता। एक इतिहासकार ने लिखा है: "लगभग छत्तीस मील की दूरी से ही हवा ऐसी सुगंधित लगती थी मानो किसी नये पुष्पित उद्यान से आ रही हो।" औपनिवेशिकों को नई दुनिया की पहली झांकी एक दूरस्थ जंगल के रूप में मिली। नया जंगल खूब घना, नाना वृक्षों से भरा और उत्तर में मेन से लेकर दक्षिण में जॉर्जिया तक १३०० मील से अधिक दूरी में फैला हुआ प्राकृतिक धन का अक्षय कोष था। इसमें ईंधन और इमारती लकड़ी अपरिमित मात्रा में थे। मकान, फ़र्नीचर, जहाज़, सोडा सज्जी, रंग और जहाजी सामान बनाने के लिए कच्चे माल का यह भारी भंडार था।

वर्जिनिया उपनिवेश को बसाने वाले जॉन स्मिथ ने लिखा है: "आकाश और पृथ्वी ने मिलकर मनुष्य का इससे अच्छा निवास-स्थान बनाने की कृपा कभी नहीं की थी।" पैनसिलवेनिया के प्रतिष्ठाता विलियम पेन ने अपने उपनिवेश के विषय में लिखा है: "वायु मधुर और स्वच्छ है, और आकाश निर्मल।" स्थानीय खाद्य-पदार्थ भी ऋतु के समान ही आकर्षक थे। समुद्र घोंघों, केकड़ों और कौड तथा लौबस्टर मछलियों से भरपूर था। जंगल में टर्की "इतने मोटे थे कि उनका वज़न सुनकर किसी को विश्वास न हो," बटेर, गिलहरियां, तीतर, बारहसिंगा, हंस और हरिण इतने अधिक थे कि कहीं-कहीं "हरिण का मांस खाते-खाते लोगों का जी ऊबने लगा था।" फल, मेवा आदि सर्वत्र आपसे आप होते थे और जल्दी ही पता चल गया कि मटर, सेम, मकई और कद्दू सरीखे पेट भरने वाले खाद्यों की खेती सुगमता से हो सकती है। नवागन्तुकों को यह जानने में भी समय नहीं लगा कि यहां अन्न उपज सकता है और बाहर से लाये गए फल लग सकते हैं। नई भूमि में भेड़, बकरी, गाय और सूअर भी पल जाते थे।

नये महाद्वीप को प्रकृति ने असाधारण सम्पन्न बनाया था, परन्तु जो वस्तुएँ नये वासी स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकते थे उनके आयात के लिए यूरोप के साथ व्यापार अत्यन्त आवश्यक था। इस काम में तट-भूमि ने आगंतुकों की बड़ी सहायता की। समस्त तट पर अनगिनत खाड़ियाँ और बंदरगाह थे; केवल दो प्रदेश—उत्तरी कैरोलाइना और दक्षिणी न्यू जर्सी—ऐसे थे जिनमें आने-जाने वाले जहाजों के लिए बन्दरगाह नहीं थे। मेन की कैनेबेक, कनैटिकट, न्यूयार्क की हडसन, पैनसिलवेनिया की सस्क्वेहाना, और वर्जिनिया की पोटोमैक आदि अनेक बड़ी नदियाँ तटवर्ती मैदानों का बन्दरगाहों से और वहाँ से आगे यूरोप से सम्बन्ध जोड़ती थीं। परन्तु उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट की बड़ी नदियों में एक ही ऐसी थी जो महाद्वीप के भीतरी भाग में पहुँचकर जल-मार्ग का काम देती थी और वह थी कैनाडा की सेंटलॉरेंस, जो फ्रांसीसियों के अधिकार में थी। जल मार्गों के इस अभाव और एप्पैलेच्यन पर्वतों की भारी बाधा के कारण बहुत समय तक तटवर्ती प्रदेश से आगे भीतरी प्रदेशों में प्रवेश रुका रहा। केवल वे शिकारी और व्यापारी तट-प्रदेश से दूर-दूर जाते थे जिनके पास लादने के बहुत से पशु होते थे। वस्तुतः लगभग एक सौ वर्ष तक औपनिवेशिकों ने अपनी बस्तियाँ पूर्वी तट पर ही घनी बसाईं।

तट की जिस पट्टी में यात्रा के मार्ग गुजरते थे उसमें उत्तर और दक्षिण की ओर आबादी का विस्तार तट के तथा नदियों के यातायात द्वारा ही हुआ। विविध उपनिवेश ऐसी स्वतन्त्र बस्तियाँ थे जिनके समुद्र तक जाने के मार्ग भी अपने थे। उनकी पृथक्ता और बस्तियों की परस्पर दूरी के कारण किसी एक केन्द्रीय शासन का विकास नहीं हो सका। इसके विपरीत, उपनिवेश पृथक् इकाइयाँ बनते गए और उनका अपनापन इतना दृढ़ होता गया कि यूनाइटेड स्टेट्स के आगामी इतिहास में वही 'स्टेटों के (निजी) अधिकार' का आधार बना। परन्तु इस प्रवृत्ति के बावजूद आरम्भिक काल से ही, व्यापार, जलीय यातायात, कारखानों के निर्माण और मुद्रा के चलन आदि की समस्याएँ औपनिवेशिक सीमाओं को लाँघ जातीं और सबके लिए एक-से नियम बनाने की आवश्यकता उत्पन्न करती थीं। इस आवश्यकता के कारण ही इंग्लैंड की पराधीनता से देश के स्वतन्त्र हो जाने पर, संघ (फ़ेडरेशन) का संगठन हुआ।

सत्रहवीं शताब्दी में औपनिवेशिकों का आगमन विचार-पूर्ण योजना, व्यवस्था और खासे खर्च तथा जोखिम का परिणाम था। वासियों को तीन हजार मील समुद्र-पार उतारना पड़ता था। उनको बरतनों, कपड़ों, बीजों, औज़ारों, इमारती



न्यूयार्क में हडसन नदी की उपजाऊ घाटी में भूमि और ऋतु विविध फ़सलों के लिए अनुकूल थे। इस प्रकार के खेतों में अन्न की, विशेषतः गेहूँ की खेती खूब हुआ करती थी और मैदा इस उपनिवेश का एक महत्वपूर्ण निर्यात था।

सामान, पशुओं, शस्त्रों और गोलाबारूद की आवश्यकता पड़ती थी। अन्य देशों और अन्य कालों की औपनिवेशिक नीतियों के विपरीत, इंग्लैंड से निर्गमन में वहाँ की सरकार कुछ सहायता नहीं करती थी। इसमें सूझ तथा पहल ग़ैर-सरकारी व्यक्ति अथवा दल करते थे। दो उपनिवेश—वर्जिनिया और मैसैच्यूसैट्स—राजा से पट्टा पाई हुई (चार्टर्ड) कम्पनियों ने बसाये थे। उनका धन नागरिकों ने निजी जेब से दिया था और यह औपनिवेशिकों को तैयार करने, समुद्र-पार ले जाने और उनका निर्वाह चलाने में खर्च किया जाता था। न्यू हैवन कॉलोनी (जो कि बाद को कनैटिकट का भाग बन गई) के लिए सम्पन्न निर्गन्तुकों ने जहाजों का और अपने परिवारों तथा नौकरों के ले जाने का व्यय अपने पास से दिया था। अन्य अनेक बस्तियों के मालिक पहले-पहल ऐसे अंग्रेज रईस या अमीर थे जिन्हें इंग्लैंड के राजा ने ये जमीनें ठीक उसी प्रकार जागीर में दे दी थीं जिस प्रकार वे स्वदेश में दी जातीं। ये अमीर मालिक इन जमीनों पर बसाने के लिए किरायेदारों या नौकरों को खर्च अपनी जेब से देते थे। उदाहरणार्थ, चार्ल्स प्रथम ने सेसिल कैल्वर्ट (लार्ड बाल्टिमोर) और उसके उत्तराधिकारियों को लगभग ७० लाख एकड़ भूमि प्रदान की थी, जो पीछे मैरिलैंड की स्टेट कहलाई। दोनों कैरोलाइना और पैनसिलवेनिया चार्ल्स द्वितीय द्वारा प्रदान किये गए थे। क़ानूनन तो ये मालिक और चार्टर्ड कम्पनियाँ राजा के किरायेदार थे, परन्तु वस्तुतः ये इन भूमियों के लिए केवल संकेत रूप में कुछ देते थे। लार्ड बाल्टिमोर प्रतिवर्ष राजा को दो इण्डियन तीरों के फल और विलियम पेन उसे ऊदबिलाव की दो खालें दिया करता था।

कुछ उपनिवेश दूसरी बस्तियों की शाखा के रूप में बसे थे। रोड आइलैंड और कनैटिकट को मैसैच्यूसैट्स के लोगों ने बसाया था, जहां कि न्यू-इंग्लैंड के सभी निवासी पहले आकर रहे थे। एक और बस्ती, जॉर्जिया को जेम्स एडवर्ड ओगिल-थौर्प तथा कुछ परोपकारी अंग्रेजों ने प्रधानतया लोकसेवा की भावना से प्रेरित होकर बसाया था। उनका लक्ष्य यह था कि

दक्षिण में बसे हुए स्पैनिशों के विरुद्ध दुर्ग का काम देने के लिए एक बस्ती बसा दी जाय, और इसकी पूर्ति के लिए वे इंग्लिश जेलों से ऋणी कैदियों को छुड़ाकर अमेरिका में बसाने भेज देते थे। न्यूनीदरलैंड्स की बस्ती सन् १६२४ में डचों ने बसाई थी और चालीस वर्ष पीछे जब उस पर ब्रिटिश राज्य हुआ तब उसका ही नाम न्यूयार्क हो गया।

निर्गन्तुकों को अपने यूरोपियन घर छोड़ने की प्रेरणा करने वाला सर्वप्रधान कारण उनकी अधिक धन-प्राप्ति की इच्छा थी। अन्य कारण थे धार्मिक स्वतन्त्रता की अभिलाषा, राजनैतिक अत्याचार से मुक्त होने का संकल्प और नये-नये साहसिक कार्य करने का प्रलोभन आदि। सन् १६२० और १६३५ के मध्य में अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों के कारण इंग्लैंड में लाखों आदमी बेरोजगार हो गए। अच्छे-से-अच्छे कारीगर भी पेट भरने से अधिक कमाई नहीं कर सकते थे। खेतों की खराब पैदावार ने इस कठिनाई को और भी बढ़ा दिया। इन्हीं दिनों इंग्लैंड में ऊन का व्यवसाय बढ़ रहा था, इसका परिणाम यह हुआ कि भेड़ पालने वाले लोग खेतों की जमीनों पर छाने लगे।

इसके साथ ही सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों की धार्मिक क्रान्ति के काल में प्यूरिटन नामक ऐसे स्त्री-पुरुषों का एक समूह खड़ा हो गया जो परम्परागत चर्च ऑव् इंग्लैंड को भीतर से सुधारने का आन्दोलन करने लगा। इनका कार्यक्रम यह था कि राष्ट्र की धार्मिक संस्था को पूर्णतया प्रौटेस्टैंट बना दिया जाय, और वह अपने सदस्य-व्यक्तियों के निजी चालचलन के लिए भी उत्तरदायी हो। उनके सुधारक विचारों के कारण स्टेट चर्च (राष्ट्र की धार्मिक संस्था) की एकता नष्ट होकर लोगों में फूट पड़ जाने और राजवंश का अधिकार न्यून हो जाने का भय होने लगा। 'सैपेरेटिस्ट' नामक पन्थ का विश्वास था कि परम्परागत चर्च का अपनी इच्छानुकूल सुधार भीतर से हो ही नहीं सकता। जेम्स प्रथम के राजकाज में इन लोगों की एक मण्डली इंग्लैंड छोड़कर लीडन (हॉलैंड) में जा बसी और वहाँ अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार जीवन-यापन करने लगी। कुछ वर्ष पश्चात् इन लीडन-वासियों के एक समूह ने नई दुनिया में जाने का निश्चय किया और सन् १६२० में यहाँ आकर उन्होंने न्यू प्लिमथ की पिलग्रिम कॉलोनी बसाई।

सन् १६२५ में चार्ल्स प्रथम इंग्लैंड की राजगद्दी पर बैठा। उसके राजकाल में प्यूरिटन नेता ऐसा अनुभव करने लगे कि उन पर अत्याचार किया जा रहा है। जिन पादरियों को उपदेश देने के अधिकार से वंचित कर दिया गया उन्होंने अपने अनुयायियों को एकत्र किया और अपने पूर्ववर्ती पिलग्रिमों का अनुसरण करते हुए वे अमेरिका आ गए। पहले जो आगन्तुक आये उनमें अधिकतर ग्रामीण और निर्धन थे। परन्तु इनमें अनेक सम्पन्न और अच्छी स्थिति के भी थे। इन्होंने सन् १६३० में मैसैच्यूसैट्स बे कॉलोनी की स्थापना की। अगली दशाब्दी में आधी दर्जन अंग्रेजी उपनिवेशों पर प्यूरिटनों की छाप लग चुकी थी। धार्मिक कारणों से आने वालों में अकेले प्यूरिटन ही नहीं थे। इंग्लैंड में क्वेकरों की स्थिति से असन्तुष्ट होकर विलियम पेन ने पैनसिलवेनिया की बस्ती बसाई। सैसिल कैल्वर्ट ने इंग्लिश कैथोलिकों के प्रति ऐसी ही भावना से प्रेरित होकर मैरिलैंड की प्रतिष्ठा की थी। पैनसिलवेनिया और नॉर्थ कैरोलाइना के अनेक आगन्तुक जर्मनी और आयरलैंड से अधिक धार्मिक स्वतन्त्रता और आर्थिक उन्नति की आशा में इधर आये थे।

इसके अतिरिक्त अनेक लोग राजनीतिक भावनाओं से प्रेरित होकर अमेरिका आये। सन् १६३० से आगे इंग्लैंड के चार्ल्स द्वितीय के स्वेच्छाचारी शासन ने लोगों की बहुत बड़ी संख्या को नई दुनिया की ओर मुख फेरने को विवश किया। आगामी दशक में ऑलिवर क्रोम्वैल के नेतृत्व में चार्ल्स प्रथम के विरोधियों ने जो विद्रोह किया उसकी सफलता के कारण अनेक कैवेलियरों को भी वर्जिनिया आना पड़ा। १७वीं और १८वीं शताब्दियों के अन्त में जर्मनी के अनेक छोटे राजाओं की धर्म के सम्बन्ध में अत्याचारपूर्ण नीति के कारण और निरन्तर युद्धों से हुए विनाश के कारण जर्मनों का बड़ी संख्या में अमेरिका की ओर निर्गमन बढ़ गया।

बहुत से स्त्री-पुरुषों को स्वयं तो अमेरिका के नये जीवन में कोई विशेष रुचि नहीं थी, परन्तु उन्हें नई दुनिया की बस्तियाँ बसाने वाली कम्पनियों की चतुराई-भरी प्रेरणा ने इधर भेज दिया। विलियम पेन ने पैनसिलवेनिया कॉलोनी में आने के लाभों का ऐसा विज्ञापन किया कि वह वर्तमान विज्ञापन-कला का आभास देता था। जहाजों के कप्तानों को उन दिनों निर्धन आगन्तुकों को नौकरी में लगा देने पर इनाम मिला करता था। ये कप्तान यह इनाम पाने के लिए झूठी तथा अत्युक्तिपूर्ण प्रतिज्ञाओं से लेकर जबरदस्ती भगा लेने तक की विधियों का

प्रयोग करते थे और जहाज़ में जितने यात्री समा सकते थे उतने भर लेते थे। जजों और जेल अधिकारियों को उत्साहित किया जाता था कि अपराधियों को कारावास का दंड भोगने के स्थान पर अमेरिका जाने के अवसर का लाभ उठाने दें।

समुद्र पार करने वाले आगन्तुकों के समूह में थोड़े ही ऐसे होते थे जो अपने और अपने परिवार का मार्ग-व्यय उठा सकें और नई दुनिया में स्वतन्त्र जीवन आरम्भ कर सकें। आरम्भ के आगन्तुकों को मार्ग तथा निर्वाह का व्यय वर्जिनिया कम्पनी और मैसैच्यूसैट्स बे कम्पनी सरीखी कॉलोनाइज़िंग एजेंसियों ने दिया था। इसके बदले में वासी यह स्वीकार कर लेते थे कि वे एजेंसी के लिए ठेका-बन्द मज़दूर की तरह काम करेंगे। परन्तु शीघ्र ही इस प्रकार ठेके में बंधकर आने वाले आगन्तुकों ने अनुभव किया कि नौकरी अथवा किराये में बंधकर नये बियाबान देश की अतिरिक्त कठिनाइयाँ सहने की अपेक्षा तो वे इंग्लैंड में ही अच्छे रहते।

शीघ्र ही यह व्यवस्था बस्तियाँ बसाने की सफलता में बाधक समझी जाने लगी। फलतः वासियों को अमेरिका आने के लिए उत्साहित करने का एक नया उपाय निकल आया। कम्पनियाँ, मालिक और स्वतंत्र परिवार निर्गमन के अभिलाषियों के साथ कुछ शर्तों पर ठेका करने लगे। इसके अनुसार मार्ग और निर्वाह के व्यय के बदले आगन्तुक कुछ वर्ष तक (साधारणतया चार से सात वर्ष तक) ठेकेदार के लिए मज़दूरी करने को बाध्य हो जाता था। इस अवधि के पश्चात् वह स्वतन्त्र होकर स्वतन्त्रता का इनाम पाता था, जो कभी-कभी ५० एकड़ भूमि का टुकड़ा होता था। इस प्रकार के आगन्तुक ठेके के नौकर कहलाते थे। अन्दाज़ा लगाया गया है कि न्यू इंग्लैंड की दक्षिणी बस्तियों में ठीक आधे आगन्तुक इसी पद्धति के अनुसार अमेरिका आये थे। साधारणतया वे इस ठेके की शर्त का पालन ईमानदारी से करते थे। परन्तु कुछ ऐसे भी थे जो मौका मिलते ही अपने मालिक को छोड़कर भाग जाते थे। उनको भी जिस बस्ती में वे पहले-पहल आये थे उसमें अथवा किसी पड़ोस की बस्ती में निवास और कृषि के लिए भूमि सुगमता से मिल जाती थी।

जो परिवार अमेरिका में इस प्रकार अर्द्धदासता की अवस्था में अपना जीवन आरम्भ करते थे, उनको समाज में किसी प्रकार हीन नहीं समझा जाता था। वस्तुतः प्रत्येक बस्ती में अनेक प्रमुख व्यक्ति या तो पहले ठेके के नौकर थे या उनकी सन्तान। अन्य वासियों की भांति वे भी देश की अत्यन्त मूल्यवान सम्पत्ति थे, क्योंकि इस समय देश की सबसे बड़ी आवश्यकता अधिक आबादी थी। बस्तियाँ अथवा उनकी सफलता में रुचि रखने वाली कम्पनियाँ उसी अनुपात में उन्नति करती थीं जिस संख्या में कि वासी वहाँ आकर बसते थे, क्योंकि भूमि और अन्य प्राकृतिक धन तो प्रायः अपरिमित मात्रा में विद्यमान थे, परन्तु उन्नति उनके विकास के लिए उपलब्ध आबादी के परिमाण पर निर्भर करती थी।

१७वीं शताब्दी के प्रथम तीन-चौथाई भागों में जो वासी अमेरिका आये उनमें प्रबल बहुसंख्या अंग्रेज़ों की थी। इनमें कुछ डच, स्वीड और जर्मन भी थे जो देश के मध्य भाग में आकर बसे। कुछ फ्रैंच ह्यूगनॉट थे जो दक्षिण कैरोलाइना और उसके आसपास आकर बसे। कहीं-कहीं स्पैनिश, इटैलियन और पुर्तगीज भी बसे हुए थे। परन्तु इन सबका अनुपात सारी आबादी में दस प्रतिशत से अधिक नहीं था।

सन् १६८० के पश्चात् आगमन का प्रधान स्रोत इंग्लैंड नहीं रहा। अनेक कारणों से अधिक संख्या जर्मनी, आयरलैंड, स्विट्ज़रलैंड और फ्रांस से आई। हज़ारों जर्मनों ने यूरोप का परित्याग युद्ध की लपटों से बचने के लिए किया। स्कॉच-आयरिशों की बड़ी संख्या ने उत्तरी आयरलैंड में अपने घरों को ग़रीबी से बचने के लिए छोड़ा। स्कॉटलैंड और स्विट्ज़रलैंड से भी लोग ग़रीबी के भूत से डरकर भाग आए। आगमन की लहरें चढ़ती और उतरती रहती थीं। पर कुछ-कुछ वर्षों को मिलाकर यदि एक काल माना जाय तो यह धारा अविच्छिन्न बहती रहती थी। सन् १६९० में यूनाइटेड स्टेट्स की आबादी लगभग ढाई लाख हो गई थी। प्रति पच्चीस वर्ष पीछे यह दुगनी हो जाती थी और सन् १७७५ में यह २५ लाख से ऊपर पहुँच चुकी थी।

अधिकतर ग़ैर-अंग्रेज औपनिवेशिकों ने पहले आये हुए वासियों की संस्कृतियों को अपना लिया था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी वासी वहाँ जाकर अंग्रेज बन गए थे। यह ठीक है कि उन्होंने अंग्रेजी भाषा, क़ानून, रीति-रिवाज और विचारधारा को अपना लिया था, परन्तु अपनाया था उन्हें उनके अमेरिकन रूप में ही। पीछे आने वाले आगन्तुकों की पहले आये हुए अंग्रेज औपनिवेशिकों के साथ सम्मिलन की क्रिया में और भी अनेक सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। उन सबका अन्तिम परिणाम एक नई संस्कृति की सृष्टि हुआ, जो

१७०० की अंग्रेज़ बस्तियां

इस चित्र में बिन्दु-रेखाओं द्वारा अटलांटिक तट पर इंग्लिश बस्तियों का विस्तार दिखलाया गया है। संगठित बस्तियाँ अभी समुद्र-तट से बहुत दूर तक नहीं फैली थीं और भीतरी प्रदेश में सीमाएँ स्थायी रूप से नहीं बनी थीं। ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर बस्तियाँ बढ़ने लगीं, त्यों-त्यों इन सीमाओं के कारण बार-बार झगड़े होने लगे।

कि नई दुनिया की परिस्थितियों में इंग्लिश और यूरोपियन महाद्वीप की विशेषताओं को मिलाकर बनी थी।

यद्यपि कोई भी परिवार बिना किसी विशेष मौलिक परिवर्तन के मैसैच्यूसैट्स से वर्जिनिया में, अथवा साउथ कैरोलाइना से पैनसिलवेनिया में जाकर बस सकता था, तथापि विविध उपनिवेशों की अपनी विशेषताएँ स्पष्ट थीं। उपनिवेशों के समूहों में तो ये और भी स्पष्टता से दृष्टिगोचर होती थीं।

विविध उपनिवेशों को तीन पृथक् श्रेणियों में बाँटा जा सकता था। इनमें से एक न्यू इंग्लैंड था जो प्रधानतया व्यापारी और व्यवसायी था। उसके दक्षिण में जो बस्तियाँ बस रही थीं वे प्रधानतया कृषि करने वाली थीं। इन पृथक्ताओं की निर्णायक भौगोलिक अवस्थाएँ थीं। समतल भूमि की न्यूनता, ग्रीष्म की लघुता और शीत ऋतु की दीर्घता के कारण न्यू इँग्लैंड कृषि-कार्य के लिए अनुपयुक्त था। परन्तु इस प्रदेश के निवासियों ने शीघ्र ही दूसरे लाभदायक पेशे खोज निकाले। उन्होंने पानी की शक्ति को बाँध कर मिलें बनालीं और बाहर भेजने के लिए उनमें गेहूँ और मकई पीसने और शहतीर काटने लगे। समुद्र-तट ख़ूब कटाफटा था, जिसमें बन्दरगाह बन सकते थे और उनसे व्यापार हो सकता था। शहतीरों के जंगलों ने जहाज बनाने के व्यवसाय को बढ़ावा दिया और समुद्र ने धन कमाने की सम्भावनाएँ ख़ूब बढ़ा दीं। कौड मछली पकड़ने के व्यवसाय के कारण ही मैसैच्यूसैट्स में शीघ्र ही आर्थिक उन्नति की मज़बूत नींव पड़ गई।

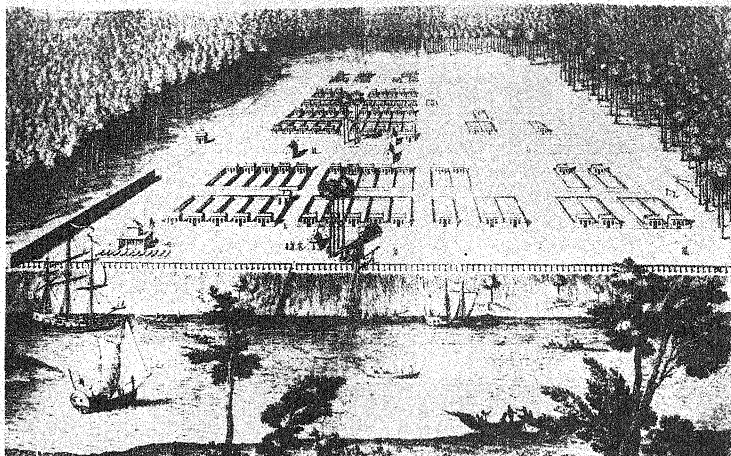
बन्दरगाहों के आसपास गाँवों और नगरों में बसकर न्यू इंग्लैंडवासियों ने शीघ्र ही अपना जीवन शहरी बना लिया। जिन लोगों ने बस्तियों के समीप छोटे-छोटे खेत लगाये उनकी आवश्यकताएँ सम्मिलित चरागाहों और जंगलों से पूरी होने लगीं। खेती प्रायः किसी व्यापार व्यवसाय के सहायक कार्य के रूप में की जाती थी। बस्तियों की परस्पर समीपता के कारण ग्राम-स्कूलों, ग्राम-चर्चों तथा नगर-सभाओं का निर्माण और परस्पर मेल-जोल सम्भव हो गए और नई विकसित होती हुई सभ्यता पर इन सब का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। न्यू इंग्लैंडवासियों को मिलजुलकर एक-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। सबको एक-सी पथरीली भूमि में खेती करनी पड़ती थी और सब एकसे सीधे-सादे व्यापार और दस्तकारी के काम करते थे। इन सब कारणों से इन सबके चरित्रों की भी विशेषताएँ एक-सी हो गईं और वे मनुष्यों के एक विशिष्ट समाज में परिणत हो गए।

वस्तुतः इन सब गुणों का मूल उन एक सौ दो पिलग्रिमों का स्वभाव था जो कई वर्ष पूर्व जीवन और समुद्र-यात्रा से थककर लीडन और प्लिमथ से केप कौड में आये थे। इन्होंने अपनी यात्रा का आरम्भ लण्डन (वर्जिनिया) कम्पनी की ओर से किया था और वर्जिनिया में बसने के लिए ही ये रवाना हुए थे। परन्तु इनका प्रसिद्ध जहाज "मेफ़्लावर" उक्त स्थान से बहुत उत्तर में जाकर किनारे लगा। औपनिवेशिकों ने कुछ सप्ताह तक खोज के पश्चात् वर्जिनिया न जाने का और जहाँ थे वहीं रहने का निश्चय किया। उन्होंने प्लिमथ हार्बर को बस्ती बसाने के लिए चुना। यद्यपि प्रथम शीत ऋतु बहुत कठोर थी तथापि नई बस्ती बस ही गई।

प्लिमथ की बस्ती अभी भली प्रकार बस भी नहीं पाई थी कि अड़ोस-पड़ोस में दूसरी बस्तियाँ बसने लगीं। सन् १६३० के पश्चात् मैसैच्यूसैट्स खाड़ी में जो बस्ती बसी उसने न्यू इंग्लैंड के और नवीन राष्ट्र के विकास में विशेष भाग लिया। इसे किंग से चार्टर लेकर आये हुए २५ व्यक्तियों ने बसाया था। इनमें से कुछ अन्य अनेक वासियों के साथ स्वयं अमेरिका आये और अपने साथ चार्टर लाये। सफलता प्राप्त करने का उनका संकल्प दृढ़ था। यद्यपि न्यू इंग्लैंड उनकी आशा का स्वर्ग सिद्ध नहीं हुआ और कुछ औपनिवेशिक अपना भ्रम दूर होने के बाद स्वदेश लौट गए, तथापि उनमें से अधिकतर, बस्ती बसाने और अपने समान दृढ़-संकल्प व्यक्तियों का समाज संगठित करने के कार्य में लग गए।

प्रथम दस वर्ष के भीतर पैंसठ विद्वान् धर्मोपदेशक आ गए और नेताओं के दृढ़ विश्वासों के अनुरूप मैसैच्यूसैट्स में एक धार्मिक राज्य का विकास प्रारम्भ हो गया। कहने को तो धर्म और राज्य पृथक् थे परन्तु व्यवहार में ये एक थे और सब संस्थाएँ धर्म के अधीन होकर रहती थीं। शीघ्र ही एक शासन-पद्धति विकसित हो गई जिसका आधार धर्म और नेताओं का अधिकार था।

परन्तु नगर-सभाओं में सार्वजनिक समस्याओं पर विवाद करने का अवसर मिलता रहता और उसके कारण वासियों को स्वशासन का कुछ अनुभव प्राप्त होता रहता था। यद्यपि नगर का विस्तार धार्मिक संस्था को केन्द्र मानकर हो रहा था

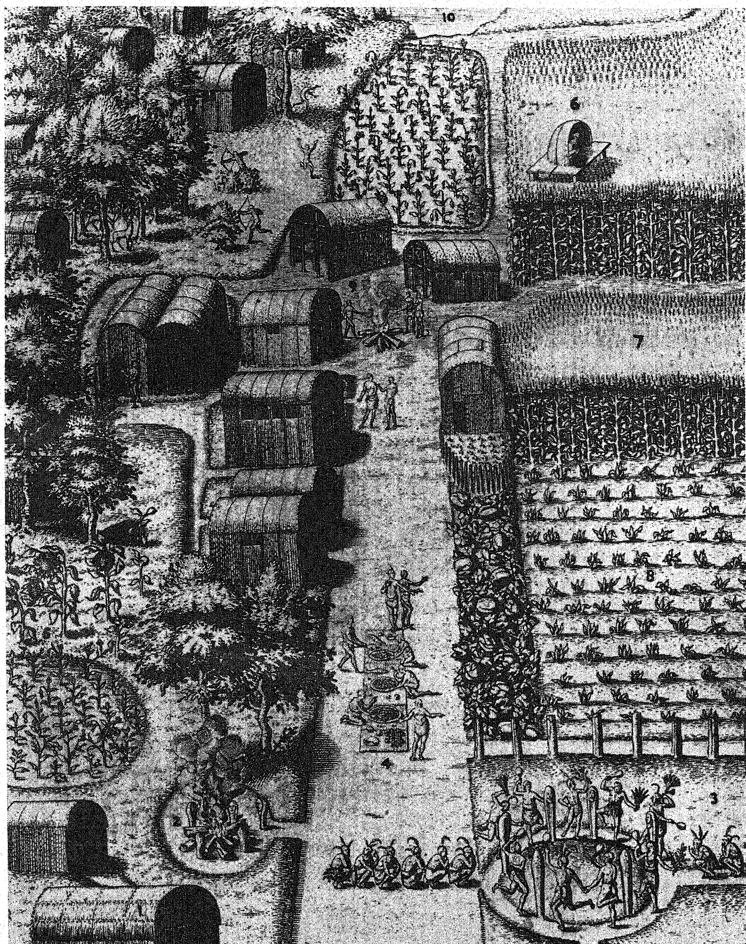


सवाना आज जॉर्जिया का दूसरे नम्बर का नगर है। १७३४ में इसके बसने के तुरन्त पश्चात् यह चित्र एक तत्कालीन एनग्रेवर ने बनाया था। बड़ा बन्दरगाह तो यह सदा ही रहा, अब यह एक बड़ा उद्योग-केन्द्र भी बन गया है।

परन्तु सीमावर्ती जीवन की आवश्यकताओं के कारण, नागरिक उतरदायित्व के निर्वाहार्थ, पारस्परिक विचार-विनिमय की सभाओं में सभी लोग भाग लेते थे। तो भी पादरी और परम्परा-प्रेमी संसारी लोग समाज में एकरसता और आज्ञा-पालकता को बरसों तक स्थिर रखने का प्रयत्न करते रहे।

परन्तु उनको सभी नागरिकों के विचार दबाकर रखने में अथवा उत्साही स्वतन्त्र विचारकों का मुँह बन्द करने में सफलता नहीं हुई। इस प्रकार का एक विद्रोही रोजर विलि-यम्स था। वह एक प्रतिभाशाली पादरी था। उसका जीवन निष्कलंक था। क़ानून का वह विद्वान् था। उसने इण्डियनों की भूमि पर अधिकार करने और धर्म-संस्था और राज्य को एक बनाकर रखने के विरुद्ध आवाज उठाई। "मैजिस्ट्रेटों के अधिकार के विरुद्ध अपने नये और भयंकर विचार" फैलाने के अपराध में उसको न्यायालय ने निर्वासन का दण्ड दिया। उसने रोड आइलैण्ड जाकर इण्डियन मित्रों के यहां आश्रय लिया और वहां ऐसे वासियों की बस्ती बसाई जिनका विश्वास था कि धर्म-संस्था और राज्य को एक-दूसरे से पृथक् रहना चाहिए।

मैसैच्यूसैट्स का परित्याग केवल उन धर्म-विरोधियों ने ही नहीं किया जो कि विचार-स्वतन्त्रता के पक्षपाती थे बल्कि ऐसे कट्टर प्यूरिटन भी वहाँ से चले गये जो अच्छी भूमि और जीवन के अच्छे अवसरों की खोज में थे। उदाहरणार्थ, कनैटिकट नदी की घाटी के उपजाऊ होने के समाचार ने उन किसानों को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया जिनको ख़राब ज़मीन की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था और जो समतल, गहरी और उपजाऊ भूमि के लिए इण्डियनों के उपद्रवों का साहसपूर्वक सामना करने को उद्यत थे। इन लोगों ने अपनी सरकार का संगठन करते हुए मताधिकार को अधिक विस्तृत बना दिया और मत देने के लिए चर्च का सदस्य होना आवश्यक नहीं माना। उसी समय मैसैच्यूसैट्स के और भी बहुत-से निवासी उत्तर की ओर बढ़ गये और स्वतन्त्रता और भूमि के खोजी स्त्री-पुरुषों ने शीघ्र न्यूहैम्पशर



सोलहवीं शताब्दी के एक चित्रकार का इण्डियन बस्ती का रेखा-चित्र। इसमें प्रदर्शित है : १. सरदार का घर; २. प्रार्थना-गृह; ३. नृत्योत्सव; ४. भोज; ५. तम्बाकू का खेत; ६. खेती का रखवाला; ७. मक्की का खेत; ८. कद्दू का खेत; ९. पवित्र अग्नि; १०. जलाशय।



उपनिवेश का एक हलचल-भरा रसोई-घर। यहाँ रोटी सेकना, भोजन पकाना तथा खाना, कपड़ा बुनना, कहानी कहना, और पाठ पढ़ाना सब काम एक साथ होते रहते थे।

और मेन की बस्तियाँ बसा लीं।

मैसैच्यूसैट्स खाड़ी के बाहर तो उसके प्रभाव का विस्तार हो ही रहा था उसके भीतर भी व्यापार और आबादी बढ़ती जा रही थी। शताब्दी के मध्य से यह क्षेत्र उत्तरोत्तर समृद्ध होता गया और बोस्टन अमेरिका का एक सबसे बड़ा बन्दरगाह बन गया। उत्तर पूर्व के जंगलों से जहाज बनाने के लिए बलूत (ओक) की लकड़ी, उनके मस्तूल बनाने के लिए ऊँचे चीड़ के पेड़ और दरारों में भरने के लिए पिच (राल) प्रचुर मात्रा में मिलने लगे। मैसैच्यूसैट्स के नाविक अपने ही जहाज बनाकर उन्हें संसार भर के बन्दरगाहों में ले जाने और उनसे माल ढोने लगे। इस प्रकार उन्होंने एक ऐसे व्यवसाय की नींव डाली जिसका महत्त्व निरन्तर बढ़ता चला गया। औपनिवेशिक काल की समाप्ति पर, ब्रिटिश झंडे तले चलने वाले जहाजों में एक-तिहाई जहाज अमेरिका में बने हुए थे। अतिरिक्त खाद्य सामग्री, जहाजी सामान और लकड़ी की वस्तुओं के कारण निर्यात व्यापार खूब बढ़ गया। शीघ्र ही न्यूइंग्लैण्ड के नाविकों ने यह भी अनुभव किया कि रम (शराब) और दासों के व्यापार में बहुत लाभ हो सकता है।

दूसरा बड़ा भूभाग मध्यवर्ती उपनिवेशों का था। वहाँ की आबादी न्यूइंग्लैंड की अपेक्षा अधिक विविध, मिली-जुली और सहिष्णु थी। पैनसिलवेनिया और इसके साथ लगे हुए डिलावेयर की आरम्भिक सफलता का श्रेय विलियम पेन को था। वह अत्यन्त व्यवहार-कुशल क्वेकर था। उसका लक्ष्य ही यह था कि किंग चार्ल्स द्वितीय से उसे जो विस्तृत प्रदेश मिला था उसमें विविध धर्मों और विविध जातियों के लोग बसें। उसका यह भी संकल्प था कि उसका उपनिवेश इण्डियनों के साथ व्यवहार करने में न्याय और ईमानदारी का एक नमूना बने। इसलिए उसने उनके साथ समझौते किये और उनका दृढ़ता से पालन किया। इस कारण बियाबान में भी शान्ति बनी रही। उपनिवेश शीघ्रता से व्यवस्थापूर्वक बढ़ता गया। पेन के आगमन के पश्चात् एक ही वर्ष में तीन हज़ार नये नागरिक पैनसिलवेनिया में आ गए।

इस उपनिवेश का केन्द्र फ़िलाडेलफ़िया था। यह नगर अपनी छायादार और चौड़ी सड़कों, ईंटों और पत्थरों से बने हुए मजबूत मकानों और व्यस्त जहाज-घाटों के लिए शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। उपनिवेश-काल के अन्त में इसकी आबादी ३० हज़ार हो चुकी थी और उसमें अनेक भाषाओं, धर्मों और पेशों के लोग शामिल थे। क्वेकरों ने

अपनी सुविचारित पद्धतियों, उदारता, परोपकार और सफल व्यापारिक बुद्धि से इस नगर को १८वीं शताब्दी के मध्य तक अमेरिका की फलती-फूलती राजधानी बना दिया था।

यद्यपि फ़िलाडेलफ़िया में क्वेकरों की प्रधानता थी, परन्तु पैनसिलवेनिया में अन्य स्थानों पर अन्य लोग भी बसते थे। अपने युद्ध-विनष्ट देश से अपनी भाग्य-परीक्षा करने के लिए जर्मन बहुसंख्या में यहाँ आये थे। वे शीघ्र ही प्रान्त के अत्यन्त कुशल कृषक सिद्ध हुए। कपड़ा, जूता तथा फ़र्नीचर बनाने और अन्य दस्तकारियों में उनकी कुशलता इस उपनिवेश के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और सहायक सिद्ध हुई। नई दुनिया में स्कौच-आयरिश लोगों के आगमन का भी पैनसिलवेनिया प्रधान द्वार था। वे बलवान् सीमान्तवासी थे, वे जहाँ चाहते वहीं भूमि पर अधिकार कर लेते और अपने अधिकारों की रक्षा बन्दूकों तथा बाइबिल के अनन्त प्रमाणों से करते थे। क़ानून के प्रति इनकी उपेक्षा के कारण धार्मिक वृत्ति के क्वेकर इन्हें बहुत कष्टदायक समझते थे, परन्तु भविष्य में इनके दोष ही बहुत बलवती उपयोगिता की वस्तु सिद्ध हुए। ज्यों-ज्यों ये बियाबान में फैलते गए त्यों-त्यों धर्म, विद्या और प्रातिनिधिक शासन-पद्धति में अपने विश्वास के कारण ये लोग सभ्यता के अग्रदूत सिद्ध हुए।

पैनसिलवेनिया के निवासी तो मिले-जुले थे ही, न्यूयॉर्क में भी बहुभाषा-भाषी लोग एकत्र हो रहे थे, और सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में ही अमेरिका की भावी बहु-भाषा-भाषिता की झलक दिखा रहे थे। १६४६ में हडसन के आसपास एक दर्जन से ऊपर भाषाएँ सुनाई देती थीं और यहाँ की आबादी में यूरोप के प्रायः सभी देशों के लोग पाये जाते थे। इनमें अधिकतर अपनी आजीविका व्यापार द्वारा कमाते थे, और उन्होंने उस व्यापारिक सभ्यता की नींव डाली जिसमें आगामी पीढ़ियों की विशेषताएँ निहित थीं।

४० वर्ष तक न्यूनीदरलैंड के स्वामी डच लोग थे। यही स्थान बाद को न्यूयॉर्क कहलाया। परन्तु ये लोग आप्रवासी नहीं थे। इनके देश हालैंड में ही बहुतेरी भूमि थी और नये उपनिवेशों से उन्हें ऐसा कोई राजनीतिक अथवा धार्मिक लाभ प्राप्त नहीं होता था जिसका उपभोग वे पहले से न कर रहे हों। इसके अतिरिक्त डच वैस्ट इण्डिया कम्पनी नामक जो कम्पनी नई दुनिया में बस्ती बसाने के लिए संगठित हुई थी उसे नया उपनिवेश व्यवस्थापूर्वक चलाने के लिए योग्य अधिकारी सुगमता से नहीं मिले। १६६४ में औपनिवेशिक हलचलों में ब्रिटिश रुचि पुनः बढ़ गई और उन्होंने डच बस्ती को जीत लिया। परन्तु डच लोग इसके पश्चात् भी सामाजिक और आर्थिक मामलों पर प्रभाव डालते रहे। इस प्रदेश के मकानों की तिकोनी छतें और नगर का



कपड़ा बुनना, साबुन बनाना और रँगाई घर के साधारण काम-काज के भाग थे। १७वीं शताब्दी की एक गृहिणी मोमबत्तियाँ बना रही है।

व्यापार डचों का प्रभाव प्रदर्शित करते रहे। न्यूयॉर्क-निवासियों के जीवन की विलासप्रियता भी डच लोगों से आई। यह प्यूरिटन बोस्टन के कठोर जीवन से सर्वथा विपरीत थी। न्यूयॉर्क में छुट्टियों के दिन भोज और खेल-तमाशे खूब दिखाई देते थे। नव वर्ष के दिन अपने पड़ोसी के घर जाना और उसके साथ शराब पीना और क्रिसमस के समय मज़ाकिया सेण्ट-निकोलस का आगमन आदि अनेक डच रीति-रिवाज देश-भर में व्याप्त हो गए और वे आज तक चले आते हैं।

शासन डचों से अपने हाथ में लेने के पश्चात् एक इंग्लिश शासक ने न्यूयॉर्क के कानूनी ढांचे को इंग्लिश परम्पराओं के अनुसार बदल दिया। परन्तु उसने अपना कार्य इतना धीरे-धीरे, बुद्धिमत्ता और चतुराई से किया कि उसे डचों और अंग्रेजों दोनों की ही मित्रता और सम्मान प्राप्त करने में सफलता हुई। नगरों के शासनों में न्यूइंग्लैण्ड के स्वायत्त-शासन की विशेषताएं थीं और कुछ ही वर्ष पश्चात् अवशिष्ट डच कानूनों तथा रीति-रिवाजों और इंग्लिश परम्पराओं में एक व्यवहार्य समन्वय हो गया।

१६६६ में न्यूयॉर्क प्रान्त के निवासियों की जन-संख्या लगभग ३० हज़ार थी। हडसन, मोहौक और अन्य नदियों की समृद्ध घाटियों में विशाल परिमाण पर खेतियाँ होती थीं और छोटे-छोटे किरायेदार तथा स्वतन्त्र किसान भी मिल-जुलकर इस प्रदेश की कृषि की उन्नति में सहायता करते थे। घास के मैदान और जंगल ढोरों, भेड़ों, घोड़ों और सूअरों को वर्ष-भर चारा देते रहते थे; तम्बाकू और फ्लैक्स (पटसन) सुगमता से पैदा हो जाते थे, और फलों, विशेषतः सेबों, की प्रचुरता थी। खेतों की पैदावार तो मूल्यवान् थी ही, परन्तु न्यूयॉर्क और औलबानी को बड़ा नगर बनाने में फ़र के व्यापार ने बड़ी सहायता दी।

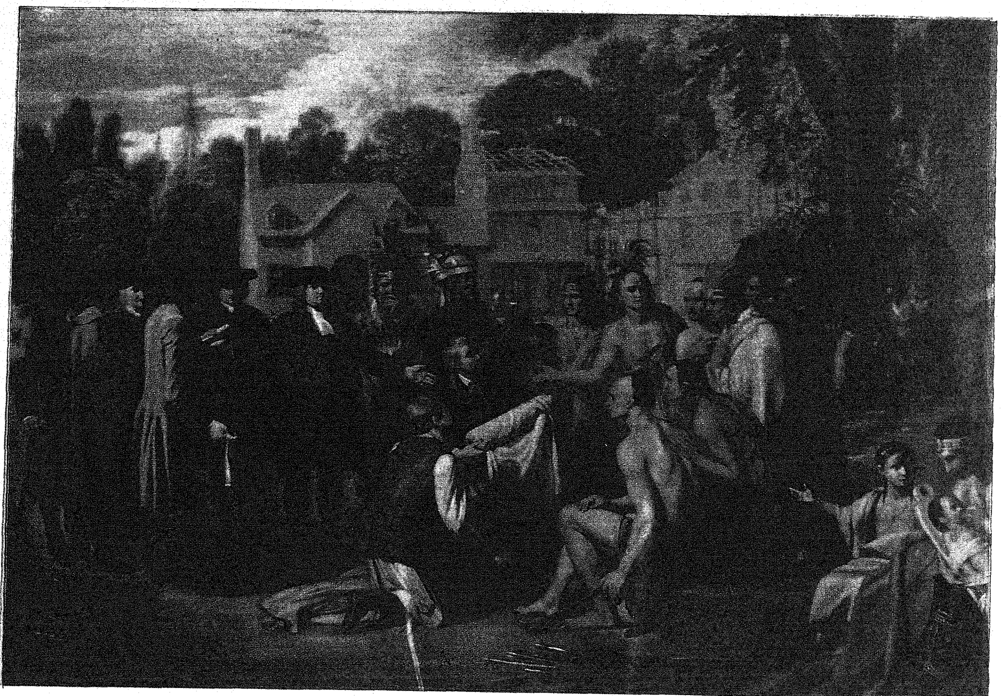
न्यूइंग्लैण्ड और मध्यवर्ती उपनिवेशों के सर्वथा विपरीत वर्जिनिया, मैरिलैण्ड, कैरोलाइना और जॉर्जिया नामक दक्षिणी बस्तियां प्रधानतया ग्रामीण थीं। वर्जिनिया का जेम्स टाउन नई दुनिया में पहली बस्ती थी जो बची रही। १६०६ के दिसम्बर में, लण्डन कौलोनाइजिंग कम्पनी की प्रेरणा से, १०० व्यक्तियों की एक अव्यवस्थित मण्डली नये साहसिक जीवन की तलाश में निकली। वे सोने और रत्नों द्वारा तुरन्त धनी हो जाने के स्वप्न ले रहे थे। जंगल में बसना उनका उद्देश्य नहीं था। कैप्टेन जॉन स्मिथ उनका नेता था और पारस्परिक झगड़ों, भूख, तथा इण्डियन आक्रमणों के ख़तरों के बावजूद, प्रारम्भिक वर्षों में अपने दृढ़ संकल्प से ही वह उस छोटी सी बस्ती को क़ायम रख सका। प्रतिष्ठाता कम्पनी लाभ-प्राप्ति के लिए अति आतुर थी। इस कारण आरम्भ में वह औपनिवेशिकों को विवश करती थी कि वे लण्डन के बाजार में बेचने के लिए जहाजी सामान, इमारती लकड़ी, कन्द और इसी प्रकार की अन्य निर्यात-योग्य वस्तुएं उत्पन्न करें। वह उनको अपने निर्वाह के लिए अन्न की खेती आदि नहीं करने देती थी। परन्तु कुछेक संकटपूर्ण वर्षों के पश्चात् कम्पनी ने अपनी आवश्यकताएं घटा दीं। औपनिवेशिकों में भूमि बाँट दी और उन्हें अपनी शक्ति निजी रोज़गारों में लगाने की इजाजत दे दी। १६१२ में एक नई बात हुई जिसने न केवल वर्जिनिया की अपितु आस पास के समस्त प्रदेश की आर्थिक स्थिति में क्रान्ति ला दी। यह थी वर्जिनिया तम्बाकू को तैयार करने की एक ऐसी नई विधि का आविष्कार, जिससे वह यूरोपियन लोगों को बहुत रुचिकर लगने लगा। इस तम्बाकू का पहला जहाज़ सन् १६१४ में लण्डन पहुँचा और दस वर्ष के भीतर ही यह प्रकट हो गया कि यह पौधा स्थायी और बड़े लाभ का साधन बनेगा।

तम्बाकू की खेती के लिए निरन्तर नई और उपजाऊ भूमि की आवश्यकता पड़ती थी, क्योंकि जिस भूमि पर यह बोया जाता था वह तीन-चार वर्ष के पश्चात् नितान्त शक्तिहीन हो जाती थी। इस कारण किसान बहुत विस्तृत भूमि चाहते थे जिससे उन्हें बोने के लिए नया खेत हाथ में रहने का निश्चय रहे। क्योंकि इन खेतों का ऐसे स्थान पर होना आवश्यक था जहाँ कि यातायात की सुविधा हो, प्लाण्टर बहुत शीघ्र विविध जलमार्गों के किनारे-किनारे फैल गए। इस प्रदेश में नगर नहीं थे। राजधानी जेम्स टाउन में भी मकान थोड़े ही थे। प्लाण्टर लोग बहुत जल्दी दूर-दूर के स्थानों से व्यापार करने के अभ्यासी हो गए और लण्डन, ब्रिस्टल तथा दूसरे इंग्लिश बन्दरगाह उनके बाज़ार बन गए।

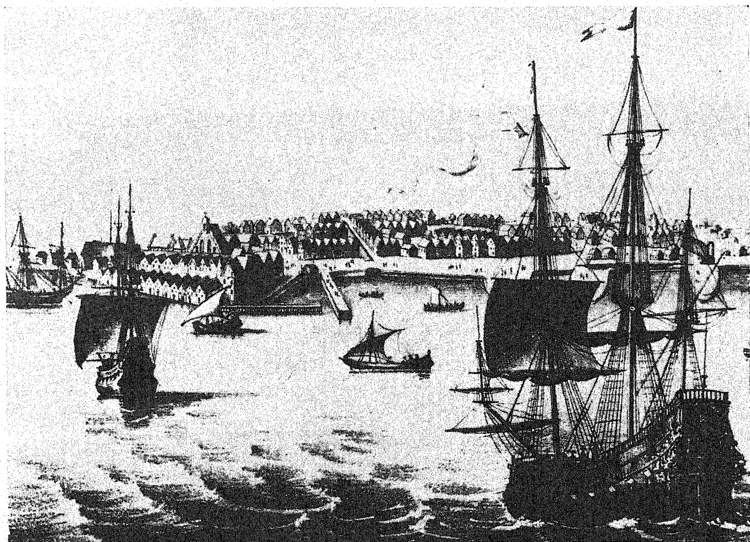
वर्जिनिया में अधिकतर आगन्तुक अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आए थे, परन्तु धार्मिक और आर्थिक कारणों से पड़ोस के उपनिवेश मैरिलैंड का भी विकास हो गया। यहाँ कैलवर्ट परिवार नई दुनिया में कैथोलिकों के लिए एक आश्रय-स्थान बनाना चाहता था। साथ ही वे ऐसी जायदादें भी



प्रवासी यात्री चर्च जा रहे हैं। सम्भावित आपत्तियों से बचाव के लिये पुरुष बन्दूकें लिये हुए हैं। इस दृश्य से अमेरिका का प्रत्येक बालक परिचित है।



औपनिवेशिक काल के प्रमुख चित्रकार बेंजमिन वेस्ट ने इस चित्र में विलियम पेन और इंडियनों की स्थायी शान्तिपूर्ण मित्रता के आरम्भ का दृश्य अमर कर दिया है।



१८वीं शताब्दी के शुरू में न्यूयार्क का बन्दरगाह। इस बन्दरगाह में प्राकृतिक सुविधाओं की उत्तमता के कारण ही इस उपनिवेश को दुनिया के व्यापारिक केन्द्रों में प्रमुख स्थान मिला।

खड़ी करना चाहते थे जिनसे लाभ हो। इसलिए और ब्रिटिश सरकार के साथ टक्कर से बचने के लिए, उन्होंने कैथोलिकों और प्रोटेस्टेण्टों दोनों को ही बसने के लिए उत्साहित किया। कैलवर्टों ने यत्न किया कि मैरिलैण्ड का शासन और सामाजिक व्यवस्था पुरानी परम्परा के अनुसार रईसों और अमीरों के हाथ में ही रहे। वे राजाओं के सब अधिकार अपने हाथ में रखकर यहाँ का शासन करना चाहते थे। परन्तु सीमा पर बसे हुए समाज में स्वतन्त्रता की भावना अनिवार्य हो जाती है। फलतः यह भावना जागीरदारी भावनाओं के साथ मेल नहीं खाती। मैरिलैण्ड में और अन्य उपनिवेशों में अधिकारी लोग वैयक्तिक स्वतन्त्रता की गारण्टी और शासन में प्रतिनिधि-सभाओं द्वारा भाग लेने की वासियों की अभिलाषाओं की उपेक्षा नहीं कर सके।

मैरिलैण्ड में भी सभ्यता का विकास ठीक वर्जिनिया के समान हुआ। दोनों उपनिवेशों में कृषि की प्रधानता थी और उसमें भी नदीतटवर्त्ती बड़े-बड़े प्लाण्टरों का प्राधान्य था। दोनों की पीछे की भूमियों में धीरे-धीरे छोटे-छोटे किसान खड़े होते जा रहे थे। दोनों की कठिनाई यह थी कि केवल एक ही फ़सल पैदा होती थी, और १८वीं शताब्दी के मध्य से पूर्व दोनों की संस्कृति पर नीग्रो दास-प्रथा का बहुत प्रभाव पड़ा था। दोनों उपनिवेशों के सम्पन्न प्लाण्टर अपने सामाजिक कर्तव्यों का निर्वाह गम्भीरतापूर्वक करते थे। यही प्लाण्टर जस्टिस ऑव् दि पीस, मिलिशिया के कर्नल और लेजिस्लेटिव असेम्बलियों के सदस्य होते थे। परन्तु प्रातिनिधिक असेम्बलियों में छोटे किसान भी बैठते थे और इस प्रकार वे भी राजनीतिक पदों पर पहुँच जाते थे। वे अपने विचारों को स्वतन्त्रता-

पूर्वक प्रकट करते थे और उनकी इस स्वतन्त्र वृत्ति के कारण बड़े प्लाण्टरों के वर्ग को चेतावनी मिलती रहती थी कि वे स्वतन्त्र नागरिकों के अधिकारों को पादाक्रान्त न करें।

१७वीं शताब्दी के अन्त और १८वीं शताब्दी के आरम्भ में मैरिलैण्ड और वर्जिनिया की समाज-व्यवस्था में वे गुण आ चुके थे जो कि गृह-युद्ध तक रहे। अधिकतर राजनीतिक अधिकार और बढ़िया भूमि, दासों की सहायता से, प्लाण्टरों ने अपने हाथ में रखी हुई थी। उन्होंने बड़े-बड़े मकान बना लिये थे। वे रईसों की शान से रहते और समुद्र-पार के सुसंस्कृत संसार से भी सम्बन्ध रखते थे। सामाजिक अर्थ-व्यवस्था में दूसरा स्थान किसानों का था, जिनकी समृद्धि की आशा भीतर की नई भूमियों पर टिकी हुई थी। छोटे किसान सबसे कम समृद्ध थे। उन्हें अपना जीवन दासों के स्वामी प्लाण्टरों के साथ निरन्तर स्पर्द्धा करते हुए बिताना पड़ता था। व्यापारिक श्रेणी का विकास न वर्जिनिया में हुआ और न मैरिलैण्ड में, क्योंकि प्लाण्टर स्वयं लण्डन से सीधा व्यापार करते थे।

दक्षिण में व्यापार का विकास पहले पहल दोनों कैरोलाइनाओं में हुआ। चार्ल्स्टन इनका प्रधान बन्दरगाह था। यहाँ के वासी बहुत शीघ्र कृषि और व्यापार में समन्वय करना सीख गए, और इस उपनिवेश की समृद्धि बहुत-कुछ इसके बाजार के कारण हुई। घने जंगलों से भी आय हुई। लम्बे पत्तों वाले चीड़ के पेड़ों से जो टार और बिरोज़ा प्राप्त होते थे, वे संसार में समुद्री व्यापार की सर्वोत्कृष्ट सामग्री थे। वर्जिनिया की भाँति कैरोलाइना एक ही पैदावार से बँधे हुए नहीं थे। वहाँ चावल, नील और समुद्री व्यापार की अन्य वस्तुएँ भी उत्पन्न होती थीं और उनका निर्यात किया जाता था। सन् १७५० तक दक्षिणी और उत्तरी कैरोलाइना में एक लाख या इससे कुछ अधिक लोग बस गए थे।

दक्षिण में, और उपनिवेशों में अन्यत्र भी, सर्वत्र भीतर के प्रदेश का विकास एक विशिष्ट वस्तु बन गया। यह विकास वरमौण्ट के पहाड़ों से लेकर न्यूयॉर्क में मोहौक नदी के आस-पास साफ़ किये हुए जंगलों तक, ऐलिगेनीज के पूर्वी किनारे के साथ-साथ, और वर्जिनिया में शैनानडोआ घाटी तक हुआ। आरम्भ में समुद्र के किनारे बसी हुई बस्तियों में विचार की जितनी स्वतन्त्रता उपलब्ध थी उससे अधिक के अभिलाषी लोग पहले ही धीरे-धीरे सीमा से आगे बढ़ने लग गये थे। जो लोग समुद्र के किनारे उपजाऊ भूमि नहीं प्राप्त कर सके थे अथवा जो लोग अपने पास की भूमि को समाप्त कर चुके थे उनको पश्चिम की ओर की पहाड़ियों में आश्रय का अच्छा स्थान मिल गया। शीघ्र ही भीतर के प्रदेश में उपजाऊ खेत लहलहाने लगे। केवल छोटे किसान ही ऐसे नहीं थे जिन्हें पीछे की भूमि आकर्षक लगी हो। पीटर जैफ़र्सन नामक एक साहसी भू-मापक (यूनाइटेड स्टेट्स के तीसरे प्रेजिडेण्ट टौमस जैफ़र्सन के पिता) ने ४०० एकड़ भूमि शराब के एक प्याले में ख़रीदी और वह उसी पहाड़ी प्रदेश में बस गया।

जो लोग पहाड़ी प्रदेशों में जाकर बसे थे उनमें यद्यपि कुछेक बड़े-बड़े भूमिपति भी थे, परन्तु पीछे की भूमि के वासी अधिकतर छोटे तथा स्वतन्त्र अग्रगामी किसान ही थे। ये लोग इण्डियन प्रदेश की सीमा पर रहते थे। इनकी कोठरियाँ ही इनके दुर्ग थे। अपनी रक्षा के लिए वे अपनी तेज़ आँखों और विश्वास-योग्य बन्दूकों पर ही भरोसा करते थे। उन्होंने जंगली प्रदेश की भूमि को झाड़ियाँ जलाकर साफ़ किया और ठूँठों में मक्का और गेहूँ की खेती की। पुरुष शरीर पर शिकार की कमीज़ें और टाँगों में हिरण की खाल के मोज़े और स्त्रियाँ हाथ के बने पेटीकोट पहनती थीं। "सुअर का माँस और मकई का दलिया," हिरण का भुना हुआ माँस, जंगली टर्की या बटेर और आसपास की धाराओं से पकड़ी हुई मछलियाँ ही उनका भोजन था। उनके आमोद-प्रमोद भी अपने ही थे जो बहुधा उच्च-कलरवपूर्ण होते थे।

इस समय पुराने और नये, पूर्व और पश्चिम और अटलांटिक समुद्र के तटवर्ती-प्रदेश और भीतरी प्रदेशों के मतभेद स्पष्ट होने लगे थे। कभी-कभी ये भेद बहुत बढ़ जाते और नाटकीय रूप धारण कर लेते थे, तथापि हर एक प्रदेश दूसरे पर बहुत प्रभाव डालता था।

ज्यों-ज्यों अग्रगामी वासी पश्चिम की ओर बढ़ते गये त्यों-त्यों वे अपने साथ अपनी पुरानी सभ्यता के भी कुछ अंश लेते गये और उन्होंने नई भूमि में उन परम्पराओं को जारी कर दिया जो कि उनकी सम्मिलित विरासत का अंग थीं। पश्चिम के बहुत-से यात्री लौटकर अपनी कहानी अपने घर वालों को सुनाते और उनमें नया जोश भर देते थे। पश्चिमी देश के निवासी अपनी आवाज राजनीतिक विवादों में भी सुनाते रहते थे, जिससे कि रीति-रिवाज तथा परम्पराजनित निष्क्रियता भंग हो जाती थी। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी



न्यू ऐमस्टर्डम के डच वासी सम्मिलित विलासी जीवन के रीति-रिवाज भी नई दुनिया में अपने साथ लाये थे । अधिक कठोर जीवन के अभ्यासी प्यूरिटन न्यू-इंग्लैण्ड के वासी इन पर नाक-भौं सिकोड़ते थे ।



दक्षिणी बस्तियों की समृद्धि के लिए व्यापार आवश्यक था। समृद्ध प्लाण्टरों ने अपने घाट आप बनाये थे। इंग्लिश नाविक वहीं माल उतारते थे और वहीं से तम्बाकू लादते थे, जो साधारणतया लकड़ी के ढोलों में भरा रहता था।

कि बसे हुए उपनिवेश का कोई भी व्यक्ति सीमा पर नया घर सुगमतापूर्वक पा सकता था। पुरानी बस्तियों के अधिकारी उन्नति और परिवर्तन के मार्ग में जो बाधाएँ डालते थे उन्हें रोकने में इस बात से भारी सहायता मिलती थी। इस प्रकार तटवर्ती नेता अनेक बार जनता की माँग के कारण अपनी राजनीतिक नीतियों को अधिक उदार करने, भूमि बाँटने के नियमों को बदलने और धार्मिक रीति-रिवाजों का बन्धन शिथिल करने के लिए विवश हुए, क्योंकि जनता की माँग के पीछे सदा यह धमकी रहती थी कि वे लोग सामूहिक रूप में जाकर सीमा-प्रदेश में बस जायँगे।

औपनिवेशिक काल में अमेरिकन शिक्षण और संस्कृति की जो आधारशिलाएँ रखी गईं वे भी भविष्य के लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं थीं। हार्वर्ड कालिज की स्थापना सन् १६३६ में मैसैच्यूसेट्स में हुई थी। इसी शताब्दी के अन्त में वर्जिनिया में विलियम और मेरी का कालिज स्थापित हुआ। कुछ वर्ष पश्चात् कनैटिकट में येल यूनिवर्सिटी की स्थापना के लिए कानून बना। परन्तु अमेरिकन शिक्षण के इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग पब्लिक स्कूल पद्धति का विकास था। इसका बहुत-कुछ श्रेय न्यू-इंग्लैंड को है। वहां के वासियों ने एक सार्वजनिक संस्था की भाँति मिलकर समस्त समाज के संग्रहीत साधनों को स्कूल के निर्माण में लगा दिया। सन् १६४७ में, मैसैच्यूसेट्स में अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षण का क़ानून बना। कुछ ही काल पश्चात्, रोड आइलैण्ड को छोड़कर, न्यू-इंग्लैण्ड के सभी उपनिवेशों में इस आशय का क़ानून बन गया।

दक्षिण में खेत और खेतियां एक-दूसरे से इतनी दूर-दूर थे कि घनी बस्तियों के समान वहाँ सारी आबादी के लिए स्कूल खोलना सम्भव नहीं था। इसलिए कभी-कभी कुछ प्लाण्टर अपने पड़ोसियों के साथ मिलकर आसपास के सब बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापक रख लेते थे। बहुधा बालकों को शिक्षण के लिए इंग्लैण्ड भेजा जाता था। जहाँ घनी बस्तियाँ थीं वहाँ अड़ोस-पड़ोस के कुछ स्कूलों से काम निकल जाता था। परन्तु साधारणतया प्लान्टरों को बारी बारी से अध्यापकों का ख़र्च उठाना पड़ता था।

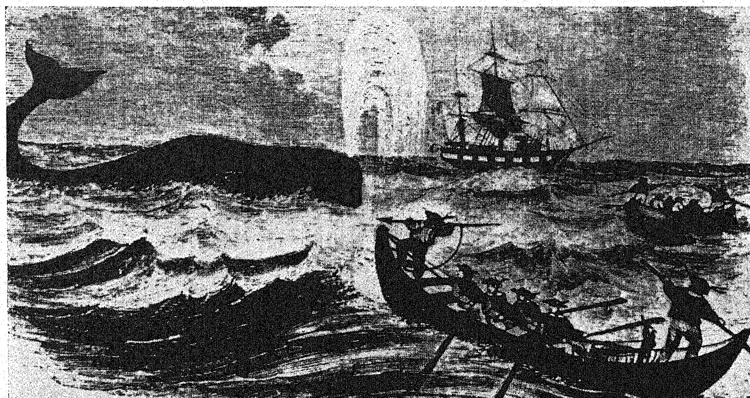
मध्यवर्ती उपनिवेशों में शिक्षण की स्थिति विविध थी। न्यूयॉर्क के लोग अपनी भौतिक उन्नति में इतने उलझे हुए थे कि उन्हें सांस्कृतिक मामलों की ओर ध्यान देने की फ़ुरसत नहीं थी और फलतः वे न्यू-इंग्लैण्ड और अन्य मध्यवर्ती

उपनिवेशों की अपेक्षा शिक्षण में बहुत पीछे थे। स्कूलों की दशा शोचनीय थी और इस कारण सम्पन्न नागरिकों को अपने बालकों के लिए अध्यापक रखने पड़ते थे। अधिकतर बालकों के लिए पर्याप्त सार्वजनिक स्कूल नहीं थे। इंग्लैण्ड की सरकार की ओर से जनता को शिक्षण की सुविधाएँ देने के लिए बीच-बीच में कभी-कभी कुछ प्रयत्न किये जाते थे। प्रिन्स्टन में न्यू-जर्सी का किंग्स कालिज, (जो कि अब कोलम्बिया यूनिवर्सिटी बन गया है) और क्वीन्स कालिज (रटगर्स) १८वीं शताब्दी के मध्य तक नहीं खुले थे।

शिक्षण के क्षेत्र में सबसे अधिक साहसी और अग्रणी उपनिवेश पैनसिलवेनिया था। यहाँ पहला स्कूल १६८३ में खोला गया था। उसके पश्चात् उसकी देखादेखी प्रत्येक क्वेकर समाज अपने बालकों के प्रारम्भिक शिक्षण की व्यवस्था करने लगा। फ्रैण्ड्स पब्लिक स्कूल में प्राचीन भाषाओं, इतिहास और साहित्य का ऊँचा शिक्षण दिया जाने लगा। स्कूल ग़रीबों के लिए मुफ़्त था परन्तु सम्पन्न लोगों से फ़ीस ली जाती थी। फ़िलाडेलफ़िया में अनेक प्राइवेट स्कूल ऐसे थे जिनका किसी धर्म-विशेष से सम्बन्ध नहीं था और वे भाषा, गणित और प्राकृतिक विज्ञान की शिक्षा देते थे। प्रौढ़ लोगों के लिए रात्रिशालाएँ थीं। स्त्रियों की शिक्षा भी सर्वथा उपेक्षित नहीं थी। फ़िलाडेफ़िया के सम्पन्न घरों की कन्याओं को प्राइवेट अध्यापक फ्रेंच, गायन, वादन, नृत्य, चित्रण, व्याकरण और कभी-कभी हिसाब रखना सिखाते थे।

पैनसिलवेनिया के उन्नत बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विकास पर मुख्यतः दो प्रभावशाली व्यक्तियों की छाप थी। इनमें से एक उपनिवेश का सेक्रेटरी जेम्स लोगन था। उसी के सुन्दर पुस्तकालय में युवक बेन्जमिन फ़्रैंकलिन ने नवीनतम वैज्ञानिक ग्रन्थों को पढ़ा था। १७४५ में लोगन ने अपने पुस्तकालय के लिए एक भवन बनवाया और उसे तथा अपनी पुस्तकों को नगर के अर्पण कर दिया। तथापि इसमें सन्देह नहीं कि फ़िलाडेलफ़िया के अन्य किसी नागरिक की अपेक्षा इस नगर के बौद्धिक क्रिया-कलापों में फ़्रैंकलिन ने सबसे अधिक योग दिया था। उसने ऐसी संस्थाओं की स्थापना की जिन्होंने कि न केवल फ़िलाडेलफ़िया अपितु सभी उपनिवेशों की सांस्कृतिक उन्नति में स्थायी सहायता की। उदाहरणार्थ, उसने जुण्टो नामक एक क्लब संगठित किया जिसने अमेरिकन फ़िलोसोफ़िकल सोसायटी को जन्म दिया। उसी के प्रयत्नों से एक सार्वजनिक विद्यालय की स्थापना हुई जो पीछे पैनसिल-

खुली नाव से व्हेल मछली का शिकार। आरम्भ के दिनों में व्हेल का शिकार, उसकी हड्डी और उसके मूल्यवान् तेल के कारण (जो कि मरहम तथा मोमबत्तियाँ बनाने के काम में आता था), मैसैच्यूसैट्स का एक बड़ा रोज़गार बन गया था।

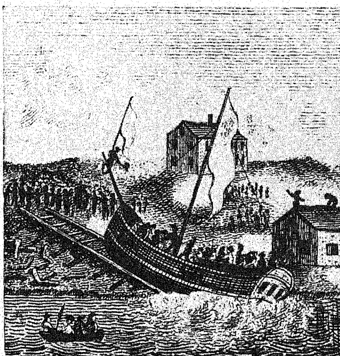


वेनिया यूनिवर्सिटी में परिणत हो गया। उसके ही प्रयत्नों से एक प्रभावशाली पुस्तकालय की स्थापना हुई, जिसे वह "समस्त उत्तरी अमेरिकन पुस्तकालयों की जननी" कहा करता था।

ज्ञान-प्राप्ति की अभिलाषा भली भाँति बसी हुई बस्तियों की सीमा तक ही सीमित नहीं थी। यद्यपि कठोर स्कौच-आयरिश लोग लकड़ी के पुराने ढंग की कोठरियों में रहते थे, तथापि उन्होंने अज्ञानान्धकार में रहना पसन्द नहीं किया। वे परम विद्यानुरागी थे। उन्होंने विद्वान् पादरियों को अपनी बस्तियों की ओर आकृष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि संसारी पुरुषों को भी अपनी बौद्धिक शक्तियों का विकास करना चाहिए।

दक्षिण में प्लाण्टर लोग सभ्य-संसार के साथ सम्पर्क रखने के लिए अधिकतर पुस्तकों पर आश्रित रहते थे। इतिहास, ग्रीक और लैटिन साहित्य, विज्ञान और कानून आदि सब विषयों की इंग्लैंड से आई हुई पुस्तकें खेतियों के एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र में आती-जाती रहती थीं। चार्ल्सटाउन में सन् १७०० में एक प्रान्तिक पुस्तकालय की स्थापना हुई। वहाँ के लोगों का संगीत, चित्रकला और अभिनय के प्रति भी अनुराग था। यही कारण था कि अभिनेता लोग बहुत देर तक चार्ल्सटाउन को विशेष प्रेम की दृष्टि से देखते रहे।

मैसैच्यूसैट्स का एक बड़ा जहाज़-निर्माण-केन्द्र सेलेम। एक जहाज़ रेलों से नीचे सरक रहा है।



न्यू-इंग्लैंड में पहले-पहल जो आगन्तुक आये वे अपने साथ अपने छोटे पुस्तकालय भी लाये, और उसके पश्चात् वे लण्डन से पुस्तकें मंगाते रहे। परन्तु उनका अध्ययन केवल इन पुस्तकों तक ही सीमित नहीं था। सन् १७८० तक बोस्टन के पुस्तक-विक्रेता प्राचीन साहित्य, इतिहास, राजनीति, दर्शन, विज्ञान, धर्मोपदेश, धर्मशास्त्र और ललित साहित्य की पुस्तकों का फलता-फूलता व्यापार करने लगे थे।

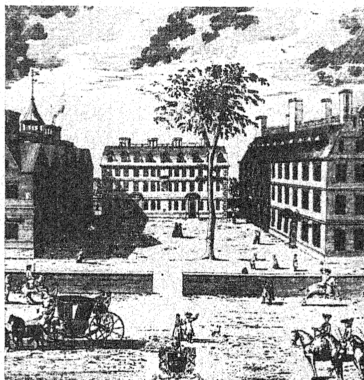
कैम्ब्रिज (मैसैच्यूसैट्स) में आरम्भ में ही एक छापाखाना खुल गया था। १७०४ में बोस्टन का प्रथम सफल समाचारपत्र प्रकाशित हुआ। उसके पश्चात् न केवल न्यूइंग्लैंड में परन्तु अन्य प्रदेशों में भी अन्य समाचारपत्र प्रकाशित हुए। उदाहरणार्थ, न्यूयॉर्क में अमेरिकन समाचार-पत्रों का विकास करने वाली एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना हुई। वहाँ पीटर जैंगर ने सन् १७३३ में 'न्यूयॉर्क वीकली जरनल' नाम से एक समाचार-पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। यह सरकार के विरोधियों का मुख-पत्र था। इसके दो वर्ष तक प्रकाशन के पश्चात्, उपनिवेश का गवर्नर जैंगर के तीक्ष्ण कटाक्षों को सहन नहीं कर सका। उसने उसको मानहानि के अभियोग में जेल में बन्द करा दिया। जैंगर का मुक़दमा ६ महीने चला और इस काल में उसे जेल में ही रहना पड़ा। वह इस काल में अपने पत्र का सम्पादन वहीं से करता रहा। इससे उसके मुक़दमे के प्रति उपनिवेश-भर में असाधारण दिलचस्पी उत्पन्न हो गई। उसका वकील प्रसिद्ध एण्ड्रू हैमिल्टन था। उसकी दलील यह थी कि जैंगर ने गवर्नर पर जो आक्षेप प्रकाशित किये हैं वे सत्य हैं और इस कारण उनमें मानहानि की बात तनिक भी नहीं। जूरी ने जैंगर को निरपराधी ठहराया और वह छूट गया। इसके न केवल औपनिवेशिक अमेरिका परन्तु भावी अमेरिका के लिए भी बहुत दूरगामी परिणाम हुए। यह निर्णय अमेरिका में लेखन और प्रकाशन की स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों की स्थापना के लिए पथ-प्रदर्शक बन गया।

उपनिवेशों में साहित्य का प्रकाशन प्रायः न्यूइंग्लैंड तक सीमित था। यहाँ अधिकतर ध्यान धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशन पर केन्द्रित रहता था। रैवरैण्ड कौटन मैथर नामक एक प्रसिद्ध "रौरव नरक का भय दिखाने वाले" पादरी ने अकेले ही लग-

भग ४०० ग्रन्थ लिखे थे। उसका प्रमुख ग्रन्थ 'मैग्नेलिया क्रिस्टी अमेरिकाना' इतना बड़ा था कि उसे लण्डन में छपाना पड़ा था। इस ग्रन्थ में न्यूइंग्लैंड के शानदार इतिहास का प्रदर्शन इसके विद्याभिमानी सफल लेखक की पक्षपातमय दृष्टि से किया गया है। इस काल का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ रैवरैण्ड माइकेल विगल्सवर्थ की लम्बी कविता 'दि डे ऑव् डूम' था। इस कविता में ईसाइयों की बाइबिल के अन्तिम न्याय 'लास्ट जजमैण्ट' का वर्णन भय और वेदना का चित्रण करने वाली भाषा में किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति ने इसकी एक प्रति खरीदी और इसे पढ़ा।

औपनिवेशिक विकास की सब परिस्थितियों में एक प्रधान विशेषता यह रही कि उन पर इंग्लिश सरकार के प्रभाव और नियन्त्रण का अभाव रहा। उपनिवेशों के निर्माण-काल में वे अपनी परिस्थितियों और प्रवृत्तियों के अनुसार अपना विकास करने के लिए प्रायः स्वतन्त्र रहे। इंग्लिश सरकार ने सरकार के रूप में जॉर्जिया के सिवाय प्रायः किसी भी उपनिवेश को बसाने में कोई भाग नहीं लिया था। उनके राजनीतिक नियन्त्रण को भी उसने अपने हाथ में धीरे-धीरे ही लिया। इंग्लैंड के किंग ने नई दुनिया पर अपने स्थानीय शासनाधिकार कम्पनियों और मालिकों को सौंप दिए थे। इसका यह अर्थ नहीं था कि अमेरिका के उपनिवेश बाह्य नियन्त्रण से सर्वथा अथवा अंशतः स्वतन्त्र हो गए थे। उदाहरणार्थ, वर्जिनिया और मैसैच्यूसैट्स बे के चार्टरों के अनुसार शासन के सब अधिकार सम्बन्धित कम्पनियों को सौंप दिये गए थे, और आशा की जाती थी कि वे इंग्लैंड में रहकर कार्य करेंगी, और उस अवस्था में स्वयं किंग के हाथ में सब अधिकार रहने के समान अमेरिका-निवासियों की शासन में कोई आवाज नहीं रहेगी।

परन्तु किसी-न-किसी प्रकार बाहर के एकाधिकारपूर्ण शासन का अन्त होता चला गया। इस दिशा में लण्डन वर्जिनिया कम्पनी ने वर्जिनिया के औपनिवेशिकों को वहाँ के शासन में प्रतिनिधित्व देने का निर्णय करके पहला कदम उठाया। सन् १६१६ में कम्पनी ने अपने नियुक्त गवर्नर को जो हिदायतें भेजीं उनमें लिखा था कि बड़ी-बड़ी खेतियों के स्वतन्त्र निवासी अपने प्रतिनिधि चुनेंगे और वे उपनिवेश के लाभ के लिए आर्डिनेन्स पास करने में गवर्नर और उसके द्वारा नियुक्त कौन्सिल की सहायता करेंगे।



अमेरिका का प्रथम कालिज हार्वर्ड। इसकी स्थापना १६३६ में मैसैच्यूसेट्स उपनिवेश में हुई थी। इसकी गणना आज भी राष्ट्र के प्रख्यात विद्यापीठों में होती है।

इस घटना का प्रभाव इतना दूरव्यापी हुआ जितना औपनिवेशिक काल की अन्य किसी घटना का नहीं हुआ था। इसके पश्चात् साधारणतया यह माना जाने लगा कि औपनिवेशिकों को अपने शासन-कार्य में भाग लेने का अधिकार है। इंग्लैण्ड का किंग इसके पश्चात् कोई भी चार्टर देते हुए अधिकतर यह व्यवस्था लिख देता था कि सम्बद्ध उपनिवेश के स्वतन्त्र व्यक्तियों की, उनको प्रभावित करने वाले क़ानून के निर्माण में, आवाज रहेगी। इस प्रकार मैरिलैण्ड के सेसिल कैलवर्ट को, पैनसिलवेनिया के विलियम पेन को, दोनों कैरोलाइनाओं के और न्यू-जर्सी के मालिकों को जो चार्टर दिये गए उनमें लिखा था कि सब क़ानून "स्वतन्त्र मनुष्यों की सहमति से बनाये जायँगे।" केवल दो चार्टरों में स्वशासन की व्यवस्था नहीं थी। ये दोनों न्यूयॉर्क और जॉर्जिया के चार्टर थे। परन्तु इन दोनों उदाहरणों में भी अपवाद अ-चिरस्थायी ही रहा। औपनिवेशिकों ने क़ानून-निर्माण में प्रतिनिधित्व के अधिकार की निरन्तर माँग इतनी दृढ़ता से की कि अधिकारियों को शीघ्र ही उसके सामने झुक जाना उचित जान पड़ा।

आरम्भ में सरकार की क़ानून-निर्मात्री शाखा में औप-

निवेशिकों के प्रतिनिधित्व का अधिकार सीमित महत्त्व का था। परन्तु अन्त में वासियों को पूर्ण सत्ता प्राप्त करने में उसने सीढ़ी का काम दिया। अधिकार-प्राप्ति निर्वाचित असेम्बलियों द्वारा हुई, जिन्होंने कि पहले-पहल आर्थिक मामलों पर नियन्त्रण का अधिकार अपने हाथ में ले लिया और पीछे उसका अधिकतम उपयोग किया। एक के बाद दूसरे उपनिवेश में यह सिद्धान्त मान लिया गया कि निर्वाचित प्रतिनिधियों की अनुमति के बिना न टैक्स लगाये जा सकते हैं और न एकत्रित आय का व्यय किया जा सकता है। गवर्नर अथवा अन्य नियुक्त अधिकारियों का वेतन भी बिना प्रतिनिधियों की अनुमति के नहीं दिया जा सकता था। जब तक गवर्नर अथवा उपनिवेशों के अन्य अधिकारी लोक-निर्वाचित असेम्बली की इच्छानुसार चलना स्वीकार नहीं करते थे तब तक असेम्बली किसी आवश्यक कार्य के लिए भी धन के व्यय की अनुमति नहीं देती थी। इस भय के कारण गवर्नर और अन्य नियुक्त अधिकारी औपनिवेशिकों की इच्छा के सामने बहुत शीघ्र झुकते चले गए।

न्यू-इंग्लैण्ड में बहुत वर्षों तक अन्य उपनिवेशों की अपेक्षा अधिक पूर्ण स्वशासन रहा। यदि पिलग्रिम (तीर्थयात्री) वर्जिनिया में जाकर बसते तो वे लण्डन वर्जिनिया कम्पनी के अधिकार में रहते। परन्तु न्यू प्लिमथ के अपने उपनिवेश में वे किसी भी सरकारी अधिकार से परे थे। फलतः उन्होंने

दक्षिण में प्रथम प्रमुख खेती तम्बाकू की थी। अमेरिकन कारख़ाने के इस पुराने चित्र में तम्बाकू सुखाया और तैयार किया जा रहा है।



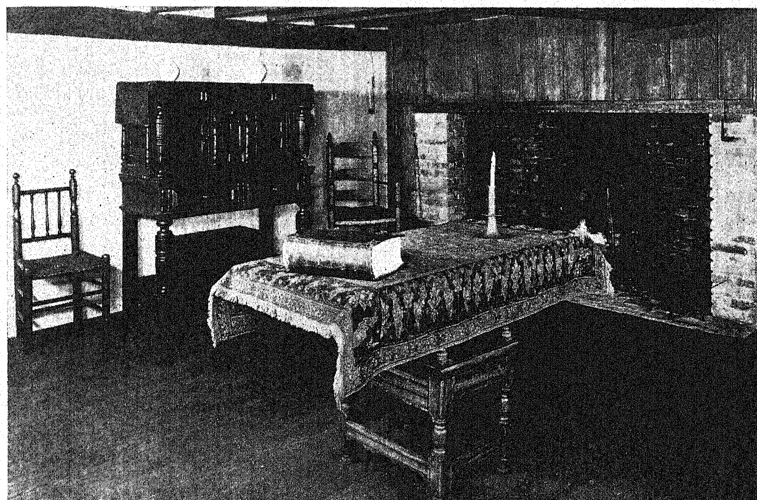
अपना राजनैतिक संगठन कर लिया। मेफ़्लावर जहाज पर ही उन्होंने एक शासन-पत्र तैयार किया जो 'मेफ़्लावर कम्पैक्ट' कहलाया और उसके अनुसार उन्होंने स्वीकार किया कि "हम अपनी अधिक सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिए एक नागरिक संगठन में संगठित होते हैं······और इस शासन-पत्र द्वारा ऐसे न्यायोचित तथा (सबके लिये) समान क़ानूनों, आर्डिनेन्सों, ऐक्टों, संविधानों और पदों का निर्माण करते हैं जो कि इस उपनिवेश के सार्वजनिक हित की दृष्टि से सर्वाधिक संगत तथा सुविधाजनक होंगे······" यद्यपि इस प्रकार स्वयं स्वशासन की पद्धति आरम्भ करने का पिलग्रिमों के लिए कोई वैध आधार नहीं था परन्तु उनके इस कार्य का किसी ने विरोध नहीं किया और "कम्पैक्ट" के अनुसार प्लिमथ के वासी बहुत वर्षों तक बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप या आदेश के अपने मामलों की व्यवस्था आप ही करते रहे।

इसी प्रकार की परिस्थिति मैसैच्यूसेट्स में उत्पन्न हुई। वहां शासन के अधिकार मैसैच्यूसेट्स बे कम्पनी को दिये गये थे। यह कम्पनी स्वयं इंग्लैण्ड से उठकर अपना चार्टर साथ लेकर अमेरिका आयी थी और इस प्रकार उपनिवेश में रहने वाले लोगों के हाथ में पूर्ण अधिकार थे। पहले तो एक दर्जन के लगभग कम्पनी के जो सदस्य अमेरिका आये उन्होंने मनमाना शासन करने का यत्न किया, परन्तु शीघ्र ही अन्य औपनिवेशिकों ने सार्वजनिक मामलों में सलाह देने के अधिकार की मांग की, और यह प्रकट किया कि यदि उनकी मांग न मानी गयी तो वे सब मिलकर सामूहिक रूप में यहां से उठकर किसी दूसरे प्रदेश में जा बसेंगे। इस धमकी के सामने कम्पनी के सदस्य झुक गये और शासन का नियन्त्रण निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में चला गया। न्यूइंग्लैण्ड के पीछे बसे हुए उपनिवेश न्यू-हैवन, रोड आइलैण्ड और कनैटिकट भी स्वशासित होने में सफल हो गये और उन्होंने न्यू-प्लिमथ के पिलग्रिमों को नमूना मानकर अपनी राजनैतिक शासनपद्धति स्वयं बना ली।

औपनिवेशिक लोग स्वशासन का जिस प्रकार बड़ी मात्रा में उपभोग कर रहे थे वह ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा सर्वथा अविरोधित नहीं रहा। मैसैच्यूसेट्स चार्टर के विरुद्ध अदालत में कार्रवाई की गयी और १६८४ में उसे रद्द कर दिया गया। इसके पश्चात् न्यूइंग्लैण्ड के सब उपनिवेशों को ब्रिटिश किंग ने अपने नियन्त्रण में लेकर एक नियुक्त गवर्नर को पूर्ण



प्यूरिटन न्यूइंग्लैंड में कुछ उपद्रव-प्रिय लोग नाच-गाकर अपने पड़ोसियों को चिढ़ाते और उनका मज़ाक उड़ाते थे। एक धर्म-प्रेमी वृद्ध उनसे धर्म के मार्ग पर चलने की प्रार्थना कर रहा है।

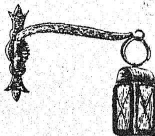


न्यूयॉर्क के अजायबघर के अमेरिकन विभाग में सुरक्षित औपनिवेशिक रसोईघर का एक नमूना। इसकी एक-एक वस्तु असली की नक़ल है। हज़ारों दर्शक प्रति वर्ष यहाँ आकर भूतकाल के जीवन की झाँकी लेते हैं।

अधिकार दे दिये। औपनिवेशिकों ने इस परिवर्तन का दृढ़तापूर्वक विरोध किया और इंग्लैण्ड में १६८८ की क्रान्ति के पश्चात्, जिसमें कि जेम्स द्वितीय च्युत कर दिया गया था, उन्होंने किंग द्वारा नियुक्त गवर्नर को निर्वासित कर दिया। रोड आइलैण्ड और कनैटिकट, जिनमें इस समय न्यू-हैवन शामिल था, स्थायी रूप से अपनी स्वतन्त्रता स्थापित करने में सफल हो गये। परन्तु मैसैच्यूसेट्स को शीघ्र ही पुनः राजकीय अधिकार में ले लिया गया। इस बार जनता को भी शासन में कुछ भाग अवश्य दिया गया। अन्य उपनिवेशों की भांति यह भाग क्रमशः बढ़ता गया, यहाँ तक कि यहाँ जनता का पूर्ण शासन हो गया। विशेषतः आर्थिक मामलों को, अन्य उपनिवेशों की भांति, यहां की जनता भी प्रभावशाली रूप में नियन्त्रित करने लगी। किन्तु अब भी गवर्नरों को इस आशय की हिदायतें निरन्तर आती रहती थीं कि वे जनता को इंग्लिश हितों के अनुकूल नीति पर चलने के लिए विवश करें। इंग्लिश प्रिवी कौन्सिल को उपनिवेशों के सब कानूनों पर निगरानी करने का अधिकार था। परन्तु औपनिवेशिक लोग इस प्रकार के प्रतिबन्धों से बचने में सुनिपुण हो चुके थे; और जब वे समझते थे कि उनके मौलिक स्वार्थ की हानि हो रही है तब वे अपने अधिकारों का प्रयोग विशेष रूप से करते थे।

इसी प्रकार जब कभी औपनिवेशिक ऐसा अनुभव करते थे कि उनके वैदेशिक अथवा व्यापारिक मामलों में हस्तक्षेप किया जा रहा है तब वे ब्रिटिश प्रयत्नों का विरोध करते थे और उसमें बहुधा सफल हो जाते थे। इंग्लिश सरकार ने १६५१ के पश्चात् समय-समय पर ऐसे क़ानून पास करने आरम्भ किये जो उपनिवेशों के व्यापारिक और साधारण आर्थिक जीवन का नियन्त्रण करते थे। इनमें से कुछ अमेरिका के लिए लाभदायक भी थे, परन्तु अधिकतर अमेरिका को हानि पहुँचा कर इंग्लैण्ड को लाभ पहुँचाते थे। साधारणतया औपनिवेशिक उन क़ानूनों की उपेक्षा कर देते थे जो उनके लिए अधिक बाधक होते थे। बीच-बीच में ब्रिटिश शासक भी सचेत हो जाते थे और अपने क़ानूनों का पालन कराने का यत्न करते थे, परन्तु उनके यह प्रयत्न बहुधा अ-चिरस्थायी होते थे।

उपनिवेश जिस बड़े परिमाण में राजनीतिक स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे थे उसका परिणाम यह हुआ कि वे ब्रिटेन से दूरतर होते गये और इंग्लिश की अपेक्षा क्रमशः अमेरिकन अधिक बन गये। इस प्रवृत्ति को अन्य जातियों के लोगों और संस्कृतियों के मिश्रण से भी विशेष बल मिला। यह प्रक्रिया किस प्रकार होती थी और इसने एक नये राष्ट्र की नींव किस प्रकार डाली इसका सजीव वर्णन १७८२ में चतुर फ्रांसीसी कृषक जे हैक्टर कैण्ट जोन क्रैवकोअर ने इस प्रकार किया है : "तो फिर अमेरिकन नाम का यह नया मनुष्य क्या है?" उसने अपने '*अमेरिकन किसान के पत्र*' में प्रश्न किया है। "वह या तो यूरोपियन है और या किसी यूरोपियन की सन्तान है। फलतः उसके रुधिर में एक ऐसा विचित्र सम्मिश्रण है जो आपको अन्य किसी देश में नहीं मिल सकता······ मैं आपको एक ऐसा परिवार बतला सकता हूँ जिसका दादा एक अंग्रेज था, उसकी पत्नी डच थी, उसके पुत्र ने एक फ्रैन्च स्त्री से विवाह किया और उसके वर्तमान चार पुत्रों की चारों पत्नियां चार विभिन्न राष्ट्रों की हैं। बस, यही अमेरिकन है, जो कि अपने सब पुराने विश्वासों और रीति-रिवाजों को पीछे छोड़ आया है, और उसने जो नया जीवन अपनाया है, जिस नई सरकार की आज्ञा का वह पालन करता है और उसका जो नया पद है, उन सबसे उसने नये आचार-विचारों को ग्रहण कर लिया है······"



स्वतन्त्रता की प्राप्ति

"हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सब मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं, उनके स्रष्टा ने उन्हें कुछ अनपहरणीय अधिकारों से सम्पन्न किया है, और इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और सुख-प्राप्ति के प्रयत्न भी हैं।"

—स्वतन्त्रता की घोषणा ४ जुलाई, १७७६

यूनाइटेड स्टेट्स का द्वितीय प्रेजिडेण्ट जॉन ऐडम्स ऐसी परिपक्व वृद्धावस्था तक जीवित रहा था कि मनुष्य उसमें अपनी युवावस्था के कार्यों पर दार्शनिक दृष्टि से विचार करने में आनन्द का अनुभव करता है। अपने अन्तिम वर्षों में, पीछे की घटनाओं के स्मारक अपने एक पत्र में उसने लिखा था कि अमेरिकन "क्रान्ति का आरम्भ युद्ध से पहले ही (वस्तुतः १६२० में) हो चुका था। क्रान्ति तो लोगों के मनों और हृदयों में विद्यमान थी।" उसने लिखा था कि जिन सिद्धान्तों और भावनाओं से प्रेरित होकर अमेरिकनों ने क्रान्ति की, उनकी खोज "देश के इतिहास में दो सौ वर्ष पीछे हटकर करनी चाहिए जबकि अमेरिका में प्रथम खेत बोया गया था।"

परन्तु व्यवहारतः इंग्लैंड और अमेरिका के मार्ग सन् १७६३ से खुले तौर पर पृथक् होने आरम्भ हुए। उस समय जेम्स टाउन (वर्जिनिया) में पहली बस्ती को बसे डेढ़ सौ वर्ष हो चुके थे, अनेक उपनिवेश आर्थिक तथा सांस्कृतिक दृष्टियों से बलवान् बन चुके थे और प्रायः सब उपनिवेश वर्षों तक स्वशासन में रह चुके थे। उनकी आबादी उस समय १५ लाख से अधिक थी। सन् १७०० में यह केवल ढाई लाख थी।

परन्तु उपनिवेशों की भौतिक उन्नति का महत्त्व निरी जनसंख्या की वृद्धि से प्रकट होने वाले महत्त्व की अपेक्षा कहीं अधिक था। अठारहवीं शताब्दी में यूरोपियन आगन्तुकों के कारण औपनिवेशिक विस्तार बहुत बढ़ गया था और समुद्र-तट की उत्कृष्ट भूमि पहले ही घिर चुकी थी। इसी कारण पीछे आने वालों को नदियों के मुहानों से परे भीतर की भूमि में जाना पड़ा। व्यापारियों ने पीछे की भूमियों में घूमने-फिरने के पश्चात् वहाँ की समृद्ध घाटियों की कहानियाँ सुनाईं, जिनके कारण सस्ती और अच्छी भूमियों के खोजी साहसी किसान अपने परिवारों को बियाबान में ले जाने और वहाँ साफ़ किये हुए जंगल में अकेले बसने को तैयार हो गए। उनकी कठिनाइयाँ असाधारण थीं। परन्तु सफलताएँ भी बहुत बड़ी थीं। और जब तक भीतर की घाटियाँ स्वावलम्बी अग्रगामियों से भर न गईं तब तक वासी आते चले गए। इस शताब्दी के तीसरे दशक से, भीतर बसने वाले किसान और उनके परिवार, पैनसिलवेनिया की सीमा पर आकर, शेनानडोआ घाटी में बसते हुए, अन्य जल-मार्गों द्वारा अधिक दूर के प्रदेश 'पश्चिम' में प्रविष्ट होने लगे।

१७६३ तक ग्रेट ब्रिटेन ने अपने (अधिकतर) उपनिवेशों के विषय में कोई सुसम्बद्ध साम्राज्य-नीति निर्धारित नहीं की थी। मुख्य सिद्धान्त व्यापारिक था कि उपनिवेश मातृ-देश को कच्चा माल देते रहें और तैयार माल में उसके साथ स्पर्द्धा न करें। परन्तु इस पर कठोरता से अमल नहीं किया गया और उपनिवेशों ने अपने-आपको कभी भी साम्राज्य का अंग नहीं समझा। प्रत्युत वे अपने-आपको इंग्लैंड के समान ही स्वतन्त्र कॉमनवेल्थ अथवा स्टेट समझते रहे और लंदन के अधिकारियों के साथ उनका सम्बन्ध शिथिल रहा। परन्तु कुछ काल पश्चात् इंग्लैंड वालों का उत्साह जाग्रत होता था और पार्लिमैण्ट या किंग उपनिवेशों की आर्थिक हलचलों और शासनों को इंग्लैंड की इच्छा और आवश्यकता के अनुसार अधिक अधीन बनाने का यत्न करते थे। औपनिवेशिकों का बहुमत ऐसी अधीनता के विरुद्ध था और



१७७३ में बोस्टन के नागरिकों की एक महती चाय-सभा उपनिवेशों में चाय मंगाने और बेचने का एकाधिकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी को और उसके एजेण्टों को सौंपने के क़ानून के विरोध में हुई थी।

उपनिवेशों का यह भय कि कहीं इंग्लैंड आज्ञा-भंग के कारण बदला न ले, नई दुनिया तथा मातृ-देश के बीच तीन सहस्र मील चौड़े समुद्र होने के कारण कुछ दबा रहता था।

इस दूरी के अतिरिक्त अमेरिकन बियाबान के जीवन की परिस्थितियाँ भी अपना प्रभाव डालती थीं और उन्होंने, असीम स्थान होने के कारण, नगरों और ग्रामों में पलकर आये हुए स्त्रियों तथा पुरुषों को समाज-प्रधान जीवन के स्थान पर व्यक्ति-प्रधान जीवन अपनाने को विवश किया।

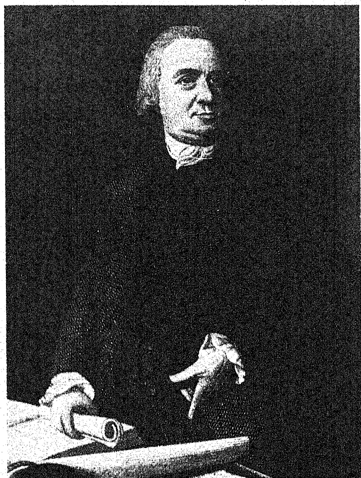
नई परिस्थितियों की प्रत्येक वस्तु वासियों को ब्रिटिश सरकार की शक्ति तो क्या, आवश्यकता तक भी भुला देने वाली थी। राजनैतिक संगठन का आधार तो वही रहा जो इंग्लैण्ड में था, परन्तु अतिजटिल अंग्रेज समाज में व्यवस्था-रक्षार्थ जो हजारों क़ानून आवश्यक थे वे विरल बसे हुए जंगल में असंगत और अनावश्यक हो गये थे; और उनके स्थान पर औपनिवेशिकों ने अपने क़ानून बना लिये। उन्हें न तो सरकार से डर का कोई कारण था और न उसकी कोई आवश्यकता थी। वे अपनी रक्षा आप करते थे। नियन्त्रण से उन्हें घृणा हो गई थी और वे "जब जैसे चाहते वैसे ही चलते थे।"

राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए जूझते रहने की अंग्रेजों की पुरानी परम्पराएँ वे साथ लाए थे और उनसे उन्होंने आरम्भ से ही लाभ उठाया। उनके फलीभूत विचार वर्जिनिया के प्रथम चार्टर में नियम पूर्वक लिपिबद्ध कर दिए गये थे, जिनके अनुसार अंग्रेज औपनिवेशिक सब स्वतन्त्रताओं, मताधिकारों और छूटों का उपयोग ऐसे ही कर सकते थे "मानो कि वे अपने इंग्लैण्ड के राज्य में ही जन्मे हों और रहते हों।" व्यवहारतः, उनको मैग्ना कार्टा (महाधिकार-पत्र) और परम्परागत क़ानून के सब लाभ प्राप्त थे। आरम्भिक दिनों में औपनिवेशिक लोग अपने परम्परागत अधिकारों की रक्षा करने में सफल रहे, क्योंकि किंग ने यह हठ किया कि उपनिवेशों पर पार्लिमैण्ट का नियन्त्रण नहीं है। उपनिवेशों के विषय में कोई साम्राज्यवादी नीति निर्धारित करने के प्रश्न पर पार्लिमैण्ट का ध्यान जाने से पूर्व ही वे बलवान् हो चुके थे और अपने मार्ग पर अग्रसर होने लगे थे।

नये महाद्वीप पर पाँव रखने के प्रथम वर्ष से ही औपनिवेशिक लोग इंग्लिश क़ानून और संविधान के अनुसार चलने लगे थे—उनकी लेजिस्लेटिव असेम्बलियाँ थीं, शासन-

पद्धति प्रातिनिधिक थी और परम्परागत क़ानून के अनुसार वैयक्तिक स्वतन्त्रता की गारण्टियों को माना जाता था। परन्तु क़ानून बनाने में दृष्टिकोण अधिकाधिक अमेरिकन होता चला गया और अंग्रेजी परम्पराओं अथवा प्रथाओं पर न्यून से न्यूनतर ध्यान दिया जाने लगा। परन्तु इंग्लैण्ड के नियन्त्रण से मुक्ति उपनिवेशों को बिना संघर्ष के प्राप्त नहीं हुई। उपनिवेशों का इतिहास उन संघर्षों के विवरण से भरा हुआ है जो कि निर्वाचित असेम्बलियों और गवर्नरों में हुआ करते थे। बहुधा औपनिवेशिक जनता किंग द्वारा नियुक्त इन गवर्नरों को शक्तिहीन करने में सफल हो जाती थी, क्योंकि साधारणतया गवर्नरों को "निर्वाह-व्यय असेम्बली के अतिरिक्त और कहीं से नहीं मिल सकता था।" कभी-कभी गवर्नरों को हिदायत दी जाती थी कि वे प्रभावशाली औपनिवेशिकों को लाभ वाले पद और भूमि आदि देकर किंग की योजनाओं का समर्थक बना लें। परन्तु बहुधा ये अधिकारी उक्त लाभ की वस्तुएँ प्राप्त

अमेरिकन क्रान्ति को भड़काने वाला सैम्युएल ऐडम्स। इसने अपना जीवन ही इंग्लैण्ड से पृथक् होने की निरन्तर उत्तेजक अपीलें करते रहने के अर्पण कर दिया था।



कर लेने के पश्चात् स्थानीय पक्ष का पोषण करने लगते थे।

प्रान्तिक गवर्नर किंग की सर्वोपरिता के सिद्धान्त के और शासन पर बाहरी नियन्त्रण के प्रतिनिधि माने जाते थे और जन-निर्वाचित असेम्बलियाँ स्थानीय स्वतन्त्रता तथा लोकतान्त्रिक सिद्धान्त की। फलतः इन दोनों में बार-बार होने वाला संघर्ष, औपनिवेशिकों में अमेरिकन और इंग्लिश स्वार्थों के भेद की भावना को अधिकाधिक मात्रा में जाग्रत करता रहता था। ज्यों ज्यों समय बीतता गया त्यों-त्यों असेम्बलियाँ गवर्नरों और उनकी कौंसिलों के कर्तव्यों को अपने हाथ में लेती गईं। इस प्रकार धीरे-धीरे औपनिवेशिक शासन का गुरुत्व-केन्द्र लण्डन से हटकर अमेरिकन प्रान्तों की राजधानियाँ बन गईं। १८वीं शताब्दी के सातवें दशक के आरम्भ में एक बार उपनिवेशों और मातृ-देश के इन सम्बन्धों में भारी परिवर्तन लाने का यत्न किया गया था। इस यत्न का प्रधान कारण यह था कि उत्तरी अमेरिका से फ्रांसीसी निकाले जा चुके थे।

जब ब्रिटिश लोग अटलांटिक तट पर छोटे-छोटे खेत बोने, बड़ी-बड़ी खेतियाँ जमाने और हलचल-भरे नगर बसाने में व्यस्त थे तब फ्रांसीसी लोग पूर्वी कैनाडा की सेन्ट लॉरेन्स घाटी में एक भिन्न प्रकार का उपनिवेश बसा रहे थे। फ्रांसीसी आगन्तुकों में वासी तो कम थे, परन्तु अन्वेषक, मिशनरी और फ़र के व्यापारी बहुत थे। उन्होंने मिसिसिपी नदी पर भी अधिकार कर लिया था और उत्तर-पूर्व में क्विबेक से लेकर दक्षिण में न्यू ओर्लियन्स तक दुर्गों और व्यापारिक चौकियों की एक पंक्ति बनाते हुए बालचन्द्र की आकृति का साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इस प्रकार वे ब्रिटिश लोगों को ऐप्पैलेच्यन पर्वत की पूर्ववर्ती तंग पट्टी में ही भींच देने का यत्न करते प्रतीत होते थे।

ब्रिटिश लोग "फ्रान्सीसियों के अनधिकृत प्रवेश" को रोकने का देर से यत्न कर रहे थे। सन् १६१३ में फ्रांसीसी और अंग्रेज औपनिवेशिकों में स्थानीय टक्करें हुई थीं। संगठित युद्ध भी हुए थे जो कि इंग्लैण्ड और फ़्रान्स के व्यापक पारस्परिक संघर्ष का अमेरिकन भाग थे। १६८६ और १६९७ के मध्य में, यूरोपियन "पलैटिनेट युद्ध" के अमेरिकन भाग के रूप में "किंग विलियम का युद्ध" हुआ था। १७०१ से १७१३ तक यूरोप में "स्पैनिश उत्तराधिकार का युद्ध" हुआ और अमेरिका में "क्वीन ऐन का"। १७४४ से १७४८ तक यूरोप में "आस्ट्रियन उत्तराधिकार का

युद्ध" चला और अमेरिका में "किंग जॉर्ज" का। इंग्लैण्ड को इन युद्धों द्वारा कुछ लाभ प्राप्त हो जाने पर भी इन संघर्षों से साधारणतया निर्णय कुछ नहीं हुआ और फ्रान्स की स्थिति महाद्वीप में बहुत बलवान बनी रही।

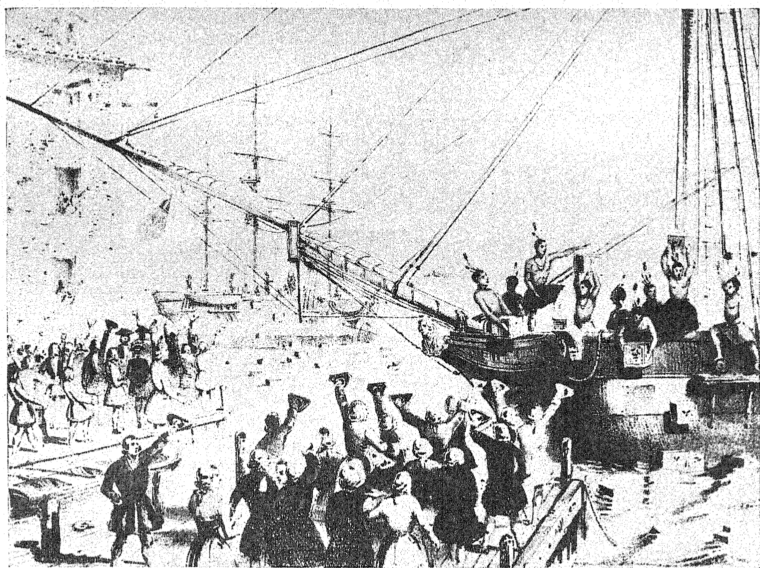
१७५० से १७५६ तक यह संघर्ष अपने अन्तिम रूप में पहुँच गया। १७४८ में एक्सला-शैपल की सन्धि के पश्चात् फ्रांसीसियों ने मिसिसिपी घाटी पर अपना कब्जा अधिक दृढ़ कर लिया। इसी समय एलिगैनीज के पार इंग्लिश औपनिवेशिकों की प्रगति का वेग बढ़ गया। इस प्रकार एक ही प्रदेश पर अधिकार करने के लिए दौड़ होने लगी। फलतः सन् १७५४ का शस्त्र-युद्ध हुआ। इसमें एक ओर २२-वर्षीय जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में वर्जिनिया की नागरिक सेना थी और दूसरी ओर नियमित फ्रांसीसी सिपाहियों का एक दल। दोनों ओर से अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के इण्डियन मित्र भी लड़ रहे थे। यह युद्ध फ्रैंच और इण्डियन युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है और इसने सदा के लिए यह निर्णय कर दिया कि उत्तरी अमेरिका पर अंग्रेजों का प्रभुत्व रहेगा या फ्रांसीसियों का।

ब्रिटिश उपनिवेशों में एकता और कार्य-तत्परता की आवश्यकता इससे अधिक अब से पूर्व कभी नहीं पड़ी थी। फ्रांस के कारण न केवल ब्रिटिश साम्राज्य अपितु अमेरिकन औपनिवेशिकों की स्थिति भी संकट में पड़ गई थी, क्योंकि मिसिसिपी घाटी पर अधिकार होने के कारण फ्रांस अमेरिकन वासियों का पश्चिम की ओर विस्तार रोक सकता था और इस विस्तार को रोकने का अर्थ था औपनिवेशिक बल और समृद्धि के स्रोत की समाप्ति। कैनाडा और लूइजियाना की फ्रैंच सरकार का न केवल बल बढ़ चुका था, इण्डियनों पर भी उसका प्रभाव बहुत हो गया था। इरौक्वाइ इण्डियनों से ब्रिटिशों की परम्परागत मित्रता थी परन्तु वे भी फ्रांस की ओर झुकते जा रहे थे। इण्डियन मामलों से सुपरिचित प्रत्येक ब्रिटिश वासी जानता था कि युद्ध हुआ तो इस संकट के निवारणार्थ बहुत कठोर उपायों का अवलम्बन करना पड़ेगा।

इस परिस्थिति में इण्डियनों के साथ सम्बन्ध क्रमशः बिगड़ते जाने के समाचार सुनकर ब्रिटिश बोर्ड ऑव् ट्रेड ने न्यूयॉर्क के गवर्नर और अन्य उपनिवेशों के कमिश्नरों को आज्ञा दी कि वे इरौक्वाइ सरदारों की सभा बुलाकर उनके साथ संधि कर लें। इसीलिए जून १७५४ में न्यूयॉर्क, पैनसिलवेनिया, मैरिलैण्ड और न्यू-इंग्लैण्ड उपनिवेशों के प्रतिनिधि ऑलबानी में इरौक्वाइ सरदारों से मिले। इण्डियनों ने अपनी शिकायतें पेश कीं और प्रतिनिधियों ने उन्हें सत्य मान कर उनके निवारणार्थ जरूरी उपाय किये जाने की सिफारिश की।

परन्तु कांग्रेस इण्डियन समस्याएं हल करनेके मूल प्रयोजन से भी आगे बढ़ गई। उसने घोषणा की कि अमेरिकन उपनिवेशों को मिलाकर एक यूनियन बना देना "उनकी रक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक" है और उपस्थित औपनिवेशिक प्रतिनिधियों ने बेंजमिन फ्रैंकलिन द्वारा लिखित यूनियन की ऑलबानी योजना को स्वीकार कर लिया। उसमें लिखा था कि किंग एक प्रेजिडेण्ट नियत करे और वह असेम्बलियों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की ग्रैंड कौन्सिल के साथ काम करे। कौन्सिल में प्रत्येक उपनिवेश का प्रतिनिधित्व सार्वजनिक कोष में उसके द्वारा दी हुई आर्थिक सहायता के अनुपात से हो। पश्चिम में सब ब्रिटिश स्वार्थ सरकार के अधिकार में रहें। परन्तु फ्रैंकलिन की योजना को उपनिवेशों में से किसी ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि कोई भी टैक्स लगाने के अधिकार या पश्चिम के विकास पर नियन्त्रण, किसी बाहरी संस्था के हाथ में सौंपना नहीं चाहता था।

सब मिलाकर, उपनिवेश युद्ध की सुव्यवस्थित सहायता या प्रबल समर्थन नहीं कर रहे थे। कोई भी योजना उनमें "किंग के प्रति उनकी कर्तव्य-भावना" को जाग्रत करने में सफल नहीं हो रही थी और अलग-अलग उपनिवेश जो सहायता कर रहे थे वह भी कोई बड़ा प्रेरक कारण न होने से प्रभावहीन हो गई थी। औपनिवेशिकों को लग रहा था कि युद्ध तो फ्रांस और इंग्लैण्ड में साम्राज्य के लिए हो रहा है। उन्हें इस बात पर कुछ अफसोस नहीं था कि ब्रिटिश सरकार को औपनिवेशिक युद्ध के लिए बड़ी संख्या में नियमित सेनाएँ भेजनी पड़ती हैं और न उन्हें इस बात का कुछ दुःख था कि प्रान्तिक सेनाओं के स्थान पर युद्ध में 'रेड कोट' (ब्रिटिश सेनाएँ) जीत जाते हैं। यद्यपि व्यवहार में व्यापार का अर्थ "शत्रु के साथ व्यापार" करना था फिर भी उन्हें व्यापार बन्द करने का कोई उचित कारण नहीं दीखता था। औपनिवेशिकों की हार्दिक सहायता के इस अभाव और अनेक बार सैनिक पराजयों के बावजूद, अन्त में जीत इंग्लैण्ड की ही हुई। इसका कारण उसकी सेनाओं की अच्छी सामरिक अवस्थिति और उनका योग्य नेतृत्व था। आठ वर्ष के संघर्ष के पश्चात् कैनाडा और मिसिसिपी घाटी का उत्तरी भाग जीत



शान्तिमय उपायों द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एकाधिकार समाप्त करने में असफल होकर औपनिवेशिकों ने प्रत्यक्ष कार्रवाई शुरू कर दी। वे इण्डियन वेश पहनकर जहाज़ों पर चढ़ जाते, पेटियाँ तोड़ देते और चाय समुद्र में फेंक देते थे।

लिये गए और उत्तरी अमेरिका में फ्रेंच साम्राज्य का स्वप्न विलीन हो गया।

अमेरिका में, भारत में और साधारणतया औपनिवेशिक संसार में सर्वत्र, फ्रांस से जीत जाने के पश्चात् ब्रिटेन को साम्राज्य की समस्या का सामना करना ही पड़ा—अब यह आवश्यक हो गया कि वह रक्षा-व्यवस्था, विविध प्रदेशों और जातियों के विभिन्न स्वार्थों के समन्वय और साम्राज्य में रक्षा-व्यय के समान वितरण के लिए अपने अधीन विस्तृत भू-भागों का संगठन करे। अकेले उत्तरी अमेरिका में ही समुद्र-पार का ब्रिटिश प्रदेश दुगने से अधिक बढ़ गया था। अटलांटिक समुद्र-तट की तंग पट्टी में अब कैनाडा का विस्तृत मैदान और मिसिसिपी तथा ऐलिगैनीज के मध्य का प्रदेश मिलकर एक खासा साम्राज्य बन गया था। पहले आबादी में प्रधानता प्रौटेस्टैण्ट अंग्रेजों या अंग्रेज बने हुए अन्य यूरोपियनों की थी। किन्तु अब उसमें कैथोलिक फ्रांसीसी और बहुसंख्यक इण्डियन भी सम्मिलित हो गए थे। पुराने प्रदेश को छोड़ भी दें तो अकेले नये प्रदेश की ही रक्षा और शासन के लिए धन-राशि की और बड़ी मात्रा में मनुष्यों की आवश्यकता थी। पुरानी औपनिवेशिक पद्धति (जो वास्तव में पद्धति नहीं कहला सकती) स्थिति का सामना करने के लिए प्रत्यक्ष ही अपर्याप्त थी। युद्ध की संकटावस्था में भी पुरानी पद्धति औपनिवेशिकों का सहयोग अथवा समर्थन प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकी थी, फिर शान्ति-काल में तो उससे आशा ही क्या हो सकती थी।

ब्रिटिश दृष्टिकोण से नई साम्राज्य-नीति की आवश्यकता स्पष्ट थी। परन्तु अमेरिका की परिस्थिति इस परिवर्तन के लिए किसी भी प्रकार अनुकूल न थी। उपनिवेश चिरकाल से बड़ी मात्रा में स्वतन्त्रता भोगने के अभ्यासी थे और अपने विकास की वर्तमान अवस्था में, विशेषतः इस कारण कि फ्रेंच भय अब चला गया था, वे अपनी स्वतन्त्रता को बढ़ाना ही चाहते थे, घटाना नहीं। नई पद्धति को अमल में लाते और अपने नियन्त्रण को दृढ़ करते हुए इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों को, स्वशासन में निष्णात और बाह्य हस्तक्षेप के असहिष्णु औपनिवेशिकों का, स्वावलम्बी और साहसी व्यापारियों का, राजनीतिक दृष्टि से जाग्रत यान्त्रिकों का, साम्राज्यवादी नियन्त्रण के विरोधी तथा अभिमानी प्लाण्टरों का, कानून को बहुत कम जानने वाले और उसकी बहुत कम परवाह करने वाले पहाड़ी किसानों का और ऐसी औपनिवेशिक असेम्बलियों का सामना करना पड़ा जो कि अपने निर्वाचकों के अधिकारों के अपहरण का तुरन्त विरोध करती थीं। कुछेक अल्पसंख्यकों को छोड़कर सबका यह निश्चय और प्रबल प्रयत्न था कि जिस अमेरिका को उन्होंने बियाबान से अपने निवास-स्थान में परिणत किया है उसमें वे अपने ही ढंग से रहेंगे।

ब्रिटिशों ने सबसे पहले आन्तरिक संगठन की समस्या का सामना किया। कैनाडा और ओहायो घाटी को जीतने के पश्चात् ब्रिटेन का प्रथम कर्तव्य यह हो गया कि वह एक ऐसे शासन-संगठन का और भूमि तथा धर्म-नीति का निर्माण करे जिससे कि फ्रांसीसी और इण्डियन निवासियों के विरोध का सामना न करना पड़े। इस कार्य में उसे उन तटवर्ती उपनिवेशों से संघर्ष करना पड़ा, जिनकी आबादी शीघ्रातिशीघ्र बढ़ती जा रही थी और जो नवविजित प्रदेशों का स्वयं उपभोग करने पर तुले हुए थे। उन्हें नई भूमि की आवश्यकता थी, इसलिए अनेक उपनिवेशों ने अपने चार्टरों के आधार पर मिसिसिपी नदी तक पश्चिम में फैल जाने के अधिकार का दावा किया। यह समझकर कि हाल में विजित प्रदेशों पर उनका अधिकार है लोग अधिकाधिक संख्या में पर्वतों को पार कर-करके आगे बढ़ने लगे। ब्रिटिश सरकार को भय था कि यदि अग्रणी किसान नई भूमियों में बहुसंख्या में पहुँच गए तो इण्डियनों के साथ निरन्तर युद्ध का सामना करना पड़ जायगा। उसका विचार था कि असन्तुष्ट इण्डियनों को शान्त होने के लिए अवसर देना चाहिए, औपनिवेशिकों को तो भूमियाँ धीरे-



क्रान्ति से पूर्व के दशक में लोग जहाँ भी एकत्र होते वहीं राजनीतिक चर्चा छिड़ जाती। ग्रामों और नगरों में इन चर्चाओं से विचारों को दृढ़ करने और सार्वजनिक भावना जाग्रत करने में बड़ी सहायता मिलती थी।

धीरे और क्रमशः दी जा सकती हैं। फलतः १७६३ में एक राजकीय घोषणा द्वारा ऐलिगैनी, फ्लोरिडा, मिसिसिपी और क्विबेक के मध्य का समस्त पश्चिमी प्रदेश इण्डियनों के लिए सुरक्षित कर दिया गया। यद्यपि इसका पालन पूर्णतया कभी नहीं किया गया परन्तु क्षुब्ध औपनिवेशिकों ने इस आज्ञा को पश्चिमी भूमि पर बसने के अपने मौलिक अधिकार की पूर्ण अवहेलना समझा।

इससे भी अधिक गम्भीर परिणाम ब्रिटेन की नई आर्थिक-नीति के हुए। नवविस्तीर्ण साम्राज्य की व्यवस्था के लिए धन की आवश्यकता थी और यदि उसका बोझ केवल इंग्लैंड के करदाताओं पर न डालना हो तो उसमें उपनिवेशों को भी योग देना ही चाहिए था। परन्तु उपनिवेशों से टैक्सों का संग्रह बलवान् केन्द्रिक शासन द्वारा ही हो सकता था और उसका संगठन औपनिवेशिक स्वशासन कम करके ही किया जा सकता था। नई पद्धति आरम्भ करने के लिए प्रथम पग १७६४ के शुगर ऐक्ट के रूप में उठाया गया। जैसा कि दो

वर्ष पश्चात् इस ऐक्ट के संशोधन से प्रकट हुआ, इसका एकमात्र प्रयोजन आय एकत्र करना था। व्यापार के नियन्त्रण से इसका कोई सम्बन्ध नहीं था। परन्तु इसे बनाया एक व्यापार-नियन्त्रक क़ानून के स्थान पर गया था। १७३३ के मोलैसिज ऐक्ट द्वारा अनइंग्लिश प्रदेशों से शीरे के आयात पर भारी कर लगा हुआ था। संशोधित शुगर ऐक्ट के अनुसार सभी प्रदेशों से आगत शीरे पर एक साधारण कर लगाया गया। यह ऐक्ट रेशम, कॉफ़ी, शराबों और अन्य अनेक विलास-सामग्रियों पर भी कर लगाता था। इसके पालनार्थ कस्टम अधिकारियों को अधिक दृढ़ता और तत्परता से कार्य करने की आज्ञा दी गई। ब्रिटिश युद्धपोतों को हिदायत दी गई कि वे अमेरिकन समुद्र में चोरी से माल लाने वालों को पकड़ लें। किंग के अफ़सरों को बिना नाम के वारण्टों द्वारा अधिकार दिया गया कि वे सन्देह में किसी भी स्थान की तलाशी ले सकते हैं।

न्यू-इंग्लैंड के व्यापारियों में नये कर लगाने से इतना असन्तोष नहीं फैला, जितना कि उनकी वसूली के लिए प्रयोग में लाये गए कठोर उपायों से। यह बात उनके लिए सर्वथा नई थी। एक पीढ़ी से अधिक काल से न्यू-इंग्लैंड वाले अपना अधिकतर शीरा फ्रांसीसी और डच वैस्ट इंडीज़ से बिना कर दिये मँगाते रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वल्प कर का लगाना भी विनाशकारी सिद्ध होगा। शुगर ऐक्ट की भूमिका से औपनिवेशिकों को अपना असन्तोष वैधानिक रूप में प्रकट करने का अवसर मिल गया। साम्राज्य के व्यापार को नियन्त्रित करने के लिए उपनिवेश की वस्तुओं पर टैक्स लगाने का तो पार्लिमैंट का अधिकार सिद्धान्ततः (व्यवहार में नहीं) देर से माना जा रहा था, "परन्तु १७६४ के रेवेन्यू ऐक्ट का हवाला देकर इस राज्य की आय बढ़ाने के लिए" टैक्स लगाने का अधिकार नई बात थी, अतएव विवादास्पद थी।

इस भारी विवाद में यह वैधानिक प्रश्न पचर बन गया, और इसने अन्ततोगत्वा साम्राज्य को टुकड़ों में बाँट दिया। जेम्स ओटिस नामक एक देशभक्त ने लिखा कि "पार्लिमैंट के इस एक कानून ने छः महीनों में इतने अधिक आदमियों को इतना अधिक सोचने के लिए विवश कर दिया जितना कि इन आदमियों ने अपने जीवन-भर में पहले कभी नहीं सोचा होगा।" व्यापारियों, धारासभाओं और नगर-सभाओं ने कानून को अनुचित बतलाकर उसका प्रतिवाद किया। सैम्युएल ऐडम्स सरीखे औपनिवेशिक वकीलों को इसकी भूमिका में बिना प्रजा की सलाह के उस पर टैक्स लादने का प्रथम आभास दिखलाई दिया, और इसी नारे से आकृष्ट होकर अनेकों देशभक्त मातृ-देश के विरुद्ध उठ खड़े हुए।

बाद को उसी वर्ष में पार्लिमेण्ट ने एक करेन्सी ऐक्ट, जिसके अनुसार "हिज मैजेस्टी के क़िसी भी उपनिवेश में आज के बाद जारी की हुई हुण्डियाँ कानूनन जायज़ नहीं मानी जायँगी", पास किया। और क्योंकि उपनिवेशों का व्यापार-सन्तुलन प्रतिकूल रहता था और उनको दुर्लभ मुद्रा की निरन्तर कमी रहती थी, इसलिए इस नये क़ानून ने उनकी आर्थिक कठिनाई को और भी बढ़ा दिया। सन् १७६५ के आरम्भ में बिलिटिंग ऐक्ट के नाम से जो क़ानून पास किया गया वह भी औपनिवेशिक दृष्टि से आपत्तिजनक था। इस क़ानून के अनुसार यह व्यवस्था की गई थी कि शाही सेनाएँ जहाँ कहीं तैनात की जायँगी वहाँ के निवासी उनके लिए स्थान और कुछ वस्तुएँ देने को बाधित होंगे।

इन क़ानूनों का विरोध तो प्रबल था ही, नई औपनिवेशिक पद्धति को आरम्भ करने के लिए जो अन्तिम क़ानून

जिस दिन स्टाम्प ऐक्ट पर अमल शुरू हुआ उसी दिन स्टाम्प गलियों में जलाये गए। घण्टे बजे, दुकानें बन्द हो गईं, झण्डे नीचे हो गए, और समाचार-पत्रों ने स्टाम्प चिपकाने के स्थान पर मुर्दा-खोपड़ियाँ छापीं।



बनाया गया उसने विरोध को संगठित रूप दे दिया। यह था प्रसिद्ध स्टाम्प ऐक्ट। इसके अनुसार समाचारपत्रों, एक तरफ़ छपे हुए कागज़ों, पुस्तिकाओं, लाइसेन्सों, इकरारनामों और अन्य क़ानूनी दस्तावेज़ों पर रेवेन्यू स्टाम्प लगाना आवश्यक ठहराया गया था, और कहा गया था कि इससे जो आय होगी वह एकमात्र उपनिवेशों की "अन्दर और बाहर से रक्षा करने में" व्यय की जायगी। इस टैक्स को एकत्र करने के लिए एजेण्ट केवल अमेरिकन नियुक्त किए जाने वाले थे। इसका बोझ सब पर इतने समान रूप में और हलका डाला गया था कि यह पार्लिमेण्ट में बिना विवाद के पास हो गया।

परन्तु इसका स्वागत तेरहों उपनिवेशों में इतना तीखा हुआ कि उससे नरम लोग सर्वत्र आश्चर्य में आ गए। इस क़ानून का विशेष दुर्भाग्य यह था कि उपनिवेशों में इसका सबसे अधिक विरोध पत्रकारों, वकीलों, पादरियों, व्यापारियों और व्यवसायियों आदि प्रभावशाली लोगों ने किया जो अपने विचार प्रकट करने में समर्थ थे। इसका प्रभाव उत्तर, दक्षिण और पश्चिम, देश के सब भागों पर, समान रूप से पड़ता था। व्यापारियों के लदान के सब रुक्कों पर इससे टैक्स लगता था। इस कारण तुरन्त ही बड़े-बड़े व्यापारी संगठित हो गए और उन्होंने इंग्लैण्ड का विरोध करने के लिए इंग्लिश माल का संगठित रूप से बायकाट आरम्भ कर दिया। व्यापार कुछ समय के लिए बन्द हो गया और १७६५ की ग्रीष्म ऋतु में तो मातृ-देश के साथ वह बहुत ही कम हो गया। प्रमुख नागरिकों ने "स्वतन्त्रता के पुत्रों" के दल बना लिए और शीघ्र ही राजनीतिक विरोध हिंसामय हो गया। उत्तेजित भीड़ें बोस्टन की चक्करदार गलियों में घूमने लगीं। मैसैच्यूसैट्स से साउथ कैरोलाइना तक यह क़ानून मृतप्राय हो गया। लोग टोलियां बना बनाकर अभागे एजेण्टों को अपने पदों से इस्तीफ़ा देने के लिए विवश करने और घृणित स्टाम्पों को नष्ट करने लगे।

स्टाम्प ऐक्ट ने न केवल क्रान्तिकारी प्रतिरोध को भड़का दिया, अपितु अमेरिकनों को साम्राज्य के साथ सम्बन्धों की ऐसी कल्पना करने को विवश किया जो केवल अमेरिकन परिस्थितियों में ठीक बैठती थी। उदाहरणार्थ, वर्जिनिया असेम्बली ने कई प्रस्ताव पास किए जिनमें जनता को प्रतिनिधित्व का अधिकार दिए बिना टैक्स लगाने की नीति की निन्दा की गई थी और उसे औपनिवेशिक स्वतन्त्रता का बाधक बतलाया गया था। कुछ दिन पश्चात्, मैसैच्यूसैट्स हाउस (सभा) ने स्टाम्प ऐक्ट की विभीषिका पर विचार करने के लिए न्यूयार्क में सब उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की एक कांग्रेस बुलाई। यह अक्टूबर १७६५ में हुई। यह अमेरिकनों की प्रथम अन्तः-औपनिवेशिक सभा थी। नौ उपनिवेशों के सत्ताईस योग्य और साहसी व्यक्तियों ने औपनिवेशिक लोकमत को अमेरिकन मामलों में पार्लिमेण्ट के हस्तक्षेप के विरुद्ध जाग्रत करने के इस अवसर से लाभ उठाया। बहुत-से वादविवाद के पश्चात् कांग्रेस ने कई प्रस्ताव पास किये जिनमें दृढ़तापूर्वक कहा गया था कि "हमारी धारासभाओं के अतिरिक्त हम पर न कभी किसी ने कोई टैक्स लगाये और न संविधानानुसार लगाए जा सकते हैं" और स्टाम्प ऐक्ट की "प्रवृत्ति स्पष्टतः उपनिवेशों के अधिकारों तथा स्वतन्त्रताओं का दमन करने की है।"

इस प्रकार उठा हुआ यह सांविधानिक प्रश्न प्रतिनिधित्व की समस्या पर जाकर केन्द्रित हो गया। उपनिवेशों का मत था कि जब तक स्वयं उनके प्रतिनिधि चुनकर हाउस ऑव् कॉमन्स में नहीं जाते तब तक पार्लिमेण्ट में उनका प्रतिनिधित्व हुआ नहीं माना जा सकता। यह मत "वास्तविक प्रतिनिधित्व" के इंग्लिश सिद्धान्त से टकरा जाता था—जो कि स्थान की अपेक्षा श्रेणियों और वर्गों के प्रतिनिधित्व पर आधारित था। अधिकतर ब्रिटिश अधिकारियों का विचार था कि पार्लिमेण्ट एक साम्राज्य-संस्था है और वह उपनिवेशों की भी उतनी ही प्रतिनिधि तथा शासिका है जितनी मातृ-देश की। अमेरिकन नेताओं का कथन था कि 'साम्राज्य' की पार्लिमेण्ट उनके लिए कोई नहीं, उनका वैधानिक सम्बन्ध तो एकमात्र किंग से है। यदि किंग चाहे तो किसी उपनिवेश से धन माँग सकता है, परन्तु ब्रिटिश प्रजा जन पर टैक्स, वह चाहे इंग्लैंड में हो चाहे अमेरिका में, उसके ही प्रतिनिधि लगा सकते हैं। स्वभावतः इंग्लिश पार्लिमेण्ट के लोग (सदस्य) इस औपनिवेशिक युक्ति-क्रम को मानना नहीं चाहते थे। परन्तु ब्रिटिश व्यापारियों का दबाव काम कर गया। अमेरिकन बायकाट से प्रभावित होकर उन्होंने "क़ानून-मन्सूख़" आन्दोलन का साथ दिया और पार्लिमेण्ट ने दबकर १७६६ में स्टाम्प ऐक्ट मन्सूख़ कर दिया और शुगर ऐक्ट को बहुत बदल दिया। इस समाचार से उपनिवेशों में सर्वत्र प्रसन्नता छा गई। व्यापारियों ने बायकाट उठा दिया; 'स्वतन्त्रता के पुत्र' शान्त हो गए;

व्यापार खुल गया और शान्ति समीप ही आती दीखने लगी।

परन्तु यह विश्राम-मात्र था। १७६७ में फिर कुछ नये क़ानून बनाये गए और उन्होंने झगड़े के सब कारणों को फिर भड़का दिया। उस समय चार्ल्स टाउनज़ेण्ड ब्रिटेन का वित्त-मन्त्री था। उसे सरकार की नई वित्त-नीति निर्धारित करने का काम सौंपा गया। ब्रिटिश कर घटाने के लिए, उसने अमेरिकन-व्यापार पर लगे करों का संग्रह चुस्ती से करना शुरू कर दिया और तट-करों का शासन कठोर करने के साथ ही ब्रिटेन से अमेरिका जाने वाले काग़ज़, काँच, सीसे तथा चाय पर नये कर लगा दिए। इस प्रकार जो आय बढ़ती उसका एक भाग उपनिवेशों के गवर्नरों, जजों, कस्टम-अफ़सरों और अमेरिका की ब्रिटिश सेना की सहायता के लिए भी व्यय किया जाने वाला था। टाउनज़ेण्ड का सुझाया हुआ एक अन्य क़ानून उपनिवेशों के उच्च न्यायालयों को बिना नाम के वारण्ट जारी करने का अधिकार देता था, जिससे तट-अधिकारी तलाशी के वारण्ट निकालकर जहाज़ों की तलाशी ले सकते थे। उपनिवेशों में इसके विरुद्ध बड़ी घृणा फैली।

टाउनज़ेण्ड-क़ानूनों के कारण जो आन्दोलन खड़ा हुआ वह यद्यपि स्टाम्प-ऐक्ट-विरोधी आन्दोलन से कम तीव्र था, तथापि पर्याप्त प्रबल था। बोस्टन के व्यापारी किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से बहुत चिढ़ते थे। वहाँ नये क़ानून के प्रयोग से दंगा हो गया। कस्टम-अधिकारियों ने कर वसूल करने का यत्न किया तो उन्हें पीटा गया। इस कारण वहाँ, कस्टम-कमिश्नरों की रक्षार्थ दो रेजिमेण्टें भेजी गईं।

इस पुराने प्यूरिटन नगर में ब्रिटिश सैनिकों की उपस्थिति उपद्रव का स्थायी कारण बन गई और अठारह मास तक असन्तोष की आग सुलगने के पश्चात् ५ मार्च १७७० को नागरिकों और सैनिकों में दंगा हो गया। रेडकोटों (ब्रिटिश-सैनिकों) पर बरफ़ के गोले फेंकने की खिलवाड़ बढ़ते-बढ़ते भीड़ के आक्रमण में बदल गई। किसी ने गोली चलाने की आज्ञा दे दी और तीन बोस्टनवासी सदा के लिए बरफ़ में सो गए। इससे जनता को इंग्लैंड के विरुद्ध भड़काने का आन्दोलनकारियों को अच्छा अवसर मिल गया। इस घटना को 'बोस्टन क़त्ल-आम' का नाम देकर इसे ब्रिटिश अत्याचार तथा हृदयहीनता का प्रत्यक्ष प्रमाण बताया गया।

इस प्रकार विरोध का सामना होने पर १७७० में पार्लिमेण्ट ने सामरिक पलायन करने का निश्चय किया और चाय-कर को छोड़कर शेष सब टाउनज़ेण्ड-कर उठा लिये। चाय-कर इस कारण रखा गया कि जॉर्ज तृतीय के कथनानुसार, अधिकार-रक्षार्थ एक कर तो रहना ही चाहिए था। अधिकतर औपनिवेशिकों ने पार्लिमेण्ट की इस कार्रवाई को "शिकायतों का निवारण" समझा और इंग्लैंड के विरुद्ध आन्दोलन प्रायः शान्त हो गया। 'इंग्लिश चाय' का बायकाट जारी रहा, परन्तु अब आन्दोलन मन्द था और बायकाट की बहुत परवाह नहीं की जाती थी। यह परिस्थिति साधारणतया साम्राज्य-सम्बन्धों के लिए अच्छी मानी जाने लगी। सुख-समृद्धि बढ़ रही थी और अधिकतर औपनिवेशिक नेता अपना मार्ग भविष्य के भरोसे छोड़ देने को तैयार थे। जो काम आन्दोलनों से नहीं हुआ था वह निष्क्रियता से होता दीखने लगा था।

परन्तु शान्ति के त्रिवर्षीय अन्तराल में एक दल, विवाद को सजीव रखने का प्रबल प्रयत्न करता रहा। 'देशभक्तों' अथवा 'गरम-दलीयों' की एक स्वल्प संख्या यही कहती रही कि औपनिवेशिकों की जीत भ्रम-मात्र है और जब तक चाय-कर है तब तक उपनिवेशों पर पार्लिमेण्ट के अधिकार का सिद्धान्त भी रहेगा। इस सिद्धान्त का प्रयोग भविष्य में कभी भी उनकी स्वतन्त्रता को नष्ट करने में किया जा सकता है।

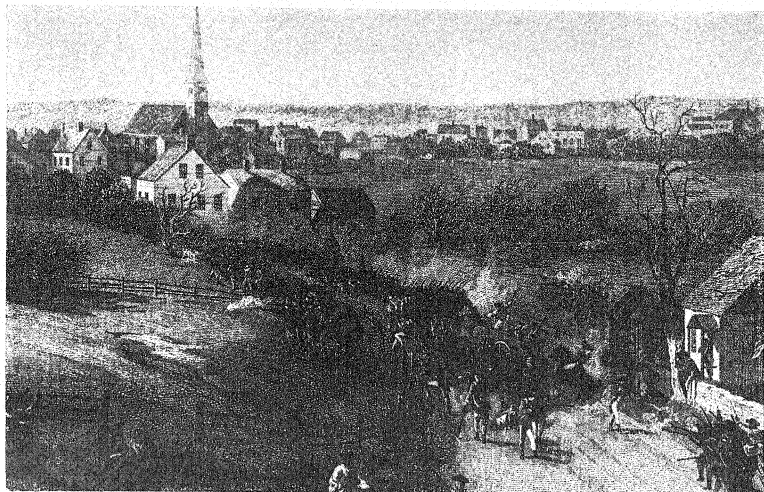
देशभक्तों का सबसे प्रभावशाली और सफल नेता मैसैच्यूसैट्स का सैम्युएल ऐडम्स था। वह देशभक्तों का एक नमूना था। उसके अनथक श्रम का लक्ष्य एक ही था—स्वतंत्रता। राजनीति में वह योग्य और निपुण था। न्यूइंग्लैण्ड की नगर-सभा उसका कार्य-क्षेत्र था। उसकी प्रधान सफलता यह थी कि उसने इन साधारण मनुष्यों को समाज और राजनीति में "उच्च" लोगों के भय से मुक्त कर दिया और उनमें अपने व्यक्तित्व का महत्त्व जाग्रत कर दिया था। उसका दूसरा काम उन्हें आन्दोलन के लिए जाग्रत कर देना था। वह समाचार-पत्रों में लेख छपवाता था, नगर-सभाओं में और प्रान्तिक असेम्बलियों में प्रस्ताव पास करवाता और लोगों की लोकतान्त्रिक भावनाएँ भड़काने के लिए भाषण दिलवाता था। १७७२ में ऐडम्स ने बोस्टन की नगर-सभा में एक "पत्र-व्यवहार समिति" चुनवाई जिसका काम औपनिवेशिकों के अधिकारों और शिकायतों को लेखबद्ध करना और इन विषयों पर अन्य नगरों से पत्र-व्यवहार करना और उनसे अपने प्रश्नों का उत्तर देने की प्रार्थना करना था। यह विचार शीघ्र ही फैल गया। प्रायः सभी उपनिवेशों में इस प्रकार की समितियाँ

चुनी गईं और शीघ्र ही प्रभावशाली क्रान्तिकारी संगठनों का आधार बन गईं।

१७७३ में ब्रिटेन ने ऐडम्स और उसके सहयोगियों के लिए एक अभीष्ट अवसर उपस्थित कर दिया। शक्तिशाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आर्थिक अवस्था संकटापन्न हो गई थी। उसने ब्रिटिश सरकार से प्रार्थना की और उसे उपनिवेशों को निर्यात की जाने वाली तमाम चाय पर एकाधिकार प्राप्त हो गया। टाउनजेण्ड-चाय-कर के कारण उपनिवेशों ने कम्पनी की चाय का बहिष्कार किया हुआ था। १७७० के पश्चात् चाय का क़ानून-विरुद्ध व्यापार इतना बढ़ गया था कि सम्भवतः अमेरिका में खपने वाली चाय का ६० प्रतिशत भाग विदेशों से आता था और उस पर कोई आयात-कर नहीं दिया जाता था। कम्पनी ने अपनी चाय अपने एजेण्टों द्वारा बाज़ार से सस्ते मूल्य पर बेचने का निश्चय किया और इस प्रकार देश में चोरी से आई चाय को लाभहीन करके उपनिवेशों के स्वतन्त्र व्यापारियों को मात दे दी। कम्पनी की इस विचार-शून्य कार्रवाई से औपनिवेशिक व्यापारी भड़क गये और उन्होंने देश-भक्तों से फिर एका कर लिया। वे चाय का अपना व्यापार डूबने से तो भड़के ही थे, एकाधिकार के सिद्धान्त से वे और अधिक चिढ़ गए। प्रायः सभी उपनिवेशों में ईस्ट इण्डिया-कम्पनी को अपनी योजना अमल में लाने से रोकने के उपाय किये गए। बोस्टन के अतिरिक्त सब बन्दरगाहों में कम्पनी के एजेण्टों को नौकरी छोड़ने के लिए उकसाया गया और नई आई हुई चाय या तो इंग्लैण्ड को लौटा दी गई या गोदामों में जमा कर दी गई। परन्तु बोस्टन में एजेण्टों ने इस्तीफ़ा नहीं दिया और उन्होंने विरोध की परवाह न करके, शाही गवर्नर की सहायता से आने वाले माल को उतारने की तैयारियाँ कर लीं। देशभक्तों ने सैम्युएल ऐडम्स के नेतृत्व में इसका उत्तर हिंसा द्वारा दिया। १६ दिसम्बर की रात में लोगों का एक गिरोह मोहौक इण्डियनों का वेश बनाकर चाय के तीन जहाज़ों पर चढ़ गया और उन्होंने चिढ़ उत्पन्न करने वाली ब्रिटिश चाय की पत्तियों को पानी में फेंक दिया।

अब ब्रिटेन के सामने एक भारी संकट-काल था। ईस्ट-इण्डिया कम्पनी ने पार्लिमेंट के एक क़ानून का पालन-मात्र किया था। यदि वह चाय के विनाश की उपेक्षा करती तो एक प्रकार वह संसार के सामने यह मान लेती कि उपनिवेशों पर उसका कोई अधिकार नहीं। ब्रिटेन के अधिकारियों ने प्रायः एक-स्वर से बोस्टन की "चाय पार्टी" के काम की 'विनाश' कहकर निन्दा की और उपद्रवी औपनिवेशिकों को वश में करने के लिए प्रस्तुत उपायों का एक-स्वर से समर्थन किया। ये उपाय थे अनेक क़ानून, जिनका नाम औपनिवेशिकों ने दमनकारी क़ानून रखा। पहला क़ानून था बोस्टन पोर्ट बिल जिसके द्वारा बोस्टन का बन्दरगाह जब तक चाय का मूल्य न दिया जाय तब तक के लिए बन्द कर दिया गया। इस कार्रवाई से नगर का जीवन ही संकटमय हो गया, क्योंकि बोस्टन के समुद्र-द्वार बन्द कर देने का अर्थ था उसका विनाश। अन्य बिलों द्वारा किंग को मैसैच्यूसैट्स के कौंसिलर नियुक्त करने का अधिकार दिया गया, जो कि अब तक निर्वाचित होते थे। जो जूरर अब तक नगर-सभाओं द्वारा चुने जाते थे वे अब शैरिफ़ों द्वारा समन किये (बुलाये) जाने लगे। ये शैरिफ़ गवर्नरों के एजेण्ट होते थे। नगर-सभाएँ अब से केवल गवर्नरों की अनुमति से हो सकती थीं और जजों तथा शैरिफ़ों की नियुक्ति और पद-च्युति भी उन्हीं के हाथ में सौंप दी गई थी। एक क्वार्टरिंग ऐक्ट पास किया गया, जिसके द्वारा स्थानीय अधिकारियों को ब्रिटिश सैनिकों के लिए उचित स्थान तलाश कर देने की आज्ञा दी गई। इस कर्त्तव्य की उपेक्षा होने पर गवर्नर के लिए यह क़ानून-सम्मत ठहराया गया कि वह सिपाहियों के लिए स्थानीय सराय, शराबघर या और इमारतों पर अधिकार कर सकता है। इसी समय पास किये गए क्विबेक ऐक्ट को भी विरोध की दृष्टि से देखा गया, क्योंकि इसके द्वारा क्विबेक प्रान्त की सीमाएँ बढ़ाकर फ्रेंच निवासियों को धार्मिक स्वतन्त्रता का और अपने रीतिरिवाजों पर चलने का अधिकार दिया गया था। इस ऐक्ट का औपनिवेशिकों ने इसलिए भी विरोध किया क्योंकि यह पश्चिमी भूमियों पर उनका दावा स्वीकार करने वाले चार्टर की उपेक्षा करके पश्चिम की ओर उनके विस्तार को रोकता था और उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम की ओर उनकी सीमा को रोमनकैथोलिक-बहुल लोकतान्त्रिक प्रान्त द्वारा नियन्त्रित कर देता था। यद्यपि क्विबेक ऐक्ट को दण्ड-क़ानून के रूप में पास नहीं किया गया था तथापि उसे अमेरिकनों ने दमनकारी क़ानूनों में ही गिना और ये सब "पाँच असह्य क़ानून" कहलाने लगे।

इन्हें पास तो किया गया था मैसैच्यूसैट्स का दमन करने के लिए, परन्तु इनसे मैसैच्यूसैट्स तो दबा नहीं, बल्कि उसके पड़ोसी उपनिवेश उसकी सहायतार्थ उसके साथ हो गए।



अप्रैल १७७५ में कौंकौर्ड के शस्त्रागार को नष्ट करने का ब्रिटिश प्रयत्न बुरी तरह असफल रहा। बोस्टन की रक्षा के लिए १६,००० देशभक्त एक साथ उमड़ पड़े थे।

वर्जिनिया के नागरिकों के सुझाव पर, औपनिवेशिक प्रतिनिधियों को ५ सितम्बर १७७४ को "उपनिवेशों की वर्तमान शोचनीय अवस्था पर विचार करने के लिए" फ़िलाडेलफ़िया में एकत्र होने का निमन्त्रण दिया गया। यह सभा महाद्वीप की प्रथम कांग्रेस थी और क़ानूनी परिधि के बाहर थी, क्योंकि इसका निर्वाचन प्रान्तिक कांग्रेसों अथवा जनता की परिषदों ने किया था और वे ही इसकी निर्देशिका थीं। इसका परिणाम यह हुआ कि देशभक्तों की जो पार्टी क़ानून-बाह्य कार्रवाई की पक्षपाती थी उसके ही हाथ में स्थिति का नियन्त्रण आ गया और जो पुराणपन्थी ब्रिटिश क़ानूनों के विरोध से कोई सरोकार नहीं रखना चाहते थे उनका प्रतिनिधित्व इसमें नहीं रहा। अन्य सब भाँति, कांग्रेस के सदस्यों में, अमेरिकन—गरम और नरम दोनों प्रकार के—लोकमत का ख़ासा प्रतिनिधित्व था। जॉर्जिया के सिवाय प्रत्येक उपनिवेश ने कम-से-कम एक प्रतिनिधि भेजा था। पचपन का सर्वयोग, मतों की विविधता की दृष्टि से पर्याप्त बड़ा था, परन्तु वास्तविक विचार और प्रभावशाली कार्य की दृष्टि से अपर्याप्त था।

उपनिवेशों में मत-भेद के कारण कांग्रेस के सामने कठिन समस्या थी। ब्रिटिश सरकार को झुकाने के लिए इसे अपने में दृढ़ ऐकमत्य का भी प्रदर्शन करना था और साथ ही ऐसे गरम विचारों अथवा "स्वतन्त्रता की भावना" के प्रदर्शन से भी बचना था जिससे कि नरम विचारों के अमेरिकन कहीं डर न जायँ। एक अत्यन्त सावधान तथा सारगर्भित भाषण के पश्चात् एक प्रस्ताव द्वारा इस आशय की घोषणा की गई कि दमनकारी क़ानूनों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इसके पश्चात् ग्रेट ब्रिटेन और उपनिवेशों की जनता के नाम 'अधिकारों और शिकायतों की एक घोषणा' तथा किंग के नाम एक प्रार्थना-पत्र तैयार किया गया जिसमें अमेरिकन प्रतिवाद की पुरानी युक्तियों का उल्लेख करने के पश्चात्, विदेशी व्यापार तथा शुद्ध साम्राज्य-सम्बन्धी मामलों पर नियन्त्रण रखने के पार्लिमेण्ट के अधिकार को स्वीकार कर लिया गया था। परन्तु कांग्रेस का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य उस 'असो-



महाद्वीप की द्वितीय कांग्रेस की बैठक से बाहर आते हुए प्रतिनिधि। स्वातन्त्र्य-घोषणा पर 'हस्ताक्षर-कर्ता' के नाते ये लोग अमर हो चुके हैं।

सिएशन' का संगठन था, जिसका काम व्यापारिक बायकाट को पुनरुज्जीवित करके प्रत्येक नगर अथवा काउंटी में आयात, निर्यात तथा खपत की निरीक्षण-समितियाँ संगठित करना था। समितियाँ कस्टम का लेखा देखतीं, बायकाट-समझौता तोड़ने वाले व्यापारियों के नाम प्रकाशित करतीं, उनका आयात माल जब्त कर लेतीं और "लोगों को मितव्ययिता, बचत तथा उद्योग के लिए उत्साहित" करती थीं।

आन्दोलन को इस "असोसिएशन" के रूप में एक संगठित क्रान्तिकारी दल का सहयोग मिल गया। स्थानीय संगठनों का निर्माण "पत्र-व्यवहार समितियों" द्वारा डाली गई नींव पर हुआ और सब मामलों का संचालन उनके हाथ में आ गया। उन्होंने रहे-सहे शाही अधिकार को भी समाप्त करने के आन्दोलन को तीव्रतर कर दिया। झिझकने वालों को वे जन-आन्दोलन का साथ देने के लिए विवश करते और विरोधियों को निर्दयतापूर्वक दण्ड देते थे। उन्होंने सामरिक सामान का संग्रह और सैनिकों का संगठन भी आरम्भ किया।

अधिकारी-वर्ग के लोग, छोटे-बड़े क्वेकर, धार्मिक सम्प्रदायों के अनुयायी, और कुछ उपनिवेशों के व्यापारी तथा सीमावासी लोग तो विरोधान्दोलन को अधिक सावधानी से चलाने की राय दे रहे थे और समझौते के पक्षपाती थे, किन्तु देशभक्तों को अधिकतर निम्न मध्य-वित्त लोगों का, अनेक पेशेवर लोगों का, विशेषतः वकीलों का, दक्षिण के बड़े-बड़े प्लाण्टरों का और बहुसंख्यक व्यापारियों का समर्थन प्राप्त था।

दमनकारी क़ानून बनने के पश्चात् राजभक्त लोग, घटनाओं का क्रम देखकर भीत और स्तब्ध रह गए। फलतः किंग चाहता तो उनसे मेल करके और उनको सामयिक रिआयतें देकर उनकी स्थिति इतनी सबल बना सकता था कि देशभक्तों के लिए विरोधी आन्दोलन चलाना बहुत कठिन हो जाता। परन्तु जॉर्ज तृतीय की वैसी कोई इच्छा नहीं थी। सितम्बर १७७४ में उसने फ़िलाडेलफ़िया के क्वेकरों का एक प्रार्थना-पत्र ठुकराते हुए लिखा है कि "अब पासा हाथ से निकल चुका है, उपनिवेशों को या तो झुकना पड़ेगा और या वे जीत जायँगे।" इसने राजभक्तों अथवा 'टोरियों' के पांव-तले से जमीन सरका दी। अनति-उग्र लोगों ने अन्य चारा न देखकर देशभक्तों अर्थात् ह्विगों का ही साथ दिया। अब राजभक्तों का तीव्र पीड़न आरम्भ हो गया। चक्की वालों ने उनका अन्न पीसना बन्द कर दिया; नौकरों ने उनकी नौकरी छोड़ दी; न कोई उनसे कुछ ख़रीदता था और न कोई उनके हाथ कुछ बेचता था। उनको विश्वासघाती कहकर उनकी निन्दा की जाने लगी और समितियां उनके नाम प्रकाशित करने लगीं, जिससे "उनकी सन्तानें भी जान जायँ कि वे कितने अपयश के भागी थे।"

बोस्टन नगर में व्यापार का स्थान प्रायः राजनीतिक हलचल ने ले लिया था। वहां की ब्रिटिश सेना का सेनापति जनरल टौमस गेज नामक एक अंग्रेज भद्रजन था जिसकी पत्नी का जन्म अमेरिका में हुआ था। उक्त नगर के एक प्रमुख देशभक्त डाक्टर जोजफ वारेन ने २० फरवरी १७७५ को अपने एक अंग्रेज मित्र को लिखा था: "अब भी मामला आपसदारी से सुलझ सकता है। परन्तु मेरा मत है कि यदि जनरल गेज ने पार्लिमेण्ट के हाल के कानूनों पर अमल कराने के लिए अपनी सेनाओं को एक बार देहात में भेज दिया तो ग्रेट ब्रिटेन

को यहां से, कम-से-कम न्यूइंग्लैण्ड के उपनिवेशों से, और समस्त अमेरिका से अपना बोरिया-बधना समेट लेना पड़ेगा। यदि राष्ट्र में कुछ भी बुद्धि अवशिष्ट हो तो ईश्वर से प्रार्थना है कि उसका उपयोग तुरन्त हो।"

परन्तु जनरल गेज का तो काम ही दमनकारी कानूनों पर अमल कराना था। उसे समाचार मिला कि मैसैच्यूसैट्स के देशभक्त २० मील पर भीतर के एक नगर कौंकौर्ड में गोला-बारूद और सामरिक सामग्री एकत्र कर रहे हैं। १८ अप्रेल १७७५ की रात में उसने अपनी सेना की एक मजबूत टुकड़ी इस गोलाबारूद को जब्त करने और इंग्लैण्ड में उन पर मुक़दमा चलाए जाने के लिए सैम्युएल ऐडम्स तथा जौन हैनकौक को पकड़ने को वहां भेजी। परन्तु तब तक सारा देहात भड़क चुका था और रात-भर चलने के बाद जब ब्रिटिश टुकड़ी लैक्सिंगटन नामक ग्राम में पहुँची तो उन्होंने प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में सामने के मैदान के पार ५० सशस्त्र मिनिटमैनों को (मिनिटमैन-वे राष्ट्रीय सैनिक जो एक मिनिट के नोटिस पर तैयार हो जाते थे) दृढ़तापूर्वक खड़े पाया। क्षण भर दोनों पक्ष झिझके, शोर मचा, आज्ञा दी गई और दोनों तरफ़ से गोलियां चलने लगीं। देखते-देखते हरी घास पर अपनी आठ लाशें छोड़कर अमेरिकन वहां से बिखर गए। अमेरिकन स्वातन्त्र्य-युद्ध का प्रथम रक्तपात हो गया था।

ब्रिटिश सैनिक कौंकौर्ड की दिशा में बढ़े चले गए। वहां के पुल पर "युद्धोद्यत किसानों ने गोली चलाई जो कि संसार-भर में सुनी गई।" अपना काम लगभग समाप्त करके ब्रिटिश टुकड़ी ने लौटना आरम्भ किया। परन्तु सड़क के किनारे-किनारे पत्थरों की दीवारों, पहाड़ियों और मकानों के पीछे, ग्रामों और खेतों से नागरिक सैनिक आ चुके थे और उन्होंने चमकीले 'रेड कोटों' को निशाना बनाना आरम्भ कर दिया। क्रान्ति की इस प्रथम मुहिम में देहातियों की सहायता इतनी दूर-दूर से पहुँची थी कि जब थकी हुई ब्रिटिश टुकड़ी लड़खड़ाती हुई बोस्टन वापस पहुँची तब पच्चीस सौ जवानों की इस सेना के मृतों की संख्या औपनिवेशिकों के मृतों से तीन गुनी हो चुकी थी।

लैक्सिंगटन और कौंकौर्ड के समाचार से अन्य उपनिवेशों पर बिजली के धक्के के समान प्रभाव पड़ा। स्पष्ट था कि युद्ध—वास्तविक युद्ध—निकट ही है। एक से दूसरी स्थानीय समिति द्वारा यह समाचार तेरहों उपनिवेशों में पहुँच गया। उन सबको मिलाकर रक्षार्थ एक कर देने के लिए लैक्सिंगटन सरीखे चमत्कारिक समाचार की ही आवश्यकता थी। इसने बीस दिन के अन्दर सर्वत्र देशभक्ति की भावना जाग्रत कर दी।

अभी लैक्सिंगटन और कौंकौर्ड की चेतावनियाँ गूँज ही रही थीं कि फ़िलाडेलफ़िया में १० मई १७७५ को महाद्वीप की द्वितीय कांग्रेस की बैठक आरम्भ हुई। इसका प्रेजिडेण्ट बोस्टन का एक सम्पन्न व्यापारी जॉन हैनकौक था। टॉमस जैफ़र्सन और श्रद्धेय बेंजमिन फ्रैंकलिन भी उसमें उपस्थित थे। फ्रैंकलिन तो हाल में लन्दन से लौटा था जहाँ कि उसने कई उपनिवेशों के 'एजेण्ट' की हैसियत से समझौते का असफल प्रयत्न किया था। कांग्रेस अभी कठिनाई से संगठित हो पाई थी कि उसे खुल्लमखुल्ला युद्ध की समस्या का सामना करना पड़ गया। यद्यपि कुछ विरोध हुआ परन्तु कांग्रेस की वास्तविक मानसिक अवस्था "शस्त्र उठाने के कारण और इसकी आवश्यकता" की जोशीली घोषणा से प्रकट हो रही थी, जो कि जॉन डिकिन्सन और टॉमस जैफ़र्सन ने मिलकर तैयार की थी।

"हमारा पक्ष न्याय्य है, हमारी एकता पूर्ण है, हमारे आन्तरिक साधन बहुत हैं और यदि आवश्यकता हुई तो निस्सन्देह वैदेशिक सहायता भी हमें मिल जायगी...हमारे शत्रुओं ने जो शस्त्र उठाने के लिए हमें विवश किया है उन्हें हम...अपनी स्वतन्त्रताओं की रक्षा के लिए प्रयुक्त करेंगे। हम उनके दास बनकर जीने की अपेक्षा मिटने का संकल्प कर चुके हैं।"

अभी इस घोषणा पर विवाद हो ही रहा था कि कांग्रेस ने नागरिक सेना को महाद्वीप की सेवा में प्रयुक्त करके कर्नल जॉर्ज वाशिंगटन को अमेरिकन सेनाओं का कमाण्डर-इन-चीफ़ नियुक्त कर दिया। अपनी दृढ़ता और अपने शान्त तथा गम्भीर व्यवहार से वह एक जन्मजात नेता लगता था। उत्साह और धैर्य उसमें सन्तुलित थे और वह नैतिक तथा भौतिक साहस का एक नमूना था। उसके नेतृत्व के गुण प्रत्यक्ष थे। अपने निर्णय की शुद्धता और ज्ञान की उत्कृष्टता के कारण वह एक महान् पुरुष था। उसने एक बार लिखा था कि "पराजय अधिक प्रयत्न करने का प्रेरक कारण-मात्र है, अगली बार हम उस भूल को नहीं दोहरायँगे।" यह भावना और सैनिक शासन की उसकी प्रतिभा आगामी वर्षों में उसकी विजय का कारण सिद्ध हुए।

परन्तु इस सामरिक उलझन और सेनापति की नियुक्ति के बावजूद, कांग्रेस के बहुत से सदस्यों और अमेरिकन जनता के बहुत बड़े भाग को, इंग्लैंड से सर्वथा पृथक् हो जाने का विचार प्रिय नहीं था। लोकमत अब तक इतने कठोर कार्य के लिए तैयार नहीं था। परन्तु यह स्पष्ट था कि उपनिवेश सदा आधे साम्राज्य के भीतर और आधे बाहर नहीं रह सकते। यहाँ तक कि जनवरी १७७६ में अफ़सरों के एक भोजनालय में जनरल वाशिंगटन की प्रधानता में प्रतिरात्रि को भोज के आरम्भ में किंग के स्वास्थ्य की प्रार्थना की जाती थी।

ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये त्यों-त्यों साम्राज्य का अंग रहकर युद्ध चलाने की कठिनाइयाँ अधिकाधिक स्पष्ट होती गईं। इंग्लैण्ड की ओर से समझौते की कोई बात नहीं हुई और २३ अगस्त १७७५ को किंग जॉर्ज ने एक घोषणा द्वारा उपनिवेशों के विद्रोहावस्था में होने की घोषणा कर दी। इसके पाँच महीने पीछे टॉमस पेन की 'कॉमनसैन्स' नामक ५० पृष्ठ की पुस्तिका प्रकाशित हुई। इसमें उसने प्रचंड प्रहार करते हुए अत्यन्त ओजस्विनी और अलंकृत शैली में स्वतन्त्रता की आवश्यकता का प्रतिपादन किया था। उसने वंश-परम्परागत राजत्व के विचार का उपहास करते हुए लिखा था कि "मुकुट-मंडित तमाम शैतानों की अपेक्षा समाज के लिए एक ईमानदार मनुष्य का मूल्य कहीं अधिक है।" उसने निश्चयात्मक भाषा में दोनों विकल्प उपस्थित कर दिए—निरन्तर अत्याचारी राजा के अधीन दकियानूसी शासन में रहना अथवा स्वावलम्बी, स्वतन्त्र लोकतन्त्र के रूप में रहकर सुख और स्वतन्त्रता का उपभोग करना। कुछ ही महीनों में इसकी हजारों प्रतियाँ उपनिवेशों में फैल गईं और उन्होंने अनिश्चित और डावाँडोल लोगों के विचारों को दृढ़ करके उन्हें संगठित कर दिया।

अब यद्यपि लोग स्वतन्त्रता के विचार को निस्संकोच सुनने और मानने लगे थे, परन्तु अभी पृथकता की विधिवत् घोषणा के लिए प्रत्येक उपनिवेश की अनुमति प्राप्त करने का काम अवशिष्ट था। पेन ने बतलाया था कि उपनिवेश "असंगति की पराकाष्ठा तक पहुँच चुके हैं।" वे पूरी तरह विद्रोह कर चुके थे। उनकी अपनी स्थल और जल सेना थी। और ऐसी सरकारें थीं जो पार्लिमैण्ट और किंग की उपेक्षा कर रही थीं। अब अन्तिम पग न उठाना पूर्वापर विरोध की चरम सीमा होती।

इस बात पर सब एकमत थे कि महाद्वीप की कांग्रेस को उपनिवेशों से स्पष्ट आदेश प्राप्त किये बिना स्वतन्त्रता की घोषणा सरीखा कोई निश्चित पग नहीं उठाना चाहिए। परन्तु प्रति दिन कांग्रेस के पास उपनिवेशों में कांग्रेस-बाह्य सरकारें स्थापित होने और प्रतिनिधियों को स्वतन्त्रता के लिए मत देने का अधिकार प्राप्त होने के समाचार आते रहते थे। कांग्रेस के गरम दल वाले ज्यों-ज्यों अपना पत्र-व्यवहार बढ़ाते जाते, निर्बल कमेटियों को सहारा देते जाते और जोशीले प्रस्तावों से देशभक्तों का उत्साह बढ़ाते जाते, त्यों-त्यों उनका बल बढ़ता जाता था। अन्त में १० मई १७७६ को "गौडियन नौट" काट डालने का (कठिनाई को बलपूर्वक हल कर लेने का) प्रस्ताव पास हो गया। अब केवल विधिपूर्वक घोषणा करना शेष रह गया। ७ जून को वर्जिनिया के रिचर्ड हैनरी ली ने अपनी स्टेट के आदेशानुसार स्वतन्त्रता, विदेशों से मित्रता और अमेरिकन फैडरेशन (संघ) स्थापित करने की घोषणा करने का प्रस्ताव उपस्थित किया। तुरन्त ही एक कमेटी नियुक्त करके उसे एक ऐसी घोषणा तैयार करने का काम सौंपा गया जिसमें कि "उन कारणों का उल्लेख किया जाय जिनसे हमें यह महान् निश्चय करना पड़ा है।" पाँच सदस्यों की इस कमेटी का अध्यक्ष टॉमस जैफ़र्सन था।

वर्जिनिया के कुलीन नागरिक जैफ़र्सन की आयु इस समय केवल ३३ वर्ष की थी, परन्तु वह फ़िलाडेलफ़िया आने से पूर्व ही अपनी स्टेट में ख्याति प्राप्त कर चुका था। उसे वहाँ के हाउस ऑव् बर्जेसिज़ (नागरिक सभा) ने फ़िलाडेलफ़िया भेजा था। उसका जन्म यद्यपि वर्जिनिया के एक रईस घराने में हुआ था तथापि उसका जीवन लोकतान्त्रिक वातावरण में बीता था और इस कारण वह अमीरी अधिकारों का विरोधी बन गया था। घुड़सवारी, शिकार और व्यालिन बजाने का शौकीन होते हुए भी वह अपनी असाधारण ज्ञान-पिपासा को शान्त करने का समय निकाल लेता था। निस्सन्देह उक्त महती घोषणा तैयार करने के लिए उससे अधिक उपयुक्त व्यक्ति नहीं चुना जा सकता था। जैफ़र्सन जानता था कि इसके कारण अमेरिका भयंकर युद्ध में फँस जायगा, परन्तु उसका विश्वास था कि "स्वतन्त्रता के वृक्ष को समय-समय पर देशभक्तों और अत्याचारियों के रुधिर से सींचना पड़ता है।" यद्यपि जिस शासन को नष्ट किया जा रहा था उसके स्थान पर अब तक किसी दृढ़ शासन-पद्धति की व्यवस्था नहीं हुई थी, परन्तु जैफ़र्सन का विचार था कि किसी भी शासन का दृढ़ आधार स्वयं जनता

होती है, और शायद इसी कारण वह बहुत बलवान शासन का पक्षपाती नहीं था। कुछ चुने हुए व्यक्तियों की हुकूमत को वह "जनसाधारण की सुख-समृद्धि के विरुद्ध एक गुटबन्दी" समझता था। उक्त घोषणा में जो उच्च सिद्धान्त रखे गए थे उनको लिखा यद्यपि जैफ़र्सन ने था, परन्तु जिन लोगों का वह प्रतिनिधि था उन सबका उस पर विश्वास पूर्ण था। उसने उन्हीं की भाषा और उन्हीं के विचारों को लिपिबद्ध किया था। एक तत्कालीन लेखक के अनुसार "स्वतन्त्रता के इस चिरस्मरणीय लेख में उसने महाद्वीप की आत्मा को भर दिया था।"

४ जुलाई १७७६ को स्वतन्त्रता की जो घोषणा स्वीकृत हुई उसने न केवल एक नये राष्ट्र के जन्म की सूचना दी, उसने मानव-स्वतन्त्रता के उन नवीन सिद्धान्तों की भी नींव डाल दी जो आगे चलकर समस्त पश्चिमी संसार के लिए एक प्रेरक शक्ति सिद्ध हुए। इस घोषणा का आधार कोई विशिष्ट शिकायतें नहीं, अपितु मानव-स्वतन्त्रता के वे मूल तत्त्व थे जिनका समर्थन समस्त अमेरिका में सर्वत्र हुआ। इस घोषणा के राजनीतिक आदर्श स्पष्ट थे :

"हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सब मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं, उनके स्रष्टा ने उन्हें कुछ अनपहरणीय अधिकारों से सम्पन्न किया है और इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और सुख-प्राप्ति के प्रयत्न भी हैं। इन अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए ही मनुष्यों में शासन-तन्त्रों की स्थापना होती है और उनको उचित शासनाधिकार भी शासितों की अनुमति से प्राप्त होते हैं—जब कभी कोई शासन इन उद्देश्यों का विघातक बन जाय, तब लोगों को अधिकार होता है कि वे उसे बदल दें या समाप्त कर दें, और नये शासन की स्थापना करके उसका आधार ऐसे सिद्धान्तों को रखें और उसके अधिकारों का संगठन ऐसे रूप में करें जिनसे उनको अपनी सुरक्षा और सुख-समृद्धि स्थायी रहने की सर्वाधिक आशा हो।"

ये 'सत्य' जैफ़र्सन के मन की उपज नहीं थे। वे उस राजनीतिक सिद्धान्त का आधार थे जिसे उसके समकालिकों ने और पश्चाद्वर्ती अधिकतम मनुष्यों ने 'स्वयंसिद्ध' माना है। उसे यह विशिष्ट विचारधारा और शब्दावली इंग्लिश राजनीतिक विचारकों के ग्रन्थों से मिली थी, परन्तु उसके लेख की आत्मा का जन्म लोगों में जाग्रत इस भावना से हुआ था कि शासन जनता के लिए होना चाहिए, न कि जनता शासन के लिए।

इस घोषणा से संसार को ब्रिटिश साम्राज्य से यूनाइटेड स्टेट्स की पृथक्ता की सूचना सार्वजनिक रूप से दे देने का

४ जुलाई १७७६ को फ़िलाडेलफ़िया में स्वातन्त्र्य-घोषणा पर हस्ताक्षर करने का उत्सव, जो रंग-बिरंगे झण्डे फहराकर उत्साहपूर्वक मनाया गया था।



प्रयोजन ही सिद्ध नहीं हुआ, अपितु अमेरिकन पक्ष के लिये जनता में उत्साह भी जाग्रत हो गया, क्योंकि इसके पश्चात् साधारण जनता अपना महत्व समझने लगी और उसमें वैयक्तिक स्वतन्त्रता, स्वशासन और समाज में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने का उत्साह उत्पन्न हो गया। इस घोषणा का केन्द्र-बिन्दु रखा गया इंग्लिश किंग जॉर्ज तृतीय की निन्दा करना। इससे नवीन संघर्ष को एक निजी झगड़े का रूप प्राप्त हो गया। अब संघर्ष कुछ निर्जीव कानूनों अथवा एक अमूर्त पार्लिमेण्ट के विरुद्ध न रहकर मांस और रुधिर के एक मूर्त शत्रु के विरुद्ध होने लगा।

क्रान्ति का युद्ध छः वर्ष से अधिक काल तक चला। लड़ाई प्रायः प्रत्येक उपनिवेश में हुई। एक दर्जन युद्ध तो महत्त्वपूर्ण हुए। स्वतन्त्रता की घोषणा से पूर्व भी सामरिक कार्रवाइयां हुई थीं जिनका परिणाम युद्ध पर पड़ा था। उदाहरणार्थ, फ़रवरी १७७६ में उत्तरी कैरोलाइना के राजभक्तों को दबाया गया और मार्च में बोस्टन से ब्रिटिश सेनाओं को बलपूर्वक निकाला गया। स्वतन्त्रता की घोषणा के पश्चात् कुछ महीनों तक अमेरिकनों को कई बड़ी असफलताओं का सामना करना पड़ा। इनमें से प्रथम न्यूयार्क में हुई। वाशिंगटन ने ठीक ही कहा था कि ब्रिटिश सेनाओं का प्रथम लक्ष्य न्यूयार्क होगा, क्योंकि न्यूइंग्लैण्ड को सामग्री और सैनिक सहायता वहीं से प्राप्त होती थी। परन्तु ब्रिटिश सेनापति जनरल सर विलियम हाव ने उस पर तुरन्त ही आक्रमण नहीं किया। वह अमेरिका का मित्र था, इसलिए उसने साम और दण्ड दोनों का प्रयोग किया। उसने कहा, "यदि विद्रोही लड़ाई बन्द कर देंगे तो उन्हें किंग की ओर से क्षमा कर दिया जायगा।" परन्तु वह साम्राज्यान्तर्गत स्वतन्त्रता की गारण्टी नहीं दे सका। स्वभावतः उसके द्वारा दी गई रिआयत अस्वीकार कर दी गई और ३० हज़ार ब्रिटिश स्थल तथा जल-सैनिकों से वाशिंगटन के १८ हज़ार स्थल-सैनिकों का सामना हो गया।

न्यूयॉर्क की रक्षा का कार्य निराशापूर्ण दीखने लगा। वाशिंगटन ने सोचा कि हमें शहर का परित्याग बिना संघर्ष के नहीं कर देना चाहिए। परन्तु आगामी युद्ध में वाशिंगटन की योजना त्रुटिपूर्ण निकली। उसके सेनापतियों ने अपना नियत कार्य नहीं किया। ब्रिटिशों की संख्या बहुत अधिक थी। उसकी स्थिति अरक्षणीय हो गई और वह छोटी-छोटी नावों में नदी पार करके ब्रुकलिन से अति निपुणतापूर्वक पीछे हटकर मैनहटन के तट पर चला गया। भाग्यवश हवा उत्तर की ओर चल रही थी और ब्रिटिश युद्धपोत ईस्ट नदी के ऊपर की ओर नहीं जा सके। हाव को पता नहीं था कि क्या हो रहा है और इस तरह अमेरिकनों को पूरी मात देने का, सम्भवतः युद्ध समाप्त करने का अवसर उसके हाथ से निकल गया। यदि वाशिंगटन की सेना तब पकड़ी जाती तो कांग्रेस के लिए और सेना खड़ी करना बहुत कठिन हो जाता।

यद्यपि वाशिंगटन को निरन्तर पीछे हटते जाना पड़ा तो भी उसने वर्ष के अन्त तक अपनी सेनाओं को बिखरने नहीं दिया। ट्रैण्टन और प्रिन्स्टन की जीतों ने उपनिवेशों में आशा को पुनर्जीवित कर दिया। परन्तु एक बार फिर दुर्भाग्य का सामना हुआ। सितम्बर १७७७ में हाव ने फ़िलाडेलफ़िया पर अधिकार कर लिया, और वाशिंगटन को अपने आदमियों के साथ फोर्ज घाटी में निराशापूर्ण अवस्था में सर्दियां बिताने के लिए विवश होना पड़ा। देशभक्त अपने कैम्पों में सर्दी से जमे जा रहे थे और बर्फ पर भागते हुए अपने खूनी पद-चिह्न छोड़ते जाते थे। उस समय वे निराशा के कगार पर खड़े थे।

परन्तु १७७७ की शरद में अमेरिकनों की युद्ध में सबसे बड़ी जीत हो गई। सैनिक दृष्टि से इसने क्रान्ति का तख़्ता पलट दिया। ब्रिटिश सेनापति बरगौइन अपनी सेना लेकर शैम्पलेन झील से हडसन नदी तक की सीमा पर अधिकार करने के लिए कैनाडा से आया। उसका उद्देश्य न्यूइंग्लैण्ड को अन्य उपनिवेशों से काट देना था। हडसन नदी के ऊपरी भाग में पहुँच कर उसे सितम्बर तक अपने सामान की प्रतीक्षा में वहीं रुकना पड़ा। अमेरिका के भूगोल से अपरिचित होने के कारण उसने कल्पना की कि वरमौण्ट को पार करके कनैटिकट नदी में नीचे की ओर जाकर अपनी सेना के लिए १३०० घोड़े, मांस ढोने के पशु और गाड़ियां एकत्र करके लौट आने का कार्य किसी छोटी सैनिक टुकड़ी के लिए दो सप्ताह में पूरा कर लेना कठिन नहीं होगा। इस साहसिक कार्य के लिए उसने ३७५ बिना घोड़े के हैशन ड्रैगून सवारों को और लगभग ३०० टोरियों को चुना। वे वरमौण्ट की सीमा तक पहुँचे भी नहीं थे कि वरमौण्ट की नागरिक सेना से उनकी टक्कर हो गई और थोड़े ही हैशन जीवित वापस लौट पाए। इसी समय मोहौक घाटी में ईरी झील से जो ब्रिटिश सेनाएं बरगौइन के साथ मिलने का यत्न कर रही थीं उनको

भी अमेरिकनों ने रोक दिया।

वरमौण्ट की लड़ाई में उत्तरी न्यू-इंग्लैंड की प्रायः सारी युद्ध-समर्थ जनता सम्मिलित हो गई थी और बरगौइन के विलम्ब से लाभ उठाकर वाशिंगटन ने हडसन के निम्न भाग से नियमित सेनाओं को सहायता के लिए भेज दिया। जब बरगौइन अपनी लम्बी-चौड़ी सेना को आगे बढ़ाने में समर्थ हुआ तभी उसकी यॉंकी नागरिक-सेना से टक्कर हो गई। यह सेना अपने साथियों की सफलता से उत्साहित थी, इसे नियमित सैनिकों की सहायता प्राप्त थी और इसका संचालन भी नियमित सेना का एक योग्य सेनापति कर रहा था। प्रातःकाल पाला पड़ते ही लड़ाई शुरू हुई। बरगौइन के दो आक्रमणों को विफल कर दिया गया और उसे पीछे हटकर सैराटोगा चले जाना पड़ा। शरत् की वर्षा आरम्भ हो गई, बहुत-से हैशन सेना में से भाग गये और ब्रिटिशों को अपने आगे-पीछे और दायें-बायें बहुसंख्या में अमेरिकन-ही-अमेरिकन दिखाई देने लगे। १७ अक्टूबर १७७७ को बरगौइन ने अपनी सम्पूर्ण सेना, जिसमें अब भी पूरे ५ हजार से ऊपर जवान थे, अमेरिकन जनरल गेट्स को समर्पित कर दी। यह युद्ध का निर्णायक प्रहार था। इसका महत्त्व अत्यन्त सामरिक था।

फ्रांस अपनी सन् १७६३ की पराजय के बाद से बदला लेने के किसी अवसर की प्रतीक्षा में था और फलतः अब अमेरिका की सहायता के लिए उसका उत्साह खूब बढ़ गया। फ्रांस के बौद्धिक नेता यद्यपि अभी तक लोकतन्त्र के पक्षपाती नहीं बने थे परन्तु वे जागीरदारी और विशेषाधिकारों के विरुद्ध विद्रोह अवश्य करने लगे थे। इसीलिए अमेरिका की स्वतन्त्रता-घोषणा के पश्चात् बेंजमिन फ्रैंकलिन का फ्रांस के दरबार में उत्साहपूर्वक स्वागत हुआ। आरम्भ से ही फ्रांस की सरकार तटस्थ नहीं थी। वह यूनाइटेड स्टेट्स को गोला-बारूद और सामग्री के रूप में सहायता दे रही थी। परन्तु वह प्रत्यक्ष कूद पड़ने और इंग्लैंड से युद्ध छेड़ देने की जोखिम उठाने के लिए अनिच्छुक थी। बरगौइन के आत्मसमर्पण के समाचार के पश्चात्, फ्रैंकलिन को फ्रांस के साथ व्यापार और मित्रता की सन्धियाँ करने में सुगमता हो गई और दोनों राष्ट्रों ने प्रतिज्ञा की कि जब तक अमेरिका स्वतन्त्र न हो जायगा तब तक दोनों का पक्ष एक ही रहेगा। इससे पहले भी बहुत-से फ्रांसीसी स्वयंसेवक युद्ध में भाग लेने के लिए अमेरिका आ चुके थे। इनमें सबसे प्रमुख मार्क्विस द लाफ़ेयित था। यह एक युवक सैनिक-अफ़सर था और अमेरिकन स्वतन्त्रता-प्राप्ति में सहायता करने, फ्रांस को ऊँचा उठाने, इंग्लैंड को नीचा दिखाने और अपनी सैनिक कुशलता का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक था। यह वाशिंगटन की सेना में एक जनरल के रूप में बिना कुछ वेतन लिए भरती हुआ, और इसने इतना अच्छा काम करके दिखलाया कि यह शीघ्र ही अमेरिकन नेता के आदर का पात्र हो गया। यह वाशिंगटन की आदर्श वीर की भाँति पूजा करता था।

लाफेयित १७७६--८० की सर्दियों में वर्साई लौटा और उसने यथाशीघ्र युद्ध-समाप्ति का वास्तविक प्रयत्न करने के लिए अपनी सरकार को प्रेरित किया। इसके तुरन्त पश्चात् लुई १६वें ने जनरल रोशाम्बो की अध्यक्षता में ६००० जवानों की एक बढ़िया आक्रमणकारी सेना भेजी। इसके अतिरिक्त फ्रैंच समुद्री बेड़े ने ब्रिटिश सेनाओं को सामान भेजने की कठिनाइयों को और भी बढ़ा दिया। ब्रिटिश व्यापार को भी फ्रैंच और अमेरिकन विघ्नकारी जहाजों के कारण (जो कि उन दिनों प्राइवेटियर कहलाते थे) और साहसी समुद्री कप्तान जौन पौल जोन्स की कार्रवाइयों के कारण हानि पहुँची। स्पेन और नीदरलैंड्स के भी युद्ध में कूद पड़ने के कारण ब्रिटेन को हानि उठानी पड़ी।

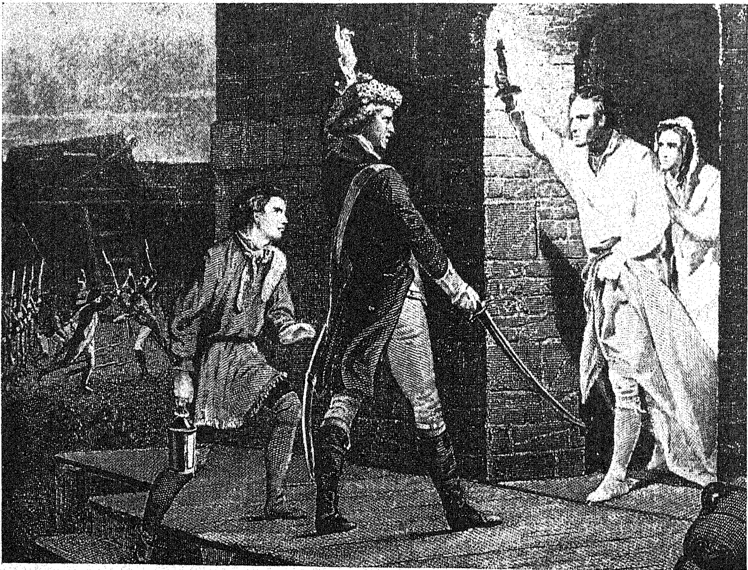
तो भी ब्रिटिश सेनाओं ने युद्ध की समाप्ति कठोर संघर्ष के बिना नहीं की। १७७८ में उनको फ्रांसीसी बेड़े की कार्रवाई के भय से फिलाडेलफिया खाली कर देना पड़ा और उसी वर्ष उन्हें ओहायो घाटी में भी अनेक बार नीचा देखना पड़ा। इससे उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में अमेरिकन आधिपत्य निर्विघ्न हो गया। परन्तु दक्षिण में उन्होंने लड़ाई जारी रखी। १७८० में उन्होंने प्रसिद्ध दक्षिणी बन्दरगाह चार्ल्सटन पर अधिकार कर लिया और कुछ समय के लिए कैरोलाइना प्रदेश भी उनके हाथ में आ गया। अगले वर्ष उन्होंने वर्जिनिया को जीतने का प्रयत्न किया परन्तु उस वर्ष की गर्मियों में फ्रांसीसी बेड़े का चैसापीक नदी और अमेरिकन तटवर्ती समुद्र पर अस्थायी अधिकार हो गया। वाशिंगटन और रोशाम्बो की सेनाएँ समुद्र-मार्ग से नावों द्वारा खाड़ी के नीचे जाकर अन्य मित्र-सेनाओं से मिल गईं और १५ हजार जवानों ने लार्ड कार्नवालिस की ८ हज़ार सेना को वर्जिनिया तट पर यौर्कटाउन में बन्द कर दिया। १९ अक्टूबर १७८१ को कार्नवालिस ने आत्म-समर्पण कर दिया और इसके बाद

क्रान्ति को रोकने के सैनिक प्रयत्नों का अन्त हो गया।

यौर्क टाउन में अमेरिका की जीत का समाचार यूरोप पहुँचने पर हाउस ऑव् कामन्स ने युद्ध की समाप्ति का निर्णय कर दिया। उसके तुरन्त पश्चात् प्रधान मन्त्री लौर्ड नौर्थ ने इस्तीफ़ा दे दिया और किंग ने अमेरिकन स्वतन्त्रता के आधार पर सन्धि करने के लिए एक नये मन्त्रिमण्डल का संगठन किया। अप्रैल १७८२ में शान्ति-वार्ता नियमपूर्वक आरम्भ हो गई और नवम्बर के अन्त तक चलती रही। इसी मास ब्रिटिशों के साथ आरम्भिक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर हो गए। इस पर अमल तब तक नहीं हो सकता था जब तक कि फ्रांस भी ग्रेट ब्रिटेन के साथ सन्धि न कर ले। १७८३ में इस सन्धि पर अन्तिम और निश्चित रूप से हस्ताक्षर हुए। शान्ति-सन्धि में १३ स्टेटों की स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता तथा स्वाधीनता स्वीकार करके, उनकी चिराभिलषित मिसिसिपी की पश्चिमवर्ती भूमि उनको देकर, उत्तर की सीमा वही मानी गई जो कि अब है। कांग्रेस ने स्टेटों से यह सिफ़ारिश करना स्वीकार किया कि वे राजभक्तों की जब्त सम्पत्ति उन्हें वापस कर दें और यूनाइटेड स्टेट्स के लोगों को अधिकार मिला कि वे न्यू फ़ाउण्डलैंड के समुद्र में मछलियाँ पकड़ सकें और उन्हें नोवा-स्कोशा और लेब्राडोर के अनबसे प्रदेशों में सुखा सकें।

स्वाधीनता के पश्चात् अमेरिकन न केवल बाहर के शासन से मुक्त हो गए, उन्हें अपने समाज का विकास भी नवीन परिस्थिति-जनित राजनीतिक विचारों के अनुसार करने की स्वतन्त्रता हो गई। यद्यपि उपनिवेश विद्रोह के समय अपने अधिकार इंग्लैंड के संविधानानुसार मनवाने पर सर्वाधिक बल दे रहे थे, परन्तु वस्तुतः उनका संघर्ष अपने एक नये

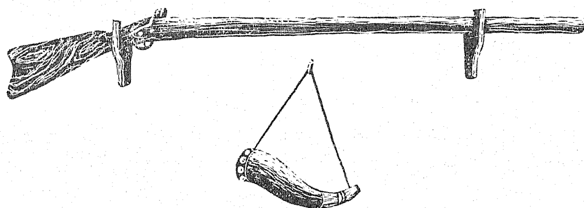
उत्तरी न्यूयार्क में टाइकोण्डरोगा के ब्रिटिश दुर्ग पर वरमौण्ट के एथान ऐलन तथा उसके स्वयंसेवकों ने अकस्मात् ही अधिकार कर लिया था। अमेरिकनों को गोला-बारूद और बन्दूकों की भारी ज़रूरत थी, वह उनके हाथ लग गया।



राजनीतिक आदर्श की पूर्ति के लिए चल रहा था। वह आदर्श था स्वयं जनता द्वारा स्वशासन, जो कि अमेरिकन लोकतन्त्र का मूल मन्त्र है। एक और भी राजनीतिक सिद्धान्त उनको प्रिय था और वह था हजारों मील दूर बनाये हुए क़ानूनों से शासित न होने का। वस्तुतः यही स्थानीय स्वशासन का लोकतान्त्रिक सिद्धान्त है। अमेरिकन भावना ने मनुष्य-मनुष्य में क़ानूनी भेद मिटा देने का समर्थन किया। यद्यपि क्रान्ति की समाप्ति के समय मताधिकार सीमित था, परन्तु उसके पश्चात् प्रति दशक पीछे बढ़ते-बढ़ते यह जन-मात्र तक व्याप्त हो गया। 'मनुष्य के अधिकारों' का विचार संसार-भर में फैल गया और

पहुँचा उस दिन की अपनी बाल्य-कालिक स्मृतियाँ नॉरवे के हेनरिच स्टेफ़न्स ने बाद के वर्षों में यों लिखीं :

"मुझे वह दिन आज भी भली भांति याद है जिस दिन शान्ति-सन्धि की समाप्ति और स्वातन्त्र्य-संघर्ष की विजय का उत्सव मनाया गया था। वह पर्व का दिन साफ़ था। बन्दरगाह में सब जहाज़ सजाये गये थे। उनके मस्तूलों की चोटियों पर झंडियाँ लहरा रही थीं। सबसे चमकदार झण्डे बड़े-बड़े डंडों पर लगाये गए थे। अन्य डंडों के बीच में बन्दनवारें लटक रही थीं। झण्डे-झण्डियों के निर्बाध लहराने के लिए हवा काफ़ी थी……। पिताजी ने कुछ अतिथियों



चालीस वर्ष के भीतर अमेरिकन महाद्वीप के स्पेनिश उपनिवेश भी इंग्लैंड के उपनिवेशों के अनुगामी बन गए। यूरोप में तो क्रान्ति सफल नहीं हुई, परन्तु वहाँ से निर्गत व्यक्तियों ने नई दुनिया में चिराभिलषित राजनीतिक स्वतन्त्रता पा ली। ज्यों ही क्रान्ति समाप्त हुई त्यों ही संसार के सब भागों से स्वतन्त्रता के प्रेमी अमेरिका आने लगे। युद्ध-काल में फ्रैंकलिन फ्रांस में था। उसने तभी निर्गमन की भविष्यवाणी कर दी थी : "शेष संसार में अत्याचार साधारणतया इतना बद्धमूल है कि स्वतन्त्रता के प्रेमियों में अमेरिका में आश्रय मिलने की आशा-मात्र से प्रसन्नता व्याप जाती है।"

औपनिवेशिक विजय का समाचार जिस दिन डेनमार्क

को निमन्त्रित किया था, और प्रचलित प्रथा के विपरीत हम बालक भी मेज पर बुलाये गए थे। पिताजी ने उत्सव की विशेषता हमें समझाई। हमारे गिलास भी पंच (मदिरा, दूध, चाय, चीनी और मसालों का एक पेय) से भरे गए और जब नये लोकतन्त्र की सफलता का पान (टोस्ट) होने लगा तब हमारे उद्यान में एक डेनिश और एक उत्तरी अमेरिकन झण्डा फहराया गया……। उत्सव में सम्मिलित सब लोगों के मन में इस विजय के कारण सम्भावित घटनाओं की कल्पनाएँ थीं। यह इतिहास के एक रक्तमय दिवस का मित्रतापूर्ण प्रातःकाल था।"

अध्याय ६

राष्ट्रीय शासन का संगठन

"इस भूतल पर प्रत्येक मनुष्य को और मनुष्यों के वर्ग को, स्वशासन का अधिकार है।"
—टॉमस जैफ़र्सन, १७९०

इंग्लैण्ड के विरुद्ध क्रान्ति की सफलता के कारण अमेरिकन लोगों को राष्ट्रों के परिवार में स्वतन्त्र स्थान प्राप्त हो गया। इससे उनकी समाज-व्यवस्था में ऐसा परिवर्तन आ गया कि उसमें वंश और विशेषाधिकारों का महत्त्व घटकर मनुष्य-मात्र की समानता का महत्त्व बढ़ गया। क्रान्ति-कालिक सम्मिलित आशाओं और संघर्षों की सहस्रों स्मृतियाँ परस्पर चर्चा का विषय बन गईं। क्रान्ति की सबसे बड़ी चुनौती जो उन्हें मिली वह यह थी कि वे सिद्ध करें कि अपना स्वतन्त्र स्थान बनाए रखने की वास्तविक योग्यता और स्वशासन की क्षमता उनमें है।

क्रान्ति की सफलता से अमेरिकनों को स्वातन्त्र्य-घोषणा में प्रकट किये हुए अपने राजनीतिक आदर्शों को कानून का रूप देने का और अपनी अनेक शिकायतों का अपने राज्यों के संविधानों द्वारा प्रतिकार करने का अवसर प्राप्त हो गया। जैसा कि यूनाइटेड स्टेट्स के चतुर्थ प्रेजिडेण्ट जेम्स मैडिसन ने लिखा है, "अमेरिका में जिस प्रकार स्वतन्त्र शासनों की स्थापना की गई उससे बढ़कर प्रशंसा अन्य किसी बात की नहीं हुई, क्योंकि यह पहला अवसर था···जबकि संसार ने स्वतन्त्र नागरिकों को स्वशासन के रूप पर विचार करते हुए और उसे निर्धारित करने तथा चलाने के लिए अपने विश्वास-भाजन नागरिकों का निर्वाचन करते हुए देखा।"

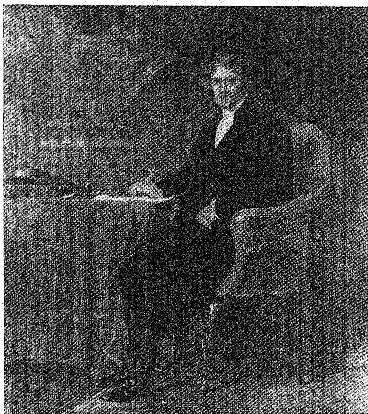
आज अमेरिकन लोग लिखित संविधान पर चलने के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि वे इसे सर्वथा मान्य ही समझने लगे हैं। परन्तु लिखित संविधान पहले-पहल अमेरिका में ही तैयार हुआ था और यह संसार के सर्वप्रथम संविधानों में से एक है। यूनाइटेड स्टेट्स के द्वितीय प्रेजिडेण्ट जौन ऐडम्स ने लिखा था कि "सब स्वतन्त्र स्टेटों में संविधान अन्तिम प्रमाण है।" अमेरिकनों की माँग सर्वत्र एक ऐसे स्थायी क़ानून की थी जिसके अनुसार वे अपना जीवन-यापन कर सकें। १० मई, १७७६ को कांग्रेसने एक प्रस्ताव द्वारा उपनिवेशों को अधिकार दे दिया कि वे ऐसी सरकारें बना लें "जो उनके निवासियों की सुख-समृद्धि और सुरक्षा में सहायक हों।" उनमें से कुछेक तो पहले ही ऐसा संविधान बना चुके थे किन्तु स्वातन्त्र्य-घोषणा के पश्चात्, एक वर्ष के भीतर, तीन को छोड़ शेष स्टेटों ने भी अपना-अपना संविधान बना डाला।

इन संविधानों की रचना द्वारा लोकतन्त्र के पक्षपातियों को अपनी शिकायतें दूर करने और उत्कृष्ट शासन की अपनी आकांक्षाएँ पूर्ण करने का सुन्दर अवसर मिल गया। यद्यपि उन पर अतीत की छाप थी और उनकी रचना औपनिवेशिक अनुभवों, फ्रांसीसी राजनीतिक विचारों और अंग्रेज़ी परम्परा के आधार पर की गई थी, फिर भी अधिकतर संविधान लोकतान्त्रिक विचारों से ओत-प्रोत थे। वस्तुतः क्रान्ति की पूर्णता स्टेटों के इन संविधानों की रचना द्वारा ही हुई थी। स्वभावतः इनके रचयिताओं का प्रथम लक्ष्य उन "अनपहरणीय अधिकारों" की रक्षा करना था जिनके अपहरण के कारण उन्हें इंग्लैण्ड के साथ अपने सम्बन्ध विच्छिन्न करने पड़े थे। फलतः प्रत्येक संविधान का आरम्भ अधिकारों की घोषणा द्वारा किया गया था, और वर्जिनिया के संविधान में तो (जिसे अन्य सबने अपनी संविधान-रचना का आधार बनाया था) इस प्रकार के सिद्धान्तों की घोषणा भी सम्मिलित थी: जनता की प्रभुता, पदाधिकारियों का बदलते रहना, निर्वाचन की स्वतन्त्रता और मौलिक अधिकारों का विशद उल्लेख—भारी जमानत का निषेध और मानवोचित दण्ड, स्थायी सेना के स्थान पर नागरिक सेना, मुक़दमों का क़ानून के अनुसार शीघ्र निर्णय, जूरी

द्वारा सुनवाई, लेखन, प्रकाशन और विचार की स्वतन्त्रता, शासन को बहुमत द्वारा सुधारने या बदलने का अधिकार और बिना नाम के वारण्ट निकालने का निषेध। अन्य स्टेटों ने इस सूची को बढ़ाकर इसमें भाषण, सम्मेलन, प्रार्थना-पत्र तथा शस्त्र-धारण की स्वतन्त्रता, हैबियस कौर्पस (बन्दी-प्रत्यक्षीकरण) का अधिकार, निजी निवासगृहों की अनाक्रमणीयता और क़ानून का सबके लिए समान उपयोग सम्मिलित कर लिए थे। इनके अतिरिक्त प्रत्येक स्टेट के संविधान में शासन, क़ानून-निर्माण और न्याय-विभागों की पृथकता के विचार का भी पालन किया गया था। इनमें प्रत्येक विभाग एक-दूसरे को सन्तुलित करता था।

जब तेरह आरम्भिक उपनिवेश स्टेटों में परिणत हो रहे थे तब पूर्वी समुद्र-तट की समीपवर्ती बस्तियों से पश्चिम की ओर फैले हुए विशाल भू-प्रदेश में नये-नये कौमनवैल्थ भी विकसित हो रहे थे। देश में अब तक प्राप्त सुन्दरतम शिकारगाहों और सम्पन्नतम भूमियों से आकृष्ट होकर अग्रणी ऐप्पैलेच्यन पर्वत के पश्चिम की ओर बढ़ते चले गए। १७७५ तक जल-मार्गों के आसपास दूर-दूर तक बिखरे हुए

टॉमस जेफ़र्सन, स्वातन्त्र्य-घोषणा का लेखक और यूनाइटेड स्टेट्स का तृतीय प्रेज़िडेण्ट।



स्थानों में लाखों वासी बस चुके थे। इन वासियों को, पूर्व-तट के राजनीतिक अधिकार के केन्द्रों से, सैकड़ों मील की दूरी और पर्वत-मालाएँ पृथक् करती थीं। इन्होंने अपने ही शासन संगठित कर लिये और इनका समाज ख़ूब फलने-फूलने लगा। समुद्र-तटवर्ती सभी स्टेटों से उठकर वासी नदियों की उपजाऊ घाटियों, लकड़ी के जंगलों और घास के मैदानों में जाने लगे। १७६० तक ऐप्पैलेच्यन पर्वत-मालाओं के पार की आबादी १ लाख २० हज़ार से ऊपर हो चुकी थी।

क्रान्ति की समाप्ति के साथ ही यूनाइटेड स्टेट्स के सामने पुरानी अनसुलझी पश्चिमी 'साम्राज्य' की समस्या भी आ गई। युद्ध से पूर्व अनेक उपनिवेश ऐप्पैलेच्यन पर्वत की परवर्ती भूमि पर दावे कर रहे थे। कुछ स्टेटों को पश्चिम की सम्पन्न भूमि मिल जाने की सम्भावना उन स्टेटों को बहुत अन्यायपूर्ण लगती थी जो कि वैसा कोई दावा पेश नहीं कर सकती थीं। उन स्टेटों का प्रवक्ता बनकर मैरिलैण्ड ने यह प्रस्ताव किया कि पश्चिम की भूमि को सब की सम्मिलित सम्पत्ति माना जाय और कांग्रेस उसे स्वतन्त्र और स्वाधीन शासनों में बाँट दे। इस सुझाव का स्वागत उत्साहपूर्ण नहीं हुआ। तथापि १७८० में न्यूयार्क ने अपना दावा यूनाइटेड स्टेट्स के हक़ में छोड़कर अन्य सबको मार्ग प्रदर्शित किया। शीघ्र ही अन्य उपनिवेशों ने भी उसका अनुगमन किया और युद्ध की समाप्ति तक यह दीखने लगा कि ओहायो नदी के उत्तर और सम्भवतः ऐलि-गेनी पर्वत के पश्चिम की समस्त भूमि का स्वामित्व कांग्रेस के हाथ में आ जायगा। करोड़ों एकड़ भूमि पर सब के सम्मिलित स्वामित्व से वह एकता और राष्ट्रीयता प्रत्यक्ष प्रमाणित हो गई जो कि इन संकटपूर्ण वर्षों में विद्यमान थी। साथ ही इससे राष्ट्रीय प्रभुत्व के विचार को भी मूर्त रूप प्राप्त हो गया। फिर भी यह एक समस्या बनी रही और इसका हल करना आवश्यक हो गया।

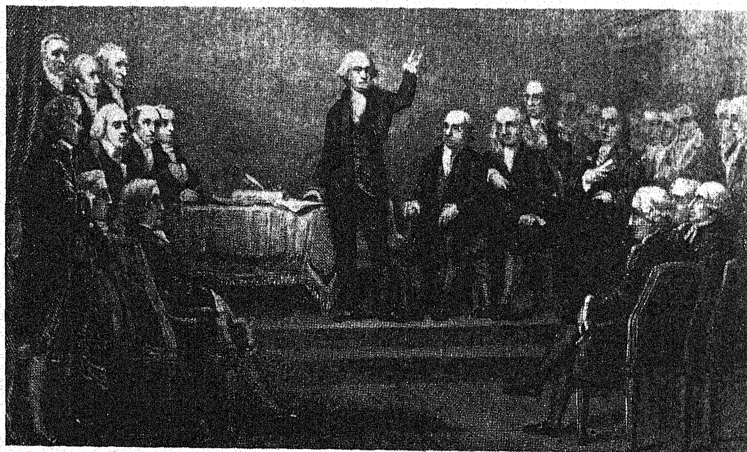
यह हल आर्टिकिल्स ऑव् कॉनफेडरेशन द्वारा हुआ, जो उपनिवेशों को एक शिथिल सूत्र में बाँधने के लिए १७८१ में बनाया गया था। इन आर्टिकिलों के अनुसार नई पश्चिमी भूमियों पर सीमित स्वशासन की पद्धति लागू की गई और उससे बियाबान और स्टेट के बीच का भेद सन्तोषजनक रूप में मिट गया। यह पद्धति १७८७ के नौर्थ वैस्ट और्डिनैन्स में लेखबद्ध कर दी गई और उसके पश्चात् महाद्वीप के उन सब प्रदेशों और बहुत से द्वीपों पर जो यूनाइटेड स्टेट्स के अधीन थे, लागू

होती रही। १७८७ के ऑर्डिनैन्स में कहा गया था कि आरम्भ में उत्तर-पश्चिमी प्रदेश को एक ज़िले के रूप में संगठित किया जाय और उसका शासन कांग्रेस द्वारा नियुक्त गवर्नर और जजों द्वारा हो। जब इस प्रदेश में मत देने योग्य आयु वाले पाँच हज़ार पुरुष हो जायँ तब इसे दो धारा-सभाएँ स्थापित करने का अधिकार दिया जाय और उनमें निम्न सभा के निर्वाचन का अधिकार स्वयं यहाँ के निवासियों को रहे। इसके अतिरिक्त उस समय इस ज़िले से कांग्रेस में एक प्रतिनिधि भेजा जा सकेगा जिसे मत देने का अधिकार नहीं होगा। इस प्रदेश में अधिक-से-अधिक पाँच और कम-से-कम तीन स्टेटें बनाई जा सकेंगी और जब उनमें से किसी में भी ६० हज़ार स्वतन्त्र निवासियों की आबादी हो जायगी तब उसे "सब प्रकार आरम्भिक स्टेटों के समान आधार पर" यूनियन में सम्मिलित कर लिया जायगा। "आरम्भिक स्टेटों और इस प्रदेश की स्टेटों और निवासियों के मध्य हुए समझौते के छः आर्टिकिलों" द्वारा नागरिक अधिकारों की और स्वतन्त्रता की गारण्टी दी गई थी, शिक्षण को प्रोत्साहन दिया गया था और यह गारण्टी भी दी गई थी कि "इस प्रदेश में न तो दास-प्रथा रहेगी और न बेगार।"

इस प्रकार समानता पर आधारित नीति का आरम्भ हुआ। इस नई नीति ने इस सिद्धान्त की समाप्ति कर दी कि उपनिवेशों की सत्ता ही मातृदेश के लाभ के लिए है और वे राजनीतिक दृष्टि से अधीन और सामाजिक दृष्टि से हीन हैं। इस सिद्धान्त का स्थान इस विचार ने ले लिया कि उपनिवेश मूल राष्ट्र का ही विस्तार हैं; और उन्हें समानता के सब लाभ, अधिकार के रूप में उपलब्ध हैं। इस ऑर्डिनैन्स के कारण अमेरिकन प्रादेशिक पद्धति और औपनिवेशिक नीति की ऐसी स्थायी नींव पड़ गई जिससे कि यूनाइटेड स्टेट्स को पश्चिम में प्रशान्त महासागर तक फैलने में और १३ के स्थान पर ४८ स्टेटें बनाने में अपेक्षाकृत तनिक भी कठिनाई नहीं हुई।

परन्तु दुर्भाग्यवश अन्य समस्याओं के सुलझाने में आर्टिकिल्स ऑव् कॉनफ़ेडरेशन असफल सिद्ध हुए। उनकी प्रमुख न्यूनता यह थी कि अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए जिन १३ स्टेटों ने अपने प्रतिनिधि भेजे थे उन सबके लिए इनमें किसी वास्तविक राष्ट्रीय शासन की व्यवस्था नहीं की गई थी। २० वर्ष पूर्व औपनिवेशिक

'दि आर्टिकिल्स ऑव् कॉनफ़ेडरेशन' में संशोधन के लिए बुलाई गई संघीय संविधान-परिषद् का अध्यक्ष जॉर्ज वाशिंगटन।



असेम्बलियाँ यूनियन की ऑल्बानी योजना को अस्वीकृत कर चुकी थीं। परन्तु इंग्लैण्ड के साथ संघर्षों के कारण अब मनोभाव बदल चुके थे। तब तो उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता का क्षुद्र भाग भी स्व-निर्वाचित प्रतिनिधि-संस्था तक को सौंपने से इनकार कर दिया था, परन्तु क्रान्ति-काल में उन्होंने पारस्परिक सहायता की उपयोगिता का अनुभव कर लिया था और वैयक्तिक अधिकारों की हानि का भय अनेक क्षेत्रों में बहुत कुछ घट गया था।

आर्टिकिलों पर अमल १७८१ में शुरू हुआ। यद्यपि महाद्वीप की कांग्रेस-पद्धति द्वारा जो शासन-व्यवस्था की गई थी उससे इन आर्टिकिलों की व्यवस्था प्रगतिशाली थी तथापि इस व्यवस्था में अनेक त्रुटियाँ थीं। सीमा-रेखाओं पर प्रायः झगड़े होते रहते थे। न्यायालयों के निर्णय एक-दूसरे के साथ टकरा जाते थे। मैसैच्यूसैट्स, न्यूयार्क और पैनसिलवेनिया की धारा-सभाओं ने सीमा-कर-सम्बन्धी ऐसे नियम बना दिए थे जिनसे छोटे पड़ोसियों को हानि पहुँचती थी। स्टेटों के मध्य व्यापार की बाधाएँ कटुता उत्पन्न करती रहती थीं।

राष्ट्रीय शासन को अधिकार होना चाहिए था कि वह जो भी सीमा-कर उचित समझे सो लगा दे और व्यापार को नियन्त्रित करे, परन्तु उसे यह अधिकार नहीं था। उसे अधिकार होना चाहिए था कि वह राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए टैक्स लगा सके, परन्तु यह भी उसे प्राप्त नहीं था। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के नियन्त्रण का अधिकार एकमात्र उसे ही होना चाहिए था, परन्तु अनेक स्टेटों ने विदेशों के साथ स्वतन्त्र रूप से समझौतों की बातचीत आरम्भ कर दी थी। नौ स्टेटों ने अपनी सेनाएँ संगठित कर ली थीं और कइयों की तो अपनी छोटी-छोटी जल-सेनाएँ भी थीं। मुद्राओं का विचित्र घपला था। लगभग एक दर्जन विदेशी राष्ट्रों के सिक्के चल रहे थे और राष्ट्र की और स्टेटों की काग़ज़ी हुण्डियों की विविधता से तो अक्ल चकरा जाती थी। इन सबका मूल्य शीघ्रातिशीघ्र गिरता जा रहा था।

युद्ध के पश्चात् की आर्थिक कठिनाइयों के कारण सर्वत्र असन्तोष फैल रहा था। बाजार में खेती की पैदावार की भरमार थी। क़र्जदार किसानों में व्यापक असन्तोष था। वे क़र्ज के कारण क़ैद से बचने के लिए, अपनी सम्पत्ति के बन्धक को निश्चित समय से पहले ही समाप्त कर देने के विरुद्ध कुछ कठोर उपाय करना चाहते थे। अदालतों में क़र्जदारी के मुक़द्मों की भीड़ हो रही थी। १७८६ की गर्मियों में कई स्टेटों की जनता ने विशेष परिषदें और सभाएँ बुलाकर स्टेटों के शासन में सुधार की माँग पेश की। बहुत से किसान क़र्जदारी के कारण जेलखाने को या वंशपरम्परागत खेतों की हानि को सामने देखकर मार-पीट पर उतर आए।

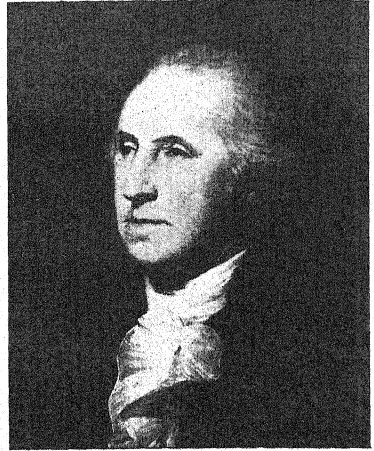
मैसैच्यूसैट्स में तो एक भूतपूर्व सैनिक कैप्टेन डैनियल शेज के नेतृत्व में किसानों के झुण्ड-के-झुण्ड १७८६ की शरद् ऋतु में जिला अदालतों को, स्टेट का अगला चुनाव होने तक, क़र्जदारी के मुक़द्मों का निर्णय करने से रोकने लगे। स्टेट की सरकार ने उनका कठोर विरोध किया। कुछ दिन तक तो यह भय बना रहा कि कहीं बोस्टन में स्टेट के दफ़्तरों पर उत्तेजित किसान आक्रमण न कर दें। परन्तु उन्हें नागरिक सेना ने पहाड़ियों में खदेड़ दिया। धारा-सभा ने विद्रोह शान्त होने के पश्चात् ही, किसानों की शिकायतों की न्याय्यता पर और उन्हें दूर करने के उपायों पर विचार किया।

इस समय वाशिंगटन ने लिखा कि स्टेटों का सम्बन्ध शिथिल हो गया है और कांग्रेस का प्रभाव बहुत क्षीण हो चुका है। पोटोमैक नदी के नागरिक यातायात पर मैरिलैंड और वर्जिनिया के झगड़े के कारण १७८६ में ऐनापोलिस में पाँच स्टेटों के प्रतिनिधियों की एक कान्फ्रेन्स हुई। इनमें से ऐलैग्ज़ैण्डर हैमिल्टन नामक एक प्रतिनिधि ने अपने साथियों को निश्चय करा दिया कि व्यापार का प्रश्न अन्य प्रश्नों से इतना उलझा हुआ है कि वर्तमान उलझन को इस कान्फ्रेंस-सरीखी अप्रातिनिधिक संस्था नहीं सुलझा सकती। उसने उपस्थित प्रतिनिधियों से कहा कि वे सब स्टेटों से देश-भर के प्रतिनिधि एकत्र करके "ऐसी व्यवस्था करने को कहें जिससे कि उनकी दृष्टि में संघीय शासन का संविधान यूनियन की सब आवश्यकताएँ पूरी करने में समर्थ हो जाय।" महाद्वीप की कांग्रेस पहले तो इस असाधारण उपाय पर खिन्न हुई परन्तु उसकी खिन्नता यह समाचार सुनकर शान्त हो गई कि वर्जिनिया ने जॉर्ज वाशिंगटन को अपना प्रतिनिधि चुना है। अगली शरद तथा शीत ऋतु में रोड आइलैंड को छोड़कर शेष सब स्टेटों में प्रतिनिधियों का चुनाव हो गया।

मई १७८७ में फ़िलाडेलफ़िया स्टेट हाउस में जो फ़ेडरल कनवैन्शन हुआ वह एक विशिष्ट व्यक्तियों की सभा थी। स्टेटों की धारासभाओं ने अनुभवी नेताओं को चुनकर भेजा था। जॉर्ज वाशिंगटन क्रान्तिकाल में अपने सैनिक नेतृत्व और अपनी ईमानदारी तथा ख्याति के कारण समस्त देश का

सम्मानित नागरिक माना जाता था। उसे इस कनवेन्शन का अध्यक्ष चुना गया। बुद्धिमान् बैंजमिन फ्रैंकलिन अब ८१ वर्ष का हो चुका था। बुढ़ापे ने उसे बहुत नम्र बना दिया था। उसने अधिकतर विवाद नवयुवकों को ही करने दिया। परन्तु उसके दयालु स्वभाव और व्यापक अनुभव से अन्य प्रतिनिधियों को अनेक कठिनाइयाँ हल करने में सहायता मिली। अन्य क्रियाशील सदस्यों में प्रमुख ये थे : गवर्नियर मौरिस, जो योग्य और साहसी था और एक राष्ट्रीय शासन की आवश्यकता का असन्दिग्ध अनुभव करता था; जेम्स विलसन, पेनसिलवेनिया से आया था और राष्ट्रीयता के विचार की पूर्ति के लिए निरन्तर श्रम करता था; वर्जिनिया से जेम्स मैडिसन आया था जो व्यवहारकुशल नवयुवक राजनीतिज्ञ था और राजनीति तथा इतिहास का विद्वान् था। अपने एक साथी की सम्मति में "अपने श्रम, अध्यवसाय और तन्मयता के कारण वह विवाद में किसी भी प्रश्न पर सर्वाधिक ज्ञानवान् व्यक्ति रहता था।" मैसैच्यूसैट्स ने रूफ़स किंग और एलब्रिज गैरी को भेजा था जो दोनों योग्य और अनुभवी युवक थे। कनैटिकट का प्रतिनिधि रोजर शेरमैन था जो मोची के पेशे से तरक्की करते-करते जज हो गया था। न्यूयॉर्क से एलैग्ज़ैण्डर हैमिल्टन आया था। उसकी आयु तब केवल ३० वर्ष की थी परन्तु उसे प्रसिद्ध हुए अनेक वर्ष बीत चुके थे। औपनिवेशिक अमेरिका के जो महापुरुष अनुपस्थित रहे थे उनमें टौमस जैफ़र्सन भी था जो राष्ट्र के किसी काम से फ्रांस गया हुआ था। पचपन प्रतिनिधियों में अधिकतर युवक थे और उनकी औसत आयु केवल ४२ वर्ष थी।

कनवैंशन को अधिकार तो 'आर्टिकिल्स ऑव् कॉनफ़ेडरेशन' में केवल संशोधन करने को दिया गया था, परन्तु प्रतिनिधियों ने आर्टिकिल्स को उठाकर अलग रख दिया और वे शासन के सर्वथा नये रूप के चिन्तन में प्रवृत्त हो गए। प्रतिनिधियों ने अनुभव किया कि इस समय सर्वप्रधान आवश्यकता स्थानीय नियन्त्रण की शक्ति और केन्द्रिक शासन की शक्ति—इन दोनों में मेल कराने की है। उन्होंने यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रीय शासन के कर्तव्य और अधिकार नये और सर्वसाधारण से सम्बद्ध होने के कारण सावधानतापूर्वक निश्चित किये जाने चाहिएँ और अन्य सब कर्तव्य और अधिकार स्टेटों के हाथ में छोड़ देने चाहिएँ। परन्तु साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय शासन को वास्तविक अधिकार देने की आवश्यकता अनुभव की और इसलिए उन्होंने यह सिद्धान्त स्थिर कर लिया कि अन्य कार्यों के अतिरिक्त मुद्रा ढालने, व्यापार नियन्त्रित करने और युद्ध घोषित करने तथा सन्धि करने का अधिकार राष्ट्रीय शासन को ही रहे। इन कर्तव्यों की पूर्ति के लिए अनिवार्यतः राष्ट्रीय शासन के संगठन की आवश्यकता थी।



जॉर्ज वाशिंगटन, यूनाइटेड स्टेट्स का प्रथम प्रेज़िडेण्ट।

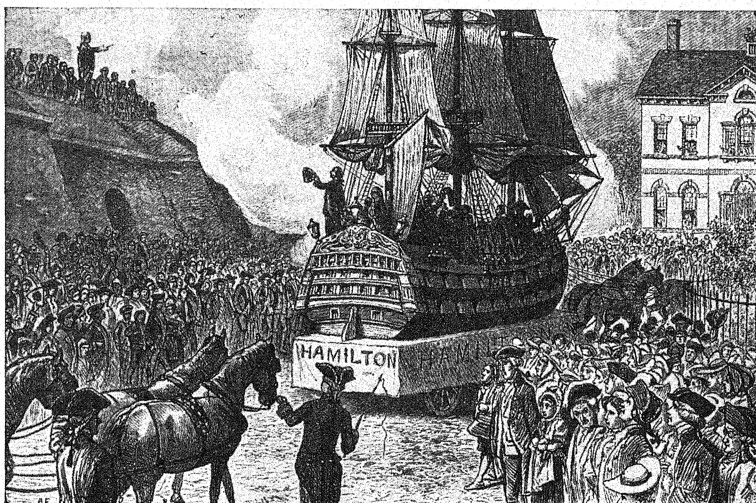
१८वीं शताब्दी के जो राजनीतिज्ञ फ़िलाडेलफ़िया में एकत्र हुए थे वे मोण्टेस्क्यो के राजनीति में शक्ति सन्तुलन के विचार के पक्षपाती थे। इस सिद्धान्त का समर्थन औपनिवेशिक अनुभव से तो स्वभावतः होता ही था, अधिकतर प्रतिनिधियों के सुपरिचित लौक के लेखों से भी इसकी पुष्टि होती थी। इन प्रभावों के कारण सबमें यह सहमति हो गई कि शासन को तीन स्पष्ट विभागों में बाँट दिया जाये और उनमें प्रत्येक एक-दूसरे के समान तथा उसका सहायक रहे। क़ानून-निर्माण, शासन और न्याय के अधिकार इस प्रकार परस्पर सम्बद्ध और व्यवस्थित कर दिये गए कि वे एक-दूसरे के बाधक न हों, अपितु एक-दूसरे को सन्तुलित करते रहें, जिससे कि एक की दूसरे के ऊपर प्रभुता न हो पाए। प्रतिनिधियों ने यह भी सुगमता से मान लिया कि क़ानून-निर्माण विभाग,

उपनिवेशों की धारा-सभाओं और ब्रिटिश पार्लिमेण्ट के समान दो सभाओं में बँटा रहे।

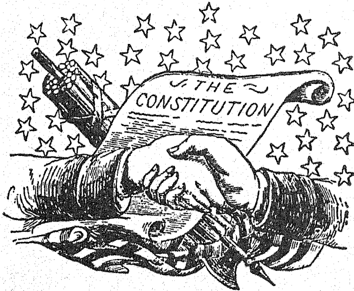
इन मौलिक और साधारण विचारों-पर सब में सहमति हो गई। परन्तु अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचने के उपायों पर सभा में तीव्र मतभेद खड़ा हो गया। न्यूजर्सी सरीखी छोटी स्टेटों के प्रतिनिधियों ने, आर्टिकिल्स ऑव् कॉनफ़ेडरेशन की स्टेट के आधार पर प्रतिनिधि चुने जाने की परम्परा को बदलकर, आबादी के आधार पर चुनाव का विरोध किया और कहा कि इससे संघीय शासन में उनका प्रभाव घट जायगा। इसके विपरीत वर्जिनिया सरीखी बड़ी स्टेटों के प्रतिनिधियों ने आबादी के अनुपात से प्रतिनिधित्व का बलपूर्वक समर्थन किया। भय होने लगा कि इस प्रश्न पर विवाद का कहीं अन्त नहीं होगा। अन्त में कनैटिकट के प्रतिनिधियों ने उत्कृष्ट तर्कपूर्वक यह योजना उपस्थित की कि कांग्रेस की एक सभा में तो प्रतिनिधित्व स्टेटों की आबादी के आधार पर रहे और दूसरी में सब को एक समान प्रतिनिधित्व मिले।

अब बड़ी स्टेटों का छोटी स्टेटों के विरुद्ध संगठन भंग हो गया। परन्तु प्रत्येक नये प्रश्न पर नये कारणों से नये पक्ष बनते और वे नये समझौतों द्वारा ही मिटते थे। कुछ सदस्य चाहते थे कि संघीय शासन की कोई भी शाखा जनता द्वारा सीधी निर्वाचित न की जाय। दूसरे लोग चाहते थे कि निर्वाचन का आधार यथासम्भव व्यापक रहे। कुछ प्रतिनिधि फैलते हुए पश्चिमी प्रदेश को स्टेट बनने के अवसर से वंचित रखना चाहते थे। अन्य १७८७ के आर्डिनैन्स में निहित समानता के सिद्धान्त के पक्षपाती थे। काग़ज़ी मुद्रा, टैण्डर, क़ानूनों और इक़रारनामों की जिम्मेदारी को हानि पहुँचाने वाले कानूनों सरीखे आर्थिक प्रश्नों पर अधिक तीव्र मतभेद नहीं था। परन्तु विभिन्न स्थानीय आर्थिक स्वार्थों में समन्वय, शासक (कार्यपालिका)-विभाग के अधिकारों, अवधियों और व्यक्तियों के चुनाव, न्यायाधीशों के कार्य-काल के निश्चय और अदालतों के भेदों आदि का निर्णय करने के लिए वादविवाद करना पड़ा।

एलैग्ज़ैण्डर हैमिल्टन के नेतृत्व में तीव्र विवादों के पश्चात् न्यूयॉर्क स्टेट ने १७८८ में संविधान को स्वीकार किया।



कनवेन्शन ने फिलाडेलफिया की कठोर ग्रीष्म ऋतु इन समस्याओं को ईमानदारी और दृढ़ता से सुलझाने में व्यतीत कर दी। अन्त को उन्होंने एक सन्तोषजनक मसविदा तैयार कर लिया जिसमें सर्वाधिक उलझन-भरे शासन का संगठन संक्षेप से उल्लिखित था। सर्वोपरि होते हुए भी इस शासन का क्षेत्र सीमित और परिभाषित था। १०वें संशोधन द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया था, कि "जो अधिकार संविधान द्वारा यूनाइटेड स्टेट्स को नहीं सौंपे गए अथवा स्टेटों के लिए निषिद्ध नहीं किये गए वे स्टेटों अथवा जनता के लिए सुरक्षित रखे जाते हैं"; और संघीय क़ानूनों की सर्वोच्चता यहाँ तक सीमित है कि वे "संविधानानुकूल बनाये गए हों।" स्टेटें



अपने-अपने क्षेत्र में समान रूप से सर्वोपरि हैं। वे किसी भी सांविधानिक अर्थ में किसी के अधीन संस्थाएँ नहीं हैं और संघीय तथा स्टेट शासन, दोनों की नींव जनता की सर्व-प्रभुत्व-सम्पन्नता के विशाल आधार पर स्थिर है। बाद के वर्षों में, संघीय अधिकार का क्षेत्र संशोधनों, भावार्थों, (अनुमानों) न्यायालयों की व्याख्याओं और राष्ट्रीय संकटों की आवश्यकताओं द्वारा व्यापक हो चुका है। यही बात स्टेटों के अधिकारों के विषय में है। इस बीसवीं शताब्दी में भी, अमेरिकन नागरिक का वास्ता संघीय शासन की अपेक्षा स्टेट के शासन के साथ अधिक पड़ता है। क्योंकि म्युनिसिपल और स्थानीय शासन का नियन्त्रण, पुलिस के कार्य, कारखानों और मजदूरों के नियम, कम्पनियाँ बनाने की इजाजत, लिखित क़ानून का विकास, दीवानी और फ़ौजदारी मामलों में न्याय, शिक्षण का नियन्त्रण और जनता के स्वास्थ्य, सुरक्षा और सुख-सुविधा आदि का साधारण निरीक्षण आदि सब कार्य स्टेटों के ही हाथ में हैं, संघीय शासन के हाथ में नहीं।

अधिकारों का वितरण करते हुए कनवेन्शन ने टैक्स लगाने, ऋण लेने, समान रूप से तट-कर लगाने और माल के उत्पादन पर कर वसूल करने के अधिकार उदारतापूर्वक और पूर्णतया संघीय शासन को दिये थे। उसे अधिकार दिया गया था कि वह मुद्रा ढाले, वज़न और नाप के परिमाण (स्टैण्डर्ड) निश्चित करे, पेटेण्ट और कॉपीराइट की स्वीकृति दे और डाकघर और डाक की सड़कें बनावे। उसे स्थल और जल-सेनाएँ संगठित करने और रखने और स्टेटों के बीच व्यापार नियन्त्रित करने के अधिकार भी दिये गए। इण्डियनों के साथ व्यवहार के, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के और युद्ध के विषय में पूर्ण अधिकार उसको ही दिये गए। उसको अधिकार मिला कि वह विदेशियों को नागरिक बनाने के कानून बनाए, सार्वजनिक भूमियों का नियन्त्रण करे और नई स्टेटों को पुरानी के समान यूनियन में सम्मिलित करे। उपरोक्त अधिकारों को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक तथा उचित क़ानून बनाने की शक्ति के कारण संघीय सरकार आगामी पीढ़ियों की और बढ़ते हुए राष्ट्र की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए पर्याप्त रूप से लचकीली बन गई।

इस शासन के ढाँचे के निर्माण में प्रत्येक बात पर ब्रिटिश साम्राज्य के अनलिखे संविधान का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई देता था; परन्तु साथ ही इसकी कोई धारा ऐसी न थी जिस पर कि तेरह अमेरिकन स्टेटों में से किसी-न-किसी के संविधान अथवा औपनिवेशिक परम्परा की छाप न हो। अधिकारों की पृथकता का सिद्धान्त अधिकतर स्टेटों के संविधान में उचित परीक्षा के पश्चात् उपयोगी सिद्ध हो चुका था। इसलिए कनवेन्शन ने भी शासन की ऐसी पद्धति स्वीकार की जिसमें क़ानून-निर्माण, शासन और न्याय-विभाग पृथक्-पृथक् रखे गए। परन्तु तीनों का एक-दूसरे पर नियन्त्रण रहा। कांग्रेस में पास हुई कोई भी बात तब तक क़ानून नहीं बन सकती, जब तक कि वह प्रेज़िडेण्ट द्वारा अनुमत न हो जाय और प्रेज़िडेण्ट को भी प्रायः सब महत्त्वपूर्ण नियुक्तियाँ तथा सब सन्धियाँ स्वीकृति के लिए सेनेट के सामने पेश करनी पड़ती हैं। कांग्रेस उस पर महाभियोगारोपण करके उसे पद से पृथक् कर सकती है। क़ानून और संविधान के अन्तर्गत सब मुक़दमे सुनने का कार्य न्याय-विभाग के सुपुर्द

किया गया। फलतः अदालतों को अधिकार है कि वे मौलिक और धारा-सभाओं द्वारा निर्मित क़ानूनों की व्याख्या करें, परन्तु प्रेजिडेण्ट द्वारा नियुक्त और सेनेट द्वारा स्वीकृत न्यायाधिकारियों पर भी कांग्रेस महाभियोगारोपण कर सकती है।

भविष्य में संविधान में संशोधन अथवा परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव करके कनवेन्शन ने एक आर्टिकिल ऐसा भी रख दिया जिसमें संविधान के संशोधन की विधि वर्णित की गई। परन्तु इसमें—अर्थात् आर्टिकिल पाँच में—संविधान को अन्धाधुन्ध परिवर्तन से बचाने की व्यवस्था कर दी गई। तब से अब तक इसका प्रयोग केवल २१ बार हुआ है। इसमें कहा गया है कि कांग्रेस की दोनों सभाओं के दो-तिहाई सदस्य अथवा दो-तिहाई स्टेटें कनवेन्शन में एकत्र होकर संविधान में संशोधन प्रस्तुत कर सकती हैं। ये संशोधन दो प्रकार से क़ानून बनते हैं: या तो स्टेटों की तीन-चौथाई धारा-सभाओं द्वारा और या तीन-चौथाई स्टेटों के कनवेन्शनों द्वारा स्वीकृत होने पर। इन दोनों में से किस उपाय का प्रयोग किया जाय इस बात का निर्णय कांग्रेस करती है।

अन्त में कनवेन्शन के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या आई कि नये शासन को जो अधिकार दिये गए हैं उनका प्रयोग किस प्रकार कियां जाय। पुराने आर्टिकिल्स ऑव् कॉनफेडरेशन में राष्ट्रीय शासन के अधिकार काग़ज पर तो बहुत परन्तु अन्य सब दृष्टियों से अपर्याप्त थे। अमल में ये अधिकार शून्य के समान थे, क्योंकि स्टेटें उन पर कुछ भी ध्यान नहीं देती थीं। नये शासन को इस बाधा से बचाने का उपाय क्या था? आरम्भ में अधिकतर प्रतिनिधियों ने एक ही उत्तर दिया—शक्ति का प्रयोग। परन्तु तुरन्त ही अनुभव किया गया कि स्टेटों पर शक्ति के प्रयोग से यूनियन नष्ट हो जायगी। विवाद करते-करते यह निश्चय हुआ कि शासन को स्टेटों पर अधिकार का प्रयोग नहीं करना चाहिए, प्रत्युत स्टेटों की जनता पर प्रभाव डालना चाहिए। उसका कार्य देश के प्रत्येक निवासी के लिए और उस पर प्रभाव डालने वाले कानून बनाने का था। कनवेन्शन ने संविधान की नींव के रूप में एक संक्षिप्त परन्तु बहुत महत्त्वपूर्ण उपाय निकाला।

"कांग्रेस को अधिकार होगा···ऐसे सब क़ानून बनाने का, जो उपरिलिखित अधिकारों को तथा इस संविधान द्वारा प्राप्त यूनाइटेड स्टेट्स के शासन के अधिकारों को क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक और उचित हों।" (आर्टिकिल १, सैक्शन ८)

"यह संविधान, इसके अनुसार बनाये गए यूनाइटेड स्टेट्स के समस्त क़ानून तथा यूनाइटेड स्टेट्स की ओर से की गई या की जाने वाली समस्त सन्धियाँ, इस देश के सर्वोच्च क़ानून होंगे। प्रत्येक स्टेट के जज, उस स्टेट के अपने संविधान व क़ानूनों में किसी विरोधी बात के बावजूद, उक्त सर्वोच्च क़ानूनों द्वारा बाधित होंगे।" (आर्टिकिल ६)

इस प्रकार यूनाइटेड स्टेट्स के कानून उसके अपने राष्ट्रीय न्यायालयों में अपने ही जजों द्वारा पालनीय हो गए। स्टेटों की अदालतों में भी ये, स्टेटों के जजों और स्टेटों के कानून-अधिकारियों द्वारा, पालनीय माने गए।

विचार-विमर्श के सोलह सप्ताह के अन्त में १७ सितम्बर १७८७ को तैयार संविधान पर "उपस्थित स्टेटों के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से" हस्ताक्षर किये। प्रतिनिधि स्पष्टतः उक्त क्षण की गम्भीरता से प्रभावित थे। वाशिंगटन तो गम्भीर विचार की मुद्रा में बैठा था। फ्रैंकलिन ने एक विशिष्ट विनोदपूर्ण उक्ति द्वारा इस गम्भीरता को भंग कर दिया। वाशिंगटन की कुरसी की पीठ पर चमकदार सुनहरी रंग में चित्रित आधे सूर्य की ओर संकेत कर उसने कहा कि कलाकारों को उदय और अस्त होते हुए सूर्य में भेद करने में सदा कठिनाई होती रही है।

उसने कहा, "मैं विचार के दौरान में, और इसके परिणाम के प्रति अपनी आशाओं और निराशाओं के उतार-चढ़ाव में, बार-बार प्रेजिडेण्ट के पीछे चित्रित सूर्य की ओर देखता रहा हूँ, परन्तु मैं यह निश्चय नहीं कर सका कि यह चित्र उदय होते हुए सूर्य का है या अस्त होते हुए सूर्य का; मुझे अन्त में अब यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि यह उदय होता हुआ सूर्य है, अस्त होता हुआ नहीं।"

कनवेन्शन समाप्त हो गया, फिर भी पूर्ण यूनियन के लिए संघर्ष के एक कठिन भाग का सामना करना शेष रह गया। इस संविधान-पत्र पर अमल होने से पूर्व इस पर स्टेटों के जन-निर्वाचित कनवेन्शनों की स्वीकृति का मिलना आवश्यक था।

कनवेन्शन ने निर्णय किया था कि ज्यों ही तेरह में से नौ स्टेटों के कनवेन्शन इसे स्वीकार कर लेंगे त्यों ही इस पर अमल आरम्भ हो जायगा। १७८७ के अन्त तक तीन स्टेटों ने इसे स्वीकार कर लिया था। बहुत से साधारण लोगों को यह संविधान आपत्तियों से भरा जान पड़ता था। उन्हें भय था कि

इसमें जो शक्तिशाली केन्द्रिक शासन स्थापित किया गया है वह उन पर अत्याचार करेगा, उन्हें भारी-भारी टैक्स लगाकर परेशान करेगा और उन्हें युद्धों में घसीट लेगा। इन प्रश्नों के कारण दो दल बन गए। एक फैडरलिस्टों का और दूसरा ऐण्टि-फैडरलिस्टों का। पहला दृढ़ शासन का पक्षपाती था और दूसरा विविध स्टेटों के शिथिल सम्मिलन का। यह विवाद समाचार-पत्रों में, धारा-सभाओं में और स्टेटों के कनवेन्शनों में भी चला। दोनों पक्षों की ओर से भावुकतापूर्ण युक्तियाँ पेश की गईं। इनमें सबसे योग्यतापूर्ण 'फैडरलिस्ट पेपर्स' थे जो कि संविधान के समर्थन में हैमिल्टन, मैडिसन और जौन जे द्वारा लिखे गए थे। मैसैच्यूसैट्स में अब भी ग्रामीण जनता में असन्तोष फैला हुआ था। वहाँ अत्यन्त तीव्र संघर्ष के पश्चात्, संविधान के संशोधनों के रूप में, उसके साथ एक अधिकार-पत्र (बिल ऑव् राइट्स) जोड़ा गया। अन्य स्टेटों ने भी संविधान में इस प्रकार के परिवर्तन का महत्त्व शीघ्र ही अनुभव कर लिया और जो अधिकार पहले स्टेटों के संविधानों में सम्मिलित थे वे देश के प्रधान संविधान में ही सम्मिलित कर लिये गए और वे मूल संविधान के प्रथम दस संशोधन कहलाए। ये संशोधन यूनाइटेड स्टेट्स के नागरिकों को अन्य अधिकारों के अतिरिक्त धर्माचरण, भाषण, मुद्रण और सम्मेलन की भी स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं। इनके द्वारा स्थायी सेना के स्थान पर नागरिक सेना, जूरी द्वारा मुकदमों की सुनवाई के अधिकार, देश के कानून के अनुसार शीघ्र निर्णय और बिना नाम के वारण्ट निकालने के निषेध की भी व्यवस्था की गई है। अधिकार-पत्र की स्वीकृति का परिणाम यह हुआ कि डाँवांडोल स्टेटें भी शीघ्र ही संविधान की समर्थक बन गईं और यह २१ जून १७८८ को अन्तिम रूप में स्वीकृत हो गया। संघ की कांग्रेस ने प्रेजिडेण्ट के प्रथम चुनाव की व्यवस्था की, और यह घोषणा करने के बाद कि नया शासन ४ मार्च १७८९ को आरम्भ होगा, वह स्वयं समाप्त हो गई।

राष्ट्र के प्रधान पद के लिए प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर एक ही नाम था, वाशिंगटन। वही सर्वसम्मति से प्रेजिडेण्ट चुना गया। ३० अप्रैल १७८९ को उसने शपथ ली, "मैं यूनाइटेड स्टेट्स के प्रेजिडेण्ट के पद का कार्य ईमानदारी से करूँगा और पूरे सामर्थ्य से यूनाइटेड स्टेट्स के संविधान का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा।"

जिस लोकतन्त्र ने इस प्रकार अपना जीवन आरम्भ किया वह पूर्णतया जीवित और जाग्रत था। युद्धजनित आर्थिक समस्याओं का हल होता चला जा रहा था और देश निरन्तर उन्नति कर रहा था। यूरोप से आगमन बड़े परिमाण में हो रहा था। अच्छे खेत स्वल्प मूल्य पर मिल जाते थे और मजदूरों की असाधारण माँग थी। उत्तरी न्यूयॉर्क, पैनसिलवेनिया और वर्जिनिया की सम्पन्न तथा विस्तृत घाटियाँ शीघ्र ही विशाल गेहूँ-उत्पादक क्षेत्रों में परिणत हो गईं। यद्यपि बहुत-सी चीजें अब भी घरों में बनाई जाती थीं कारखाने उन्नति कर रहे थे। जहाजों का यातायात इतना अधिक बढ़ गया था कि समुद्र में इंग्लैंड के पश्चात् यूनाइटेड स्टेट्स का ही नम्बर था। अमेरिकन जहाज १७९० से पूर्व फर बेचने के लिए और वहाँ से चाय, मसाले और रेशम लाने के लिए चीन जाने लगे थे।

परन्तु अमेरिकन शक्तियों के प्रयोग की प्रधान दिशा पश्चिम की ओर थी। न्यू इंग्लैंड और पैनसिलवेनिया वाले ओहायो की ओर बढ़ रहे थे। वर्जिनिया और कैरोलाइना वाले कैण्टकी और टेनेसी की ओर झुक रहे थे। ऐलिगैनी पर्वत की ऊँची चट्टानों पर निर्गन्तुक यात्रियों की सफेद छत वाली गाड़ियों की पंक्तियाँ बढ़ी चली जा रही थीं। प्रति वर्ष अन्न, माँस और पोटैश से लदे हुए अधिकाधिक बेड़े और नावें मिसिसिपी के रास्ते न्यू ओर्लियन्स पहुँचती थीं। प्रतिवर्ष पश्चिम के नगर अधिकाधिक महत्त्वशाली होते जा रहे थे। जंगली जानवरों, रोगों और अन्य आपत्तियों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था; परन्तु वासियों की सहस्रों धाराएँ बियाबान में बहती चली जा रही थीं। आरम्भिक समय का वाक्य—"साम्राज्य का मार्ग पश्चिमाभिमुख है"—उस समय भी लोगों की जबान पर था।

जब वाशिंगटन ने अपना पद सम्भाला तब देश की यह दशा थी। नया संविधान भावी कार्यों का एक नक्शा-मात्र था। उसकी न कोई परम्पराएँ थीं और न उसे संगठित लोकमत का समर्थन ही प्राप्त था। संविधान की स्वीकृति के समय जो दो दल बन गये थे वे अब भी एक-दूसरे के विरोधी थे। बलवान् केन्द्रिक शासन के समर्थक फैडरलिस्ट बढ़ते हुए व्यापार और व्यापारियों के प्रतिनिधि थे। ऐण्टि-फैडरलिस्ट स्टेटों के अधिकारों और भूमि के समविभाजन के पुरस्कर्ता थे। नये शासन को अपने कार्य-संचालन का यन्त्र स्वयं बनाना



जनसाधारण के हर्षोल्लास के मध्य ३० अप्रेल १७८९ को वाशिंगटन ने यूनाइटेड स्टेट्स के प्रेज़िडेण्ट के पद की शपथ ली।

था। टैक्स एकत्र नहीं हो रहे थे। जब तक न्याय-विभाग की स्थापना न हो तब तक क़ानून पर अमल कराने का कोई साधन नहीं था। सेना बहुत छोटी थी और जल-सेना तो समाप्त ही हो चुकी थी।

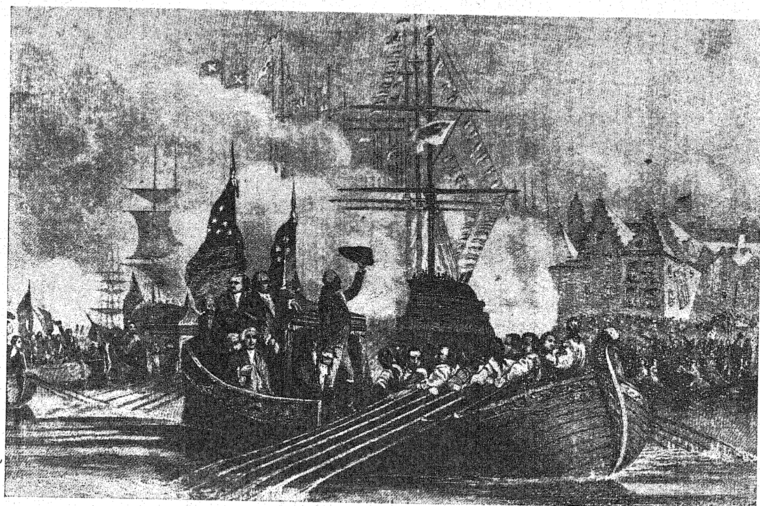
इस समय वाशिंगटन के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व की राष्ट्र को अत्यावश्यकता थी। जिन गुणों के कारण वह क्रान्ति का प्रथम सैनिक बना था उन्होंने ही उसको नवीन संगठित देश का प्रथम शासक बना दिया। उसमें दूरवर्ती उद्देश्य के लिए योजना बनाने की योग्यता और अनन्त कष्ट उठाने की सामर्थ्य थी। वह लोगों में आदर और विश्वास के भाव उत्पन्न कर सकता था। उसमें चतुराई की अपेक्षा सरलता और लचकीलेपन की अपेक्षा दृढ़ता अधिक थी। तेजस्विता तथा गम्भीरता के अतिरिक्त उसमें नम्रता, संकोच और कठोर आत्म-संयम के भी गुण थे।

शासन का संगठन साधारण काम नहीं था। कांग्रेस ने तुरन्त ही विदेश (स्टेट) और अर्थ (ट्रेजरी) विभाग स्थापित कर दिये। वाशिंगटन ने टौमस जैफ़र्सन को सेक्रेटरी ऑव् स्टेट (विदेश-मन्त्री) और अपने क्रान्तिकालीन ए० डी० सी० एलैग्जैण्डर हैमिल्टन को अर्थ मन्त्री नियुक्त कर दिया। साथ ही कांग्रेस ने संघीय न्याय-विभाग स्थापित कर दिया। इसमें एक सुप्रीम कोर्ट (उच्चतम न्यायालय) था जिसका एक चीफ़ जस्टिस और पाँच एसोसिएट अथवा सहायक जस्टिस थे। तीन सर्किट कोर्ट थे और तेरह जिला कोर्ट। सुप्रीम कोर्ट का पहला चीफ़ जस्टिस जौन जे था। देश के प्रथम शासन-संगठन में एक युद्ध-मन्त्री और एक एटर्नी-जनरल भी नियुक्त किये गए। वाशिंगटन सब निर्णय उन व्यक्तियों की सलाह से करना पसन्द करता था जिनकी विचार-शक्ति पर उसको विश्वास था और इसलिए अमेरिकन मन्त्रिमण्डल स्वतः बन गया, यद्यपि कानून द्वारा इसकी सत्ता १६०७ तक स्वीकृत न हुई।

जिस प्रकार अमेरिकन क्रान्ति ने संसारव्यापी ख्याति के दो प्रभावशाली व्यक्तियों वाशिंगटन और फ़्रैंकलिन को उत्पन्न किया था, उसी प्रकार नवजात लोकतन्त्र ने अद्भुत योग्यता वाले दो व्यक्तियों को प्रसिद्ध कर दिया। ये थे हैमिल्टन और जैफ़र्सन। इनकी ख्याति शीघ्र ही समुद्र पार तक फैल गई। यद्यपि दोनों व्यक्ति बड़े थे, परन्तु इन्हें इतिहास में स्थान अपनी उत्कृष्ट एवं असाधारण वैयक्तिक योग्यता के कारण नहीं, अपितु अमेरिकन जीवन की परस्पर-विरोधी दो बलवान् और अनिवार्य धाराओं के प्रतिनिधि होने के कारण मिला था। हैमिल्टन अधिक घनिष्ठ यूनियन और बलवान् राष्ट्रीय शासन का पक्षपाती था और जैफ़र्सन अधिक व्यापक और स्वतन्त्र लोकतन्त्र का।

हैमिल्टन के सार्वजनिक जीवन का आदर्श कुशलता, व्यवस्था और संगठनप्रियता थी। सच तो यह है कि उसने १७७५ से १७८६ तक जो निर्बलताएँ और न्यूनताएँ राष्ट्र के जीवन में देखीं उनके कारण ही उसे उसकी सेवा करने की प्रबल प्रेरणा हुई। जिन मामलों में और लोग बहुत सम्भल-सम्भलकर और निश्चित सिद्धान्तों पर चलना पसन्द करते थे उनमें हैमिल्टन की योजनाएँ साहसपूर्ण और नीतियाँ स्थिर होती थीं। जब उसे हाउस ऑव् रिप्रेज़ेण्टेटिव्ज़ ने सरकार की साख को पूर्णतया बनाए रखने की योजना तैयार करने के लिए कहा तो हैमिल्टन ने न केवल सरकार की मितव्ययिता अपितु प्रभावशाली शासन के भी सिद्धान्तों का प्रतिपादन और समर्थन किया। उसने कहा कि औद्योगिक उन्नति, व्यापारिक विस्तार और शासन के कार्यों के लिए अमेरिका की साख अवश्य ऊँची होनी चाहिए। उसे जनता का पूर्ण विश्वास और समर्थन मिलना चाहिए। बहुत-से लोग राष्ट्रीय ऋण की अदायगी न करने अथवा आंशिक अदायगी करने के पक्ष में थे। परन्तु हैमिल्टन ने न केवल यूनियन सरकार के ऋण को पूरा अदा किये जाने पर बल दिया अपितु उसने एक ऐसी योजना भी उपस्थित की जिस के अनुसार संघ-शासन स्टेटों द्वारा क्रान्ति की सहायता के लिए लिये गए अनचुके ऋण का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले ले। उसने एक, बैंक ऑव् दि यूनाइटेड स्टेट्स की योजना बनायी और देश के विविध भागों में उसे अपनी शाखाएँ खोलने का अधिकार दिया। उसने राष्ट्रीय टकसाल खोलने का भी पोषण किया। उसने राष्ट्रीय व्यवसायों को विकसित करने के लिए उद्योग-संरक्षण के सिद्धान्त पर तट-कर लगाने की नीति का समर्थन किया। इन उपायों का परिणाम भी तुरन्त हुआ। इनसे संघीय शासन की साख मजबूत हो गई और उसे जितनी आय की आवश्यकता थी वह मिलने लगी। उसके व्यापार और व्यवसाय की उन्नति हुई जिससे कि व्यापारियों का एक वर्ग दृढ़तापूर्वक राष्ट्रीय शासन का समर्थन करने लगा।

दूसरी ओर टौमस जैफ़र्सन आचार की अपेक्षा विचारों का मनुष्य अधिक था। हैमिल्टन की प्रतिभा कार्यशील थी और



यूनाइटेड स्टेट्स की प्रथम राजधानी न्यूयॉर्क में प्रेज़िडेण्ट वाशिंगटन का स्वागत। इसके तुरन्त पश्चात् सरकार फ़िलाडेलफ़िया चली गई और वाशिंगटन डि० को०, जाने से पूर्व दस वर्ष तक वहीं रही।

जैफ़र्सन की विचारशील और दार्शनिक। राजनीति में हैमिल्टन से उसका बहुधा मतभेद रहता था। जब वह दूत बनकर फ़्रांस गया तब उसने भी विदेशी सम्बन्धों में दृढ़ केन्द्रिक शासन का मूल्य अनुभव किया। परन्तु फिर भी वह अन्य अनेक मामलों में उसकी दृढ़ता का पक्षपाती नहीं बना। उसे भय रहा कि इससे मनुष्यों की स्वतन्त्रता छिन जायगी। जन्म उसका एक रईस-घर में हुआ था परन्तु अपनी प्रवृत्तियों और विश्वास से वह समानता का पक्षपाती लोकतन्त्री था। वह सदा ब्रिटिश किंग, पुरोहितवर्ग, जमींदारों, जागीरदारों और विषमता से मुक्ति पाने के लिए लड़ता रहा।

हैमिल्टन का प्रधान लक्ष्य देश को अधिक कुशल संगठन प्रदान करने का था। परन्तु जैफ़र्सन व्यक्तियों को अधिकाधिक स्वतन्त्रता देने का पक्षपाती था। उसका विश्वास था कि संसार में "प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक मनुष्य-समूह को स्वशासन का अधिकार है।" हैमिल्टन अराजकता से डरता था और व्यवस्था की भाषा में विचार करता था। जैफ़र्सन अत्याचार से डरता था और स्वतन्त्रता की भाषा में सोचता था। यूनाइटेड स्टेट्स को बलवान् राष्ट्रीय शासन की और मनुष्यों के बन्धन खोलने की—दोनों की ही आवश्यकता थी। देश का सौभाग्य था कि उसे दोनों प्रकार के मनुष्य मिले और वह देश कालान्तर में इन दोनों की विशेष देनों को मिलाकर एक बड़ी हद तक उन में सामंजस्य स्थापित कर सका।

जैफ़र्सन द्वारा सेक्रेटरी ऑव् स्टेट का पद सम्भालने के कुछ ही काल पश्चात् उनका मतभेद प्रकट हो गया और उसके फलस्वरूप संविधान की एक नई और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्याख्या की गई। जब हैमिल्टन ने राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के लिये अपना बिल उपस्थित किया तब जैफ़र्सन ने उसका विरोध किया। उसने राष्ट्रीय अधिकारों के विरुद्ध स्टेटों के अधिकारों का समर्थन किया और बड़ी-बड़ी कम्पनियों से भय खाने वालों का पक्ष लिया। उसने कहा कि संविधान में संघीय शासन के सब अधिकारों की स्पष्ट गणना कर दी गई है और शेष सब अधिकार स्टेटों के लिए सुरक्षित रखे गये हैं, उसे

बैंक खड़ा करने का अधिकार कहीं भी नहीं दिया गया। हैमिल्टन ने कहा कि राष्ट्रीय शासन के सब अधिकार शब्दों में नहीं लिखे जा सकते थे। उसका कथन था कि अनेक अधिकार साधारण धाराओं से ध्वनित हो जाते हैं और इन्हीं में से एक धारा द्वारा कांग्रेस को विशेष रूप से दिये गए अधिकारों का पालन कराने के लिए "जिन क़ानूनों को वह आवश्यक और उचित समझे" उन्हें बनाने का अधिकार दिया गया है। संविधान में कहा गया है कि राष्ट्रीय शासन को टैक्स लगाने और एकत्र करने का, ऋण चुकाने और लेने का अधिकार होगा। राष्ट्रीय बैंक इन कर्तव्यों के कुशलतापूर्वक पालन करने में सहायता करेगा और इस कारण कांग्रेस को इन 'ध्वनित अधिकारों' के अनुसार बैंक स्थापित करने का अधिकार है। वाशिंगटन ने और कांग्रेस ने हैमिल्टन का बिल पास करके एक मिसाल क़ायम कर दी।

यद्यपि देश का प्रथम कार्य अपनी आन्तरिक व्यवस्था को दृढ़ और यूनियन को सुरक्षित करना था तथापि वह बाहर की राजनीतिक घटनाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता था। वाशिंगटन की वैदेशिक नीति का आधार शान्ति-रक्षा था। देश को युद्ध में लगे हुए घाव अच्छे होने के लिए और राष्ट्रीय एकता के मन्द-गति कार्य को चालू रखने के लिए, इस शान्ति की आवश्यकता थी। परन्तु यूरोप की घटनाओं से इसकी पूर्ति में भय उपस्थित हो रहा था। बहुत से अमेरिकन फ़्रांस की क्रान्ति को तीव्र रुचि और सहानुभूति से देख रहे थे। अप्रैल १७६३ में एक समाचार आया जिसने कि इस संघर्ष को अमेरिकन राजनीति का एक प्रश्न बना दिया। फ़्रांस ने ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। नागरिक जीने फ्रैंच लोकतन्त्र का दूत बनकर यूनाइटेड स्टेट्स आ रहा था।

अमेरिका अब भी फ़्रांस का नियमित मित्र था। इस युद्ध से अमेरिकनों को उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का और ब्रिटेन के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करने का अवसर मिलता था। परन्तु यूनाइटेड स्टेट्स के अधिकतर शासकों को फ्रैंचों की सफलता चाहते हुए भी अमेरिका को युद्ध से अलग रखने की चिन्ता थी। इसलिए अप्रैल १७६३ में वाशिंगटन ने यूरोप के झगड़ों में अमेरिका की तटस्थता की घोषणा कर दी और जब जीने अमेरिका पहुँचा तब उसका स्वागत कोरी औपचारिकता द्वारा किया गया। इस व्यवहार से अप्रसन्न होकर उसने अमेरिका की इस आज्ञा का कि अमेरिकन बन्दरगाहों को फ्रैंच प्राइवेटियर (शत्रु के साथ व्यापार को रोकने का प्रयत्न करने वाले जहाज) अपनी कार्रवाई के लिए काम में न लावें, उल्लंघन करने का यत्न किया। कुछ समय पश्चात् फ़्रांस की सरकार ने उसको वापस बुला लिए जाने की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

इस अवधि में (१७६३–१७६५) अमेरिकन लोकमत के दो पक्ष दृढ़तर हो गए। कुछ नागरिकों की दृष्टि में फ़्रांस की क्रान्ति राजतन्त्र और गणतन्त्र, दमन और स्वतन्त्रता तथा एकतन्त्र और लोकतन्त्र के बीच में निर्णायक संघर्ष था और दूसरों की दृष्टि में यह अराजकता और व्यवस्था, नास्तिकता और आस्तिकता और निर्धनता तथा सम्पत्ति के मध्य एकाएक खड़ा हो जाने वाला संघर्ष था। प्रथम पक्ष रिपब्लिकन पार्टी के साथ हो गया और द्वितीय फ़ैडरलिस्टों के साथ। अमेरिका की आज की डेमोक्रेटिक पार्टी उस समय की रिपब्लिकन पार्टी का और आज की रिपब्लिकन पार्टी तब के फ़ैडरलिस्टों का रूपान्तर है।

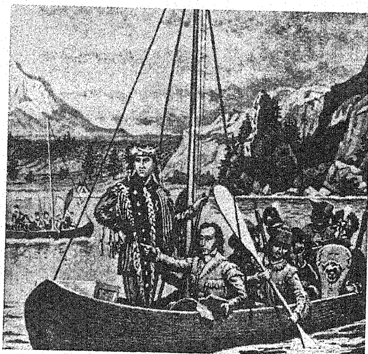
'जीने-घटना' के परिणामस्वरूप फ़्रांस के लिए अमेरिकन उत्साह कुछ मन्द पड़ गया। परन्तु ग्रेट ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध अब भी सन्तोषजनक नहीं थे। ब्रिटिश सेनाएँ अब भी पश्चिमी दुर्गों पर कब्जा किये हुए थीं। क्रान्ति के समय ब्रिटिश सिपाही जो सम्पत्ति उठा ले गये थे, वह भी अब तक न वापस की गई थी, न उसका मूल्य ही दिया गया था और ब्रिटिश जल-सेना अमेरिकन व्यापार को भारी क्षति पहुँचा रही थी। इन मामलों को सुलझाने के लिए वाशिंगटन ने लण्डन को एक असाधारण दूत भेजा। यह अनुभवी कूटनीतिज्ञ जौन जे था जो कि इस समय सुप्रीम कोर्ट का चीफ़ जस्टिस भी था। जौन जे ने संयमपूर्वक कार्य करते हुए एक सन्धि कर ली, जिसके द्वारा पश्चिमी दुर्गों से ब्रिटिश सेनाएँ हट गईं और अमेरिका को कुछ व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त हो गईं। परन्तु सम्पत्ति की वापसी, भविष्य में अमेरिकन जहाजों की पकड़-धकड़ और 'इम्प्रैसमैंट' अर्थात् अमेरिकन नाविकों की ब्रिटिश जल सेना में बलपूर्वक भरती के विषय में इस सन्धि में कुछ नहीं कहा गया था।

जे की सन्धि से सर्वसाधारण में असन्तोष फैला, परन्तु ज्यों-ज्यों वाशिंगटन के द्वितीय शासनकाल की समाप्ति समीप आती गई, त्यों-त्यों यह स्पष्ट होता गया कि अन्य क्षेत्रों में

निश्चित सफलताएँ प्राप्त हो चुकी हैं—शासन सुसंगठित हो चुका है, राष्ट्रीय साख ऊँची हो गई है, समुद्री व्यापार बढ़ रहा है, उत्तर-पश्चिमी प्रदेश पर पुनः अधिकार हो गया है और सर्वत्र शान्ति विराजमान है।

वाशिंगटन १७९७ में रिटायर हो गया। उसने आठ वर्ष से अधिक राष्ट्र के प्रधान पद पर रहकर कार्य करने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया। जौन ऐडम्स, जो कि योग्य और महामना था, दृढ़ और हठी था, नया प्रेजिडेण्ट चुना गया। प्रेजिडेण्ट बनने से पूर्व ही ऐडम्स का हैमिल्टन से झगड़ा हो चुका था। हैमिल्टन पहले के दो शासनों की बहुत अधिक सहायता कर चुका था। इस कारण ऐडम्स के सामने एक विशेष समस्या आ गई। उसकी पीठ पर तो दो विरोधी पार्टियाँ थीं और उसकी बग़ल में विभक्त मन्त्रिमण्डल। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय आकाश में भी घने बादल छा रहे थे। फ़्रांस ने, ब्रिटेन के साथ 'जे की सन्धि' से क्रुद्ध होकर, ऐडम्स का दूत लेने से इनकार कर दिया। जब ऐडम्स ने तीन अन्य कमिश्नर पेरिस भेजे तब उन्हें भी नवीन अपमान का सामना करना पड़ा। अमेरिकन रोष अधिक प्रदीप्त हो गया। सेना की भरती की गई, जल-सेना मजबूत की जाने लगी और १७९८ में फ़्रेंचों के साथ अनेक समुद्री-युद्धों के पश्चात्, जिनमें कि अमेरिकन पोत सदा विजयी होते रहे, युद्ध अनिवार्य प्रतीत होने लगा। इस संघर्ष में हैमिल्टन युद्ध का पक्षपाती था। ऐडम्स ने उसकी सलाह की उपेक्षा करके फ़्रांस को एक नया दूत भेजा। नैपोलियन ने उस समय अधिकार-सूत्र सम्भाले ही थे। उसने उसका हार्दिक स्वागत किया और युद्ध का भय टल गया।

आन्तरिक मामलों में ऐडम्स जनता में लोकप्रिय नहीं था और १८०० में शासन में परिवर्तन होता हुआ प्रतीत होने लगा। वाशिंगटन और ऐडम्स के नेतृत्व में फ़ैडरलिस्टों ने शासन का संचालन योग्यतापूर्वक करके उसे दृढ़ बना दिया था परन्तु उन्होंने ऐसी नीतियों का अनुसरण किया जिनके कारण जनता का बहुत बड़ा भाग उनके विरुद्ध हो गया। जैफ़र्सन जन्मजात नेता था। उसने अपने पीछे छोटे किसानों, दूकानदारों और अन्य कार्यकर्त्ताओं की बड़ी संख्या एकत्र कर ली थी। १८०० के चुनाव में उन्होंने असाधारण बलपूर्वक अपनी सत्ता को प्रकट किया। जैफ़र्सन ने अपने एक मित्र को लिखा, "हमारे पोत के दृढ़ पार्श्वों

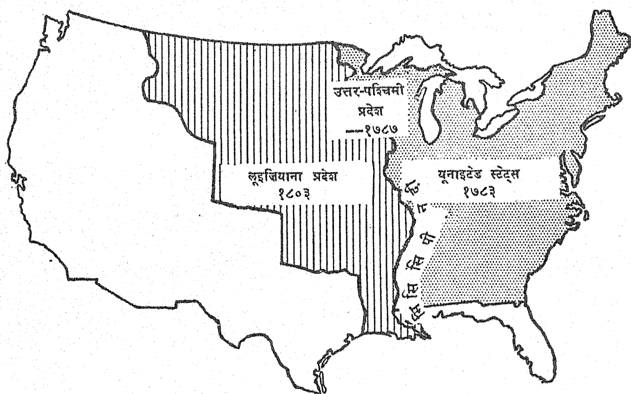


मिसिसिपी नदी के पश्चिम में अज्ञात प्रदेश को खोजने के लिए मेरीवेदर ल्यूइस और विलियम क्लार्क के नेतृत्व में टॉमस जैफ़र्सन द्वारा प्रेषित खोजक-मण्डल।

की पूर्णतया परीक्षा हो चुकी है। अब हम उसे उसके लोकतान्त्रिक मार्ग पर बढ़ाएँगे और वह अब अपनी गति की मनोहरता से अपने निर्माताओं की कुशलता को प्रकट करेगा।"

सचमुच जैफ़र्सन इस समय असाधारण रूप से लोकप्रिय हो रहा था। इसका कारण अमेरिकन आदर्श, सरलता, यौवन और आशापूर्ण भविष्य के प्रति उसकी अपील थी। १८०१ में उसे जिस प्रकार प्रेजिडेण्ट का पद प्राप्त हुआ उससे यह स्पष्ट था कि लोकतान्त्रिक विचार पदारूढ़ हो चुके हैं। जैफ़र्सन अपने अभ्यासानुसार, उपेक्षित वेशभूषा में, अपने कुछ मित्रों के साथ पहाड़ी पर के अपने निवासस्थान से कांग्रेस-भवन गया। सेनेट-भवन में प्रविष्ट होकर उसने हाल के चुनाव में अपने प्रतिस्पर्द्धी वाइस-प्रेजिडेण्ट 'बर' से हाथ मिलाया और सुप्रीम कोर्ट के नव-नियुक्त जस्टिस जौन मार्शल द्वारा दिलाई गई पद की शपथ ली। अपने आरम्भिक भाषण में उसने "शासन को मितव्ययिता और बुद्धिमत्तापूर्वक" चलाने की प्रतिज्ञा की और कहा कि मैं जनता में व्यवस्था की रक्षा करते हुए, "उसको अपना कामकाज और उन्नति करने के लिए सर्वथा स्वतन्त्र रहने दूँगा।"

व्हाइट हाउस में जैफ़र्सन की उपस्थिति-मात्र से लोकतान्त्रिक प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। वह साधारणतम



१८०३ में लूइज़ियाना प्रदेश ख़रीद लेने के पश्चात् यूनाइटेड स्टेट्स का क्षेत्रफल दुगना हो गया और मिसिसिपी नदी की उपजाऊ घाटी भी उसका अंग बन गई।

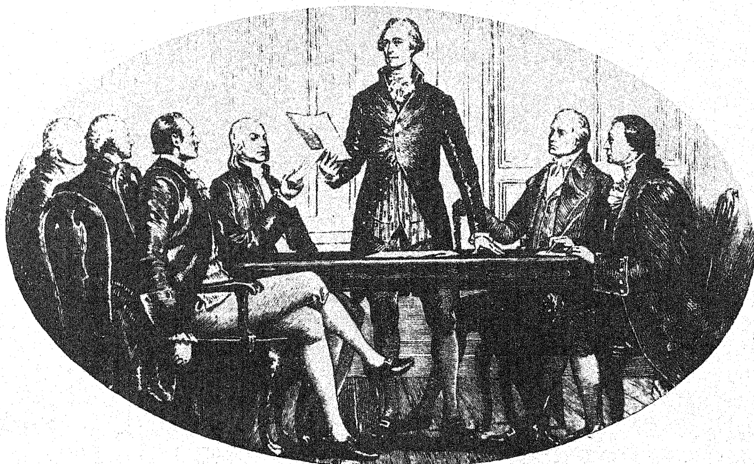
नागरिक का उतना ही सम्मान करता था जितना कि किसी उच्चतम अधिकारी का। उसने अपने मातहतों को सिखलाया कि वे अपने-आपको जनता का विश्वासभाजन सेवक समझें। उसने कृषि को और पश्चिम की ओर विस्तार को उत्साहित किया। उसने नागरिक बनाने के क़ानून को भी उदार कर दिया, क्योंकि उसका विश्वास था कि अमेरिका अत्याचार-पीड़ितों का आश्रयस्थान है। १८०६ के अन्त में उसके दूर-दर्शी अर्थमन्त्री एलबर्ट गैलाटिन ने राष्ट्रीय ऋण को घटाकर ६ करोड़ से भी कम कर दिया। राष्ट्र में जैफ़रसोनियन भावना की लहर चल जाने के परिणामस्वरूप एक के पीछे दूसरी स्टेट मताधिकार के लिए सम्पत्ति की योग्यता को समाप्त करने के और क़र्जदारों तथा अपराधियों के लिए अधिक मानवता-पूर्ण क़ानून बनाने लगी।

जैफ़र्सन के एक काम ने देश का क्षेत्रफल दुगना कर दिया। मिसिसिपी नदी का पश्चिमवर्ती प्रदेश उसके मुहाने के न्यू ओर्लियन्स बन्दरगाह सहित चिरकाल से स्पेन के अधि-कार में था। जैफ़र्सन के पदारूढ़ होने के तुरन्त पश्चात् नैपोलियन ने दुर्बल स्पैनिश सरकार को लूइजियाना नाम का बड़ा प्रदेश फ़्रांस को वापस करने के लिए विवश किया। ज्यों ही उसने ऐसा किया, अमेरिकन लोग भय और आशंका से कांपने लगे, क्योंकि न्यू ओर्लियन्स का बन्दरगाह उनके लिए अत्यावश्यक था। यूनाइटेड स्टेट्स के ठीक पश्चिम में औपनिवेशिक साम्राज्य बसाने की नैपोलियन की योजनाओं से, भीतर की अन्य सब बस्तियों के व्यापारिक अधिकारों और सुरक्षा के लिए भय उत्पन्न हो गया।

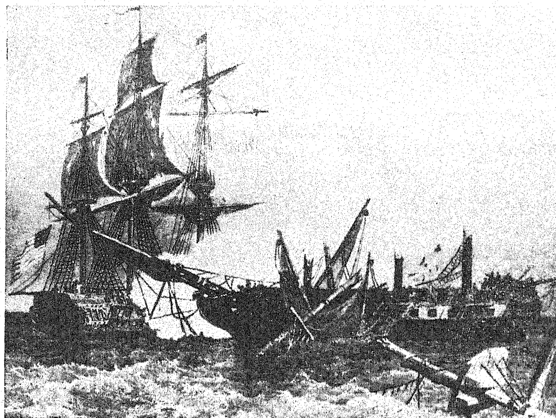
जैफ़र्सन ने बलपूर्वक कहा कि यदि लूइजियाना फ़्रांस के अधिकार में चला जाय तो "उसी क्षण से हमें ब्रिटिश बेड़े और राष्ट्र से गठबन्धन कर लेना चाहिए", और यूरोपियन युद्ध में पहला तोप का गोला न्यू ओर्लियन्स पर एंग्लो-अमेरिकन सेनाओं की चढ़ाई का संकेत होगा। नैपोलियन को निश्चय हो गया कि यूनाइटेड स्टेट्स और इंग्लैंड मिलकर प्रहार करेंगे। वह जानता था कि 'ऐमिऐन्ज की स्वल्प-कालिक सन्धि' के पश्चात् ग्रेट ब्रिटेन के साथ पुनः युद्ध होने वाला है और जब यह होगा तब लूइजियाना उसके हाथ से निकल जायगा, इसलिए उसने लूइजियाना को यूनाइटेड स्टेट्स के हाथ बेचकर अमेरिकन मित्रता प्राप्त कर लेने का निश्चय कर लिया। डेढ़ करोड़ डालर में यह विस्तृत प्रदेश लोकतन्त्र के हाथ में आ गया। इसे खरी-दने के लिए जैफ़र्सन ने "संविधान को इतना खींचा कि यह चरचराने लगा" क्योंकि संविधान की कोई भी धारा

उसे विदेशी प्रदेश खरीदने का अधिकार नहीं देती थी। उसने यह कार्य कांग्रेस की अनुमति लिये बिना ही कर डाला। इसके परिणामस्वरूप यूनाइटेड स्टेट्स को १८०३ में दस लाख वर्गमील से अधिक बड़ा प्रदेश और उसके साथ न्यू ओर्लियन्स का बन्दरगाह प्राप्त हो गए। देश को सम्पन्न मैदानों का बहुत बड़ा प्रदेश मिल चुका था जो कि आगामी ८० वर्षों के भीतर संसार का सबसे बड़ा अन्न-भंडार बनने वाला था। इसके द्वारा महाद्वीप की समस्त केन्द्रिक नदियों का भी नियन्त्रण किया जा सकता था। कुछ ही वर्षों में धुआँ उड़ाते हुए जहाज भूमि पर बसने के अभिलाषी निर्गन्तुकों को लेकर पश्चिमी जलधाराओं में फैल गए और लौटते हुए अपने साथ फ़र, अन्न, सूखा मांस और अन्य सैकड़ों पदार्थ लाने लगे।

अपने प्रथम शासन-काल की समाप्ति के समय भी जैफ़र्सन की लोकप्रियता दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसका पुनर्निर्वाचन निश्चित था। अपने द्वितीय शासन-काल में, जैफ़र्सन ने द्वितीय बार अपने संघीय अधिकार का असाधारण प्रयोग किया और ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के भयंकर युद्ध में अमेरिकन तटस्थता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। दोनों शक्तियों ने व्यापार की घेराबन्दी कर दी थी, और इस प्रकार अमेरिकन व्यापार को भारी चोट पहुँचायी थी। ब्रिटिशों ने यत्न किया कि वे अमेरिकन जहाजों द्वारा फ्रेंच वैस्ट इण्डीज के माल का लाना रोक दें, और इसीलिए उन्होंने ब्रेस्ट से लेकर एल्बे नदी तक यूरोपियन तट की घेरा-बन्दी घोषित कर दी। फ्रांसीसियों ने आज्ञा दी कि जो अमेरिकन जहाज ब्रिटिशों से अपनी तलाशी लिवाएगा या किसी ब्रिटिश बन्दरगाह को स्पर्श भी करेगा उसे वे पकड़ लेंगे। युद्ध शीघ्र ही ऐसी स्थिति में पहुँच गया था कि कोई भी अमेरिकन जहाज फ्रांस द्वारा नियन्त्रित विस्तृत प्रदेश के साथ व्यापार नहीं कर सकता था क्योंकि उसे ब्रिटिशों से पकड़े जाने का डर था और इसी प्रकार ब्रिटेन के साथ व्यापार करने में फ्रांस का भय बना हुआ था। इन परिस्थितियों में



प्रथम वित्त-मन्त्री ऐलैग्ज़ैण्डर हैमिल्टन। सार्वजनिक ऋण को पर्याप्त मान्यता देने की उसकी योजना से ही नवीन राष्ट्र को वित्तीय स्थिरता प्राप्त हुई।



१८१२ में अमेरिकन फ्रिगेट "कौन्स्टिट्यूशन" ने शत्रु के "गैरियेअर" को नष्ट कर दिया। ऐसी नाटकीय विजयों के कारण इस पोत का नाम 'ओल्ड आयरन साइड्स' (लौह पार्श्वों वाला) पड़ गया।

व्यापार डूब गया।

एक और घटना ने अमेरिकन भावनाओं को ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध भड़का दिया। युद्ध जीतने के लिए ब्रिटिश लोग अपनी जलसेना इतनी अधिक बढ़ा रहे थे कि उसमें युद्धपोतों की संख्या ७०० से ऊपर पहुँच चुकी थी और उसके नाविक लगभग डेढ़ लाख थे। इससे ब्रिटेन सुरक्षित रहता था, उसके व्यापार की रक्षा होती थी और उसके उपनिवेशों के साथ उसका यातायात बना रहता था, परन्तु उसके बेड़े के आदमी इतने स्वल्प-वेतन-भोगी, बुभुक्षित और दुर्व्यवहृत थे कि स्वतन्त्र भरती द्वारा नाविकों का मिलना असम्भव हो गया था। बहुत-से नाविक भाग कर अधिक सुखी और सुरक्षित अमेरिकन जहाजों पर आश्रय लेने लगे। इन परिस्थितियों में ब्रिटिश अधिकारी अमेरिकन जहाजों की तलाशी लेने और ब्रिटिश प्रजाजनों को वहां से हटा लेने का अधिकार अपने हाथ में लेना अत्यन्त आवश्यक समझने लगे। जब अंग्रेजी बोलने वाला प्रत्येक नागरिक ब्रिटिश प्रजाजन था तब तो 'इम्प्रैसमैंट' में भूल प्रायः नहीं ही होती थी। परन्तु अब, यूनाइटेड स्टेट्स के स्वतन्त्र राष्ट्र बन चुकने के पश्चात्, बात बदल गई थी। अमेरिकन जहाजों के लिए, ब्रिटिश क्रूज़रों की तोपों के सामने सिर झुका कर, उनके एकाध लैफ्टिनैण्ट और नाविक-दल के सामने अपने नाविकों को पंक्ति बना कर तलाशी के लिए पेश करना अपमानजनक था। इसके अतिरिक्त बहुत से ब्रिटिश अफ़सर उद्धत और अशिष्ट व्यवहार के अपराधी थे और वे वास्तविक अमेरिकन नागरिकों को सैकड़ों की संख्या में जबरदस्ती भरती कर लेते थे।

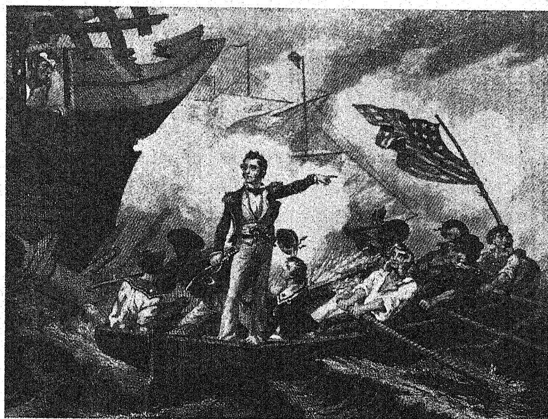
जैफ़र्सन ने बिना युद्ध के ग्रेट ब्रिटेन और फ़्रांस को उन्नित मार्ग पर लाने के लिए कांग्रेस को प्रेरित किया कि वह ऐम्बार्गो ऐक्ट पास कर दे। इस कानून द्वारा वैदेशिक व्यापार सर्वथा निषिद्ध कर दिया गया था। इसके परिणाम भयंकर हुए। एक ओर तो इससे जहाजों का रोजगार प्रायः नष्ट हो गया और न्यूइंग्लैण्ड और न्यूयार्क में असन्तोष दूर तक व्याप्त हो गया और दूसरी ओर खेती करने वाले भी यह अनुभव करने लगे कि उन्हें बहुत हानि हो रही है। जब दक्षिण और पश्चिम से किसान अपना अन्न, मांस और तम्बाकू समुद्र पार भेजने में असमर्थ हो गये तब वस्तुओं के मूल्य गिरने लगे। एक वर्ष के भीतर अमेरिकन निर्यात-व्यापार गिर कर केवल एक-पंचमांश रह गया, परन्तु यह आशा सफल नहीं हुई कि ऐम्बार्गो के कारण भूखा होकर ग्रेट ब्रिटेन अपनी नीति बदल

देगा। जब आन्तरिक असन्तोष बढ़ने लगा तब जैफ़र्सन ने एक नरम उपाय का अवलम्बन किया। उससे आन्तरिक जहाजी व्यापार कुछ सन्तुष्ट हो गया। ऐम्बार्गो ऐक्ट के स्थान पर एक नौन इन्टरकोर्स अर्थात् असहयोग क़ानून लागू किया गया जो ब्रिटेन, फ्रांस और उनके अधीन देशों के अतिरिक्त सबके साथ व्यापार की इजाजत देता था और प्रेजिडेण्ट को अधिकार देता था कि इन दोनों देशों में से जो कोई अमेरिकन व्यापार पर प्रतिबन्धों को उठा ले उसके विरुद्ध क़ानून का अमल रोक दिया जाय। १८१० में नैपोलियन ने प्रतिबन्धों को उठाने की नियमपूर्वक घोषणा कर दी, किन्तु अमल में वे जारी रहे। यूनाइटेड स्टेट्स ने उस पर विश्वास करके उसके पश्चात् अपना असहयोग केवल ब्रिटेन से जारी रखा।

१८०९ में जेफ़र्सन का द्वितीय कार्यकाल समाप्त हो गया और जेम्स मैडिसन प्रेजिडेण्ट बना। ग्रेट ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध और भी बिगड़ गये और दोनों देश शीघ्र युद्ध की ओर झुकने लगे। प्रेजिडेण्ट ने कांग्रेस के सामने एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की जिसमें दिखलाया गया था कि ब्रिटिशों ने तीन वर्ष के भीतर ६०५७ बार अमेरिकन नागरिकों को बलपूर्वक भरती किया। इसके अतिरिक्त उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के निवासियों को इण्डियनों के आक्रमणों से कष्ट पहुँचा था और उनका विश्वास था कि ये आक्रमण कनाडा-स्थित ब्रिटिश एजेण्टों ने करवाये हैं। १८१२ में ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया गया।

परन्तु यूनाइटेड स्टेट्स इस समय अत्यन्त गम्भीर आन्तरिक मतभेदों से पीड़ित था। दक्षिण और पश्चिम तो युद्ध के पक्षपाती थे परन्तु न्यूयॉर्क और न्यू इंग्लैण्ड उसके विरुद्ध थे। जब युद्ध घोषित किया गया तब सेना की तैयारी सर्वथा अपूर्ण थी। नियमित सैनिक सात हजार से कम थे और वे भी समुद्र के किनारे, कनाडा की सीमा पर और सुदूर-मध्यवर्ती प्रदेश में दूर-दूर बिखरे पड़े थे। इनकी सहायता कई स्टेटों की अशिक्षित तथा अनुशासनहीन नागरिक सेना को करनी थी।

युद्ध का आरम्भ कनाडा पर तीन स्थानों पर आक्रमण की तैयारी के साथ हुआ। यदि वह ठीक समय पर और ठीक प्रकार किया जाता तो मौण्ट्रियौल के विरुद्ध सम्मिलित कार्रवाई हो सकती थी। परन्तु सब काम निरी अव्यवस्था से हुआ और उसका फल डेट्रौइट पर ब्रिटिश अधिकार के रूप में सामने आया। परन्तु जहाँ स्थलीय कार्रवाई में असफलता हुई वहाँ समुद्र में अमेरिका की साख अंशतः पुनः जम गई।



अमेरिकनों के लिए लेक ईरी का युद्ध कैप्टेन ऑलिवर पैरी की तत्परता और कुशलता से जीता गया था। उसने सूचना दी थी "हमने शत्रु का सामना किया और वह हमारा हो चुका है।"

अमेरिकन फ्रिगेट 'कौन्स्टिट्यूशन' ने कैप्टेन आइजक हल के संचालन में १६ अगस्त को बोस्टन के दक्षिण-पूर्व में ब्रिटिश जहाज 'गैरियेअर' से सामना किया और तीस मिनट की लड़ाई के पश्चात् हल ने शत्रु के जहाज को पकड़कर सर्वथा नष्ट कर दिया। दो महीने पीछे अमेरिकन स्लूप 'वास्प' ने ब्रिटिश स्लूप 'फ्रौलिक' से टक्कर ली और उसे पूर्णतया नष्ट कर दिया। अमेरिकन जलसेना के इस प्रभावशाली कार्य से संसार चकित हो गया। इसके अतिरिक्त अमेरिकन प्राइवेटियरों ने अटलांटिक में फैलकर १८१२–१३ की शरद और शीत ऋतु में ५०० ब्रिटिश जहाजों को पकड़ लिया।

१८१३ का युद्ध न्यूयॉर्क स्टेट में ईरी झील के आसपास केन्द्रित रहा। जनरल विलियम हैनरी हैरिसन ने नागरिक सैनिकों, स्वयंसेवकों और नियमित सैनिकों की एक सेना लेकर डेट्रौइट को पुनः जीतने के लिए कैण्टकी से चढ़ाई की। १२ सितम्बर को वह अभी ओहायो के ऊपरी प्रदेश में ही था कि उसे समाचार मिला कि कमोडोर ओलिवर पैरी ने ईरी झील पर शत्रु के जहाजों को नष्ट कर दिया है। पैरी केवल दो दिन पूर्व ब्रिटिश जहाजों के समीप पहुँचा था और केवल ढाई घंटे की वीरतापूर्ण कार्रवाई के पश्चात् उसने अपने इस सन्देश द्वारा देश में सनसनी फैला दी कि "हमने शत्रु का सामना किया और वह हमारा हो चुका है।" इसके पश्चात् यह झील अमेरिकन अधिकार में ही रही। अब हैरिसन आक्रमण कर रहा था और एक मास से भी कम समय में उत्तरी कनाडा अमेरिकन अधिकार में आ गया। परन्तु वर्ष के अन्त में औण्टेरियो झील इंग्लिश अधिकार में ही थी। आगामी डेढ़ वर्ष में जो अनेक स्थल और जल युद्ध हुए उनके बाद भी सामरिक स्थिति प्रायः यथापूर्व रही।

युद्ध की समाप्ति घैण्ट की सन्धि से हुई। यूनाइटेड स्टेट्स ने फ़रवरी १८१५ में इसे स्वीकार कर लिया। सन्धि-वार्ता के प्रसंग में दिन-प्रतिदिन इंग्लैण्ड और यूनाइटेड स्टेट्स अपनी माँगों को अधिकाधिक छोड़ते चले गये जिसका विचित्र परिणाम यह हुआ कि अन्तिम सन्धि में दोनों में से किसी ने भी न कुछ खोया और न कुछ पाया। इसमें केवल युद्ध बन्द करने, विजित प्रदेशों को वापस कर देने और सीमा निर्धारित कर देने के लिए एक कमीशन नियत कर देने की बात कही गई थी। 'इम्प्रैसमैंट' और तटस्थता के अधिकारों के विषय में जिनके कारण कि यह महंगा युद्ध हुआ था, एक शब्द भी नहीं कहा गया था। न्यू ओर्लियन्स में प्रबल योद्धा एण्ड्रू जैक्सन के नेतृत्व में सीमावर्ती लोगों की अव्यवस्थित परन्तु विशाल सेना ने बलवान् ब्रिटिश सेना पर जो नाटकीय विजय प्राप्त की उसके कारण यूनाइटेड स्टेट्स को अवश्य प्रसन्न होने का एक वास्तविक कारण मिल गया था। विचित्र बात यह थी कि यह विजय ८ जनवरी १८१५ को हुई जब कि शान्ति-सन्धि पर हस्ताक्षर हो चुके थे, परन्तु अमेरिकन जनता को उसका ज्ञान नहीं हुआ था।

सब युद्धों की भाँति इस युद्ध में भी हानियाँ बहुत हुईं, विशेषतः एक युवा और बढ़ते हुए देश के लिए २१,००० नाविकों और ३०,००० सिपाहियों के मरने अथवा घायल होने की हानि बहुत बड़ी थी। इसके अतिरिक्त १४०० जहाज नष्ट हो गए थे और आर्थिक हानि असाधारण हुई थी। परन्तु इस विषय में ऐतिहासिकों का ऐकमत्य है कि १८१२ के युद्ध का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का दृढ़ीकरण हुआ। इस युद्ध में विविध स्टेटों के जवान कन्धे-से-कन्धा भिड़ाकर लड़े और वर्जिनिया-निवासी विनफ़ील्ड स्कौट के उत्तरी सेनाओं का योग्यतम सेनापति होने के कारण राष्ट्रीय एकता की भावना और भी दृढ़ हो गई। पश्चिमी सेनाएँ पूर्वी समुद्र-तट के अपने सह-देश-भक्तों के साथ मिलकर लड़ीं और तभी से राष्ट्रीय-भावनापूर्ण पश्चिम का महत्त्व अमेरिकन जीवन में और भी बढ़ गया।

एलबर्ट गैलाटिन १८०१ से १८१३ तक अर्थमन्त्री रहा था। उसका कथन था कि इस युद्ध से पूर्व अमेरिकन लोग अत्यधिक स्वार्थी और स्थानीय हितों की अत्यधिक चिन्ता करने वाले होते जा रहे थे। उसने लिखा है, "क्रान्ति ने जो राष्ट्रीय भावना और चरित्र प्रदान किए थे उनका दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा था। उन्हें इस युद्ध ने पुन-र्जीवित और दृढ़ कर दिया। अब लोगों की प्रवृत्ति ऐसे सार्व-जनिक उद्देश्यों की ओर होती जा रही है जिनका उन्हें अभि-मान है और जिनके साथ उनके राजनीतिक विचारों का सम्बन्ध है। वे अब अधिक अमेरिकन बन गये हैं, वे अब एक राष्ट्र की भाँति अधिक सोचने और काम करने लगे हैं, और मुझे आशा है कि इस प्रकार अब यूनियन की स्थिरता अधिक सुरक्षित हो गई है।"

पश्चिम की ओर विस्तार और प्रादेशिक मतभेद

"पश्चिम की ओर जाओ, नौजवान, और देश के साथ साथ फूलो फलो।"
—होरेस ग्रीली, १८५०

१८१२ का युद्ध एक प्रकार से स्वतन्त्रता का द्वितीय युद्ध था, क्योंकि तब तक यूनाइटेड स्टेट्स को राष्ट्रों के परिवार में समानता का पद प्राप्त नहीं हुआ था। युद्ध-समाप्ति की सन्धि के पश्चात् यूनाइटेड स्टेट्स के साथ स्वतन्त्र-राष्ट्रोचित व्यवहार करने से कभी किसी को इनकार नहीं हुआ। क्रान्ति के पश्चात् शिशु राष्ट्र को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था उनमें से अधिकतर अब लुप्त हो गई थीं। राष्ट्रीय एकता पूर्ण हो चुकी थी, स्वतन्त्रता और व्यवस्था में समन्वय हो गया था, राष्ट्रीय ऋण थोड़ा रह गया था और महाद्वीप की नौतोड़ भूमि हल की बाट जोह रही थी। इन सबके कारण शान्ति, समृद्धि और सामाजिक समुन्नति का प्रशान्त दृश्य सामने उपस्थित हो रहा था।

राजनीतिक दृष्टि से तात्कालिक लोगों के शब्दों में यह 'सद्भावना का युग' था और शान्ति के पश्चात् पुनर्निर्माण के जो उपाय किये गए उनमें सबका ऐकमत्य था। व्यापार अमेरिकन जनता को एक राष्ट्र में गठित किये दे रहा था। युद्ध-काल के अभावों ने अमेरिकन कारखानों को तब तक संरक्षण प्रदान करने का महत्त्व प्रकट कर दिया था जब तक कि वे वैदेशिक प्रतिस्पर्धा में भी अपने पाँव पर खड़े होने में समर्थ न हो जायँ। इस बात पर बल दिया जा रहा था कि आर्थिक स्वाधीनता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी राजनीतिक। वस्तुतः आर्थिक स्वावलम्बिता के बिना राजनीतिक स्वाधीनता तत्त्वहीन थी। क्रान्ति के युद्ध से केवल एक की प्राप्ति हुई थी, अतः अब दूसरी की प्राप्ति करनी थी। उस समय के कांग्रेस नेता हैनरी क्ले और जॉन सी० केलहौन का विश्वास 'संरक्षण' में था—अर्थात् ऐसी तटकर-व्यवस्था में जो अमेरिकन उद्योग के विकास में सहायक हो।

यह समय तटकर बढ़ाने के लिए अनुकूल था। वरमौण्ट और ओहायो के गडरिये इंग्लैण्ड की ऊन के आक्रमण से संरक्षण चाहते थे; कैण्टकी में स्थानीय सन के बोरे बुनने के नवीन उद्योग को स्कॉटलैण्ड के बोरों के व्यवसाय से भय हो रहा था; पिट्सबर्ग लोहे की ढलाई का केन्द्र बन रहा था, वह बाजार की माँग ब्रिटेन तथा स्वीडन के लोहे के स्थान पर स्वयं पूरी करना चाहता था। इसी कारण १८१६ में तटकर की दर इतनी ऊँची कर दी गई कि व्यवसायियों को वास्तविक संरक्षण का फल मिल सके। इसके अतिरिक्त जिन लोगों का यह विचार था कि यातायात की सुव्यवस्था पूर्व और पश्चिम को एक-दूसरे के निकट ला देगी, वे सड़कों और नहरों की राष्ट्रव्यापी व्यवस्था का प्रतिपादन कर रहे थे।

इस समय संघीय शासन को उच्चतम न्यायालय की घोषणाओं से बहुत बल मिला। वर्जिनिया का जॉन मार्शल पक्का फैडरलिस्ट (संघी) था। वह १८०१ में मुख्य न्यायाधीश बना और १८३५ में अपनी मृत्यु तक उक्त पद पर रहा। उससे पहले न्यायालय निर्बल था। उसने उसे बलवान बना कर कांग्रेस अथवा प्रेज़िडेण्ट के समान ही प्रभावशाली कर दिया। अपने समस्त ऐतिहासिक निर्णयों में, मार्शल ने एक मौलिक सिद्धान्त—संघीय शासन की सर्वोपरिता—को कभी नहीं छोड़ा।

मार्शल केवल बड़ा जज ही नहीं था, वह एक बड़ा सांविधानिक राजनीतिज्ञ भी था। जब उसका सेवा-काल समाप्त हुआ तब तक वह ऐसे लगभग पचास अभियोगों का निर्णय कर चुका था जिनमें सांविधानिक प्रश्न उलझे हुए थे। इसके

बाद देश-भर की अदालतों ने जिस संविधान का प्रयोग किया वह बहुत-कुछ मार्शल द्वारा व्याख्यात संविधान था। उसके सर्वाधिक प्रसिद्ध निर्णयों में एक *मारबेरी बनाम मेडिसन* था, जिसमें उसने १८०३ में यह व्यवस्था दी थी कि उच्चतम न्यायालय को कांग्रेस के या स्टेट की धारा सभा के किसी भी क़ानून की आलोचना करने का अधिकार है। १८१६ में *मेक्यूलोक बनाम मैरिलैण्ड* के मुकदमे में उसने इस पुराने प्रश्न पर विचार किया था कि संविधान द्वारा शासन को कोई प्रसंगोपात्त अधिकार प्राप्त होते हैं या नहीं। इसमें उसने हैमिल्टन के इस विचार का स्पष्टतया समर्थन किया कि संविधान शासन को उल्लिखित अधिकारों के अतिरिक्त और अधिकार प्रसंगोपात्त रूप में देता है। ऐसे निर्णयों द्वारा मार्शल ने अमेरिकन जनता के केन्द्रीय शासन को सजीव एवं वर्धमान शक्ति बनाने में अन्य किसी भी नेता से कम कार्य नहीं किया।

इस काल में सच्चे अर्थों में अमेरिकन साहित्य की सृष्टि

१८२३ में जेम्स मनरो ने जिस वैदेशिक नीति की घोषणा की थी वही पीछे मनरो डॉक्ट्रिन के नाम से विख्यात हुई।



हुई, जिससे प्रकट होता है कि राष्ट्रीय भावना अधिकाधिक जाग्रत हो रही थी। इस नई अमेरिकन विचार-धारा के प्रमुख लेखक वाशिंगटन अरविंग और जेम्स फ़ैनिमोर कूपर थे। १८०६ में अरविंग की *डाइडरिच-निकरबॉकर* लिखित जो हास्यमय '*हिस्ट्री ऑव् न्यूयॉर्क*' प्रकाशित हुई उसकी प्रेरणा उसे सर्वथा स्थानीय अमेरिकन दृश्यों से मिली थी। अरविंग की *रिप वेन विंकल* की कथा जैसी कई उच्चतम रचनाओं की पृष्ठभूमि न्यूयार्क की हडसन घाटी है और उनमें अमेरिका को कहानी और वीरता की भूमि के रूप में चित्रित किया गया है। इसी प्रकार कूपर की प्रतिभा भी स्वदेशी सामग्री द्वारा अभिव्यक्त हुई। परम्परागत इंग्लिश शैली का एक उपन्यास लिखने के पश्चात् उसने '*दि स्पाई*' नामक अमेरिकन क्रान्ति की कहानी प्रकाशित की जो तुरन्त ही बहुत लोकप्रिय हो गई। उसके पश्चात् '*दि पायोनियर्स*' प्रकाशित हुआ। यह सीमावर्ती अमेरिकन जीवन का एक गद्य-चित्र है। १८२३ से १८४१ के मध्य में कूपर ने '*लेदरस्टॉकिंग टेल्स*' नामक ग्रन्थमाला प्रकाशित की और इसके द्वारा उसने अग्रणी नैटी बम्पो और दबे-पाँव इण्डियन सरदार युंकास को विश्व-साहित्य में अमर कर दिया है। कूपर द्वारा लिखित समुद्र की कहानियों में भी अमेरिकन प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। साहित्यिक संसार की एक और महत्त्वपूर्ण घटना थी—१८१५ में '*दि नौर्थ अमेरिकन रिव्यू*' की स्थापना। अपने योग्य सम्पादक जैरेट स्पार्क्स के नेतृत्व में इसने साहित्य का एक ऊँचा स्तर स्थापित कर दिया। इस पत्र में न्यू इंग्लैंड के कई प्रतिभाशाली लेखक लेख लिखा करते थे और इसने शीघ्र ही राष्ट्र की उदीयमान संस्कृति में स्थायी स्थान पा लिया।

अमेरिकन जीवन के अपना विशेष रूप प्राप्त करने में सीमा प्रदेशों की आकर्षण-शक्ति का बड़ा महत्व था; और सम्भवतः इसका प्रभाव अन्य किसी भी शक्ति की अपेक्षा अधिक पड़ा। समस्त अटलांटिक समुद्र-तट की परिस्थितियाँ लोगों को नये प्रदेशों की ओर गमन के लिए प्रेरित कर रही थीं। न्यू इंग्लैंड की पहाड़ी भूमि सस्ती और उपजाऊ पश्चिमी भूमियों की तुलना में अधिक अन्न उत्पन्न नहीं कर सकती थी। फलतः स्त्री-पुरुषों का प्रवाह भीतर की समृद्ध भूमियों का लाभ उठाने के लिए उधर को बह चला। दक्षिण की परिस्थितियों ने भी निर्गमन को प्रोत्साहन दिया। कैरोलाइना और वर्जिनिया की भीतरी बस्तियों के लोग तटवर्ती बाजारों तक पहुँचने के लिए

सड़कों और नहरों का अभाव अनुभव करते थे। वे समुद्र-तटवर्ती प्लाण्टरों की राजनीतिक प्रभुता के कारण भी दुःखी थे। इसलिए वे भी धीरे-धीरे अटलांटिक तट से रौकीज की ओर बढ़ने लगे। इस निर्गमन का अमेरिकन चरित्र पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। इसने वैयक्तिक सूझ-बूझ को प्रोत्साहन दिया, राजनीतिक और आर्थिक लोकतन्त्र का विकास भी इसके कारण हुआ, लोगों के रीति-रिवाज भी इससे ही कठोर हुए, परम्परा-प्रियता का भी इससे भंग हुआ और राष्ट्रीय अधिकारों का सम्मान करते हुए भी इसने स्थानीय स्वात्म-निर्णय की भावना को जन्म दिया।

अटलाण्टिक तट की पट्टी—प्रथम सीमा—से पश्चिम की ओर का प्रवाह बिना रुके चलता रहा। यह तट की नदियों के मुहानों से आगे एप्पैलेच्यन पर्वत को पार कर गया। १८०० तक मिसिसिपी और ओहायो घाटियाँ बड़े सीमा-प्रदेश बनती जा रही थीं। *"हा-यो, अवे वी गो, फ़्लोटिंग डाउन दि रिवर औन दि ओहायो,"* (हायो, हम ओहायो नदी पर बढ़ते चले जा रहे हैं।) यह गीत हजारों निर्गन्तुकों के मुख पर रहने लगा। १९वीं शताब्दी के आरम्भ में आबादी के इस भारी प्रवाह के कारण पुराने प्रदेशों का विभाजन और नई सीमाओं का निर्धारण आश्चर्यजनक शीघ्रता से हो गया। नई स्टेटों के प्रवेश के साथ ही मिसिसिपी के पूर्व की भूमि का राजनीतिक नक्शा स्थिर हो गया। आधा दर्जन वर्षों में ही छः नई स्टेटें बन गई—इण्डियाना १८१६ में, मिसिसिपी १८१७ में, इलिनौय १८१८ में, अलाबामा १८१९ में, मेन १८२० में और मिसूरी १८२१ में। पहला सीमा-प्रदेश यूरोप के साथ बँधा हुआ था, दूसरा तटवर्ती बस्तियों के साथ, परन्तु मिसिसिपी घाटी स्वतन्त्र थी, और इसके निवासियों की दृष्टि पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर रहती थी।

स्वभावतः सीमा-प्रदेश के निवासी विविध प्रकार के मनुष्य थे। निर्गन्तुकों के आगे-आगे शिकारी और जानवरों को पकड़ने वाले चलते थे। एक अंग्रेज यात्री फ़ोर्डम ने इनके विषय में लिखा है, "ये लोग साहसी और कठोर हैं जो कि छोटी-छोटी झोंपड़ियों में रहते हैं···ये असंस्कृत परन्तु आतिथ्य-प्रेमी हैं, अपरिचितों के प्रति दयालु, ईमानदार और विश्वासपात्र हैं। ये थोड़ी-सी मक्की तथा कद्दू उगा लेते हैं और सूअर पालते हैं, किसी-किसी के पास दो-एक गायें भी दिखाई देती हैं···परन्तु इनके जीवन-निर्वाह का प्रधान साधन बन्दूक है।" ये लोग कुल्हाड़े, फन्दे और मछली के काँटे के प्रयोग में निपुण थे। ये पेड़ों को अंकित करके नये मार्ग बनाते थे और अपने लिए लकड़ियों की झोंपड़ियाँ बनाकर इण्डियनों को परे रखते थे।

जंगलों में प्रवेश करने के साथ साथ नये वासी किसान और शिकारी दोनों बनते गए। मामूली झोंपड़ी के स्थान पर अब वे शहतीरों का सुखदायी मकान बनाने लगे, झरनों के स्थान पर वे कुएँ खोदने लगे। मेहनती तो वे थे ही, वे जंगल साफ़ करके उसकी लकड़ी को पोटैश के लिए जला देते थे। वे अपना अन्न, सब्जियाँ और फल स्वयं उपजाते थे, हिरन के मांस, टर्कियों और शहद के लिए जंगलों को छान डालते थे और पास की जलधाराओं से मछलियाँ पकड़ लेते थे। जो अधिक अस्थिर थे वे सस्ती भूमि के बड़े-बड़े टुकड़े खरीद लेते और जब भूमि का मूल्य बढ़ जाता तो उन्हें बेचकर पश्चिम की ओर बढ़ जाते।

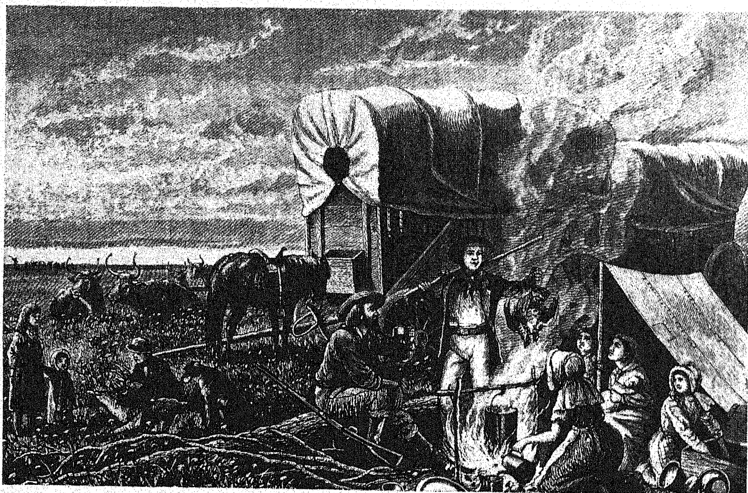
शीघ्र ही किसानों के अतिरिक्त डाक्टर, वकील, दुकानदार, सम्पादक, उपदेशक, मेकैनिक और राजनीतिज्ञ आदि भी आने लगे। इनमें किसान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थे। वे जहाँ बस जाते थे वहीं जीवन-भर रहते थे। वे अपने पूर्ववर्तियों की अपेक्षा बड़ी-बड़ी खत्तियाँ और ईंटों के अथवा लकड़ी के पक्के मकान बनाते थे। वे पशुओं की अच्छी नस्लें लाते थे, जमीन को निपुणता से जोतते थे और अधिक पैदावार के लिए उत्तम बीज बोते थे। अनेक मैदा पीसने और लकड़ी काटने की मिलें और शराब की भट्ठियाँ भी खड़ी कर लेते थे। वे अच्छी सड़कें, गिरिजाघर और स्कूल बनाते थे। पश्चिम इतनी शीघ्रतापूर्वक बढ़ा कि वहाँ कुछ ही वर्षों में सहसा अविश्वसनीय परिवर्तन हो गए। उदाहरणार्थ, दुर्गयुक्त शिकागो जो १८३० में एक निरा व्यापारी ग्राम था, वह अपने अनेक आदिम वासियों के देहान्त से पहले ही संसार के महत्तम और सम्पन्नतम नगरों में अपनी गणना कराने लगा था।

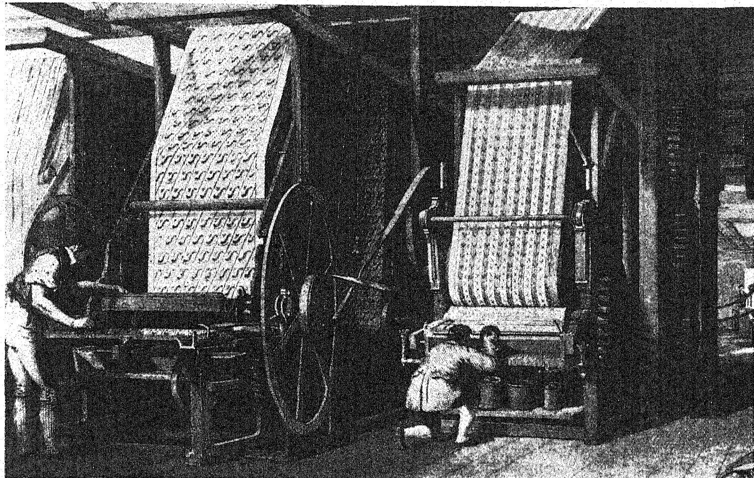
नवीन पश्चिम में विविध लोगों के रक्त का मिश्रण हो गया था। उनमें दक्षिण की ऊँची भूमियों के किसान प्रमुख थे। इन्हीं में से एक के घर में कैण्टकी के शहतीरों के मकान में अब्राहम लिंकन का जन्म हुआ। स्कौच-आयरिशों, पैनसिलवेनियन जर्मनों, न्यू इंग्लैण्डरों और अन्य स्थानों के लोगों ने भी इस प्रदेश के विस्तार में भाग लिया। १८३० तक आधे से अधिक अमेरिका-निवासी ऐसी परिस्थितियों में पल

चुके थे जिनमें पुरानी दुनिया की परम्पराओं और रीति-रिवाजों का या तो अभाव हो गया था या उनका प्रभाव नाम-मात्र को था। पश्चिम के निवासी अपने वंश, पैतृक सम्पत्ति अथवा अधिक शिक्षित होने के कारण प्रतिष्ठित नहीं माने जाते थे, अपितु वे जो कुछ थे और जो कुछ कर सकते थे उसी के कारण उनका मान होता था। खेतों का मूल्य इतना कम था कि कोई भी मितव्ययी व्यक्ति उन्हें खरीद सकता था। खेती के औज़ार भी बहुत सुलभ थे। पत्रकार हौरेस ग्रीली ने लिखा है कि यह वह समय था जब नव-युवक पश्चिम की ओर जा सकते और देश के साथ-साथ फल-फूल सकते थे। आर्थिक उन्नति के अवसरों की समानता के कारण सामाजिक और राजनीतिक समानता की भावना उत्पन्न हो गई थी और जिन में नेतृत्व के स्वाभाविक गुण थे वे झट आगे आ जाते थे। अच्छे अग्रणी के लिए सूझबूझ, साहस, वैयक्तिक उत्साह और तीव्र बुद्धि की आवश्यकता अनिवार्य थी।

न्यू इंग्लैंड के निवासी पश्चिम की ओर बढ़ते हुए अपने साथ अपने प्रदेश के अनेक आदर्शों और संस्थाओं को भी साथ में लेते गए। दक्षिणी लोगों ने भी ऐसा ही किया, और सच तो यह है कि पश्चिम को बसाने की सारी प्रक्रिया में इन दो प्रभावों में परस्पर होड़-सी लग रही थी। दास-प्रथा की समस्या की ओर अब तक जनता का ध्यान कम गया था, परन्तु जैफ़र्सन के शब्दों में अकस्मात् ही "रात में आग की चेतावनी के घण्टे की भाँति" उसे बहुत व्यापक महत्त्व प्राप्त हो गया। लोकतन्त्र के आरम्भिक वर्षों में, बहुत से नेताओं को आशा थी कि दास-प्रथा सर्वत्र स्वयमेव समाप्त हो जायगी। १७८६ में वाशिंगटन ने लिखा था कि मैं हृदय से चाहता हूँ कि कोई ऐसी योजना निकल आए जिससे कि "दास-प्रथा धीरे-धीरे परन्तु निश्चित और अदृश्य रूप में समाप्त हो जाय।" जैफ़र्सन, मैडिसन, मनरो तथा दक्षिण के अन्य विशिष्ट नेताओं ने

छतदार गाड़ियों में देश को पार करते हुए उद्योगी, साहसी और अध्यवसायी अग्रणी, मध्यवर्ती पश्चिम के अस्पृष्ट परन्तु उपजाऊ घास के मैदानों में अपने लिए नये घर बसाने को पूर्व में बसे हुए ग्राम छोड़कर आगे बढ़ जाते थे।





एक उत्तरी मिल में छींट की छपाई। कपड़े की मशीनों ने अमेरिका को विदेशी आयात से मुक्त कर दिया था। १८४० में यूनाइटेड स्टेट्स में सूती कपड़े के १२०० कारखाने चल रहे थे।

भी ऐसे ही वक्तव्य दिये थे। यहाँ तक कि १८०८ में जब दासों का व्यापार समाप्त किया गया तब बहुत से दक्षिणी लोग समझते थे कि दास-प्रथा अब कुछ ही समय की वस्तु है।

परन्तु अगली पीढ़ी में दक्षिणका अधिकतर भाग दास-प्रथा का पोषक हो गया। क्रान्ति के दिनों में आदर्श उदारता की जो भावना सर्वत्र उग्र रूप में विद्यमान थी वह क्रमशः शिथिल हो चुकी थी और उसका स्थान प्यूरिटन न्यू इंग्लैण्ड और दास-बहुल दक्षिण के परस्पर विरोध ने ले लिया था। कुछ नये आर्थिक कारणों से १७६० से पूर्व की अपेक्षा अब दासों का रखना बहुत लाभदायक हो गया था।

इस आर्थिक परिवर्तन का एक बड़ा कारण दक्षिण में विशाल परिमाण में कपास का उत्पादन था। यह परिवर्तन अनेक कारणों से हुआ था। लम्बे रेशे की कपास बोई जाने लगी थी। १७६३ में ऐली ह्विटनी ने कपास ओटने के लिए युग-परिवर्तनकारी 'जिन' मशीन का आविष्कार कर लिया था। कपड़ा बुनने के कारखाने बड़े परिमाण में खुल गए थे और कच्ची रुई की मांग बहुत बढ़ गई थी। फिर १८१२ के पश्चात् पश्चिम में नई भूमियाँ उपलब्ध हो जाने के कारण कपास बोने के भूक्षेत्र का विस्तार हो गया था।

कपास की खेती समुद्र-तट की स्टेटों से पश्चिम की ओर बहुत शीघ्र-शीघ्र बढ़ने लगी और निम्न दक्षिण के अधिकांश में फैलती हुई पहले मिसिसिपी नदी तक और अन्त में टैक्सास तक पहुँच गई। दास-प्रथा को प्रोत्साहन गन्ने की खेती के कारण भी मिला। १८वीं शताब्दी के पिछले भाग में दक्षिण-पूर्वी लूइज़ियाना की उपजाऊ भूमियाँ और गरम मौसम गन्ने की खेती के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हुए और १८३० तक यह स्टेट राष्ट्र की लगभग आधी चीनी की आवश्यकता पूरी करने लग गई। इस खेती के लिए दासों की आवश्यकता पड़ी और वे दक्षिण-पूर्वी समुद्र-तट से लाये गए। अन्त में तम्बाकू की खेती भी पश्चिम की ओर फैली और उसके लिए भी दासों की आवश्यकता हुई। फलतः ऊर्ध्व दक्षिण के दास अधिकतर निम्न दक्षिण और पश्चिम की ओर ले जाये गए।

उत्तर के स्वतन्त्र और दक्षिण के दास-पक्षपाती दोनों ही प्रकार के लोगों के पश्चिम की ओर बढ़ने के कारण राजनीतिक दृष्टि से यह उचित समझा गया कि जो नयी स्टेटें बन रही हैं उनकी संख्या में सन्तुलन रखा जाय। १८१८ में जब इलिनौय स्टेट यूनियन में सम्मिलित हुई तब दस स्टेटों में दास-प्रथा थी और ग्यारह में उसका निषेध था। जब अलाबामा दास-पक्षपाती स्टेट के रूप में सम्मिलित हुई तब यह सन्तुलन फिर क़ायम हो गया। इस समय अनेक उत्तरी लोगों ने मिसूरी के एक स्वतन्त्र स्टेट के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में प्रवेश का विरोध किया और देश में प्रतिवाद की आँधी आ गई। कांग्रेस में गतिरोध हो गया। अन्त को शान्ति के इच्छुक हैनरी क्ले के नेतृत्व में एक समझौता हुआ। मिसूरी को दास-पक्षपाती स्टेट के रूप में प्रविष्ट किया गया और मेन को स्वतन्त्र स्टेट के रूप में। और कांग्रेस ने आज्ञा दी कि 'लूइज़ियाना-सौदा' से जो प्रदेश उपलब्ध हुआ है उसमें मिसूरी की दक्षिणी सीमा से उत्तर में दास-प्रथा सदा के लिए समाप्त कर दी जाय। यह हल अस्थायी था। जैफ़र्सन ने लिखा, "मृत्यु-दण्ड को स्थगित-मात्र किया गया है, यह अन्तिम आज्ञा नहीं है। एक ऐसे नैतिक और राजनीतिक सिद्धान्त द्वारा, जो कि लोगों की तीव्र भावना से बीच-बीच में उत्तेजित होता रहा है, खींची हुई भौगोलिक रेखा कभी मिटेगी नहीं और प्रत्येक नई उत्तेजना उसे अधिकाधिक गहरा करती जायगी।"

१८४० तक कृषि-प्रधान सीमावर्ती प्रदेश का पश्चिम की ओर प्रसार यूनाइटेड स्टेट्स की सीमा से बाहर टैक्सास के अतिरिक्त मिसूरी से आगे नहीं बढ़ा। परन्तु इस अन्तराल में सुदूर पश्चिम फ़र के व्यापार का एक बड़ा केन्द्र बन गया। इसका महत्त्व इतिहास में इन संगृहीत खालों (फ़र) के मूल्य से कहीं अधिक होने वाला था। इस बार भी व्यापारी मार्ग-दर्शक बना। फ्रांसीसी और स्कौच-आयरिश शिकारियों ने बड़ी-बड़ी नदियों और उनकी सहायक नदियों के प्रदेश को छान डाला और रौकीज़ तथा सीयरा पर्वतों में नये-नये मार्गों की खोज की। उन्होंने पश्चिमी प्रदेश में भूगोल का जो नया ज्ञान प्राप्त किया, उसके द्वारा सन् १८४०-४६ में और उसके बाद भी पर्वतों के पार की भूमि में निर्गन्तुकों का प्रवेश सम्भव हो गया। पश्चिम की ओर वासियों के विस्तार के अतिरिक्त १८१६ में यूनाइटेड स्टेट्स ने स्पेन से फ़्लोरिडा और सुदूर-पश्चिम के औरेगॉन प्रदेश के अधिकार प्राप्त कर लिये। इसके बदले में अमेरिकन नागरिक स्पेन से जो ५० लाख डालर का दावा कर रहे थे वह स्पेन पर छोड़ दिया गया।

१८१७ में जेम्स मैडिसन के पश्चात् जेम्स मनरो प्रेजिडेण्ट चुना गया। यह सार्वजनिक नेता के रूप में पहले ही ख्यात हो चुका था। इसमें दो असाधारण गुण थे—इसकी तीव्र व्यवहार-बुद्धि और दृढ़ इच्छा-शक्ति। इसके उत्तराधिकारी जौन क्विन्सी ऐडम्स ने इसके विषय में लिखा था कि "उसका अन्तिम निर्णय सदा ठीक होता था और अन्तिम निश्चय कर लेने पर वह दृढ़ रहता था।" उसके शासन-काल की जिस घटना ने उसका नाम अमर कर दिया वह तथाकथित मनरो सिद्धान्त का प्रतिपादन था।

इस नीति के निर्धारक तीन तत्त्व थे, जो माने हुए अमेरिकन सिद्धान्त थे। पहला यह था कि कोई भी 'स्थायी' अथवा 'उलझन-भरी' मित्रताएं न की जायं। यही सलाह वाशिंगटन, जैफ़र्सन और मैडिसन सभी ने दी थी। दूसरे, जब स्पेन ने लूइज़ियाना को किसी अन्य राष्ट्र के हाथ बेचना चाहा, तब जैफ़र्सन ने यह कह कर प्रतिवाद किया था कि यूनाइटेड स्टेट्स के किसी भी पड़ोसी प्रदेश के भविष्य में हमारी तीव्र रुचि है। तीसरा तत्त्व स्वात्मनिर्णय के सिद्धान्त का था, जिसे कि यूनाइटेड स्टेट्स की जनता ने स्पेनिश-अमेरिकन उपनिवेशों के स्वातन्त्र्य-संघर्ष में उनके साथ सहानुभूति करके प्रकट किया था।

जब से इंग्लिश उपनिवेश स्वतन्त्र हुए थे तभी से लैटिन अमेरिका की जनता में भी उसी प्रकार की स्वतन्त्रता की इच्छा और आशा उत्पन्न हो रही थी। आर्जेण्टीना और चिली १८२१ से पूर्व ही स्वतन्त्र हो चुके थे और १८२२ में जोस डि सैन मार्टिन और साइमन बोलीवर के नेतृत्व में कई अन्य दक्षिणी अमेरिकन स्टेटों ने भी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। १८२४ तक केवल वैस्ट इण्डीज़ में और दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी तट पर कुछ यूरोपियन राष्ट्रों के छोटे-छोटे उपनिवेश रह गए थे। अब अमेरिका में केवल ये और ब्रिटेन के अधीन दो-एक अन्य प्रदेश ही यूरोपियन उपनिवेश बच गए थे।

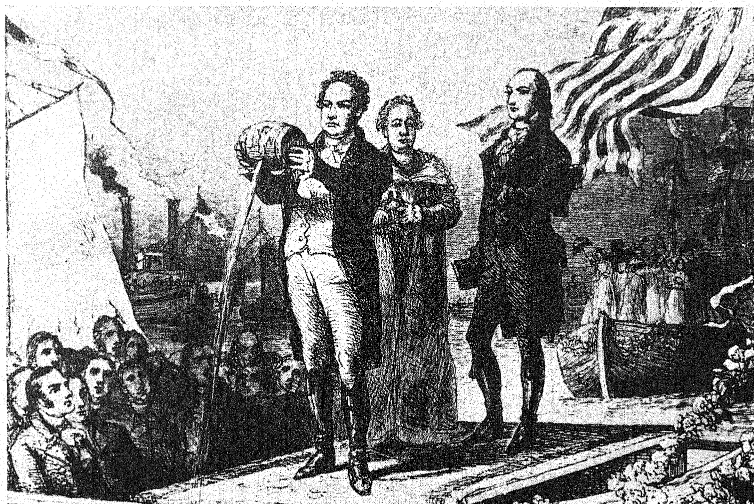
यूनाइटेड स्टेट्स की जनता को जो प्रक्रिया यूरोपियन शासन से मुक्त होने के अपने अनुभव की पुनरावृत्ति प्रतीत हुई, उसमें उसकी गहरी रुचि होना स्वाभाविक था। १८२२ में जनता के बलवान दबाव के कारण प्रेजिडेण्ट मनरो को कोलौम्बिया, चिली, मैक्सिको, ब्राज़ील आदि कई नये देशों की स्वतन्त्रता स्वीकार कर लेने का अधिकार प्राप्त हुआ और उसने शीघ्र ही

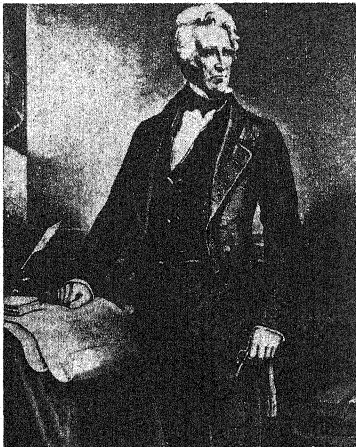
उनसे दूतों का आदान-प्रदान कर लिया। इससे यूनाइटेड स्टेट्स ने यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया कि ये देश स्वावलम्बी, स्वशासित और सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं।

ठीक इसी समय यूरोप की केन्द्रीय शक्तियों ने मिलकर एक संगठन किया जिसका नाम था 'होली ऐलायेन्स'। इसका प्रयोजन था यूरोप के 'वास्तविक' शासकों की क्रान्ति से रक्षा करना। जिन देशों के राजाओं की गद्दी को जनता के आन्दोलन से किसी प्रकार का भय उपस्थित होता था, उनमें यह संगठन इस आशा से हस्तक्षेप करता था कि क्रान्ति का प्रभाव उनके अपने देश पर न पड़ने पावे। यह नीति अमेरिकन स्वात्मनिर्णय के सिद्धान्त की पूरी-पूरी विरोधी थी। जब 'होली ऐलायेन्स' ने अपना ध्यान स्पेन और नई दुनिया में उसके उपनिवेशों की तरफ़ किया, तब दक्षिण अमेरिका के नये शासनों के स्थायित्व में यूनाइटेड स्टेट्स को सन्देह होने लगा। यूनाइटेड स्टेट्स को ऐसा लगा कि कुछ यूरोपियन शक्तियाँ मिलकर उन देशों में घुसना और उन पर अधिकार करना चाहती हैं, जिन्होंने अपने-आपको स्पेन से स्वतन्त्र कर लिया है। अनेक वर्षों से अमेरिकन सरकार वाशिंगटन, हैमिल्टन, जैफ़र्सन, जॉन ऐडम्स और अन्य पुराने राजनीतिज्ञों द्वारा निर्धारित तटस्थता की नीति पर चल रही थी। इस नीति का भाव यह था कि यूनाइटेड स्टेट्स का यूरोप के राजनीतिक गठबन्धनों में कोई भाग नहीं और न वह यूरोपियन युद्धों में भाग लेगा और एक अमेरिकन राष्ट्र की भाँति अपने ही विकास की चिन्ता करेगा। इस नीति से इस सम्बद्ध सिद्धान्त की आप से-आप सृष्टि हो गई कि यूरोपियन शक्तियों को भी अमेरिकन मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

१८२३ में ऐसा लगने लगा कि अब समय आ गया है कि ऐसी कार्रवाई की जाय जिससे लैटिन अमेरिका पर स्पेन की ओर से किसी तीसरे दल के आक्रमण का भय समाप्त हो जाय। २ दिसम्बर को मनरो ने कांग्रेस के सामने अपना वार्षिक

३६३ मील लम्बी ईरी नहर पूरी हो जाने का उत्सव, न्यूयार्क के गवर्नर दि-विट क्लिण्टन ने लेक ईरी के पानी का एक कुप्पा अटलाण्टिक समुद्र में उँडेल कर मनाया था।





यूनाइटेड स्टेट्स का सातवां प्रेज़िडेण्ट एण्ड्रू जैक्सन नवीन तथा लोकतन्त्र-पक्षपाती पश्चिम की प्रसूति था। वह सीमा-प्रदेश की स्फूर्ति और शक्ति की साक्षात् मूर्ति था।

सन्देश पढ़ा। उसके कुछ भाग मूल मनरो सिद्धान्त के ही अंग हैं। मनरो के अपने शब्दों में इस सिद्धान्त की मुख्य बातें ये थीं १. "अमेरिकन महादेश जो स्वतन्त्र और स्वाधीन अवस्था प्राप्त कर चुके हैं और जिसकी कि वे रक्षा कर रहे हैं, उसके कारण भविष्य में उन्हें किसी भी यूरोपियन शक्ति द्वारा उपनिवेश बसाने का साधन नहीं माना जायगा।" २. "यूरोप की मित्र-शक्तियों की राजनीतिक पद्धति अमेरिका की पद्धति से तत्त्वतः भिन्न है....उनकी ओर से यदि इस गोलार्ध के किसी भाग पर अपनी पद्धति को लादने का प्रयत्न किया गया तो हम उसे अपनी शान्ति और सुरक्षा के लिए भय का कारण मानेंगे।" ३. "किसी भी यूरोपियन शक्ति के वर्तमान उपनिवेशों अथवा अधीन प्रदेशों में न हमने कोई हस्तक्षेप किया है और न हम करेंगे।" ४. "यूरोपियन शक्तियों के आपसी मामलों के कारण उद्भूत युद्धों में हमने कभी भाग नहीं लिया और न वैसा करना हमारी नीति से संगत है।"

जब मनरो सिद्धान्त सांसारिक मामलों में अमेरिकन नीति के स्पष्टीकरणार्थ प्रकट किया जा रहा था तब देश की जनता का ध्यान प्रेजिडेण्ट के आगामी चुनाव पर केन्द्रित था। इस चुनाव में पांच उम्मीदवारों का कड़ा मुक़ाबला था, जिनमें से एक न्यू ओर्लियन्स के युद्ध का विजेता ऐण्ड्रू जैक्सन भी था। इसमें विद्वान्, अनुभवी, राजनीतिज्ञ परन्तु किसी से भी समझौता न करनेवाला हठी जौन क्विन्सी ऐडम्स विजयी हुआ। वह असाधारण प्रतिभाशाली, उच्च चरित्रवान् और ऊँची सार्वजनिक भावना का व्यक्ति था। परन्तु साथ ही बर्फ़ के समान उसकी कठोरता, व्यवहार की रूक्षता और उसके दृढ़ बद्धमूल विचार उसकी सफलता में बाधक थे।

उसके शासन-काल में नये दल बन गए। ऐडम्स के अनुयायियों ने अपने दल का नाम नैशनल रिपब्लिकन रख लिया जो कि बाद में ह्विग कहलाये और जैक्सन के अनुयायियों ने डैमोक्रैटिक पार्टी को नया रूप दे दिया। ऐडम्स ने शासन-कार्य ईमानदारी और कुशलता से किया। परन्तु उसे सड़कों और नहरों को राष्ट्रव्यापी पैमाने पर बनाने में सफलता नहीं मिली। उसका शासन-काल निरन्तर आगामी चुनाव के लिए आन्दोलन करते बीता, परन्तु अपने शुष्क बुद्धि-प्रधान स्वभाव के कारण वह अधिक मित्र नहीं बना सका। १८२८ का चुनाव भूकम्प के समान आया। उसमें जैक्सन की प्रबल शक्तियों ने ऐडम्स और उसके सहकारियों को गिरा दिया।

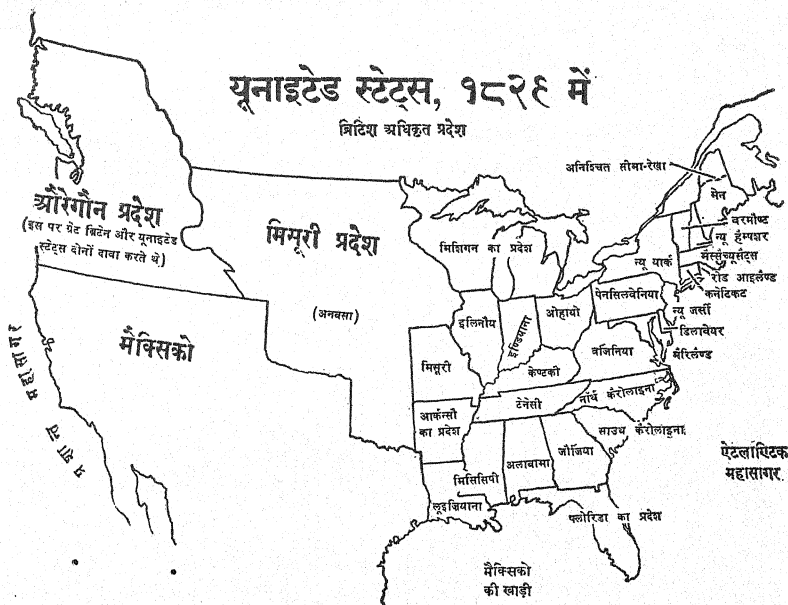
जंगलों के निवासी जिन स्वावलम्बी लोगों ने एलीग़ैनी पर्वतों के पश्चिम में लोकतन्त्र बसाये थे उन्होंने अपने संविधानों में सीमा-प्रदेश के लोकतन्त्री विचारों का उल्लेख कर दिया था। १८२८ तक उनके विचारों के प्रभाव से अधिकतर सब पुरानी स्टेटों में जनमात्र को मताधिकार प्राप्त हो चुका था। १८१२ के युद्ध के बाद से यूनियन में शक्ति का पासंग पश्चिम के हाथ में रहता आया था। राजनीतिक प्रभाव का केन्द्र पश्चिम के युवक लोकतन्त्रों में पहुँच गया था। पूर्व के वोटरों की सहायता से उन्होंने प्रधान शासक के पद पर जैक्सन को प्रतिष्ठित कर दिया।

जैक्सन के पदारूढ़ होने के समय वाशिंगटन में जनता के उत्साह तथा उल्लास द्वारा उसका यह विश्वास प्रत्यक्ष प्रकट हो गया कि शासन-सूत्र उसके हाथ में आ गए हैं। देश के सब भागों से दस हजार दर्शक इस घटना को देखने के लिए एकत्र हुए। लम्बा और दुबला-पतला जैक्सन काली पोशाक पहने और घने सफ़ेद बालों के नीचे बाज के समान तीखा

मुख लिये पैनसिलवेनिया एवेन्यू की कीचड़ में से भीड़ को चीरता हुआ आगे आया। उसके साथ कुछ मित्रों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था। कांग्रेस-भवन की पूर्वी ड्योढ़ी की पत्थर की ऊँची सीढ़ियों पर चढ़कर उसने पद-ग्रहण की शपथ ली और वहीं से अपना आरम्भिक भाषण पढ़ा। भीड़ में प्रत्येक उससे हाथ मिलाने को उत्सुक था और वह चिल्लाती हुई जनता को चीरकर कठिनाई से आगे बढ़ सका। अपने घोड़े पर सवार होकर वह एक अनियमित जलूस के आगे-आगे चलता हुआ ह्वाइट हाउस पहुँचा।

जैक्सन तन-मन से पूर्णतया साधारण जनता के साथ था। उसका जन्म निपट दरिद्रावस्था में हुआ था। उसके पिता का उसके जन्म से पूर्व ही देहान्त हो गया था। कठिनाइयों में पलने के कारण पीड़ित लोगों के साथ उसके हृदय में तीव्र सहानुभूति थी। जब वह निरा लड़का था तभी वह क्रान्ति-युद्ध में लड़ा था, उसके दो भाई इसमें मारे गए थे और वह संसार में अकेला रह गया था। अपना जीवन सीमा-प्रदेश के वकील, प्लाण्टर और व्यापारी के रूप में बिताते हुए उसके मन में पूर्वी आर्थिक संगठनों के प्रति गहरा विश्वास उत्पन्न हो चुका था, क्योंकि पश्चिमी व्यापार पर उनका भारी प्रभाव था। इसके अतिरिक्त जैक्सन को असाधारण कार्य करने के लिए साधारण मनुष्य की योग्यता में बहुत विश्वास था। उसके राजनीतिक सिद्धान्त सरल और व्यापक थे। उसका विश्वास राजनीतिक समानता और सबके लिए समान आर्थिक अवसरों में था। उसे एकाधिकार और विशेष सुविधाओं से तीव्र घृणा थी।

पदारूढ़ होते ही जैक्सन ने इन विचारों पर आचरण बलपूर्वक आरम्भ कर दिया। उसने १८२८ में संरक्षण-कर के



प्रश्न पर साउथ कैरोलाइना के साथ कठोर व्यवहार किया। संरक्षण के सब लाभ उत्तर के निर्माता कारखानेदारों को पहुँच रहे थे, परन्तु ऊँचे मूल्यों का बोझ दक्षिण के प्लाण्टरों पर पड़ता था; और ज्यों-ज्यों कांग्रेस नये क़ानूनों द्वारा संरक्षण-करों की दर ऊँची करती जाती थी त्यों-त्यों समस्त रूप में तो देश सम्पन्नतर होता जाता था, परन्तु साउथ कैरोलाइना की समृद्धि घटती जाती थी। साउथ कैरोलाइना वाले चिरकाल से करों की दर का विरोध कर रहे थे और उन्हें आशा थी कि जैक्सन प्रेजिडेण्ट बनकर इसे सुधारने के लिए अपने अधिकार का प्रयोग करेगा। परन्तु उनकी यह आशा मिथ्या सिद्ध हुई। सन् १८३२ में जब कांग्रेस ने करों का नया क़ानून पास किया तब जैक्सन ने उस पर बिना संकोच हस्ताक्षर कर दिए। साउथ कैरोलाइना वालों ने एक 'स्टेट राइट्स पार्टी' अर्थात् 'राज्याधिकार-रक्षक दल' संगठित किया। यह पार्टी उन लोगों की प्रतिनिधि थी जो निषेधात्मक सिद्धान्त में विश्वास रखते थे, अर्थात् किसी स्टेट के प्रतिनिधियों का कनवेन्शन (विशेष परिषद्) कांग्रेस के किसी ऐक्ट को संविधान के विरुद्ध घोषित कर दे तो वह ऐक्ट उस स्टेट की सीमा में लागू न किया जाय। इस स्टेट की नई धारा-सभा का निर्वाचन इस निषेधात्मक सिद्धान्त पर ही हुआ था और उसने बहुमत से एक 'निषेधीकरण (नलिफ़िकेशन) का आर्डिनेन्स' पास कर दिया। इस आर्डिनेन्स द्वारा १८२८ और १८३२ के टैरिफ़ क़ानून (तटकर-क़ानून) स्टेट की सीमा में असांविधानिक और अनलागू घोषित कर दिये गए और स्टेट के सब अधिकारियों को आज्ञा दी गई कि वे इस आर्डिनेन्स का पालन करने की शपथ लें। स्टेट ने यह भी धमकी दी कि यदि कांग्रेस ने उसके विरुद्ध बल-प्रयोग का कोई क़ानून पास किया तो वह यूनियन से पृथक् हो जायगी।

नवम्बर १८३२ में जैक्सन न सात छोटे जहाज़ और एक युद्धपोत चाल्र्सटन भेजकर उन्हें आज्ञा दी कि वे आदेश मिलते ही कार्रवाई के लिए तैयार रहें। १० दिसम्बर को उसने निषेधकर्ताओं के विरुद्ध एक प्रबल घोषणा-पत्र जारी करके कहा कि साउथ कैरोलाइना 'उपद्रव और विद्रोह की सीमा' पर खड़ा है और उसने स्टेट की जनता से अपील की कि जिस यूनियन के लिए उनके पूर्वज लड़े थे उसके प्रति वे अपनी निष्ठा को पुनः दृढ़ करें। तत्कालीन प्रमुख राजनीतिज्ञ डैनियल वैब्स्टर के समान ही उसने भी बलपूर्वक यही कहा कि यूनाइटेड स्टेट्स "स्वतन्त्र स्टेटों के मध्य कोई गठबन्धन" नहीं, अपितु "एक ऐसा शासन है जिसमें कि सब स्टेटों की जनता का सामूहिक रूप में प्रतिनिधित्व विद्यमान है।"

इसी बीच तटकरों का प्रश्न पुनः कांग्रेस के सामने आया। शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि केवल एक व्यक्ति है जो इस प्रश्न पर कांग्रेस में समझौता करा सकता है। यह सेनेटर हैनरी क्ले था। संरक्षण का प्रबल समर्थक होते हुए भी उसका मध्यमार्गीय टैरिफ़ बिल १८३३ में शीघ्रता से पास हो गया। इस बिल के अनुसार आयात माल पर उसके मूल्य के बीस प्रतिशत से अधिक लगने वाला तट-कर क्रमशः घटाकर १८४२ तक १८१६ के हलके करों के समान कर दिया जाने को था।

कैरोलाइना के निषेधकर्ता नेताओं को आशा थी कि दक्षिण की अन्य स्टेटें भी उनका समर्थन करेंगी, परन्तु इन सब ने साउथ कैरोलाइना की कार्रवाई को अदूरदर्शितापूर्ण और असांविधानिक बतलाया। निषेधीकरण आर्डिनेन्स पर अमल फ़रवरी से होने वाला था, परन्तु स्टेट राइट्स पार्टी के नेताओं की एक सार्वजनिक सभा में जनवरी में कांग्रेस की आगामी कार्रवाई तक उस पर अमल न करने का प्रस्ताव पास हो गया। मार्च में साउथ कैरोलाइना के एक कनवेन्शन ने आर्डिनेन्स को विधिपूर्वक रद्द कर दिया।

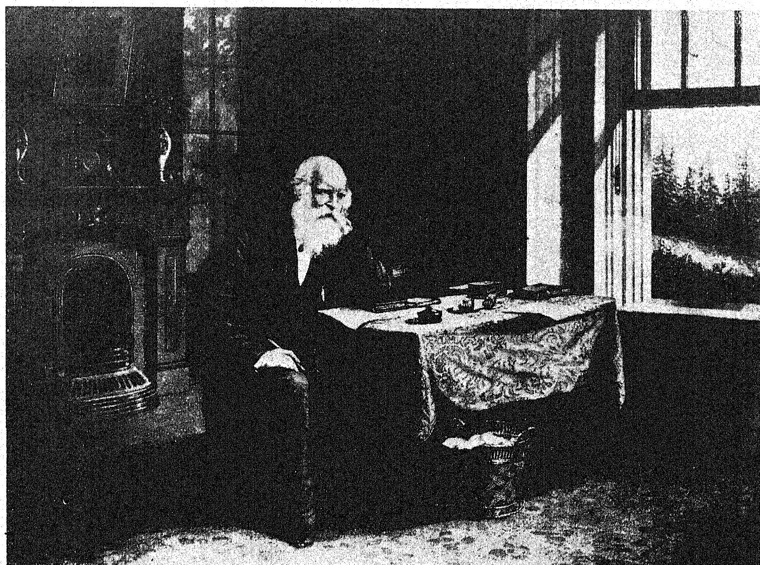
इस घटनाक्रम के पश्चात् दोनों ही पक्ष विजयी होने का दावा करने लगे। केन्द्रीय शासन बिना शर्त यूनियन की प्रभुता के सिद्धान्त के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो गया, परन्तु दूसरी ओर साउथ कैरोलाइना ने विरोध प्रदर्शित करके अपनी बहुत-सी माँगों को पूरा करा लिया। इस घटना का स्टेटों के अधिकार की विचार-धारा पर आगे चलकर बहुत प्रभाव पड़ा। दक्षिण के नेताओं ने देख लिया कि व्यवहार में निषेधीकरण का प्रभाव कुछ नहीं होता, इसलिए अगले तीस वर्षों में वे इस बात पर विशेष बल देते रहे कि शिकायत होने पर किसी भी स्टेट को यूनियन से पृथक् हो जाने का अधिकार है।

निषेधाधिकार का विवाद अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि यूनाइटेड स्टेट्स के द्वितीय बैंक को पुनः चार्टर (पट्टा) दिये जाने का हलचल-भरा संघर्ष छिड़ गया। यह जैक्सन के नेतृत्व की कठिन परीक्षा का अवसर था। १७९१ में यूनाइटेड स्टेट्स का प्रथम बैंक हैमिल्टन के नेतृत्व में स्थापित हुआ था और उसे २० वर्ष का पट्टा दिया गया था। यद्यपि इसकी कुछ पूँजी सरकार की थी परन्तु यह सरकारी बैंक नहीं था, अपितु

यह एक प्राइवेट कम्पनी थी जिसका नफ़ा उसके हिस्सेदारों में बँटता था। इसका उद्देश्य देश की मुद्रा का मूल्य स्थिर रखने और व्यापार को प्रोत्साहन देने का होते हुए भी जो लोग यह समझते थे कि सरकार कुछ सम्पन्न लोगों को विशेष रिआयतें दे रही है वे इसका विरोध करते थे। १८११ में जब बैंक का पट्टा समाप्त हुआ तब कांग्रेस ने उसे फिर जारी नहीं किया। आगामी कुछ वर्षों में बैंकिंग का रोजगार स्टेटों द्वारा चार्टर दिए गये बैंकों के हाथ में रहा। ये इतनी अधिक मुद्रा जारी कर देते थे कि उसका सकारना या मूल्य अदा करना उनकी सामर्थ्य से बाहर हो जाता था। यह स्पष्ट हो गया था कि स्टेटों के बैंक देश में सर्वत्र एक-सी मुद्रा जारी करने में असमर्थ हैं। इसलिए १८१६ में, पहले बैंक के समान, यूनाइटेड स्टेट्स के दूसरे बैंक को बीस साल का पट्टा दे दिया गया।

अपनी स्थापना के आरम्भ से ही दूसरा बैंक देश के नये भागों और कम सम्पन्न लोगों में सर्वत्र अप्रिय था। फिर यह दलील पेश की गई कि देश की मुद्रा-प्रणाली और साख पर बैंक का व्यवहारतः एकाधिकार है और यह अमल में देश के कुछ एक सम्पन्न लोगों के स्वार्थों का प्रतिनिधि है। सब मिलाकर बैंक सुसंचालित था और देश की मूल्यवान् सेवा कर रहा था परन्तु जैक्सन इसके विरोधियों के लोकप्रिय प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था, इसलिए उसने इसका पट्टा फिर जारी करने के बिल को दृढ़तापूर्वक वीटो कर दिया। जहाँ

अपनी आयु की बीसी बिताने के पश्चात् ही विलियम कलन ब्राएण्ट यूनाइटेड स्टेट्स में महाकवि माना जाने लगा था। वह अमेरिकन पत्रकार-जगत् का भी एक प्रधान व्यक्ति था और उनंचास वर्ष तक न्यूयार्क के 'ईवनिंग-पोस्ट' का सम्पादक रहा।





सूसैन ऐन्थौनी, मध्य उन्नीसवीं शताब्दी की आन्दोलन-कर्त्री, राजनीति में स्त्रियों की समानता की पुरस्कर्त्री थी।

एक ओर वीटो का इस प्रकार प्रयोग करते हुए जैक्सन ने बैंकिंग और अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों से अनभिज्ञता प्रकट की वहाँ दूसरी ओर उसने "किसानों, मेकैनिकों और मजदूरों" पर यह असन्दिग्ध रूप से स्पष्ट कर दिया कि वह ऐसे किसी भी कानून का पूर्णतया विरोधी है जिससे 'बलवान् अधिक बलवान् बनता हो'। इस वीटो से भारी सनसनी फैल गई। '*वाशिंगटन ग्लोब*' ने लिखा कि इसने देश को सम्पत्तिशालियों के एकाधिकार से मुक्त कर दिया है परन्तु अन्य राजनीतिज्ञ और बैंकर इस घटनाक्रम का प्रबल विरोध करने लगे। अब यह जाँचना शेष रह गया कि जनता की इच्छा को किसने ठीक-ठीक समझा है—कांग्रेस ने अथवा प्रेजिडेण्ट ने।

इसके पश्चात् जो आन्दोलन हुआ उसमें प्रमुख प्रश्न बैंक का था। इस प्रश्न पर जनता में मौलिक मतभेद था। एक ओर व्यापारी, व्यवसायी और महाजन श्रेणी के लोग थे और दूसरी ओर किसान और मजदूर श्रेणी के। परिणाम 'जैक्सनिज़्म' की उत्साहपूर्ण विजय के रूप में प्रकट हुआ।

जैक्सन ने अपने पुनर्निर्वाचन का यह अर्थ लगाया कि उसे जनता ने बैंक को ऐसा कुचल देने का अधिकार दे दिया है कि यह फिर सिर न उठा सके। बैंक के पट्टे के नियमों में ही उसका हथियार मौजूद था, जो प्रेजिडेण्ट को बैंक में से सब सरकारी रुपया हटा लेने का अधिकार देता था। सितम्बर १८३३ के अन्त में यह आज्ञा जारी हो गई कि यूनाइटेड स्टेट्स के बैंक में और सरकारी धन न रखा जाय और जो धन उसमें मौजूद है उसे धीरे-धीरे साधारण सरकारी खर्चों के लिए निकाल लिया जाय। इस बैंक के स्थान पर अपेक्षाकृत मजबूत स्टेट बैंकों का सावधानतापूर्वक चुनाव किया गया और उनके ऊपर कठोर नियन्त्रण लगा दिया गया।

जैक्सन ने आन्तरिक कार्यों के सुप्रबन्ध में जो चुस्ती और सरलता प्रदर्शित की थी उसी का प्रयोग उसने वैदेशिक मामलों में भी किया। जब फ्रान्स ने यूनाइटेड स्टेट्स की कुछ अदायगियाँ रोक दीं तब उसने फ्रान्सीसी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिए जाने की आज्ञा दी और उक्त देश ठीक रास्ते पर आ गया। जब टैक्सास ने मैक्सिको के विरुद्ध विद्रोह किया और यूनाइटेड स्टेट्स में मिल जाने की अपील की तब उसने दूरदर्शितापूर्वक प्रतीक्षा का मार्ग स्वीकार किया। अपने द्वितीय शासन-काल के अन्त तक उसकी व्यापक लोकप्रियता बनी रही।

जो राजनीतिक पार्टियाँ जैक्सन की विरोधी थीं उन्हें सफलता की तब तक आशा नहीं थी जब तक वे परस्पर बँटी रहें और उनका उद्देश्य एक न हो। फलतः सब असन्तुष्ट तत्त्वों को एक नाम—ह्विग—के नीचे लाने का परीक्षण करके देखा गया। यद्यपि वे संगठित १८३२ के आन्दोलन के पश्चात् ही हो गए थे तथापि वे पारस्परिक मतभेदों को मिटाकर एक स्थान पर एकत्र होने में एक दशक से पूर्व सफल नहीं हो सके। हैनरी क्ले और डैनियल वैब्स्टर ह्विगों के दो योग्यतम और प्रतिभाशाली नेता थे और मुख्यतः इनके व्यक्तित्व से आकृष्ट होकर ही नई पार्टी की सदस्यता दृढ़ हो सकी। साधारणतया आर्थिक और सामाजिक स्थिति के सभी लोग ह्विग पार्टी में थे। १८३६ के निर्वाचन में भी ह्विगों में इतनी विरसता थी कि वे किसी एक व्यक्ति के नेतृत्व अथवा किसी एक कार्यक्रम पर एक नहीं हो सके। फलतः जैक्सन द्वारा समर्थित मार्टिन वान ब्यूरेन चुनाव जीत गया, परन्तु उसकी योग्यताओं

को उसके कार्य-काल की आर्थिक मन्दी ने और उसके पूर्ववर्ती के प्रभावशाली व्यक्तित्व ने छिपा दिया। वान ब्यूरेन के सार्वजनिक कार्यों से जनता में उत्साह उत्पन्न नहीं हुआ, १८४० के निर्वाचन के समय देश बहुत कठिन परिस्थितियों और सस्ती मजदूरियों के कारण पीड़ित था और डैमोक्रैट अपनी स्थिति संभालने की चिन्ता में थे।

प्रेजिडेण्ट पद के लिए ह्विगों का उम्मीदवार ओहायो का विलियम हैनरी हैरिसन अपने-आपको जैक्सन के समान लोकतन्त्र-पक्षपाती पश्चिम का सच्चा प्रतिनिधि मानता था। १८१२ के युद्ध में वह टिपिकैनू की लड़ाई जीत चुका था और इसलिए लोकप्रिय भी था। जौन टाइलर वाइस प्रेजिडेण्ट के पद का उम्मीदवार था। स्टेटों के अधिकार और हलके तटकरों के सम्बन्ध में अपने विचारों के कारण वह दक्षिण में लोकप्रिय था। ह्विगों का आन्दोलन खुशी का एक होहल्ला था। सर्वत्र भारी जलसे, जलूस और मेले हो रहे थे। स्त्रियाँ भी उतनी ही दौड़-भाग कर रही थीं जितनी कि पुरुष। परिणाम हुआ ह्विगों की अत्यन्त प्रबल जीत। यद्यपि ह्विगों में अपने उम्मीदवार पर एका हो गया था परन्तु सार्वजनिक कार्यक्रम पर उनमें अब भी मतभेद था और उन्होंने अपने आन्दोलन में जो दायित्वहीन मौकापरस्ती दिखाई थी उसका दण्ड उन्हें भुगतना पड़ा। पद ग्रहण करने के एक महीने के भीतर ६८ वर्ष बूढ़े हैरिसन का देहान्त हो गया और टाइलर प्रेजिडेण्ट हुआ। उसके विचार क्ले और वैब्स्टर से बिलकुल नहीं मिलते थे और देश में यही दोनों आदमी अब भी सर्वाधिक प्रभावशाली थे। टाइलर के कार्य-काल की समाप्ति से पूर्व ही आपसी मतभेद बहुत स्पष्ट हो गए और जिस पार्टी ने उसे चुना था उसने ही प्रेजिडेण्ट का साथ छोड़ दिया।

एण्ड्रू जैक्सन १८२९ में जब प्रथम बार प्रेजिडेण्ट बना था तब समस्त पश्चिमी संसार में असन्तोष और क्रान्ति की धारा बह रही थी। यद्यपि अमेरिका में सुधार की भावना को अपने कारणों से समर्थन मिल रहा था परन्तु इसकी संसार की तत्कालीन घटनाओं से भी सर्वथा अनुकूलता थी। जिस आन्दोलन ने जैक्सन को प्रेजिडेण्ट बनाया वह राजनीति में लोकतान्त्रिक अभ्युत्थान का और अधिकाधिक अधिकारों और अवसरों की ओर जन-साधारण की प्रगति का एक उदाहरण-मात्र था। सन् १८३० से १८५० तक के काल की एक विशेषता थी मनुष्य जाति की पूर्णता प्राप्त कर सकने में बलप्रद विश्वास,



स्त्रियों के अधिकारों की समर्थिका ऐमिलिया ब्लूमर अपने पत्र में इस 'सुधरे हुए' वेश का खूब विज्ञापन करती थी। इसका नाम ही 'ब्लूमर वेश' पड़ गया था।

और इसका परिणाम हुआ जनसाधारण के बौद्धिक, आध्यात्मिक और भौतिक जीवन का बन्धनमुक्त होना।

उदार राजनीतिक आन्दोलन के साथ-साथ मजदूर-संगठनों का भी आरम्भ हो रहा था। १८३६ तक उत्तरी समुद्र-तट के नगरों में मजदूर-यूनियनों की सदस्य-संख्या लगभग तीन लाख हो गई थी और उन्हें अनेक स्थानों पर मजदूरों की दशाओं में सुधार करने में सफलता हो चुकी थी। १८३५ में मजदूरों को फ़िलाडेलफ़िया में अपना सर्वाधिक प्रिय सुधार अर्थात् पुराने 'प्रभात से संध्या तक' के दिन के स्थान पर दस घण्टे का दिन कराने में सफलता हो गई। यह अन्य अनेक स्थानों में इस प्रकार के सुधारों का आरम्भ-मात्र था।

मजदूर-आन्दोलन और मानवी सुधारों के लिए मजदूरों का उत्साह इस समय के प्रगतिशील आन्दोलन का अनिवार्य भाग थे। शिक्षण की समानता के लिए उनका संघर्ष विशेष उल्लेखनीय था। वयस्क-मात्र को मताधिकार के प्रसार ने शिक्षण-सम्बन्धी एक नवीन विचार को जन्म दिया। दूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने अनुभव किया कि यदि व्यापक अज्ञानता के रहते हुए मनुष्य-मात्र को मताधिकार दिया गया तो उसका परिणाम भयंकर होगा। न्यूयार्क के डी विट क्लिण्टन, इलिनौय

के अब्राहम लिंकन और मैसैच्यूसैट्स के हौरेस मान आदि के प्रयत्नों को नगरों में संगठित मजदूरों के निरन्तर और प्रबल आन्दोलन से भी बल मिला। मजदूर नेताओं ने मांग की कि शिक्षा सब बालकों के लिए मुफ्त हो और स्कूलों को सरकारी खर्च द्वारा चलाया जाय। १८३० में फ़िलाडेलफ़िया के श्रमिकों ने कहा: "...समझने की वास्तविक सामर्थ्य का व्यापक प्रसार किये बिना वास्तविक स्वतन्त्रता नहीं हो सकती...जब तक सब के लिए समान शिक्षा-प्राप्ति के समान अवसर सुलभ न किये जायंगे तब तक स्वतन्त्रता एक अर्थ-हीन शब्द और समानता छाया मात्र रहेगी।" धीरे-धीरे एक के बाद दूसरी स्टेट में क़ानून द्वारा यह व्यवस्था होती गई। १८४० से १८४६ तक उत्तर में सर्वत्र सार्वजनिक स्कूलों की पद्धति सामान्य हो गई।

जिस आदर्शवाद ने पुरुषों को अपने प्राचीन बन्धनों से मुक्त किया था उसने स्त्रियों में भी यह जागृति उत्पन्न कर दी कि समाज में उनकी स्थिति पुरुषों के समान क्यों नहीं है। औपनिवेशिक काल से ही अधिकतर मामलों में अविवाहित स्त्रियों के क़ानूनी अधिकार पुरुषों के समान माने जा रहे थे। परन्तु रिवाज के अनुसार उन्हें शीघ्र विवाह कर लेना पड़ता था और विवाह के पश्चात् क़ानून की नज़र में उनकी पृथक् सत्ता प्रायः समाप्त हो जाती थी। स्त्री-शिक्षण बहुत-कुछ पढ़ने-

जॉन ल्यूइस क्रिमेल द्वारा चित्रित १८१६ में फ़िलाडेलफ़िया के नगर-व्यापी चुनाव का एक दृश्य। दाईं ओर पंक्ति में खड़े हुए मतदाता भीतर बैठे क्लर्कों को अपने मतपत्र दे रहे हैं।



लिखने, गाने-बजाने, नाचने और सीने-पिरोने तक ही सीमित था। निस्सन्देह स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त नहीं था। स्त्रियों की जागृति अमेरिका में फ्रैंसिस राइट नामक प्रगतिशील विचारों की एक स्कौच स्त्री के आगमन से आरम्भ हुई। जब वह सभाओं में धर्म-शास्त्र और स्त्रियों के अधिकारों पर व्याख्यान देने के लिए खड़ी होती तब जनता को बड़ा आश्चर्य होता था। परन्तु उसकी देखा-देखी अमेरिकन स्त्री-आन्दोलन में फ़िलाडेलफ़िया की क्वेकरेस ल्युक्रिशिया मौट, सूसैन बी० ऐन्थोनी और एलिज़ाबेथ कैडी स्टैण्टन-जैसी बड़ी-बड़ी हस्तियां आगे आईं। इन्होंने न केवल पुरुषों की अपितु बहुत सी स्त्रियों की भी घृणा का सामना किया और अपनी शक्ति का उपयोग दास-प्रथा को उठाने, स्त्रियों को अधिकार दिलाने और मजदूरों का सुख बढ़ाने में किया। १८४८ में संसार के इतिहास में प्रथम बार स्त्रियों के अधिकारों का एक कनवेन्शन (विशेष परिषद्) सेनेका फ़ौल्स (न्यूयार्क) में हुआ। प्रतिनिधियों ने एक घोषणा-पत्र तैयार किया जिसमें यह मांग की गई कि क़ानून की दृष्टि में स्त्रियां शिक्षण, अर्थव्यवस्था और मताधिकार में पुरुषों के समान समझी जायँ। स्त्रीपक्ष समर्थक नेताओं को मित्रों का अभाव नहीं था। राल्फ़ वाल्डो एमर्सन, लिंकन और हौरेस ग्रीली सरीखे प्रमुख व्यक्ति उनकी ओर से व्याख्यान देते और कार्य करते थे। यद्यपि यह समय आन्दोलन का था, सफलता का नहीं, तथापि कुछ निश्चित सुधार हुए। १८३९ में मिसिसिपी ने विवाहित स्त्रियों को अपनी संपत्ति की स्वयं व्यवस्था का अधिकार दे दिया और आगामी दशक के भीतर सात अन्य स्टेटों ने भी ऐसे ही के क़ानून बना दिये। १८२० में ऐमा विलर्ड ने एक कन्या-विद्यालय खोला। १८३७ में कालिज की समकक्ष माउंट होलयोक नामक एक संस्था स्थापित हुई। इससे भी अधिक साहसपूर्ण बात सहशिक्षण की थी जिसका नेतृत्व ओहायो के तीन कालिजों ने किया।

आशा के अनुरूप ही राष्ट्रीय आत्मविश्वास की भावना उस समय प्रकाशित विविध साहित्य द्वारा भी प्रकट हो रही थी। १८३० के पश्चात् के दशक में बहुसंख्यक अमेरिकन कवि और लेखक सामने आये। हैनरी वैड्सवर्थ लौंगफ़ैलो, जौन ग्रीनलीफ़ ह्विटियर, औलिवर वैण्डैल होम्स और जेम्स रसैल लौवैल ने अपना कवि-जीवन इसी समय आरम्भ किया। एमर्सन ने व्यक्ति के महत्त्व और मनुष्य की उच्चता के सिद्धान्तों का प्रचार अपने अमर गद्य और पद्य द्वारा इसी समय किया। नैथैनियल हौथर्न और एडगर ऐलन पो ने मनुष्य के विषादपूर्ण और दिव्य अनुभवों को साहित्य में समाविष्ट करके यह सिद्ध कर दिया कि अमेरिकन विचार शक्ति सर्वतोमुखी है। यद्यपि इनमें से अधिकतर व्यक्तियों ने अपनी अमर ख्याति अपने लेखों द्वारा प्राप्त की थी परन्तु इनमें से बहुतों ने अपने युग की मानवी और राजनीतिक प्रवृत्तियों में भी सक्रिय भाग लिया था। ह्विटियर दासता के विरुद्ध संग्राम का माना हुआ प्रमुख कवि था। लौंगफ़ैलो ने १८४२ में अपनी *'पोइम्स ऑन स्लेवरी'* प्रकाशित की। लौवैल *'पैनसिलवेनिया फ्रीमेन'* का सम्पादक था। जॉर्ज बैंक्रौफ़्ट उत्साही बैंक-विरोधी था। ब्राएंट का चमत्कारी कवि-जीवन १८२६ से १८७८ तक *'न्यूयॉर्क ईवनिंग पोस्ट'* की प्रतिष्ठित सम्पादकता के साथ संयुक्त रहा।

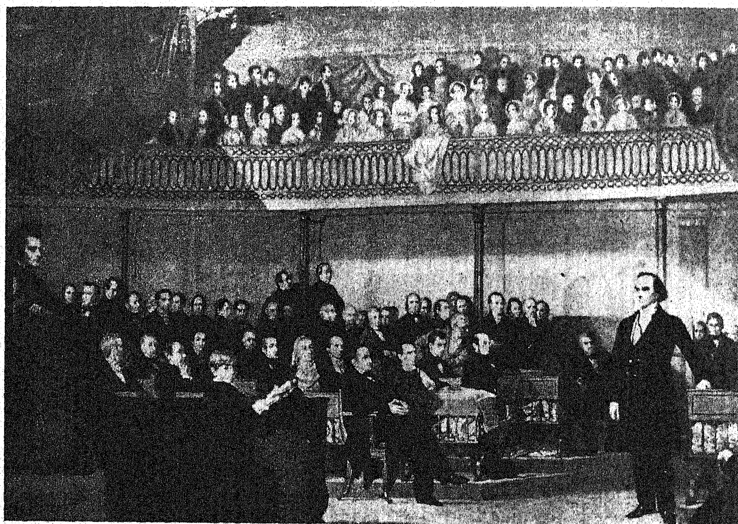
इस युग की प्रवृत्तियों ने लोकतन्त्र के इतिहास में एक नई रुचि जाग्रत की और उसी का परिणाम ऐतिहासिक अध्ययन का आरम्भ हुआ। सन् १८३० के बाद के दशक में जैरैड स्पार्क्स ने, जिसने कुछ वर्ष पूर्व *'नौर्थ अमेरिकन रिव्यू'* आरम्भ किया था, ऐतिहासिक लेखों के सम्पादन का कार्य हाथ में लिया और उसने वाशिंगटन और फ्रैंकलिन के लेखों का संग्रह तथा क्रान्तिकालीन कूटनीतिक पत्र-व्यवहार प्रकाशित किये। १८३४ में जॉर्ज बैंक्रौफ़्ट ने यूनाइटेड स्टेट्स के प्रथम आविष्कार से लेकर संविधान बनने तक के इतिहास की प्रथम पुस्तक प्रकाशित की। अमेरिका का यह प्रथम पूर्ण इतिहास था जो कि उपलब्ध पुरातन सामग्री के आधार पर लिखा गया। इस दशक की समाप्ति से पूर्व ही बैंक्रौफ़्ट और विलियम एच. प्रेस्कौट इतिहास को साहित्यिक शैली में लिखने की अमेरिकन विद्वानों की योग्यता प्रकट कर चुके थे।

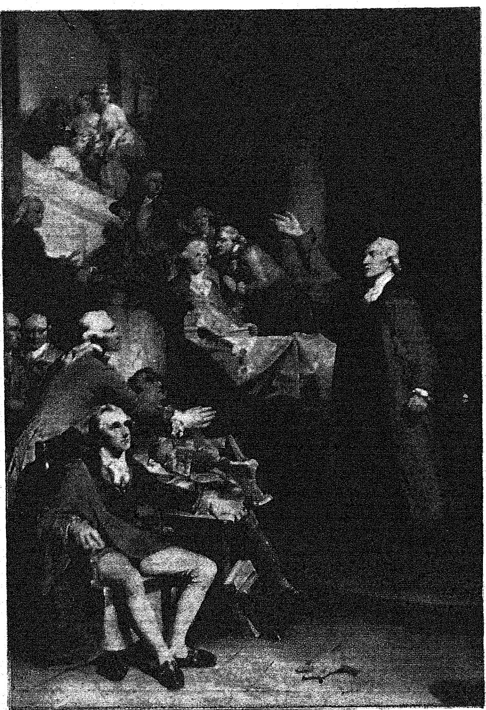
१८२५ से १८५० तक के काल में जनता के दैनिक जीवन का मान भी ऊँचा होता जा रहा था। १८२५ के पश्चात् मूसल और बेलन का स्थान कूटने की मशीन ने ले लिया था और इसके कुछ ही समय पीछे सोअर और रीपर (खेती बोने और काटने के यन्त्रों) का आविष्कार हुआ। शीघ्र-शीघ्र होते हुए भौगोलिक विस्तार में राष्ट्र को एक रखने की कठिनाई को लोगों की यान्त्रिक सूझ-बूझ ने बहुत कुछ हल कर दिया। १८३० में घोड़ों से खिंचने वाला प्रथम सार्वजनिक यान चलने के पश्चात् रेलवे की लाइनों में निरन्तर विस्तार होता गया। १८५० में कोई भी व्यक्ति मेन से नौर्थ कैरोलाइना

तक, अटलाण्टिक समुद्र तट से ईरी झील के बफ़ैलो तक और ईरी झील के पश्चिमी तट से शिकागो अथवा सिनसिनैटी तक रेल-पथ द्वारा यात्रा कर सकता था। एस० एफ़० बी० मोर्स द्वारा १८३५ में आविष्कृत बिजली का टैलिग्राफ़ यन्त्र प्रथम बार १८४४ में प्रयुक्त हुआ था। १८४७ में रिचर्ड हो द्वारा निर्मित रोटरी प्रिंटिंग प्रेस प्रयोग में लाया गया। इसने प्रकाशन कार्य में क्रान्ति ला दी और समाचारपत्रों को उनका प्रभावशाली स्थान दिलाने में बहुत बड़ा काम किया।

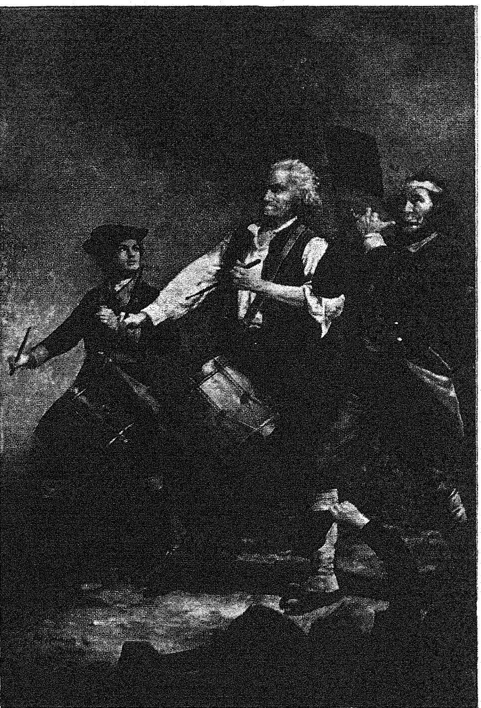
आबादी की वृद्धि से भी, जो ७२ लाख ५० हज़ार से बढ़कर २ करोड़ ३० लाख से ऊपर पहुँच गई, १८१२ से १८५२ तक की राष्ट्रोन्नति की सूचना मिलती है। इस काल में बसने के लिए उपलब्ध भूमि भी १७ लाख से बढ़कर लगभग ३० लाख वर्गमील हो गई। समृद्ध कृषि के अतिरिक्त विविध व्यवसाय भी, न केवल पूर्वी समुद्र तट अपितु पश्चिम के बढ़ते हुए नगरों में भी शीघ्र-शीघ्र विकसित हो रहे थे। राष्ट्र की स्थिरता, इसकी अर्थव्यवस्था और संस्थाओं की सजीवता जम चुकी थी। परन्तु देश के विभिन्न भागों में मतभेदों का जो मौलिक संघर्ष चल रहा था वह अभी समाप्त नहीं हुआ था और यही आगामी दशक में गृह-युद्ध को प्रज्वलित करने का कारण बना।

सेनेटर डैनियल वैब्स्टर एक वाग्मिता-पूर्ण विवाद में दक्षिणी कैरोलाइना के सेनेटर हेन की निषेधपरक युक्तियों का प्रत्याख्यान कर रहा है। जॉर्ज पीटर हीली द्वारा चित्रित।

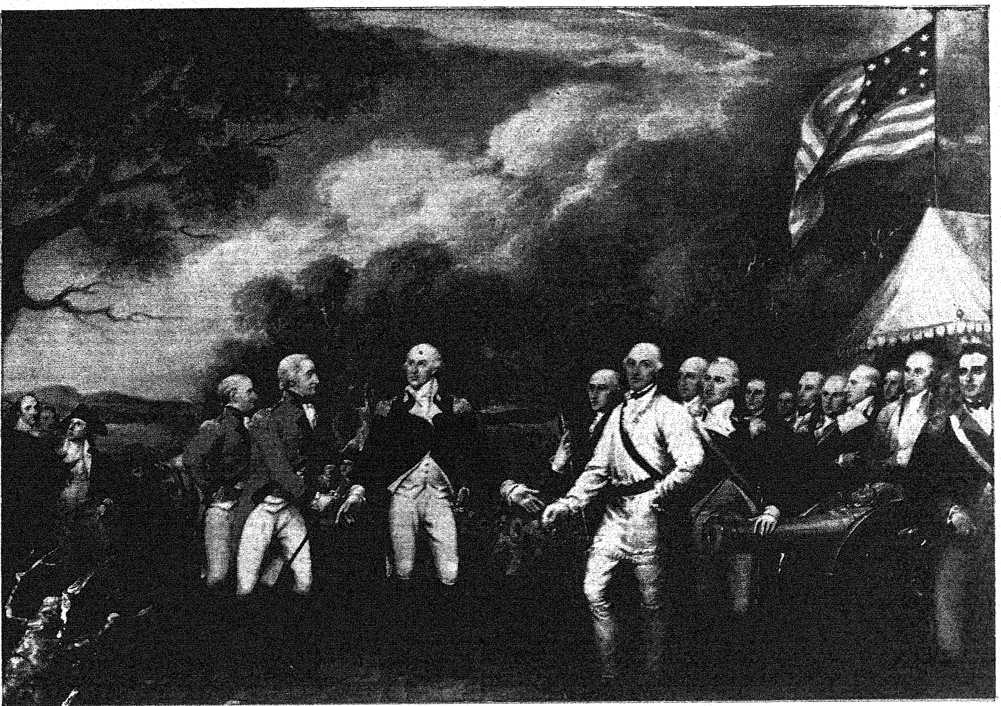




औपनिवेशिक काल का प्रख्यात वक्ता पैट्रिक हैनरी, वर्जिनिया असेम्बली में स्टाम्प टैक्स और "बिना प्रतिनिधित्व के टैक्स लगाने" की निन्दा कर रहा है।



अमेरिका में सर्वविदित "सन '७६ की भावना" का यह चित्र ए० एम० विलर्ड ने स्वतन्त्रता की घोषणा के एक शताब्दी बाद बनाया था।



क्रान्ति की लड़ाई ने पलटा खाया: १७७७ में जनरल गेट्स के सामने बर्गोयन का आत्मसमर्पण; क्रान्ति-काल के एक एडजुटेन्ट जनरल जौन ट्रम्बुल द्वारा चित्रित ।

प्रादेशिक संघर्ष

"परस्पर कलह करता हुआ घर देर तक नहीं टिक सकता, मेरा विश्वास है कि यह शासन आधा दास और आधा स्वतन्त्र रहकर देर तक नहीं चल सकता।"

—अब्राहम लिंकन,
स्प्रिंगफ़ील्ड, इलिनौय, १७ जून, १८५८

१६वीं शताब्दी के मध्य में संसार का कोई भी देश दूसरे राष्ट्रों के लिए इतना मनोरंजक नहीं था जितना कि यूनाइटेड स्टेट्स, और बहुत कम की ओर इतने दर्शक आकृष्ट होते थे। फ्रांस के राजनीतिक लेखक अलैक्सिस-डि-टोकवील की पुस्तक 'डैमोक्रेसी इन अमेरिका' का यूरोपियन महाद्वीप में हार्दिक स्वागत हुआ और उससे नये देश के विषय में लोगों का मत अधिकाधिक अनुकूल हो गया। बोस्टन की खाड़ी और उसके सुन्दर नगर की तलाश में यात्री आने लगे और यह देखकर आश्चर्य करने लगे कि किस प्रकार बियाबान में 'एक-एक करके यूटिका, सिरैक्यूज और औबर्न सरीखे फलते-फूलते नगर' खड़े हो गये हैं और उत्तरी राज्यों में 'सर्वत्र सरकारी निर्माण-कार्य, कृषि और व्यापार की द्रुत प्रगति तथा समृद्धि के असन्दिग्ध प्रमाण' विद्यमान हैं। सचमुच उन्होंने इस नये राष्ट्र को समृद्धि का निरन्तर और पूर्ण उपभोग करते पाया। विदेशी यात्री न्यूयॉर्क, फ़िलाडेलफ़िया और बोस्टन में चाहे जहाँ उतरता वह सभी जगह हलचल, कामकाज और लोगों के उत्साह को देखकर आश्चर्यित हो जाता था। न्यूयॉर्क की ऊँची इमारतों और दूकानों की चमचमाती हुई सजावट से दृष्टि चौंधिया जाती थी और फ़िलाडेलफ़िया के सुन्दर उद्यान, चौड़ी छायादार सड़कें और विमल श्वेत पत्थर के जीनों से युक्त लाल ईंटों के मकान बरबस ध्यान आकृष्ट कर लेते थे।

राष्ट्र का विस्तार इस समय जंगलों, मैदानों और पर्वतों को पार करता हुआ महाद्वीप-व्यापी हो गया था। इन विस्तृत सीमाओं में दो करोड़ तीस लाख मनुष्य ३१ स्टेटों द्वारा संगठित यूनियन में बस रहे थे। आशाओं का देश, इससे पूर्व, इतनी प्रत्यक्ष सफलताओं का देश सिद्ध नहीं हुआ था। पूर्व में व्यवसाय फल-फूल रहा था। मध्य-पश्चिम और दक्षिण में कृषि लहलहा रही थी। रेलें देश के बसे हुए भागों को परस्पर अधिकाधिक निकट बंधन में बाँध रही थीं और कैलिफ़ोर्निया की खानें सभी व्यापारों में सोने की धारा बहा रही थीं।

इतने पर भी यात्रियों को जाते ही दीखने लगता था कि अमेरिका दो हैं, एक उत्तर का, दूसरा दक्षिण का। दोनों की उन्नति की गति से प्रकट हो जाता था कि समस्त राष्ट्र में प्रादेशिक सामंजस्य स्थिर रखने में कैसी-कैसी बाधाएँ हैं। न्यू इंग्लैण्ड और मध्य अटलांटिक की स्टेटें व्यवसाय, व्यापार और वित्त का केन्द्र बनी हुई थीं। यहां के मुख्य उत्पादन मैदा, जूते, सूती कपड़े, शहतीर और लकड़ी के अन्य सामान, वस्त्र, यन्त्र, चमड़े और ऊन की वस्तुएँ थीं। जहाजरानी अपनी समृद्धि के मध्याह्न पर पहुँच गई थी। अमेरिकन झंडा फहराने वाले जहाज सातों समुद्रों में घूम कर सब राष्ट्रों का माल ढो रहे थे।

दक्षिण में कृषि समृद्धि पर थी। आय का मुख्य साधन कपास की खेती थी, यद्यपि तटवर्ती प्रदेशों में चावल की लूइजियाना में गन्ने की और सीमा की स्टेटों में तम्बाकू और अन्य वस्तुओं की भी खेती हो रही थी। कारखाने भी थे, पर कहीं-कहीं। खाड़ी के मैदानों में काली समृद्ध भूमियों के पूर्णतर विकास के पश्चात्, छठे दशक में रुई का उत्पादन लगभग द्विगुणित हो गया और उसकी बड़ी-बड़ी गाँठों को गाड़ियाँ, स्टीमर और रेलें उठा-उठा कर उत्तर और दक्षिण के बाज़ारों में फैलाने लगीं। राष्ट्र का आधे से अधिक वैदेशिक निर्यात रुई पर आधारित था। इसके अतिरिक्त उत्तर की वस्त्र-मिलों के लिए भी कच्चा माल वही मुहैया करती थी।

मध्य-पश्चिम, अपने असीम घास के मैदानों और बढ़ती हुई आबादी के साथ, इस समृद्धि में पूरा-पूरा योग दे रहा

था। इसके गेहूँ और माँस की, यूरोप में और अमेरिका के पुराने बसे हुए भागों में, दोनों ही स्थानों पर माँग थी। इसी समय श्रम को बचाने वाले यन्त्रों के शीघ्र-शीघ्र प्रयोग होने के कारण उत्पादन में अनुपम वृद्धि सम्भव हो गई। नये यन्त्रों में अधिक महत्त्वपूर्ण मैकौर्मिक रीपर थे, जिनकी संख्या १८४८ में ५०० से बढ़ते-बढ़ते १८६० में १ लाख से ऊपर पहुँच गई। गेहूँ की खेती १८५० में दस करोड़ बुशल से बढ़कर १८६० में सत्रह करोड़ तीस लाख बुशल हो गई। यातायात की सुविधाओं में हुए सुधार से पश्चिम की समृद्धि में बहुत बडी सहायता मिली थी, क्योंकि १८५० से १८५७ तक पाँच रेलवे ट्रंक लाइनें एप्पैलेच्यन पर्वत को पार करने लगी थीं। उत्तर और पश्चिम को मिलाने वाले इन लौह-पथों के कारण व्यापार का आदान-प्रदान बढ़ता और लाभदायक होता जा रहा था। दोनों प्रदेशों की आर्थिक परस्पराश्रितता को प्रकट करने के अतिरिक्त रेलें राजनीतिक दृष्टिकोणों में सामंजस्य उत्पन्न करने में भी सहायक हो रही थीं। रेलवे-जाल के विस्तार में दक्षिण का भाग बहुत कम था। छठे दशक के मध्य तक पर्वतों को पार करके निम्न मिसिसिपी नदी को दक्षिणी अटलांटिक समुद्र-तट से मिलाने वाली लाइन नहीं बनी थी।

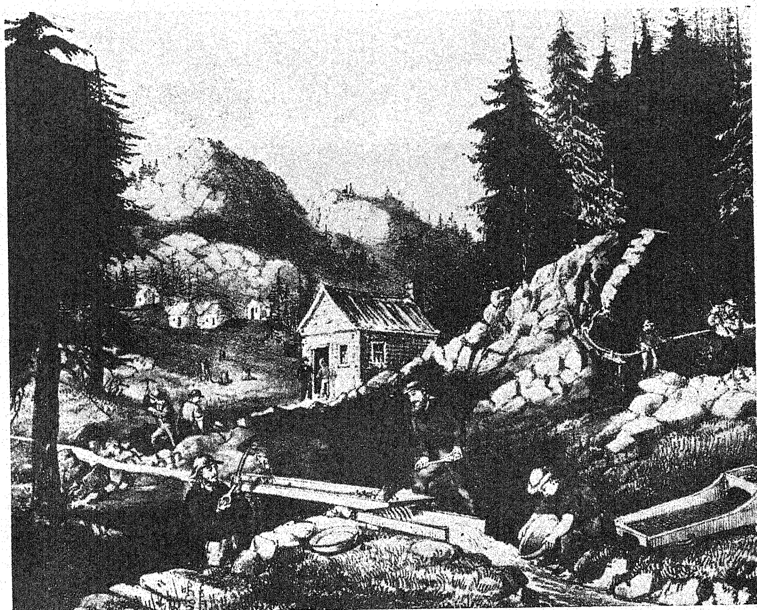
ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों उत्तर और दक्षिण के स्वार्थों में विरोध अधिकाधिक प्रकट होता गया। उत्तर के व्यापारियों को रुई की फ़सल बेचने से जो भारी लाभ होता था उसके कारण दक्षिण वाले ईर्ष्या करने लगे और अपने प्रदेश की निर्धनता का हेतु उत्तर वालों की धनलोलुपता को बतलाने लगे। इसके विपरीत उत्तर वाले कहने लगे कि दास-प्रथा ही इस प्रदेश की अपेक्षाकृत अवनति के लिए उत्तरदायी है।

१८३० से ही दास-प्रथा के प्रश्न को लेकर प्रादेशिक मत-भेद तीव्रतर होने लगे थे। उत्तरी स्टेटों में इस प्रथा को समाप्त कर डालने की भावना अधिकाधिक बलवती होती गई। इसी समय वहाँ स्वतन्त्र भूमि का आन्दोलन चला। इस आन्दोलन का अभिप्राय यह था कि जो भू-भाग अभी तक स्टेटों के रूप में संगठित नहीं हुए थे उनमें दास-प्रथा का विस्तार न किया जाय। १८५० के दक्षिणियों को दास-प्रथा विरासत में मिली थी अतः वे उसके लिए उत्तरदायी नहीं थे। कुछ समुद्र-तटवर्ती प्रदेशों में तो १८५० में दास-प्रथा २०० वर्ष पुरानी हो चुकी थी और वहाँ की सभ्यता का अंग बन गई थी। कुछ नीग्रो पाँच-छः पीढ़ियों से अमेरिकन भूमि पर बस रहे थे और श्वेत लोगों की न केवल भाषा अपितु उनके कौशल, विचार और धार्मिक तथा सामाजिक विश्वासों को भी अपना चुके थे। दक्षिण की ओर सीमा की पन्द्रह स्टेटों में नीग्रो आबादी श्वेतों की तुलना में आधी थी, जब कि उत्तर में यह उनका अनुल्लेखनीय अंश थी।

पाँचवें दशक के मध्य में दास-प्रथा का प्रश्न अमेरिकन राजनीति का सबसे प्रमुख प्रश्न बन गया था। अटलांटिक से मिसिसिपी नदी तक और उससे परे का दक्षिण एक अपेक्षाकृत संगठित राजनीतिक इकाई था, जहाँ कि कपास की खेती और दास-प्रथा से सम्बद्ध प्रश्नों पर सबका ऐकमत्य रहता था। वस्तुतः दक्षिणी प्लाण्टरों की बहुसंख्या दास-प्रथा को अपनी अर्थ-व्यवस्था का मूलाधार मानने लगी थी। कपास की खेती में दासों का प्रयोग आवश्यक-सा था। यह पुराने दक़ियानूसी औज़ारों से ही होती थी। इसकी बदौलत लोग नौ महीने काम में लगे रहते थे और इससे स्त्रियों, बच्चों और "कृषि-कर्म में निपुण मजदूरों" को भी काम मिल जाता था।

दक्षिण के राजनीतिक नेता, पेशेवर लोग और अधिकतर पादरी उत्तरी लोकमत से जूझते-जूझते इतने पक चुके थे कि वे दास-प्रथा के लिए किसी से क्षमा तो माँगते ही नहीं थे बल्कि इसके जोशीले वकील बन गये थे। वे इसे नीग्रो लोगों पर लाभों की वर्षा करने वाली बतलाते थे। दक्षिणी पत्रकार कहते थे कि दास-प्रथा में मालिक और मजदूर के सम्बन्ध उत्तर की वेतन-प्रथा की अपेक्षा कहीं अधिक मानवतापूर्ण हैं। १८३० से पूर्व तक, बड़ी-बड़ी खेतियों में यह पुरानी प्रथा प्रचलित थी कि व्यवस्था के लिए परिवार के प्रमुख को ही सर्वोपरि माना जाता था, इसमें सब काम आराम से होता था और मालिक ही अपने गुलामों की स्वयं निगरानी करता था। १८३० के पश्चात् एक निश्चित परिवर्तन दिखाई देने लगा। निम्न दक्षिण में, रुई का उत्पादन बड़े पैमाने पर होने लगा। उसके कारण अब मालिक बहुधा गुलामों के साथ निकट निजी सम्पर्क रखने में असमर्थ हो गए, और वे उनके ऊपर पेशेवर निरीक्षक रखने लगे, जिनकी सफलता इसी बात में थी कि वे गुलामों से अधिकाधिक काम लेकर दिखलाएँ।

जहाँ बहुत-से प्लाण्टर अपने नीग्रो दासों के साथ रिआयत का व्यवहार करते थे वहाँ हृदयहीन क्रूरता के उदाहरण भी थे और अनिवार्यतः इस प्रथा का परिणाम बहुधा



कैलिफ़ोर्निया में 'सोने के पीछे दौड़'। सैक्रामैण्टो घाटी में सोना मिलने के एक वर्ष पीछे १८४९ में ८०,००० से अधिक सुवर्णान्वेषी, शान्तिप्रेमी पशुपालकों के प्रदेश में पहुँचकर बेचैनी और परेशानी फैलाने लगे।

पारिवारिक बन्धनों का विच्छेद हो जाता था। दास-प्रथा के विरुद्ध सबसे तीव्र शिकायत निरीक्षकों के अमानुषिक व्यवहार की नहीं, अपितु यह थी कि उससे प्रत्येक मनुष्य के स्वतन्त्र रहने के मौलिक अधिकार का उल्लंघन होता है और दासता की सब प्रथाओं में पशुता और क्रूरता के व्यवहार की सम्भावनाएँ बनी ही रहती हैं। एफ० एल० ओमस्टैड के अनुसार दासता "मज़दूर में अपनी योग्यता और कुशलता बढ़ाने का उत्साह नष्ट कर देती, आत्म-सम्मान की भावना को दबा देती, उसकी महत्त्वाकांक्षाओं को मार्ग-भ्रष्ट कर देती, और जो भावनाएँ मनुष्यों की अपने [illegible] लिए और संसार के लिए अपने-आपको अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रेरित करती हैं उन्हें समाप्त कर देती है।"

कुछ वर्ष पश्चात् कपास की खेती और उसमें संलग्न श्रम बहुत बड़े परिमाण में विनियुक्त पूँजी का प्रतिनिधित्व भी करने लगे। उपेक्षणीय परिमाण से आरम्भ होकर, रुई का उत्पादन बढ़ते-बढ़ते १८०० में लगभग ३ करोड़ ५० लाख पौंड, १८२० में १६ करोड़ पौंड और १८४० में ६७ करोड़ पौंड से भी ऊपर जा पहुँचा। १८५० में तो संसार की समस्त कपास का ⅞ भाग दक्षिणी यूनाइटेड स्टेट्स में उत्पन्न होने लगा। स्वभावतः दासता भी इसी परिमाण में बढ़ गई। इन सब कारणों से राष्ट्र की राजनीति में दक्षिणियों का प्रधान लक्ष्य कपास के दासों से सम्बद्ध मामलों की रक्षा और उनका

विस्तार बन गया। इस प्रकार उनका एक प्रधान प्रयत्न कपास की खेती के क्षेत्र को उसकी वर्तमान सीमाओं से आगे बढ़ाना हो गया। कपास की एक ही फ़सल बोने की प्रथा के कारण भूमि की उपज-शक्ति शीघ्र ही न्यून रह जाती थी और नई उपजाऊ भूमि की आवश्यकता होने लगती थी। अपने राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने के लिए भी दक्षिण वालों को नये-नये प्रदेश की आवश्यकता रहती थी, जिससे कि वे नये स्वतन्त्र राज्यों के प्रवेश का सन्तुलन करने के लिए नई ग़ुलाम स्टेटें खड़ी कर सकें। दासता-विरोधी उत्तर वाले राष्ट्रीय राजनीति में उनकी इस चाल को जल्दी ही भाँप गये और वे इसे स्वार्थवृत्ति का एक दुष्टतापूर्ण षड्यन्त्र समझने लगे।

१८३० से १८३६ तक उत्तर के दासता-विरोधी आन्दोलन ने सामरिक रूप धारण कर लिया। आरम्भ में दासता-विरोधी आन्दोलन अमेरिकन क्रान्ति की एक गूँज-मात्र था, और उसकी अन्तिम विजय १८०८ में हुई थी जब कि कांग्रेस ने अफ्रीकन दासों का व्यापार निषिद्ध कर दिया था। उसके पश्चात् दासता का विरोध क्वेकरों तक ही सीमित रह गया। वे नम्रतापूर्वक इसका असफल विरोध करते रहे। परन्तु कौटन-जिन के आविष्कार के कारण दासों की माँग निरन्तर बढ़ने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में आन्दोलन का एक नया रूप सामने आया, जिसका प्रधान कारण उस समय के लोकतान्त्रिक आदर्शों की तीव्रता और सब वर्गों के लिए सामाजिक समानता की भावना था।

दासता की समाप्ति का आन्दोलन अमेरिका में जहाँ कहीं तीव्र हो जाता था, वहाँ यह दासता-प्रथा की रक्षा के लिए दी हुई सब वैधानिक और क़ानूनी गारण्टियों की उपेक्षा करके लड़ने-मरने तक की सीमा पर पहुँच जाता था और इसे उठाने वाले लोग दासों को तुरन्त स्वतन्त्र कर देने की माँग करने लगते थे। इस समय इस आन्दोलन का नेता विलियम लौयड गैरिसन नामक मैसैच्यूसैट्स का एक नवयुवक था, जिसमें एक शहीद की-सी उग्र वीरता और एक सफल सिद्धान्तवादी के समान आन्दोलन करने के गुण विद्यमान थे। उसके समाचार-पत्र *'लिबरेटर'* का प्रथम अंक १ जनवरी १८३१ को प्रकाशित हुआ और उसमें घोषणा की गई: "मैं अपने देश के दास जनों को तुरन्त मताधिकार दिलाने के लिए दृढ़तापूर्वक लड़ूँगा···मैं इस विषय पर सोचते, बोलते और लिखते हुए नरमी का प्रयोग नहीं करना चाहता···मैं सचाई पर हूँ···मैं गोलमोल बातें नहीं करूँगा···मैं माफ़ नहीं करूँगा···मैं एक इंच भी पीछे नहीं हटूँगा···और मैं अपनी सुनाकर ही रहूँगा।" बहुत से उत्तर वाले जिस संस्था को चिर-काल से जमा हुआ और अपरिवर्तनीय मानने लगे थे उसकी बुराइयों के प्रति गैरिसन के सनसनी-भरे उपायों ने उनको सजग कर दिया। उसकी नीति यह थी कि नीग्रो दासों के साथ बीती हुई अत्यन्त घृणोत्पादक और असाधारण घटनाओं को जनता की दृष्टि के सामने लाया जाय और दासों के स्वामियों को मानव-जीवन का उत्पीड़न और व्यापार करने वालों के रूप में पेश किया जाय। वह मालिकों के कोई अधिकार नहीं मानता था, उनसे कोई समझौता नहीं करता था और विलम्ब को नहीं सहता था। जो उत्तर वाले इतने उग्र नहीं थे वे उसकी क़ानून-उपेक्षक चालों का साथ देने को तैयार नहीं थे।

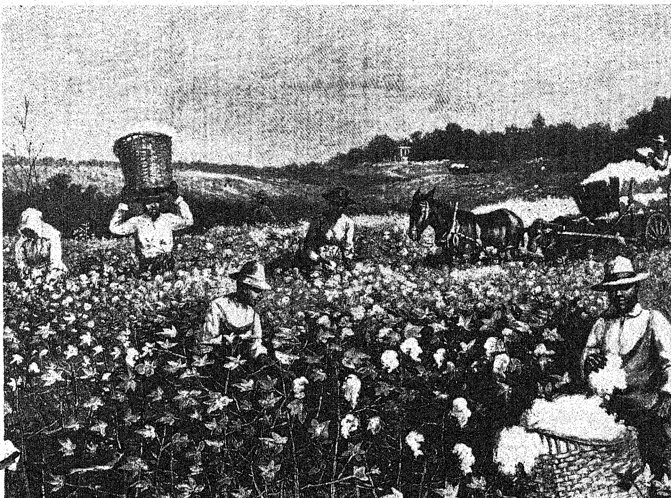
दासता-विरोधी आन्दोलन का एक रूप यह भी था कि जो दास मालिकों से बचकर भागें उनको रात-रात में उत्तर में सुरक्षित स्थानों पर अथवा सीमा के पार कैनाडा में पहुँचा दिया जाय। चतुर्थ दशक में उत्तर के सब भागों में इस प्रकार के भगोड़े दासों के लिए गुप्त मार्गों का एक जाल बिछ चुका था और इसका नाम 'अण्डर-ग्राउण्ड रेल-रोड' रखा गया था। उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में ये कार्रवाइयाँ बहुत सफलता से हो रही थीं। १८३० से १८६० तक अकेले ओहायो में इस प्रकार जिन भगोड़े दासों को स्वतन्त्र होने में सहायता दी गई उनकी संख्या ४० हजार से कम न थी। स्थानीय दासता-विरोधी संस्थाओं की संख्या १८४० में लगभग २००० हो गई थी और शायद उनके सदस्यों की संख्या २ लाख थी।

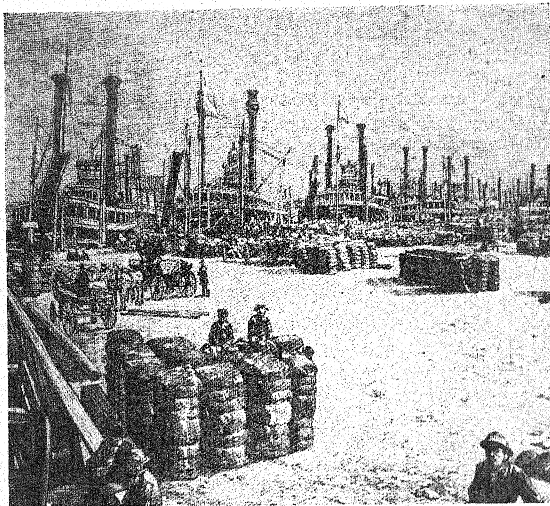
यद्यपि दासता-विरोधियों का एकमात्र लक्ष्य यह था कि दासता को प्रत्येक पुरुष और स्त्री के लिए नैतिक प्रश्न बना दिया जाय, परन्तु सब मिलाकर उत्तर के लोग दासता-विरोधी आन्दोलन में भाग नहीं ले रहे थे। वे ख़याल करते थे कि दासता का सम्बन्ध केवल दक्षिणियों से है और उन्हें इस समस्या को राज्यीय विधान द्वारा हल करना चाहिये। उन्हें भय था कि जोशीले दासता-विरोधियों का असंयत आन्दोलन यूनियन की एकता को भंग कर देगा। परन्तु १८४५ में टैक्सास के यूनाइटेड स्टेट्स के साथ मिल जाने और मैक्सिकन युद्ध के पश्चात् दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश जीत लिए जाने के कारण दासता का नैतिक प्रश्न एक ज्वलन्त राजनीतिक समस्या में परिणत हो गया। अब तक सम्भावना यही की जाती थी कि

दासता केवल उस प्रदेश तक सीमित रहेगी जहाँ अभी तक यह रही है। १८२० में मिसूरी के समझौते द्वारा इसकी सीमा बाँध दी गई थी और अब तक उस के उल्लङ्घन का कोई अवसर नहीं आया था। किन्तु अब नये प्रदेश के विषय में यह कल्पना की जाने लगी कि उसकी वित्त-व्यवस्था दासता से सम्बद्ध है, और इस 'विशिष्ट प्रथा' के विस्तार का भय होने लगा।

बहुत-से उत्तर वालों का विश्वास था कि यदि इस का प्रदेश सीमित रखा गया तो यह प्रथा आप-से-आप नष्ट हो जायगी। नयी दास-स्टेटों को बढ़ाने के विरोध में उन्होंने वाशिंगटन और जैफ़र्सन के वक्तव्यों और १७८७ के आर्डिनेन्स को अपने समर्थन में पेश करते हुए कहा कि उक्त निर्णय सब पर अनिवार्य रूप से लागू है। टैक्सास में दास-प्रथा पहले से ही थी, इसलिए यूनियन में उसका प्रवेश दास-स्टेट के रूप में हुआ। परन्तु कैलिफ़ोर्निया, न्यू मैक्सिको और यूटॉ में दास-प्रथा नहीं थी। जब १८४६ में यूनाइटेड स्टेट्स इन प्रदेशों को अपने साथ मिलाने लगा तब चार मुख्य दलों द्वारा इनके विषय में परस्पर-विरोधी सुझाव उपस्थित किये गए। गरम विचारों के दक्षिणियों ने कहा कि मैक्सिको से लिये हुए सब प्रदेश दासता के लिए उन्मुक्त कर दिये जायँ। दासता-विरोधी जोशीले उत्तर वालों ने कहा कि सभी नये प्रदेशों का द्वार दासता के लिए बन्द कर दिया जाय। नरम विचारों के एक दल ने कहा कि मिसूरी समझौते की रेखा प्रशान्त महासागर तक बढ़ा दी जाय, और इसके उत्तर की स्टेटों को स्वतन्त्र और दक्षिण की को दास माना जाय। एक अन्य नरम दल ने यह सुझाव रखा कि जो नये प्रदेश में जाकर बसें उन्हें दास रखने-न-रखने की स्वतन्त्रता दी जाय और जब नये प्रदेश को स्टेटों के रूप में संगठित किया जाय तब वहाँ के निवासी इस प्रश्न का निर्णय स्वयं कर लें। दक्षिण वालों का मत अधिकाधिक इस विचार की ओर झुकता गया कि दासता को सभी प्रदेशों में बनाये रखने का अधिकार दिया जाय।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मध्य-दक्षिण का एक दृश्य। इस प्रकार की कपास की खेतियाँ सर्वथा नीग्रो लोगों के सहारे होती थीं। यद्यपि तम्बाकू, चावल और गन्ना भी बड़े पैमाने पर बोया जाता था, परन्तु दक्षिणी अर्थ-व्यवस्था का आधार कपास की खेती ही थी।





न्यू औलियन्स (लूइ-ज़ियाना) में कपास की गाँठें जहाज़ों में लदान की प्रतीक्षा में। न्यू औलियन्स १८६१ के युद्ध से पूर्व तो देश में कपास के लदान का प्रधान बन्दरगाह था ही, वह अब भी दक्षिण-पूर्व का सबसे बड़ा नगर और मैक्सिको की खाड़ी का प्रधान अमेरिकन बन्दरगाह है।

उत्तर वालों का विचार अधिकाधिक यह होता गया कि दासता कहीं भी न रहने दी जाय। १८४८ के चुनाव में लगभग ३ लाख वोटरों ने "स्वतन्त्र भूमि पार्टी" के उम्मीदवारों को मत दिया। इस पार्टी की घोषणा यह थी कि सर्वोत्कृष्ट नीति यह है कि "दासता को सीमित, स्थानबद्ध और निरुत्साहित किया जाय।"

जनवरी १८४८ में कैलिफ़ोर्निया में सोने की प्राप्ति होने पर संसार के सब भागों से स्वर्ण के खोजी आँख मींचकर उधर को दौड़ने लगे और उनकी संख्या अकेले १८४६ में ८० हजार से ऊपर पहुँच गई। कैलिफ़ोर्निया का प्रश्न एक कसौटी बन गया, क्योंकि वहाँ कोई भी संगठित शासन स्थापित होने से पूर्व कांग्रेस के लिए उसकी स्थिति का निश्चय कर देना आवश्यक था। अब राष्ट्र की आशाओं का केन्द्र सेनेटर हैनरी क्ले था, क्योंकि वह दो बार संघर्ष के अवसरों पर समझौते का मार्ग निकाल चुका था। उसने एक बार पुनः भयंकर प्रादेशिक विग्रह को एक सुसंगत योजना द्वारा रोक दिया। उसके समझौते में अन्य बातों के अतिरिक्त ये बातें थीं कि कैलिफ़ोर्निया को एक स्वतन्त्र भूमि वाले (दासता-निषेधक) संविधान के साथ एक स्टेट के रूप में सम्मिलित किया जाय और शेष नयी भूमि को न्यू मैक्सिको और यूटा के दो प्रदेशों में बाँटकर उनके विषय में दासता का कोई ज़िक्र न किया जाय; न्यू मैक्सिको के कुछ भाग पर टैक्सास का दावा उसे एक करोड़ डालर देकर शान्त कर दिया जाय; भागे हुए दासों को पकड़ने के लिए, और उन्हें पकड़कर उनके मालिकों के सुपुर्द करने के लिए अधिक प्रभावशाली व्यवस्था की जाय, और दास-व्यापार (न कि दासता) कोलम्बिया के डिस्ट्रिक्ट में समाप्त कर दिया जाय। ये उपाय—जो कि अमेरिकन इतिहास में '१८५० का समझौता' के नाम से प्रसिद्ध हैं—स्वीकृत हो गये और देश ने हार्दिक सन्तोष की सांस ली।

तीन वर्ष तक तो ऐसा लगा कि समझौते ने प्रायः सब

मतभेद समाप्त कर दिये हैं, परन्तु अन्दर-अन्दर तनाव जारी रहा और बढ़ता गया। नये भगोड़े-दास-क़ानून से बहुत-से उत्तर वाले अत्यन्त क्षुब्ध हो गए। उन्होंने दासों को पकड़ने में सहायता देने से इनकार कर दिया। इसके विपरीत वे भगोड़ों की भागने में सहायता करने लगे। "अण्डर-ग्राउण्ड रेल-रोड" अधिक चुस्त और निस्संकोच हो गई और उससे सहायता पाने वालों की संख्या बढ़ गई।

इस समय अकस्मात् ही साहित्यिक प्रतिभा ने अमेरिकन घर की फूट को बढ़ा दिया। जो लोग समझते थे कि दासता के प्रश्न को आराम से टाला जा सकता है उनकी दृष्टि केवल राजनीतिज्ञों और सम्पादकों तक पहुँची थी। उन्होंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि अकेला एक उपन्यास तमाम धारा-सभाओं के सदस्यों और दैनिक समाचारपत्रों से बढ़कर प्रभावशाली सिद्ध होगा। व्हिटियर, लौवैल, ब्राएण्ट, एमर्सन और लौंगफ़ैलो-जैसे कवियों ने दासता के विरुद्ध घृणा के भाव पहले भी प्रभावशाली रूप में प्रकट किये थे, परन्तु १८५१ से पूर्व बहुत कम लोगों ने यह कल्पना की थी कि इस विषय पर लोकप्रिय उपन्यास भी लिखा जा सकता है। उस साल एक लोकप्रिय पत्र '*नेशनल इरा*' में 'अंकिल टॉम' नामक एक दास की मृत्यु का कल्पित वर्णन प्रकाशित हुआ। यह इतना लोकप्रिय हुआ कि लेखिका हैरियट बीचर स्टो ने साप्ताहिक लेखों के रूप में '*टाम काका की कुटिया*' (अंकिल टॉम्स केबिन) की कथा लिखना आरम्भ किया, जिसका कि ऊपर निर्दिष्ट कल्पना-दृश्य एक अंगमात्र था।

कई दृष्टियों से इस पुस्तक ने प्रायः जादू कर दिया। प्रसिद्ध पादरी लाइमन बीचर की पुत्री 'हैटी' बीचर में साहित्यिक प्रतिभा भी है, यह बात केवल उसके पति को ज्ञात थी। जब उसने 'अंकिल टॉम्स केबिन' लिखना आरम्भ किया तब वह लेखन-कार्य में प्रायः सर्वथा अनभ्यस्त थी, परन्तु अपने काम के लिए उसकी नैतिक तैयारी बहुत थी और भगोड़ा-दास-बिल पास होने से आत्म-प्रकाशन के लिए उसको भारी प्रेरणा मिली। इस पुस्तक की कहानी साहित्य के इतिहास में अत्यन्त आश्चर्यजनक घटनाओं में है। यह १८५२ में प्रकाशित हुई और वर्ष की समाप्ति से पूर्व ही इसकी ३ लाख प्रतियाँ बिक गईं और 'पावर' से चलने वाले ८ प्रेसों को इसकी माँग पूरी करने के लिए दिन और रात काम करना पड़ा।

'अंकिल टॉम्स केबिन' में बहुत-से उदार और मानवता-पूर्ण दास-स्वामियों के साथ पूरा न्याय किया गया था; एक क्रूर दास-व्यापारी साइमन लैग्री उत्तर का निवासी था। मिसेज स्टो ने दिखलाया कि किस प्रकार निर्दयता को दासता से पृथक् नहीं किया जा सकता और किस प्रकार स्वतन्त्र और दास समाजों में मूलतः समझौता नहीं हो सकता। उत्तर के वोटरों की नयी पीढ़ी को इस उपन्यास ने हिला दिया। पुस्तक ने केवल अमेरिका में ही नहीं, ब्रिटेन, फ्रांस और अन्य देशों में भी अपने उद्देश्य को पूर्ण कर दिया। संसार की आधे से अधिक प्रधान भाषाओं में उसका अनुवाद हो गया। इसने दासता-विरोध के लिए सर्वत्र प्रबल उत्साह जाग्रत कर दिया।

इस समय से दासता का प्रश्न अदमनीय हो उठा। १८५० के समझौते ने उबलते हुए लावा को जिस पतली पपड़ी से ढक दिया था वह निरन्तर चटकने लगी और १८५४ में दासता का प्रश्न प्रदेशों में—इस समय नेब्रास्का के विस्तृत प्रदेश में—पुनः उठ खड़ा हुआ और विवाद तीक्ष्ण हो गया। दक्षिण के उग्र-पन्थी मिसूरी समझौते को मिटाने पर तुले हुए थे, परन्तु ज्यों ही उन्होंने इसके लिए क़दम उठाये त्यों ही सारा उत्तर भड़क गया। जो प्रदेश आज की उपजाऊ कैन्सास और नेब्रास्का स्टेटों से मिलकर बनता है वह वासार्थियों को पहले ही अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था और वहाँ स्थायी शासन की स्थापना हो जाने पर द्रुत विकास की सम्भावना और भी बढ़ गई। उत्तर वालों को विश्वास था कि यदि यह प्रदेश संगठित हो गया तो वासार्थी इधर को उमड़ पड़ेंगे और इसमें होकर शिकागो से प्रशान्त महासागर तक रेलवे लाइन बन सकेगी। मिसूरी समझौते के अनुसार यह सारा प्रदेश दासता के लिए बन्द था। परन्तु मिसूरी के प्रभावशाली दास-स्वामियों ने इसके पश्चिम-वर्ती कैन्सास प्रदेश के स्वतन्त्र होने देने का विरोध किया, क्योंकि वैसा हो जाने पर मिसूरी तीन स्वतन्त्र पड़ोसियों से घिर जाता और पहले से ही प्रबल एक आन्दोलन के सामने झुक जाने का परिणाम यह होता कि मिसूरी भी स्वयं स्वतन्त्र स्टेट बनने के लिए विवश हो जाता। कुछ समय तक, मिसूरी वाले कांग्रेस में दक्षिणियों की सहायता से, इस प्रदेश को संगठित करने के सब प्रयत्नों को विफल करते रहे।

तब इलिनौय के सीनियर सेनेटर स्टीवन ए० डगलस ने १८५४ में एक बिल पेश करके विरोधियों को समाप्त कर



हैरियट बीचर स्टो के उपन्यास 'अंकिल टॉम्स केबिन' ने उत्तरी मत को अत्यन्त प्रभावित किया था। दास-प्रथा में अनिवार्य अन्याय और क्रूरता के स्पष्ट चित्रण द्वारा इस पुस्तक ने लाखों लोगों को हिला दिया था।

दिया। इस बिल से सभी स्वतन्त्र भूमि के पक्षपाती क्रुद्ध हो गए। डगलस का युक्तिक्रम यह था कि क्योंकि १८५० के समझौते ने यूटॉ और न्यू मैक्सिको को दासता का निर्णय स्वयं करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया है इस कारण मिसूरी का समझौता उसी क्षण से स्वयं समाप्त हो गया है। उसकी योजना कैन्सास और नेब्रास्का के दोनों प्रदेशों का संगठन करके वहाँ के वासियों को दासों को अपने साथ ले जाने की अनुमति देती थी। निवासियों को यह निश्चय स्वयं करना था कि वे यूनियन में स्वतन्त्र-स्टेट के रूप में सम्मिलित होंगे या दास-स्टेट के रूप में। उत्तर वालों ने डगलस पर आक्षेप किया कि उसने यह बिल १८५६ में प्रेजिडेण्ट के चुनाव में दक्षिण वालों का वोट प्राप्त करने के लिए पेश किया है। निस्सन्देह उसकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ बहुत प्रबल थीं परन्तु यदि उसका विश्वास यह रहा हो कि उत्तरी भावना उसकी योजना को चुपचाप मान लेगी तो उसका यह भ्रम तुरन्त ही दूर हो गया होगा। लाखों आदमियों को ऐसा लगा कि पश्चिम के समृद्ध मैदानों को दासता के लिए खोल देना अक्षम्य अपराध है। बिल पर अनेक क्रोधपूर्ण विवाद हुए। स्वतन्त्र-भूमि-पक्षपाती समाचार-पत्रों ने इसकी बलपूर्वक निन्दा की। उत्तर के पादरियों ने इसका विरोध किया। जो व्यापारी अभी तक दक्षिण के मित्र थे उन्होंने एकदम मुँह मोड़ लिया, तो भी मई मास के एक प्रातःकाल यह बिल सेनेट में पास हो गया। उत्साही दक्षिणियों ने इस प्रसन्नता में तोपों के गोले छोड़े। परन्तु उसी समय दासता-विरोधी नेता सैमन पी० चेस ने यह भविष्य-वाणी की: "वे इस समय तो जीत मना रहे हैं परन्तु इसकी गूँज तब तक शान्त नहीं होगी जब तक कि स्वयं दासता का अन्त न हो जायगा।" बाद में जब डगलस अपने पक्ष में भाषण करने के लिए शिकागो पहुँचा तब बन्दरगाह में खड़े जहाजों ने अपने झंडे नीचे गिरा दिये, गिरजाघरों के घण्टे घण्टा-भर बजते रहे और दस हजार की भीड़ ने इतना हो-हल्ला किया कि उसकी बात तक कोई नहीं सुन सका।

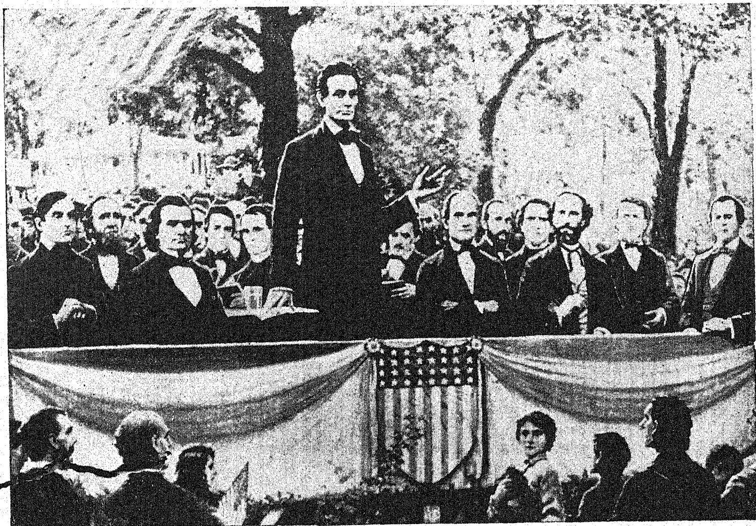
डगलस के दुर्भाग्यपूर्ण क़ानून के परिणाम तुरन्त ही बहुत महत्त्वपूर्ण हुए। ह्विग पार्टी जो कि अब तक दासता-विस्तार के प्रश्न को टालती रही थी, सर्वथा मृत हो गई और उसके स्थान पर एक नये बलवान् संगठन रिपब्लिकन पार्टी का जन्म हुआ। उसकी प्रथम माँग यह थी कि दासता का सभी प्रदेशों से अन्त कर दिया जाय। १८५६ में इस पार्टी ने प्रेजिडेण्ट पद के लिए साहसी जॉन फ्रीमौण्ट को नामजद किया। यद्यपि वह पार्टी चुनाव में हार गई परन्तु उत्तर के बहुत बड़े भाग में उसका विस्तार हो गया। चेस और विलियम सूअर्ड सरीखे स्वतन्त्र-भूमि-आन्दोलन के नेताओं का प्रभाव पहले से कहीं अधिक बढ़ गया और उनके साथ ही इलिनौय का एक ऊँचा, दुबला-पतला एटर्नी अब्राहम लिंकन सामने आया जिसने कि नई समस्याओं पर विचार करने में आश्चर्यजनक तर्क का प्रदर्शन किया। कैन्सास में दक्षिण के दासता-पक्षपाती और उत्तर के दासता-विरोधी मनुष्यों के प्रवेश ने तीव्र विरोध उत्पन्न कर दिया था, और परस्पर की सशस्त्र टक्करों से वह प्रदेश "लहूलुहान कैन्सास" कहलाने लगा।

मिसेज़ स्टो ने लिखा था, "जो राष्ट्र अपने हृदय में किसी बड़े और अप्रतिकृत अन्याय को लिए रहता है उसे सदा भयंकर उथल-पुथल का भय बना रहता है।" समय बीतता

गया और घटनाएँ राष्ट्र को अनिवार्य संघर्ष के समीप पहुँचाती गईं। १८५७ में सर्वोच्च न्यायालय ने ड्रैड स्कौट के विषय में अपना प्रसिद्ध निर्णय सुनाया। स्कौट मिसूरी का एक दास था जिसे बीस वर्ष पूर्व उसका स्वामी इलिनौय और विस्कौन्सिन प्रदेशों में रहने के लिए ले गया था। वहाँ दासता निषिद्ध थी। मिसूरी में लौटकर वह अपनी दासावस्था से असन्तुष्ट हुआ और उसने इस आधार पर मुकदमा दायर किया कि क्योंकि मैं स्वतन्त्र भूमि में रह चुका हूँ इसलिए मुझे मुक्त किया जाय। दक्षिण-प्रभावित न्यायालय ने निर्णय किया कि स्कौट दास-स्टेट में स्वेच्छापूर्वक लौटा है, इसलिए उसको स्वतन्त्रता के जो-कुछ अधिकार थे भी वे नष्ट हो गए और साथ ही यह व्यवस्था भी दी कि कांग्रेस इन प्रदेशों में दासता के निषेध के लिए जो कोई प्रयत्न करेगी वह अवैध होगा।

इस निर्णय से उत्तर-भर में सर्वत्र जोश फैल गया। इससे पूर्व न्याय-विभाग की इतनी निन्दा कभी नहीं हुई थी। दूसरी ओर यह निर्णय दक्षिणी डैमोक्रैटों की बहुत बड़ी जीत था। इससे दक्षिणी प्रदेशों में दासता को जारी रखने के उनके विचार को न्यायालय की अनुमति प्राप्त हो गई। अब्राहम लिंकन अभी तक मध्य-पश्चिम के अन्य वकील राजनीतिज्ञों से प्रायः भिन्न नहीं था। वह दासता को चिरकाल से एक बुराई मानता था और १८५४ में पियोरिया (इलिनौय) में एक भाषण देते हुए उसने बलपूर्वक कहा कि सब राष्ट्रीय क़ानून लोकतन्त्र के जनकों के इस सिद्धान्त के आधार पर बनने चाहिएँ कि दासता एक ऐसी प्रथा है जिसको धीरे-धीरे कम करते हुए अन्त में समाप्त कर देना चाहिए। उसने यह भी कहा कि जनता की प्रभुता का सिद्धान्त मिथ्या है, क्योंकि पश्चिमी प्रदेशों की दासता का प्रश्न केवल स्थानीय निवासियों द्वारा नहीं, अपितु समस्त यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा विचारणीय है। इस

सेनेट के एक स्थान के लिए चुनाव में अपने प्रतिस्पर्धी स्टीवन डगलस (लिंकन के दाईं ओर) के साथ विवादशृंखला में संलग्न अब्राहम लिंकन (खड़ा हुआ)। इन विवादों में दोनों उम्मीदवारों ने दास-प्रथा पर अपने विचार प्रकट किये थे।



भाषण ने उसे बढ़ते हुए पश्चिम में सर्वविदित कर दिया और चार वर्ष पीछे इलिनौय से सेनेट के चुनाव में वह स्टीवन ए. डगलस का प्रतिस्पर्धी उम्मीदवार बनकर खड़ा हुआ। १७ जून १८५८ को उसने अपने चुनाव आन्दोलन का जो प्रथम भाषण किया उसमें उसने आगामी सात वर्ष के अमेरिकन इतिहास की मुख्य ध्वनि को गुञ्जित कर दिया था :

"...'परस्पर कलह करता हुआ घर देर तक नहीं टिक सकता।' मेरा विश्वास है कि यह शासन आधा दास और आधा स्वतन्त्र रहकर नहीं चल सकता। मुझे आशा नहीं कि यूनियन छिन्न-भिन्न हो जायगी—मुझे आशा नहीं कि यह घर ढह जायगा—परन्तु मुझे यह आशा अवश्य है कि यह परस्पर लड़ता नहीं रहेगा।"

लिंकन और डगलस में १८५८ की ग्रीष्म और शरद् ऋतुओं में सात वादविवाद हुए। लहलाते हुए खेतों के बीच बसे हुए इलिनौय के सूखे छोटे कस्बों में कमीज़ों की बाँहें ऊपर चढ़ाये हुए किसान और उनके परिवार गड्डों और बग्घियों में बैठे और जमीन पर खड़े हुए इन विवादों को सुनने की प्रतीक्षा में रहते थे। सेनेटर डगलस स्थानीय डैमोक्रैटिक क्लब के मित्रों से घिरा हुआ एक खुली गाड़ी में आता और मंच पर चढ़ जाता। उसका शरीर दृढ़ और पाँच फुट ऊँचा था। उत्कृष्ट वक्ता के रूप में उसकी दूर-दूर तक ख्याति थी और वह 'छोटे दैत्य' के नाम से प्रसिद्ध था। उसके प्रत्येक अंग से आत्मविश्वास और अधिकार प्रकट होता था। एब लिंकन बहुधा पैदल आता था। उसका झुर्रियों से ढका चेहरा और ऊँची गरदन भीड़ से ऊँचे दिखलाई देते थे। वह जब श्रोताओं का सामना करता तो उसका चेहरा उदास रहता था। आक्रमण का बोझ उसी पर रहता था। वह न केवल डगलस के सेनेट में रहने के अधिकार को चुनौती दे रहा था, बल्कि नई पार्टी का प्रवक्ता भी था। ये दोनों वक्ता जो युक्तियाँ पेश करते थे उनसे बढ़कर चतुर, चमत्कारी और प्रबल युक्तियाँ अँग्रेजी भाषा में शायद ही कभी कहीं दी गई हों। यद्यपि डगलस एक बार पुनः सेनेटर चुना गया तथापि लिंकन को राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त हो गई।

शीघ्र ही प्रादेशिक संघर्ष पुनः तीव्र हो गया। जॉन ब्राउन ने एक पागल के जोश में तीन वर्ष पूर्व कैन्सास में दासता पर खूनी प्रहार किया था; वह अब भी इसी की बुराइयाँ सोचने में लीन रहता था। अब उसने न्यू इंग्लैंड के दासता-विरोधी कुछ गरम लोगों की सहायता से एक साहसिक क़दम उठाया। १८ अनुयायियों का एक गिरोह इकट्ठा करके, जिनमें पाँच नीग्रो भी थे, उसने १६ अक्टूबर १८५६ की रात को हार्पर्स फ़ैरी (वर्जिनिया) के संघीय शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया। जब प्रातःकाल हुआ तब हार्पर्स फ़ैरी क़स्बे के नागरिक विविध शस्त्रों से सज्जित होकर गाँव में उमड़ पड़े और नागरिक सेना की कुछ कम्पनियों की सहायता से उन्होंने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया। ब्राउन और उसके बचे हुए साथी क़ैद हो गए। राष्ट्र-भर में सनसनी फैल गई। ब्राउन की कार्रवाई ने बहुत-से दक्षिणियों के बुरे-से-बुरे भयों को सत्य सिद्ध कर दिया। दूसरी ओर जोशीले दासता-विरोधियों ने ब्राउन को एक प्रशंसनीय उद्देश्य की पूर्ति पर न्यौछावर हो जाने वाला महान् शहीद बतलाया। परन्तु अधिकतर उत्तर वालों ने इस दुस्साहस का विरोध किया। उन्हें इसमें दक्षिण पर आक्रमण नहीं, अपितु लोकतान्त्रिक उपायों पर आक्रमण होता दिखलाई दिया। ब्राउन पर षड्यन्त्र, विद्रोह और क़त्ल का मुक़दमा चला और २ दिसम्बर १८५६ को उसे फाँसी पर लटका दिया गया। उसका अन्तिम क्षण तक यही विश्वास रहा कि वह एक दैवी कार्य का निमित्त-मात्र था।

देश के प्रारम्भिक काल से उत्तर और दक्षिण में जो भेद चले आ रहे थे इस घटना से और भी गहरे होकर वे उदीयमान राष्ट्र के साँचे में भी अंकित हो गए। उत्तर का विश्वास था कि बढ़ते हुए उद्योग की रक्षा के लिए तैयार माल पर तट-कर लगाया जाना चाहिए। कृषि-प्रधान दक्षिण उससे घृणा करता था। उत्तर सार्वजनिक भूमि को शीघ्रातिशीघ्र छोटे स्वामियों में बाँट देने का पक्षपाती था। सब निवासियों के लिए मुफ्त कृषि-भूमि की माँग प्रबलतर होती जा रही थी। "खेत पाने के लिए वोट दो" का नारा लोकप्रिय होता चला जा रहा था। दक्षिण चाहता था कि राष्ट्रीय भूमि को ऊँचा मूल्य उठाने के लिए रोका और बेचा जाय। उत्तर राष्ट्र के लिए कुशल बैंकिंग पद्धति का पक्षपाती था। दक्षिण केन्द्रित बैंक का विरोधी था। उत्तर में एक बलवान् मध्य श्रेणी विकसित हो चुकी थी, इसी कारण वह दक्षिण की अपेक्षा अधिक लोकतान्त्रिक था। दक्षिण में अधिकतर धन और शक्ति दासों के स्वामी रईसों के हाथ में थी।

१८६० के प्रेजिडेण्ट के चुनाव के समय उत्तर और दक्षिण में इन भेदों का प्रकाशन राजनीतिक रूप में हुआ।

रिपब्लिकन पार्टी इस आन्दोलन में सर्वथा एक होकर सामने आई। शिकागो में एक उत्साहपूर्ण कनवेन्शन करके उन्होंने मध्य-पश्चिम के सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति अब्राहम लिंकन को अपना उम्मीदवार नामज़द किया। लाखों वोटर इस दृढ़ निश्चय द्वारा प्रेरित थे कि वे दासता को और नहीं फैलने देंगे। पार्टी ने उद्योगों के संरक्षण के लिए तट-कर लगाने की भी प्रतिज्ञा की और भूमि के भूखे उत्तर वालों से अपील करते हुए प्रतिज्ञा की कि वे सब वासियों को मुफ़्त कृषि-भूमि देने का क़ानून पास कराएँगे। दूसरी ओर विरोधी दल बिखरा हुआ था इसलिए चुनाव के दिन लिंकन और रिपब्लिकनों की जीत हो गयी।

यह पहले से ही निश्चित था कि यदि लिंकन जीत गया तो साउथ कैरोलाइना यूनियन से पृथक् हो जायगा। यह स्टेट चिरकाल से ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में थी जब कि सारा दक्षिण एक नई कॉनफ़ेडरेसी में संगठित हो जायगा। ज्यों ही चुनाव के परिणामों का निश्चय हो गया त्यों ही साउथ कैरोलाइना के एक विशेष रूप से संगठित कनवेन्शन ने घोषणा की कि "साउथ कैरोलाइना अन्य राज्यों से अर्थात् यूनाइटेड स्टेट्स ऑव् अमेरिका से चले आ रहे अपने सम्बन्ध को आज से तोड़ता है।" दक्षिण की अन्य स्टेटों ने भी तुरन्त इसका अनुकरण किया और ८ फ़रवरी १८६१ को उन्होंने 'कॉनफ़ेडरेट स्टेट ऑव् अमेरिका' का संगठन कर लिया।

इसके एक महीने से भी कम समय पश्चात् ४ मार्च १८६१ को अब्राहम लिंकन यूनाइटेड स्टेट्स के प्रेज़िडेण्ट पद पर प्रतिष्ठत हुआ। अपने प्रारम्भिक भाषण में उसने दक्षिण की पृथकता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और उसे "अवैध और सत्ताहीन" बतलाया। उसने अपने भाषण का अन्त प्रेम के पुराने बन्धनों को फिर जोड़ने की हृदयस्पर्शी भावुकतापूर्ण अपील के साथ किया, परन्तु दक्षिण ने उसकी अपील को नहीं सुना और १२ अप्रैल को चार्ल्स्टन (साउथ कैरोलाइना) बन्दरगाह के फ़ोर्ट सुमटर पर तोपों ने आग उगलनी शुरू कर दी। अब उत्तरवालों के मन में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं रहा था। प्रत्येक गाँव और नगर में ढोल बजने लगे और सर्वत्र नौजवान शस्त्रों से सज्जित हो गए। इसी समय सात पृथक्-भूत स्टेटों की जनता ने भी अपने प्रेज़िडेण्ट जैफ़र्सन डेविस की अपील का जवाब उसी उत्साह से दिया। आगामी संघर्ष की भयंकरता और गम्भीरता की कल्पना बहुत कम लोगों ने की थी। युद्ध समाप्त होने से पूर्व दक्षिण की ओर से लगभग ८ लाख व्यक्ति लड़ चुके थे और उत्तर की ओर से इससे दुगने या तिगुने। उत्तर की सेनाओं में ५० हज़ार से अधिक गोरे और १ लाख से अधिक नीग्रो पृथक्-भूत स्टेटों में से भरती हुए थे।

दोनों प्रदेश चिन्तापूर्वक उन दास-स्टेटों की कार्रवाई की प्रतीक्षा कर रहे थे जो कि अब तक राजभक्त रही थीं। वर्जिनिया ने १७ अप्रैल को भाग्य-निर्णायक क़दम उठाया और आर्कन्सॉ तथा नौर्थ कैरोलाइना ने तुरन्त ही उसका अनुगमन किया। कोई भी स्टेट यूनियन से इतनी अनिच्छापूर्वक पृथक नहीं हुई जितनी वर्जिनिया। उसके राजनीतिज्ञ न केवल स्वतन्त्रता-प्राप्ति और संविधान-निर्माण के लिए अनिवार्य रहे थे, वह राष्ट्र को पाँच प्रेज़िडेण्ट भी दे चुकी थी। वर्जिनिया के साथ ही कर्नल रौबर्ट ई. ली भी चला गया। उसने स्टेट के प्रति निष्ठा के कारण यूनियन की सेना का सेनापतित्व ग्रहण करने से इनकार कर दिया। विस्तारित कॉनफ़ेडरेसी और स्वतन्त्र-भूमि-पक्षपाती उत्तर के मध्य में वे सीमावर्ती स्टेटें थीं जो अकस्मात् ही राष्ट्रीय सिद्ध हुईं और उन्होंने अपना सम्बन्ध यूनियन के ही साथ रखना पसन्द किया।

दोनों प्रदेशों के लोग युद्ध में शीघ्र ही विजय-प्राप्ति की प्रबल आशा से सम्मिलित हुए थे, परन्तु प्राकृतिक साधन-सम्पन्नता में उत्तर की स्थिति निर्विवाद रूप से ऊंची थी। २ करोड़ २० लाख आबादी वाली २३ उत्तरी स्टेटें ६० लाख आबादी की ११ दक्षिणी स्टेटों के विरुद्ध खड़ी थीं। उत्तर की औद्योगिक श्रेष्टता उसकी आबादी की अधिकता से भी कहीं बढ़कर थी। ग्रामीण दक्षिण के विपरीत व्यवसायी उत्तर के पास शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद, वस्त्र और अन्य सामान के निर्माण की सुविधाएँ प्रचुर थीं। और रेलवे लाइनों के शीघ्र-शीघ्र विस्तार ने भी उत्तर की सामरिक सफलता में सहायता दी। दूसरी ओर कॉनफ़ेडरेसी एक संगठित और नदी-नालों वाला प्रदेश था। क्योंकि युद्ध उसकी अपनी ही भूमि पर हो रहा था, अतः वह अपने सामरिक मोर्चे की रक्षा उत्तर की तुलना में अति न्यून श्रम और स्वल्प व्यय से कर सकता था।

युद्ध में लड़ाई के क्षेत्र मुख्यतया तीन थे—समुद्र, मिसिसिपी घाटी और पूर्वी समुद्र-तट की स्टेटें। युद्ध के आरम्भ में प्रायः समग्र जल-सेना यूनियन के हाथ में थी परन्तु वह बिखरी हुई और निर्बल थी। जल-सेना के योग्य सेक्रेटरी गिडियन

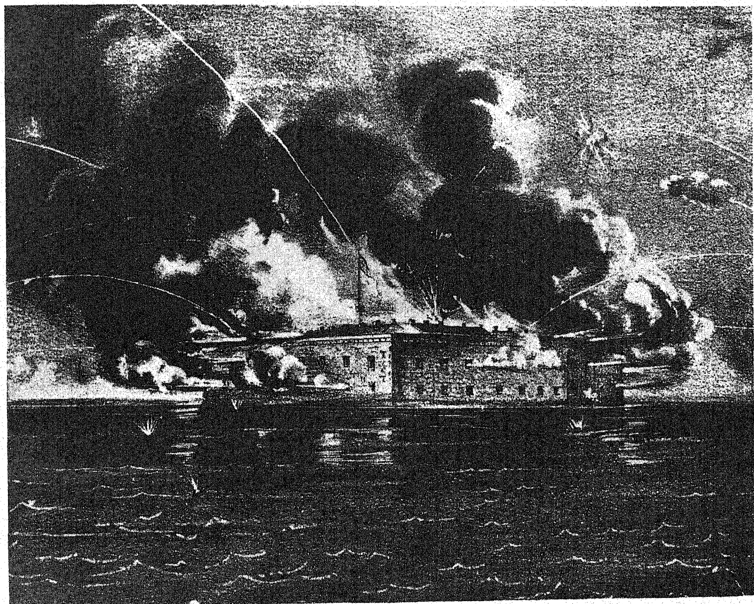
वैल्ज ने इसे तुरन्त पुनर्गठित करके बलवान् बना दिया। लिंकन ने दक्षिणी-तट की घेराबन्दी घोषित कर दी। यद्यपि आरम्भ में इसका प्रभाव उपेक्षणीय रहा, परन्तु १८६३ से इसने यूरोप को रुई का निर्यात और वहां से बारूद, वस्त्र और औषधि आदि जिन वस्तुओं की दक्षिण को अत्यन्त आवश्यकता थी उनका आयात, पूर्णतया रोक दिया। इसी समय एक प्रतिभाशाली जल-सेनापति डेविड फ़ैरागट प्रकट हुआ। उसने दो उल्लेखनीय कार्रवाइयां कीं। १. वह यूनियन के बेड़े को मिसिसिपी के मुहाने में ले गया और दक्षिण के सबसे बड़े नगर न्यू ओर्लियन्स से उसने आत्मसमर्पण करवा लिया। २. वह मोबाइल खाड़ी के दुर्ग-बद्ध द्वार को पार करके आगे बढ़ गया और कॉनफ़ेडरेसी के एक शस्त्र-सज्जित पोत को पकड़कर उसने इस बन्दरगाह को घेरे में डाल दिया। सब मिलाकर दक्षिण को पराजित करने में जल-सेना ने यूनियन की प्रशंसनीय सेवा की।

मिसिसिपी घाटी में यूनियन की सेनाओं की प्रायः लगातार अनेक जीतें हुईं। युद्ध के आरम्भ में ही उन्होंने टेनेसी में कॉनफ़ेडरेसी की लम्बी पंक्ति को भंग कर दिया और इस प्रकार इस स्टेट के प्रायः समस्त पश्चिमी भाग पर सरलतापूर्वक अधिकार कर लिया। मिसिसिपी के महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह मैम्फ़िस को लेने के पश्चात् यूनियन की सेनाएं कॉनफ़ेडरेसी के हृदय में दो सौ मील तक घुसी चली गईं। उनका सेनापति यूलिसीज़ एस. ग्राण्ट था जो दृढ़ और हठी था और उसे समर में सैन्य अवस्थिति के मुख्य सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान था। टेनेसी नदी की ऊँची घाटियों में शाइलो नामक स्थान पर उस पर आक्रमण हुआ तो वह अपने स्थान पर तब तक डटा रहा जब तक कि नई मदद पाकर वह शत्रु को पीछे धकेल देने में समर्थ नहीं हो गया। इसके पश्चात् उसकी सेनाएँ धीरे-धीरे परन्तु दृढ़ता से दक्षिण की ओर बढ़ने लगीं। उनका लक्ष्य मिसिसिपी पर अपना नियन्त्रण कर लेना था। उसके निम्न भाग तो फ़ैरागट द्वारा न्यू ओर्लियन्स पर अधिकार कर लेने के पश्चात् कॉनफ़ेडरेटों से पहले ही साफ हो चुके थे। कुछ समय तक ग्राण्ट को विक्सबर्ग में रुक जाना पड़ा। वहां कॉनफ़ेडरेट टीलों पर दृढ़ता से जम गये थे। उन पर जल-सेना आक्रमण नहीं कर सकती थी। परन्तु १८६३ में ग्राण्ट ने एक आश्चर्यजनक काम किया। वह विक्सबर्ग को घेरकर नीचे की ओर आगे बढ़ गया और छः सप्ताह तक उसने कॉनफ़ेडरेटों को अपने घेरे में रखा। ४ जुलाई को उसने नगर पर और पश्चिम में कॉनफ़ेडरेटों की सबसे अधिक बलवान् सेना पर अधिकार कर लिया। अब समस्त नदी यूनियन के अधिकार में थी। कॉनफ़ेडरेसी दो भागों में बंट गई थी और आर्कन्सॉ और टैक्सास के सम्पन्न प्रदेशों से नदी को पार करके पूर्व में सामग्री का पहुँचाना प्रायः असम्भव हो गया था।

दूसरी ओर वर्जिनिया में यूनियन की सेनाओं को एक के बाद दूसरी पराजय का सामना करना पड़ रहा था। वहां बार-बार खूनी युद्ध हुए जिनमें यूनियन की सेनाओं ने कॉनफ़ेडरेटों की राजधानी रिचमण्ड (वर्जिनिया) पर अधिकार करने और कॉनफ़ेडरेट सेनाओं को नष्ट करने का बार-बार प्रयत्न किया परन्तु वे बार-बार पीछे धकेल दी गईं। रिचमण्ड और वाशिंगटन में दूरी केवल १०० मील की है। परन्तु बीच के प्रदेश में अनेक जल-धाराएँ हैं जिनके कारण दक्षिणियों की रक्षा-व्यवस्था दृढ़ हो गई थी। कॉनफ़ेडरेटों के दो सेनापति थे—रॉबर्ट ई. ली और टॉमस जे (स्टोनवॉल) जैक्सन, जो दोनों ही यूनियन के आरम्भिक सेनापतियों की तुलना में कहीं चतुर नेता थे। यूनियन के सेनापति मैक्लैलन ने रिचमण्ड पर अधिकार करने का जीतोड़ यत्न किया। एक बार तो उसके सिपाहियों को कॉनफ़ेडरेट गिरजाघरों में बजते हुए घण्टे तक सुनाई देने लगे थे, परन्तु २५ जून से १ जुलाई १८६२ तक सात दिनों के युद्ध में यूनियन की सेनाएँ निरन्तर पीछे धकेल दी गईं। दोनों ही पक्षों को भयंकर हानि उठानी पड़ी।

१८६३ में युद्ध का आरम्भ उत्तर के लिए अच्छा नहीं हुआ। परन्तु उस वर्ष की प्रथम जनवरी को एक उल्लेखनीय घटना हो गई। उस दिन प्रेज़िडेण्ट लिंकन ने अपनी प्रसिद्ध मुक्ति-घोषणा (इमैन्सिपेशन प्रोक्लेमेशन) की, जिसके अनुसार सब दास स्वतन्त्र कर दिये गए और उन्हें राष्ट्र की सेनाओं में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया गया। अब तक युद्ध का प्रत्यक्ष कारण राष्ट्र की एकता करना रहा था। अब उसके साथ उसकी सीमाओं में से दासता की सदा के लिए समाप्ति भी जुड़ गई। स्थल-मार्ग से रिचमण्ड की ओर बढ़ाव अब तक रुका हुआ था। चान्सलर्सविल में एक खूनी युद्ध हुआ जिसमें उत्तर वालों की भारी हार हुई। परन्तु कॉनफ़ेडरेटों को यह जीत बहुत मँहगी पड़ी, क्योंकि इसमें स्टोनवॉल जैक्सन मारा गया, जो ली के बाद दक्षिणियों का [illegible] सेनापति था।

कॉनफ़ेडरेटों की इन जीतों में से एक भी निर्णायक नहीं



१२अप्रैल १८६१ के प्रातःकाल एक घनगर्जन सम धड़ाके ने चार्ल्स्टन बन्दर की शान्ति भंग कर दी। यहां प्रदर्शित फ़ोर्ट सुमटर पर गोलाबारी करके 'कॉनफ़ेडरेटों' ने गृह-युद्ध छेड़ दिया था।

थी। जुलाई १८६३ में युद्ध की बाजी पलट गई। ली ने समझा कि चान्सलर्सविल की पराजय ने यूनियन की कमर तोड़ दी है। उसने उत्तर की ओर बढ़कर पेनसिलवेनिया पर आक्रमण किया। उसकी सेना प्रायः स्टेट की राजधानी तक पहुँच गई परन्तु यूनियन की एक बलवान् सेना ने उसकी गति को गैटीसबर्ग पर रोक दिया। यहाँ तीन दिन के युद्ध में कॉनफ़ेडरेटों ने यूनियन की पंक्ति को तोड़ने का वीरतापूर्ण प्रयत्न किया परन्तु वे असफल रहे और जब ली के अनुभवी सिपाही भारी हानि के कारण स्थायी रूप से शक्तिहीन होकर पोटोमैक की ओर [illegible] लौटे तब [illegible] स्पष्ट हो चुका था कि "गैटीसबर्ग का ज्वार" कॉनफ़ेडरेटों की सभी आशाओं की पराकाष्ठा थी। तब ग्राण्ट की सेना मिसिसिपी नदी पर विक्सबर्ग पर अधिकार कर रही थी। दक्षिणी समुद्रतट की घेराबन्दी लोहे की दीवार बन चुकी थी। कॉनफ़ेडरेटों के साधन समाप्त हो रहे थे। दूसरी ओर उत्तरी स्टेटों की मिलें और कारखाने खूब चल रहे थे। उनके खेत यूरोप को माल भेज रहे थे और उनका जन-बल नये आगन्तुकों के कारण निरन्तर बढ़ता जा रहा था।

रिचमण्ड की ओर ग्राण्ट की मन्द परन्तु दृढ़ प्रगति से १८६४ में युद्ध का अन्त स्पष्ट दीखने लगा। सब दिशाओं से उत्तरी सेनाएँ घेरती गईं और १ फ़रवरी १८६५ को जनरल शरमन की पश्चिमी सेना ने जॉर्जिया से उत्तर की ओर प्रयाण आरम्भ कर दिया। निराश शत्रु ने प्रत्येक स्थान पर उसकी प्रगति को रोकने का यत्न किया। १७ फ़रवरी को कॉनफ़ेडरेटों ने साउथ कैरोलाइना की राजधानी कोलम्बिया को खाली

कर दिया। चार्ल्स्टन बिना युद्ध के ही यूनियन के बेड़े के हाथ लग गया, क्योंकि भीतरी प्रदेश के साथ उसके रेल-सम्बन्ध कट चुके थे। पीटर्सबर्ग और रिचमण्ड में कॉनफ़ेडरेटों की स्थिति अरक्षणीय हो चुकी थी और २ अप्रैल को ली ने उन्हें खाली कर दिया। एक सप्ताह पीछे वह एप्पौमैटक्स (वर्जिनिया) में शत्रु द्वारा घिर गया और उसके सामने आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं रहा।

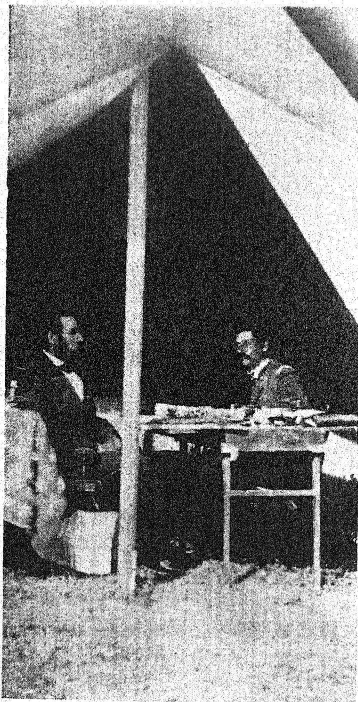
आत्मसमर्पण की शर्तें उदार थीं। ग्राण्ट ने कानफ़रेन्स से लौटकर अपने सिपाहियों का कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन उन्हें यह समझाकर शान्त कर दिया कि "विद्रोही फिर हमारे देशवासी बन गये हैं।" दक्षिण की स्वतन्त्रता का युद्ध हारा जा चुका था।

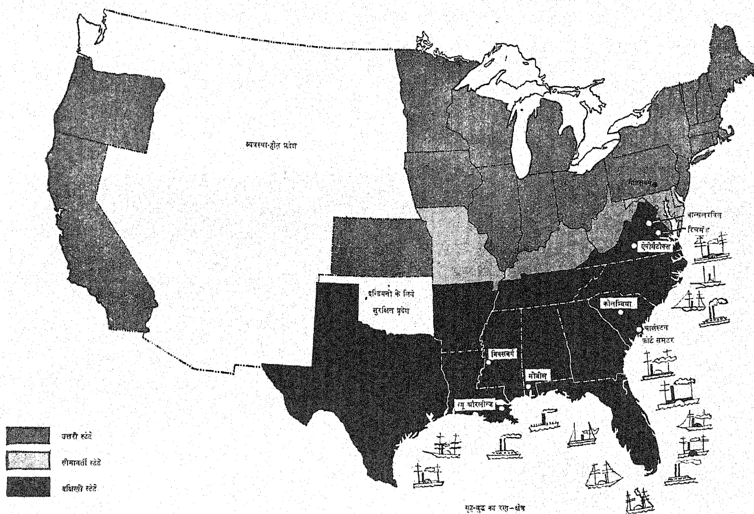
परन्तु इस पराजित युद्ध का नेता निर्विवाद रूप से रॉबर्ट ई० ली था। अपनी संगठन-शक्ति, विस्तार की बातों पर अपनी एकाग्रचित्तता, अपने आदमियों के सुख-दुख की चिन्ता, अपने साहस और सुन्दर आकृति के कारण, उसने अपने सिपाहियों की भक्ति और विश्वास को जीत लिया था। उसके प्रतिभाशाली नेतृत्व, समस्त युद्ध में उसकी मानवता और पराजय में भी उसकी शान की सर्वत्र प्रशंसा थी। जॉर्ज वाशिंगटन के समान, वह शान्ति और युद्ध दोनों में महान् रहा। युद्ध के बाद वह ५ वर्ष तक जीवित रहा। यह सारा काल उसने दक्षिण की आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उन्नति करने में बिताया। जनता को वह प्रेरणा करता रहा कि वह अपने भूतपूर्व शत्रु की निष्ठावान् साझीदार बनी रहे।

उत्तर में युद्ध ने इससे भी बड़े नेता अब्राहम लिंकन को जन्म दिया। आरम्भ के महीनों में बहुत कम लोगों ने इस बेडौल पश्चिमी वकील की वास्तविक ऊँचाई का अन्दाजा लगाया था, परन्तु धीरे-धीरे राष्ट्र उसकी गम्भीर बुद्धिमत्ता को समझने लगा। वह सत्य का अत्यन्त प्रेमी और अनन्त धीरता और असीम उदारता के गुणों से युक्त था। कभी-कभी वह झिझकता और डगमगाता भी प्रतीत होता था। परन्तु वह यह जानता था कि राष्ट्रीय लाभ के लिए प्रतीक्षा कैसे करनी चाहिए और दृढ़ता का कुशलता के साथ मेल किस प्रकार करना चाहिए। सबसे बढ़कर उसे देश को जोर जबर्दस्ती के आधार पर नहीं बल्कि प्रेम और उदारता के आधार पर मिलाकर एक कर देने की चिन्ता थी। उसकी विदेश-नीति में दृढ़ता, सत्यता और आत्मसम्मान के गुण थे और वह हृदय से लोकतान्त्रिक स्वशासन में विश्वास रखता था। जनता का उसे पूर्ण विश्वास प्राप्त था और इसीलिए वह १८६४ में दुबारा प्रेजिडेण्ट चुना गया।

लिंकन ने द्वितीय बार पद ग्रहण करते हुए अपना प्रारम्भिक भाषण इन शब्दों में समाप्त किया : "किसी से भी द्वेष न रखते हुए, सबके प्रति उदार रहकर, सत्य पर

ऐण्टीएटम की महत्त्वपूर्ण लड़ाई के तुरन्त पश्चात् लिंकन ने युद्ध की प्रगति पर विचार करने के लिए यूनियन के जनरल मैक्लैलन से उसके रणक्षेत्र के कार्यालय में भेंट की।





गृह-युद्ध का रण-क्षेत्र

दृढ़ रहकर जैसी कि उसे देखने की ईश्वर ने हमें शक्ति दी है, हमें उस कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए जो हमने हाथ में लिया है। राष्ट्र के घावों को भरने के लिए, उसकी सेवा करने के लिए जिसने कि युद्ध का बोझ अपने सिर उठाया, उसकी विधवा और उसके अनाथ की सेवा के लिए और वह सब-कुछ करने के लिए हमें यत्नवान् रहना चाहिए जिससे हम सबको, और सब राष्ट्रों को स्थायी शान्ति प्राप्त हो और जिससे हम उसकी रक्षा कर सकें।" तीन सप्ताह पश्चात् लिंकन ने अपना अन्तिम सार्वजनिक भाषण किया, जिसमें उसने अपनी पुनर्निर्माण की नीति प्रकट की—उसकी शर्तें ऐसी उदार थीं कि शायद वैसी किसी विजेता ने अपने असहाय पराजित के सामने पेश न की होंगी। लिंकन अपने-आपको विजेता नहीं समझता था। वह १८६१ से यूनाइटेड स्टेट्स का प्रेज़िडेण्ट था। वह कहता था कि विद्रोह को भुलाकर प्रत्येक दक्षिणी स्टेट को उसके पूर्ण अधिकारों के साथ यूनियन में मिला लेना चाहिए। १३ अप्रैल गुरुवार को वाशिंगटन में ली के आत्मसमर्पण के उत्सव की दीवाली की गई और प्रसन्न जनता ने गलियों में जलूस निकाले। १४ को प्रेज़िडेण्ट ने अपने मन्त्री-परिषद् की अन्तिम बैठक की जिसमें घेराबन्दी उठा लेने का निश्चय किया गया। उसने अपने सेक्रेटरियों को अपना ध्यान रक्तपात और उत्पीड़न से हटाकर शान्ति की ओर लगा देने की प्रेरणा की। उसी रात को जब वह थियेटर में अपने बौक्स में बैठा हुआ था तब किसी सिरफिरे पागल ने उसका क़त्ल कर दिया।

तब कवि जेम्स रसैल लौवेल ने लिखा था : "अप्रैल के उस स्तब्ध करने वाले प्रातःकाल से पूर्व, इतनी बहुसंख्यक जनता ने किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु पर, जिसे कि उसने कभी देखा तक नहीं था, इतने आँसू नहीं बहाये थे; ऐसा लगता था कि उसके साथ ही उसके जीवन में से एक मित्र का लोप हो गया और वह निर्जीव और अन्धकार-निमग्न हो गई थी। उस दिन परस्पर अपरिचित लोगों ने एकत्र होकर अपनी सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों के विनिमय द्वारा मृत महापुरुष



जब कॉनफ़ेडरेटों को अपनी राजधानी रिचमण्ड छोड़नी पड़ गई तब उन्होंने इसका पूर्ण विनाश करने के प्रयोजन से नगर में आग लगा दी। युद्ध के पश्चात् दक्षिणवालों को पुनर्निर्माण के भारी काम का सामना करना पड़ा। यह विनष्ट पुल उसी का एक सूचक है। यह और इन दो पृष्ठों में वर्णित अन्य दृश्यों के फ़ोटो मैथ्यू ब्रैडी ने लिये थे।

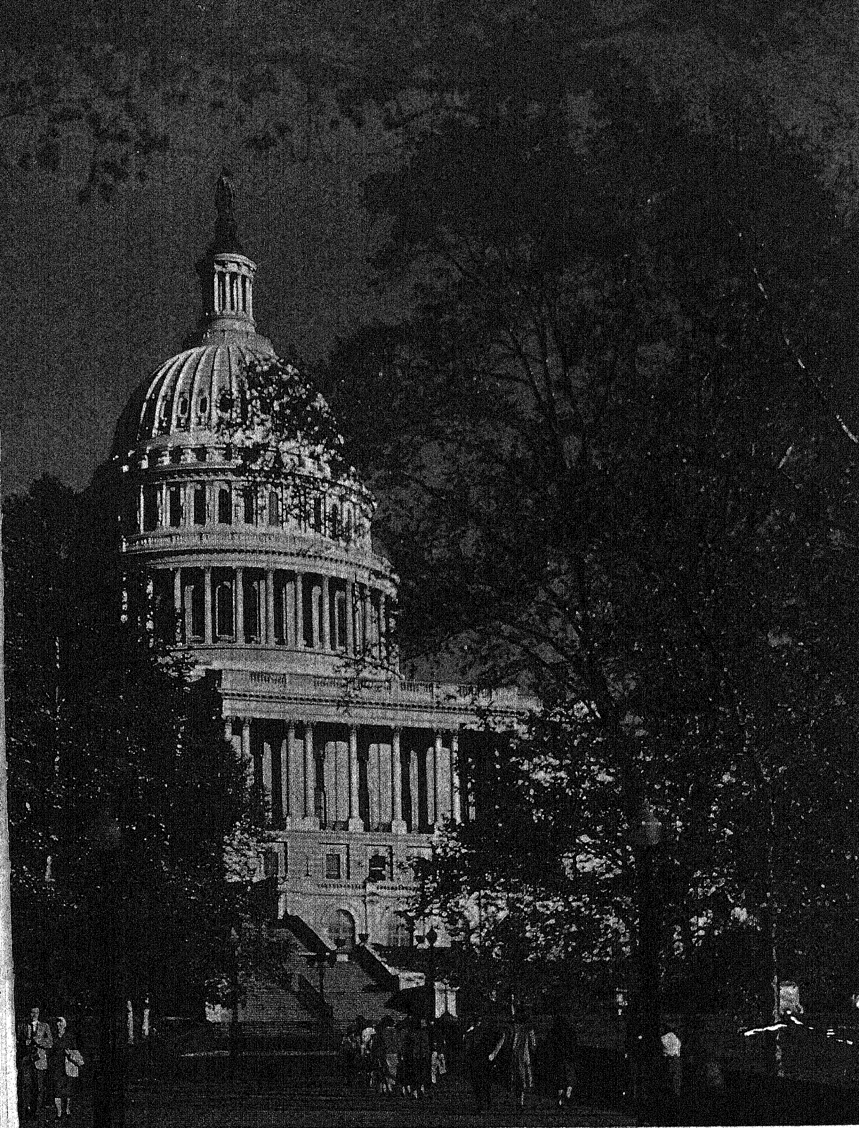
के प्रति प्रशंसा के भावों की जैसी मूक अभिव्यक्ति की वैसी इससे पहले न की गई होगी। मानव-परिवार अपने एक प्रिय जन से वियुक्त हो चुका था।"

अब राष्ट्र को पुनर्व्यवस्था और पुनर्निर्माण की कठिन समस्या का सामना एण्ड्रू जॉन्सन सरीखे एक नये, अपरीक्षित और अपर्याप्त साधन-सम्पन्न व्यक्ति के नेतृत्व में करना पड़ा। युद्ध की विरासत में देश को भलाई और बुराई दोनों ही मिली-जुली मिली थीं। उसने यूनियन की रक्षा तो कर दी थी और उसे अमर कीर्ति भी प्रदान की थी परन्तु देश युद्धाग्नि में से निश्चय ही अनझुलसा नहीं निकल सका था।

विजेता उत्तर के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न पृथक्-भूत स्टेटों की स्थिति के निश्चय का था। इस सम्बन्ध में गड़बड़ थी कि इस प्रश्न का निर्णय करने का अधिकार कांग्रेस को है या प्रेजिडेण्ट को। लिंकन का विचार था कि दक्षिणी स्टेटें क़ानूनन कभी पृथक् नहीं हुईं, परन्तु उनकी जनता को कुछ अराजभक्त नागरिकों ने मार्ग-भ्रष्ट कर दिया था। लिंकन के अनुसार युद्ध कुछ व्यक्तियों का काम था और संघीय शासन को उन व्यक्तियों से भुगतना था, स्टेटों से नहीं। लिंकन का विश्वास था कि स्थल और जल-सेना का प्रधान सेनापति और शत्रु को क्षमा करने का अधिकारी होने के नाते प्रेजिडेण्ट को स्थिति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इसी विचार पर चलते हुए उसने १८६३ में इस आशय की घोषणा की थी कि यदि किसी स्टेट में १८६० के दस प्रतिशत वोटर ऐसे शासन का संगठन कर लेंगे जो संविधान के प्रति निष्ठावान् हो और कांग्रेस के क़ानूनों और प्रेजिडेण्ट की आज्ञाओं का पालन करने की प्रतिज्ञा करे तो मैं उस शासन को स्टेट का क़ानूनसम्मत शासन मान लूँगा। कांग्रेस ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया और बिना उसकी सलाह के इस समस्या को हल करने के लिंकन के अधिकार को चुनौती दी और उस पर आक्षेप किया कि उसने क़ानून-निर्माण के अधिकार को असांविधानिक



लेखक और चित्रकार फ्रैडरिक रैमिंगटन (१८६१-१९०९) को "समस्त पश्चिमी प्रदेश का प्रामाणिक इतिहासकार" कहा जाता है। उस का चित्र "एक रसद गाड़ी पर आक्रमण" ऊपर दिया जा रहा है। इस में सीमा प्रदेश के निवासियों की साहसिक भावना का अधिकृत चित्रण किया गया है।



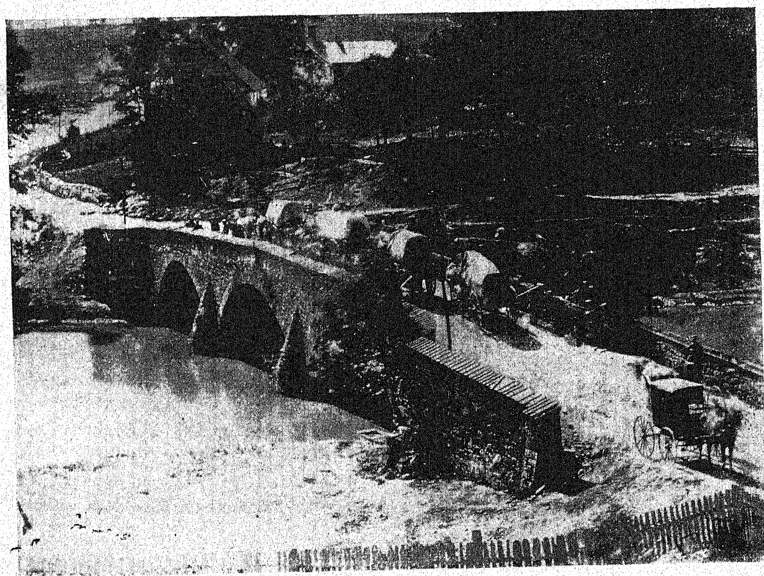
वाशिंगटन (डी. सी.) में कांग्रेस भवन (कैपिटोल)।

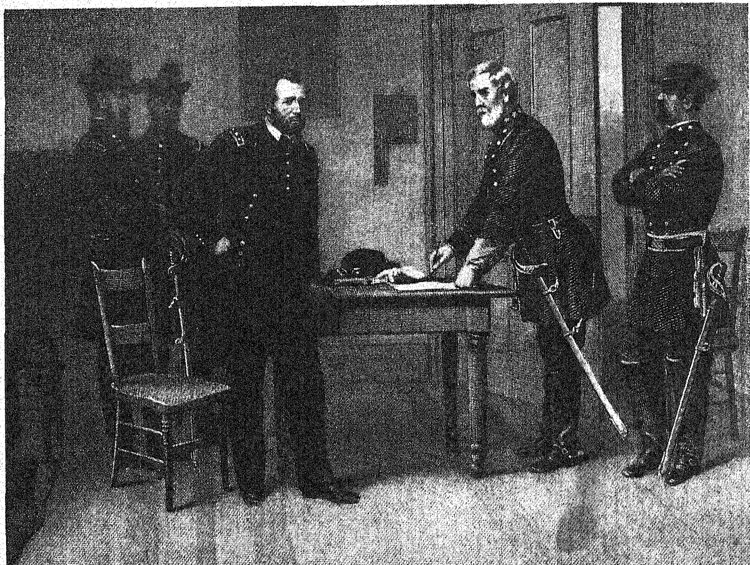
रूप से हड़प लिया है। दूसरी ओर, कांग्रेस ने १८६४ में जो इससे भी अधिक कठोर बिल पास किया उस पर हस्ताक्षर करने से लिंकन ने इनकार कर दिया।

वस्तुतः युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही वर्जिनिया, टेनेसी, आर्कन्सॉ और लूइजियाना में लिंकन नये शासन स्थापित कर चुका था। कांग्रेस के कई सदस्यों ने उसकी इस कार्रवाई को नापसन्द किया और सब कॉनफ़ेडरेट स्टेटों को कठोर दण्ड देना चाहा। इनमें से एक कांग्रेसमैन, हाउस ऑव् रिप्रिजेण्टेटिव्ज में रिपब्लिकन पार्टी के नेता, थैडियस स्टीवन्स का मत तो यह था कि दक्षिण के प्लाण्टरों को कुछ समय तक सैनिक शासन में रखना चाहिए। अन्य लोग नीग्रो लोगों को तुरन्त ही मत-प्रदान का अधिकार देने के लिए कृत-संकल्प थे। वस्तुतः इस समय कांग्रेस की मुख्य चिन्ता का विषय, दक्षिणी स्टेटों को यूनियन में पुनः प्रविष्ट करने की अपेक्षा, पुनरुद्धारित नीग्रो लोगों की दशा, बन गया था। मार्च १८६५ में उसने एक "फ्रीडमेन्स ब्यूरो" (स्वतन्त्र लोगों का ब्यूरो) स्थापित किया, जिसे नीग्रो लोगों का संरक्षक बनाकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने का काम सौंपा गया। साथ ही, कांग्रेस ने संविधान में तेरहवाँ संशोधन प्रस्तुत करके नीग्रो लोगों की स्वतन्त्रता पर क़ानूनी छाप लगा दी। यह दिसम्बर १८६५ में स्वीकृत हो गया।

पुनर्निर्माण की नीति पर, शासकों और क़ानून-निर्माताओं में भावी संघर्ष का भान लिंकन को पहले ही हो गया था। परन्तु इस समस्या को सुलझाने का काम उसके उत्तराधिकारी एण्ड्रू जॉन्सन के सिर पड़ा। उसका सार्वजनिक जीवन का अनुभव पुराना, साहस बुद्धि-संगत और लक्ष्य अडिग था, परन्तु दुर्भाग्यवश उसके सामने उपस्थित समस्या को सुलझाने

मैरिलैण्ड में ऐण्टीएटम नाले पर का पुल। निर्णायक लड़ाई के तुरन्त पश्चात् लिया हुआ चित्र। यहाँ भारी लड़ाई के बाद यूनियन वालों के सामने दक्षिण वालों को पीछे हटना पड़ा था।





९ अप्रैल १८६५ को कॉनफ़ेडरेटों के सेनापति जनरल रॉबर्ट ई. ली ने अप्पोमैटक्स कोर्ट हाउस (वर्जिनिया) में यूनियन के सेनापति जनरल यूलिसीज़ ग्राण्ट के सामने आत्मसमर्पण करके चार वर्ष से चलते हुए युद्ध का अन्त कर दिया

के लिए धैर्य और चतुराई के जिन गुणों की आवश्यकता थी वे उसमें नहीं थे।

१८६५ की गरमियों-भर जॉन्सन कांग्रेस से सलाह किये बिना (क्योंकि उस समय उसका अधिवेशन नहीं हो रहा था), कुछ बातों को छोड़कर, लिंकन की ही पुनर्निर्माण योजना पर चलता रहा। प्रेज़िडेण्ट की हैसियत से उसने दक्षिण की विविध स्टेटों में गवर्नर नियुक्त कर दिये और क्षमा करने के अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करके कॉनफ़ेडरेटों की बहुत बड़ी संख्या को उसने राजनीतिक अधिकार पुनः प्रदान कर दिये। दक्षिणी स्टेटों में कनवेन्शन बुलाये गए, जिनमें पृथक् होने के आर्डिनेन्स रद्द कर दिये गए, युद्ध-ऋण का प्रत्याख्यान कर दिया गया और नये संविधानों की रचना की गई। समय आने पर प्रत्येक स्टेट की जनता ने एक-एक गवर्नर का और स्टेट की धारासभा का भी निर्वाचन किया। जब किसी स्टेट की धारा-सभा संविधान के तेरहवें संशोधन को स्वीकार कर लेती थी तब जॉन्सन उस स्टेट में नागरिक शासन को पुनः स्थापित हुआ मान लेता था और उस स्टेट के यूनियन में पुनः मिल जाने की घोषणा कर देता था। १८६५ के दिसम्बर में जब कांग्रेस का अधिवेशन आरम्भ हुआ तब यह क्रम कुछेक को छोड़कर सब दक्षिणी स्टेटों में पूरा हो चुका था। परन्तु दक्षिणी स्टेटों को यूनियन में अपना अधिकारपूर्ण स्थान पुनः प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि कांग्रेस ने उनके जो सेनेटर और रिप्रेज़ेण्टेटिव वाशिंगटन आए थे उन्हें कांग्रेस में बैठकर यूनाइटेड स्टेट्स के क़ानून-निर्माण में पुनः

भाग लेने की अनुमति प्रदान नहीं की थी।

लिंकन और जॉन्सन दोनों मानते थे कि दक्षिणी रिप्रेज़ेण्टेटिवों को कांग्रेस में आसन ग्रहण करने की अनुमति न देने का संविधान की उस धारा के अनुसार कांग्रेस को अधिकार है जिसमें कहा गया है कि, "अपने सदस्यों······की योग्यता की निर्णायक प्रत्येक सभा स्वयं होगी।" (आर्टिकल १, सैक्शन ५)। जो लोग दक्षिण को दण्डित करना चाहते थे उन्होंने पैनसिलवेनिया के थैडियस स्टीवन्स के नेतृत्व में दक्षिणी प्रतिनिधियों को बैठने की अनुमति नहीं दी और आगामी महीनों में उन्होंने कांग्रेस के पुनर्गठन की ऐसी योजना बनानी आरम्भ कर दी जो कि लिंकन द्वारा आरम्भ की हुई और जॉन्सन द्वारा पूर्ण की हुई योजना से सर्वथा भिन्न थी।

कांग्रेस ने जॉन्सन की योजना को अनेक मिश्रित कारणों से अस्वीकार कर दिया। युद्ध-काल में तो परिस्थितियों के कारण ही प्रेज़िडेण्ट के अधिकार और प्रभाव प्रायः बढ़ जाते हैं परन्तु युद्ध के पश्चात् कांग्रेस अपने अधिकार को पुनः स्थापित करने का यत्न करती है। १८६५ में यह अनुभव किया जाने लगा कि अब तक तो कांग्रेस शासकों द्वारा अधिकार-प्रयोग को सहन करती चली आई है किन्तु अब इसे सीमित करने का समय आ गया है। उत्तर में यह भावना भी फैली हुई थी कि दक्षिण को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। इस भावना को कांग्रेस के उग्रपन्थियों ने प्रोत्साहन दिया। उन्होंने इस बात का लाभ उठाया कि दक्षिणियों में से जो लोग अब पद ग्रहण करना चाह रहे थे उनमें से बहुत-से केवल दस मास पूर्व यूनियन के विनाशक युद्ध में भाग ले रहे थे। उदाहरणार्थ, कॉनफ़ेडरेसी का वाइस-प्रेज़िडेण्ट जॉर्जिया का सेनेटर निर्वाचित होकर आया था।

इसके अतिरिक्त यह दावा भी किया जा रहा था कि नीग्रो लोगों को रक्षण की आवश्यकता है। धीरे-धीरे यह विचार अधिकाधिक व्यापक होता गया कि नीग्रो लोगों को मत-प्रदान और पद-ग्रहण का अधिकार दिया जाना चाहिए और सामाजिक और राजनीतिक मामलों में उनके साथ गोरे नागरिकों के समान ही व्यवहार होना चाहिए। दूसरी ओर वे लोग थे—और उनमें लिंकन भी सम्मिलित था—जो कि मताधिकार का विस्तार मन्द गति से करने के पक्षपाती थे। परन्तु जॉन्सन-योजना के अनुसार दक्षिण में जो धारा-सभाएँ निर्वाचित हुई थीं उन्होंने अनेक ऐसे क़ानून पास कर दिये जो कि नवीन स्वतन्त्र हुए लोगों की सुविधाओं और अधिकारों को नियमित करते थे। दक्षिणियों के सामने उन ३५ लाख नीग्रो-जनों की समस्या थी जो हाल में ही दासता से मुक्त हुए थे। उन्हें यह आवश्यक जान पड़ा कि स्टेटें उनकी हलचलों को सूक्ष्मता से नियन्त्रित करें और उन्होंने अनेक नियन्त्रक "काले क़ानून" बना डाले। उत्तर में बहुतों को ऐसा लगा मानो कि युद्ध के लाभों को समाप्त किया जा रहा है। उत्तर के उग्रपन्थियों ने इन क़ानूनों के आपत्तिजनक भागों का हवाला देकर यह सिद्ध करना चाहा कि दक्षिण दासता को पुनः स्थापित करना चाहता है।

धीरे-धीरे उत्तर में बहुत-से लोग ऐसा अनुभव करने लगे कि प्रेज़िडेण्ट का बर्ताव बहुत नरम रहा है; और उनकी सहानुभूति कांग्रेस के उग्रपन्थियों के साथ बढ़ने लगी। इन लोगों ने मिलकर जॉन्सन के वीटो की परवाह न करते हुए एक 'सिविल राइट्स बिल' अप्रेल १८६६ में और दूसरा 'फ्रीडमैन्स ब्यूरो बिल' जुलाई १८६६ में बनाना शुरू किया। इन दोनों का प्रयोजन यह था कि दक्षिण के क़ानून किसी प्रकार का भेद-भाव न कर सकें। अन्त को कांग्रेस ने संविधान में चौदहवाँ संशोधन प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया था: "यूनाइटेड स्टेट्स में उत्पन्न अथवा नागरिक बने हुए और उसके शासनाधिकार के अधीन सब मनुष्य, यूनाइटेड स्टेट्स के और तदन्तर्गत उस स्टेट के नागरिक होंगे जिसमें वे रहते हैं।" निस्सन्देह इसके निर्माताओं की नीयत नीग्रो लोगों को तुरन्त ही नागरिकता के अधिकार प्रदान कर देने की थी।

टेनेसी को छोड़कर दक्षिणी स्टेटों की सब धारा-सभाओं ने इस संशोधन को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। कुछेक ने तो इसको सर्वसम्मति से अस्वीकार कर दिया। इस कार्रवाई को उत्तर के कई वर्गों ने अपने इस विचार का पोषक प्रमाण समझा कि दण्ड कठोर दिया जाना चाहिए और उत्तर को स्वतन्त्र हुए मनुष्यों की अधिकार-रक्षा के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए। कांग्रेस के उग्रपन्थी दक्षिण पर अपनी योजना बलपूर्वक लादने के लिए आगे बढ़ गये और उन्होंने मार्च १८६७ में एक 'रिकन्स्ट्रक्शन ऐक्ट' पास किया जिससे दक्षिण में स्थापित नागरिक शासनों की उपेक्षा कर दी गई। इस ऐक्ट के अनुसार दक्षिण को पांच जिलों में विभक्त करके उन्हें सैनिक शासन में रखा गया था। इसके अनुसार स्थायी सैनिक शासन से वही कॉनफ़ेडरेट स्टेट बच सकती थी जिसकी



अब्राहम लिंकन की भावुकता, प्रीतिमय भावना, मानवता और नीति-निपुणता के दुर्लभ गुणों को लेकर अनगिनत साहित्यिक रचनाएं—कथाएं, नाटक, जीवनियां आदि—की गई हैं। उसके ये गुण अपने पुत्र टैड के साथ लिये हुए ऊपर के चित्र और (दायीं ओर) मिसेज़ बिक्सबी को लिखे हुए पत्र से प्रकट होते हैं। पत्र से ज्ञात होता है कि युद्ध के कर्तव्यों का अनवरत भार वहन करते हुए भी, लिंकन की आँखें व्यक्तियों के बलिदानों की ओर से कभी मिची नहीं रहती थीं।

जनता यूनियन के प्रति निष्ठा की शपथ ले, चौदहवें संशोधन को स्वीकार करे और नीग्रो लोगों को मताधिकार दे। ऐसी स्टेट ही नागरिक शासन स्थापित करके यूनियन में पुनः प्रवेश कर सकती थी। जुलाई १८६८ में चौदहवां संशोधन स्वीकृत हो गया और अगले वर्ष कांग्रेस ने संविधान में पन्द्रहवां संशोधन पास किया जिसका उद्देश्य यह था कि किसी भावी कांग्रेस को भी दक्षिण के नीग्रो लोगों से मताधिकार वापिस लेने का अधिकार न रहे। इस संशोधन को स्टेटों की धारा-सभाओं ने १८७० में स्वीकृत कर लिया। इसमें लिखा था

"यूनाइटेड स्टेट्स के नागरिकों के मतदान के अधिकार को, जाति, रंग या पूर्ववर्ती दासानुबन्ध के आधार पर, यूनाइटेड स्टेट्स या तदन्तर्गत किसी स्टेट द्वारा अपहृत या न्यून नहीं किया जा सकेगा।"

कांग्रेस ने 'रिकन्स्ट्रक्शन ऐक्ट' को पास करने में जिन कारणों से अनथक परिश्रम किया उनमें एक यह भी था कि इससे प्रेज़िडेण्ट जॉन्सन की पराजय और अपमान होते थे। वस्तुतः कांग्रेस जॉन्सन के इतने विरुद्ध थी कि अमेरिकन इतिहास में आज तक केवल उसी को प्रधान शासक के पद से हटाने की कार्रवाई आरम्भ की गई थी। उसका एकमात्र अपराध यह था कि वह कांग्रेस की नीतियों का विरोधी था और उनकी कठोर भाषा में आलोचना करता था। उसके शत्रु उस पर गम्भीरतम आक्षेप यह लगा सकते थे कि "टेन्योर ऑव् ऑफ़िस ऐक्ट" (पद के कार्य-काल-विधायक क़ानून) के बावजूद उसने अपने मन्त्रिमण्डल से कांग्रेस के एक दृढ़ समर्थक को पृथक् कर दिया था। परन्तु जब सेनेट ने महाभियोगारोपण का मुक़दमा आरम्भ किया तब यह सिद्ध हो गया कि युद्ध मन्त्री को अपने पद से हटाने में प्रेज़िडेण्ट ने अपने अधिकारों की सीमा का उल्लंघन नहीं किया था और इससे भी बढ़कर महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि यह बात प्रभावोत्पादक ढंग से बताई गई कि यदि कांग्रेस ने प्रेज़िडेण्ट को केवल इस कारण पद से हटा दिया कि उसका कांग्रेस के प्रबल बहुमत से मतभेद था तो एक भयंकर परम्परा का सूत्रपात हो जायगा। यह कार्रवाई असफल रही और जॉन्सन अपने कार्यकाल के अन्त तक अपने पद पर प्रतिष्ठित रहा।

१८६८ की गरमियों तक कांग्रेस 'रिकन्स्ट्रक्शन ऐक्ट' के अधीन, प्रेज़िडेण्ट के विरोध के बावजूद, आर्कन्सॉ, नौर्थ कैरोलाइना, साउथ कैरोलाइना, लूइज़ियाना, जॉर्जिया, अलाबामा और फ्लोरिडा स्टेटों को यूनियन में पुनः सम्मिलित कर चुकी थी। इन सातों स्टेटों के नये शासन कितने प्रातिनिधिक थे इस बात का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि निर्वाचित गवर्नरों, कांग्रेसमैनों और सेनेटरों में बहुसंख्या उन उत्तरी मनुष्यों की थी जो कि युद्ध के पश्चात् अपने राजनीतिक भाग्य की परीक्षा के लिए दक्षिण में जा बसे थे। लूइज़ियाना, साउथ कैरोलाइना और मिसिसिपी की धारा-सभाओं पर पूर्ण अधिकार नीग्रो लोगों का था। अन्य कई स्टेटों में यद्यपि धारासभाओं में उनका अल्पमत था तथापि मतदाताओं में उनकी प्रबलता थी।

दक्षिणी धारासभाओं में गोरे सदस्य संख्या में कम और बिखरे हुए थे, इसलिए वे नवीन मताधिकार-प्राप्त नीग्रो लोगों और उत्तर-वालों का गठबन्धन नियन्त्रित करने में असमर्थ थे। यद्यपि उन्होंने सड़कों और पुलों के निर्माण और शिक्षण तथा धर्मादे के सम्बन्ध में अच्छे क़ानून बनाने का काम हाथ में लिया तथापि सब मिलाकर वे अयोग्य रहे और सार्वजनिक धन का अपव्यय करने वाले सिद्ध हुए।

निराश होकर दक्षिणी गोरों ने समझ लिया कि उनकी पुरानी सभ्यता संकट में है और वे नये शासन को क़ानून द्वारा नहीं रोक सकते; अतः उन्होंने क़ानून से असम्मत उपायों का अवलम्बन आरम्भ कर दिया। समय बीतने के साथ-साथ बल का प्रयोग अधिक व्यापक होता गया और ज़्यादती और गड़बड़ को बढ़ता देखकर १८७० में कांग्रेस ने एक 'एनफ़ोर्समेण्ट ऐक्ट' पास किया जिसके अनुसार उन लोगों को कठोर दण्ड दिया जा सकता था जो किसी भी प्रकार नीग्रो लोगों को उनके नागरिक अधिकारों से वंचित करने का प्रयत्न करते थे।

इस प्रकार के क़ानूनों की बढ़ती हुई कठोरता और प्रत्येक स्टेट के पुलिस अधिकारों पर कांग्रेस के बढ़ते हुए हस्तक्षेप ने उत्तर के साथ दक्षिण का दिल मिलने की उस प्रक्रिया में बाधा डाल दी जो देश के प्रति सर्वसाधारण का प्रेम पुनरुज्जीवित करने के लिए आवश्यक थी। दक्षिण के गोरे सामूहिक रूप में रिपब्लिकन पार्टी के विरुद्ध हो गए। वे उसे नीग्रो लोगों की पार्टी कहने लगे और इसके फलस्वरूप दक्षिण में डैमोक्रैटिक पार्टी का जोर बढ़ गया। समय बीतने के साथ-साथ यह प्रत्यक्ष होता गया कि कठोर क़ानूनों द्वारा और भूतपूर्व कॉनफ़ेडरेटों के प्रति अनवरत घृणा और द्वेष से दक्षिण की समस्या को सुलझाने में सफलता नहीं हो रही है। इसलिए मई १८७२ में कांग्रेस ने एक आम माफ़ी का क़ानून पास किया जिससे लगभग ५०० कॉनफ़ेडरेटों को छोड़कर सब को पूर्ण राजनीतिक अधिकार प्रदान कर दिये गये। केवल इन पाँच सौ को पद-ग्रहण और मत-दान के अधिकार से वंचित रखा गया। क्रमशः एक के बाद दूसरी स्टेट ने डैमोक्रैटिक पार्टी वालों को पदों पर निर्वाचित कर दिया। १८७६ तक केवल तीन दक्षिणी स्टेटों में रिपब्लिकन अधिकारारूढ़ रह गए। उस वर्ष का चुनाव अमेरिकन इतिहासमें सबसे अधिक मुक़ाबले का और अत्यन्त गड़बड़ी का था। उससे स्पष्ट हो गया कि जब तक सेनाएँ नहीं हटाई जायँगी तब तक दक्षिण में शान्ति नहीं होगी। इसलिए अगले वर्ष प्रेजिडेण्ट रदरफोर्ड बी० हेज ने सेनाएँ हटा लीं और उग्रपन्थियों की पुनर्निर्माण नीति की असफलता स्वीकार कर ली। इस नीति को मुख्यतः इस कारण अपनाया गया था कि पार्टी के आदर्शवादी तो नीग्रो लोगों की रक्षा करना चाहते थे और भौतिकवादी लोग दक्षिण पर वोटों, पदों और शक्ति के लिए अधिकार रखना चाहते थे।

दक्षिण पर उत्तरी शासन का अन्त हो गया परन्तु दक्षिण अब तक युद्ध के विनाश से पीड़ित, कुशासन द्वारा लिये गए ऋणों से दबा हुआ और वर्षों के जातीय युद्ध के कारण नीति-भ्रष्ट हुआ पड़ा था। १८६५ से १८७७ तक के 'मिथ्या' पुनर्निर्माण के १२ वर्षों के पश्चात् दक्षिण में निर्माण के वास्तविक प्रयत्न का आरम्भ हुआ और युद्धपश्चात् अव्यवस्था के कारण हुई हानि की पूर्ति करना हृदयविदारक कठिनाई का कार्य था। गृह-युद्ध और तज्जनित कटुताएँ अमेरिकन इतिहास के भारी दुःखान्त नाटक थे। सच तो यह है कि युद्ध, उसके कारणों और युद्धपश्चात् घटनाओं का अध्ययन करने से ही अमेरिका के उस महान प्रदेश अथवा दक्षिणी यूनाइटेड स्टेट्स की वे समस्याएँ भली भाँति समझ में आ सकती हैं जो कि आज भी विद्यमान हैं।

एग्जेक्युटिव मैन्शन,
वाशिंगटन, नव० २१, १८६४

सेवा में,
श्रीमती बिक्सबी, बोस्टन (मैसै.)

प्रिय महोदया,

मुझे युद्ध-विभाग के काग़ज़ात में मैसैच्युसैट्स के एडजुटेण्ट-जनरल का यह बयान दिखलाया गया है कि आप उन पाँच पुत्रों की माता हैं जो रणक्षेत्र में यशस्वितापूर्वक वीर-गति को प्राप्त हो गए। मैं अनुभव करता हूँ कि आपके इस मर्मान्तक शोक को शान्त करने के लिए मैं जो भी शब्द प्रयुक्त करूँगा वे नितान्त निर्बल और निष्फल होंगे। तो भी मैं आपको वह सान्त्वना प्रदान करने से नहीं रुक सकता जो कि सम्भवतः आपको उस गणराज्य के कृतज्ञता-ज्ञापन से प्राप्त होगी जिसकी रक्षा में उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमपिता परमेश्वर आपको वियोग-दुःख में धैर्य दें और आपके प्रिय वियुक्तों की चिरपोषित स्मृति तथा स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर इतना मूल्यवान् उपहार भेंट करने का आपका अभिमान सदा चिरस्थायी रहे।

आपका अत्यन्त विश्वस्त और विनयावनत,

अ. लिंकन.

विस्तार और सुधार का युग

"जिस चीज़ में विशेषाधिकार की गन्ध भी आती हो हमें उसे समाप्त कर देना चाहिए।"
—वुडरो विल्सन,
कांग्रेस के नाम सन्देश, ८ अप्रैल १९१३

गृह-युद्ध और प्रथम विश्वयुद्ध, इन दो युद्धों के मध्य-काल में यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका वयस्क हो गया। पचास वर्ष से कम समय के भीतर यह एक ग्रामीण लोकतन्त्र से एक शहरी राष्ट्र में परिवर्तित हो गया।

बड़े-बड़े कारखाने और फ़ौलाद की मिलें, महाद्वीप के आर-पार दौड़ने वाली रेलवे लाइनें, फलते-फूलते शहर और बड़े-बड़े विशाल खेत, सारे देश में फैल चुके थे। इनके साथ ही संलग्न बुराइयाँ भी आ गई थीं: एकाधिकार की प्रवृत्ति बढ़ रही थी, कारखानों में काम की परिस्थितियाँ हीन थीं, शहरों का विस्तार इतनी जल्दी हो रहा था कि उनकी बढ़ती हुई आबादी को मकान और अन्य सुविधाएँ सुगमता से नहीं मिल सकती थीं और कारखानों का उत्पादन कभी-कभी वास्तविक माँग से बढ़ जाता था। इन दोषों की प्रतिक्रिया अमेरिका की जनता और उसके राजनीतिक नेता—क्लीवलैण्ड, ब्रायन, थियोडोर रूज़वेल्ट और विल्सन—दोनों की ओर से हुई। उन्होंने जो सुधार सुझाये वे विचार में आदर्श और आचरण में वास्तविक थे और उन्होंने उनका इतनी प्रबलता और स्पष्टता से प्रचार किया कि यह एक सिद्धान्त सा मान लिया गया कि "क़ानून का आरम्भ भी वहीं से होना चाहिए जहाँ से बुराई का।" इसका परिणाम यह हुआ कि सुधार-काल की सफलताओं ने विस्तार-काल की बुराइयों को सफलतापूर्वक रोक दिया।

एक लेखक ने लिखा है कि "गृह-युद्ध ने देश के इतिहास में एक गहरी दरार डाल दी थी: इसके पूर्व के बीस या तीस वर्ष के काल में जो परिवर्तन होने लगे थे उन्हें इसने एक ही चोट में नाटकीय रूप दे दिया···" युद्ध की आवश्यकताओं ने निर्माण को प्रोत्साहन दिया और एक ऐसी अर्थ-परम्परा को तीव्र कर दिया था जिसके आधार-भूत अंग लोहा, भाप और बिजली का उत्पादन तथा विज्ञान और आविष्कार की द्रुत प्रगति थे।

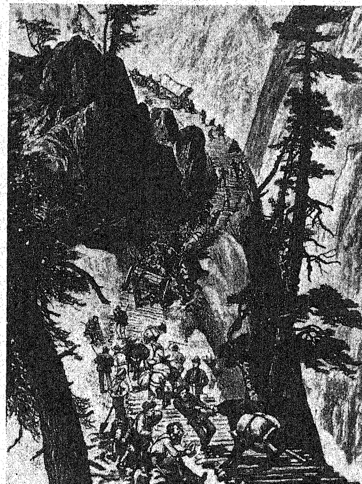
१८६० से पूर्व तक देश में ३६ हज़ार पेटेण्टों के लाइसेन्स दिये जा चुके थे परन्तु ये सब बाद के आविष्कारों की बाढ़ के सामने बिन्दु-मात्र प्रतीत होने लगे। १८६० से १८९० तक ४४० हज़ार पेटेण्टों के लाइसेन्स जारी किये गए और २०वीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में यह संख्या लगभग १० लाख हो गई। डायनमो के सिद्धान्त का विकास १८३१ में हो चुका था। परन्तु अमेरिकन जीवन में इसके कारण क्रान्ति का आरम्भ १८८० के पश्चात् हुआ जब कि टॉमस ऐडिसन और अन्य अनेकों ने व्यवहार में इसका प्रयोग किया। १८४४ में सैम्युअल एफ. बी. मोर्स द्वारा बिजली की टैलिग्राफ़ी पूर्ण कर लेने के पश्चात् महाद्वीप के दूर-दूर के भाग खम्भों और तारों के जाल द्वारा एक-दूसरे के साथ बँध गए। १८७६ में ऐलेग्जैण्डर ग्राहम बैल ने टैलिफ़ोन के एक यन्त्र का प्रदर्शन किया और आधी शताब्दी के भीतर १६० लाख टैलिफ़ोन देश के आर्थिक और सामाजिक-जीवन को गति प्रदान करने लगे। व्यापार की गति को भी १८६७ में टाइपराइटर के, १८८८ में ऐडिंग मशीन के और १८९७ में कैश रजिस्टर यन्त्र के आविष्कार ने तीव्र कर दिया। १८८६ में लाइनोटाइप कम्पोजिंग मशीन के और बाद को रोटरी प्रेस और काग़ज़ मोड़ने की मशीन के आविष्कार ने आठपेजी समाचार-पत्र की २४० हज़ार प्रतियाँ घण्टा-भर में छाप डालना सम्भव कर दिया। १८८० के बाद ऐडिसन के चमकीले बिजली के लैम्प ने लाखों घरों को इतनी सस्ती, सुरक्षित और अच्छी रोशनी पहुँचा दी जितनी कि उससे पहले कभी उपलब्ध नहीं हुई थी। ऐडिसन ने बोलने के यन्त्र को भी पूर्ण कर लिया और जॉर्ज ईस्टमैन की सहायता से उसने चल-चित्र का विकास किया। इन्होंने

और विज्ञान तथा सूझ-बूझ के अन्य प्रयोगों ने प्रायः सभी क्षेत्रों में उत्पादन को एक नये स्तर पर पहुँचा दिया।

इसी समय राष्ट्र का आधारभूत व्यवसाय—लोहा और फ़ौलाद—ऊँचे तटकर द्वारा सुरक्षित होकर द्रुतगति से बढ़ता चला जा रहा था। पहले यह उद्योग पूर्वी स्टेटों की खानों के समीप केन्द्रित था, परन्तु अब यह पश्चिम की ओर बढ़ गया। विशेष उल्लेखनीय लेक सुपीरियर के समीप मैसाबी पर्वतमाला की लौह खानें थीं जो कि स्वल्प काल में ही संसार की सबसे बड़ी लौह-उत्पादक सिद्ध हुईं। यहाँ कच्चा लोहा जमीन की सतह पर ही पड़ा था और उसे खोदना सरल और सस्ता था। इसमें रासायनिक अशुद्धताएँ भी बहुत न्यून थीं और इसे कनवर्टर अथवा ओपिन हर्थ नामक नई विधि से उत्कृष्ट गुण का फ़ौलाद बनाने में केवल ३५ डालर प्रति टन व्यय पड़ता था जब कि इससे पूर्व ३०० डालर प्रति टन पड़ा करता था।

फ़ौलाद के उत्पादन में उन्नति का अधिकतर श्रेय एन्ड्रू कारनेगी को है जो कि एक महान् व्यवसायी हो गया है। वह केवल १२ वर्ष की आयु में स्कॉटलैण्ड से अमेरिका आया था। उसने अपना जीवन एक कपड़े के कारखाने में एक बौबिन-बॉय के रूप में आरम्भ किया फिर वह तारघर और बाद को पैनसिलवेनिया की एक रेलवे लाइन में काम करने लगा। ३० वर्ष की आयु से पूर्व ही उसने अपना धन बहुत चतुराई और दूरदर्शितापूर्वक लगाया था। १८६५ में उसने उसे लोहे के व्यवसाय में केन्द्रित कर दिया। कुछ ही वर्षों में उसने ऐसी कम्पनियाँ संगठित कीं अथवा उनके शेयर खरीद लिये जो कि लोहे के पुल, रेलें और रेलों के इंजिन बनाती थीं। १० वर्ष पीछे उसने मनांगहीला नदी पर जो फ़ौलाद की मिल चलाई वह देश में सबसे बड़ी थी। उसने न केवल नई मिलों का अपितु कोक और कोयले की जायदादों का, लेक सुपीरियर की लोहे की खानों का, ग्रेट लेक पर स्टीमरों के एक बेड़े का, लेक ईरी के एक बन्दरगाह और उससे सम्बद्ध एक रेलवे लाइन का भी नियन्त्रण अपने हाथ में कर लिया। उसका व्यापार दर्जन-भर अन्य रोजगारों के साथ बँधा हुआ था। वह रेल और जहाजी कम्पनियों से रिआयती दर ले सकता था और उसके पास विस्तार के लिए और बहुसंख्या में मजदूरों को रखने के लिए पर्याप्त पूँजी थी।

कई दृष्टियों से कारनेगी की कहानी यूनाइटेड स्टेट्स के बड़े व्यापार का इतिहास है। यद्यपि व्यवसाय में उसकी प्रभुता



१८७० के बाद में सहस्रों अग्रगामियों ने रॉकी पर्वतों में चाँदी की खानों की प्राप्ति से आकृष्ट होकर पश्चिम की ओर यात्रा की। इस चित्र में एक कारवाँ खानों के नगर लीडविल (कोलोराडो) की कठिन पहाड़ी सड़क पर जा रहा है।

देर तक रही परन्तु वह प्राकृतिक साधनों, परिवहन और फ़ौलाद तैयार करने की औद्योगिक योजनाओं पर पूर्ण एकाधिकार करने में कभी सफल नहीं हुआ। १८६० से १८६६ तक के समय में कई कम्पनियाँ उसकी प्रभुता को चुनौती देने के लिए खड़ी हो गईं। प्रतिस्पर्धा से चिढ़कर कारनेगी ने पहले तो नई खानें खरीदने और पहले से भी अधिक बड़े कारखाने खोलने की धमकी दी, परन्तु वह बूढ़ा हो गया और थक चुका था इसलिए अन्त को उसने इस सुझाव का स्वागत किया कि वह भी अपने रोजगार को एक ऐसे नये संगठन में सम्मिलित कर दे जिसे कि राष्ट्र के अधिकतर प्रमुख लोहे और फ़ौलाद के कारखानों का सहयोग प्राप्त रहे।

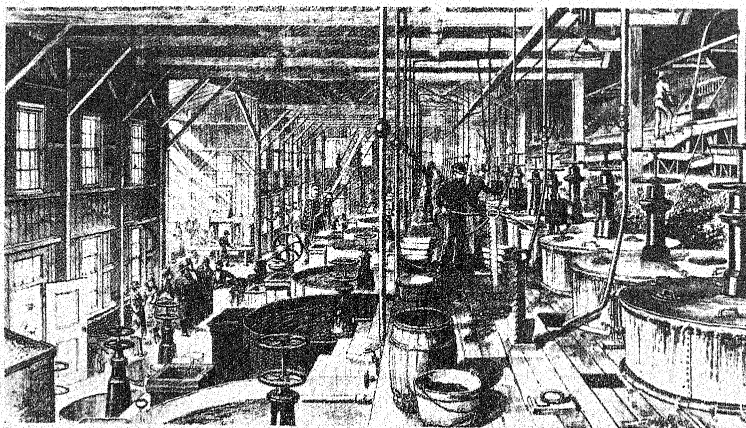
१६०१ में कारखानों को मिला देने की इस प्रक्रिया से जिस यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कौर्पोरेशन का जन्म हुआ वह तीस वर्ष से चल रही प्रगति का एक उदाहरण था। यह प्रगति स्वतन्त्र औद्योगिक व्यवसायों के संघीय अथवा केन्द्रीय

कम्पनियों में मिलकर एक हो जाने की थी। चतुर व्यापारियों ने अनुभव किया कि यदि वे प्रतिस्पर्धी कम्पनियों को एक संगठन में ला सके तो उत्पादन और बाजार दोनों पर नियन्त्रण कर सकेंगे। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कौर्पोरेशन और ट्रस्ट संगठित किये गए। कौर्पोरेशन में दूर दूर की पूँजी को एक स्थान पर एकत्र किया जा सकता था। रुपया लगाने वाले इस विचार से आकृष्ट हुए कि स्टॉक अथवा शेयर खरीदकर वे लाभ की आशा तो कर सकते हैं, परन्तु व्यापार के असफल होने की दशा में उनकी देनदारी लगाई हुई रकम से अधिक न होगी। इसके अतिरिक्त इन कौर्पोरेशनों द्वारा व्यापार-व्यवसाय के जीवन को स्थिरता और निरन्तरता प्राप्त होती थी। ट्रस्ट, व्यवहार में, कौर्पोरेशनों का मेल थे। ट्रस्टों के कारण बड़े पैमाने पर कम्पनियों का मेल सम्भव हो गया। उनसे व्यापार का नियन्त्रण और सुशासन केन्द्रीभूत हो गया और विविध पेटेण्टों को एकत्र किया जाने लगा। अपनी बड़ी पूँजी के कारण उनकी विस्तार की, विदेशी व्यापार के साथ प्रतिस्पर्धा की और मजदूरों के साथ सौदा-समझौता करने की सामर्थ्य अधिक रहती थी—मजदूर भी इस समय सफलतापूर्वक संगठित होने लगे थे। ये ट्रस्ट रेलों से भी रिआयती शर्तें प्राप्त कर सकते और राजनीति को भी प्रभावित कर सकते थे।

स्टैण्डर्ड ऑइल कम्पनी सबसे प्रथम और बलवान् कौर्पोरेशनों में से एक थी। इसके पीछे, बिनौले के तेल, सीसा, चीनी, तम्बाकू और रबड़ के व्यवसायों में भी ट्रस्ट और कौर्पोरेशनों के मेल बन गए। बड़े-बड़े व्यापारी व्यावसायिक क्षेत्रों पर अपना एकाधिकार करने लगे। फ़िलिप आर्मर और गुस्टैवस स्विफ्ट आदि चार बड़े मीट-पैकरों ने अपना एक बीफ़ ट्रस्ट बना लिया। मैकौर्मिकों ने खेती काटने के यन्त्रों के रोजगार में प्रमुखता प्राप्त कर ली। १६०४ में ज्ञात हुआ कि ५ हजार से अधिक स्वतन्त्र कम्पनियाँ लगभग तीन सौ ट्रस्टों में संगठित हो चुकी थीं।

अन्य व्यवसायों में भी—विशेषतः परिवहन और सन्देशवहन के रोजगार में—यह मेल की प्रवृत्ति देखने योग्य थी। वैस्टर्न यूनियन तो बड़े-बड़े कौर्पोरेशनों में अग्रणी थी ही, उसके

नेवाडा की कौमस्टौक खान में यान्त्रिक खुदाई। १८७० के पश्चात् चाँदी खोदना केवल मज़दूरों का काम नहीं रहा था। अब यह पेचीदा यान्त्रिक कार्रवाई बन चुका था, जिसके लिए इंजिनियरिंग योग्यता और व्यापारिक संगठन आवश्यक होते थे।



पश्चात् बैल टैलिफ़ोन सिस्टम का संगठन हुआ और अन्त को वह अमेरिकन टैलिफ़ोन एण्ड टैलिग्राफ़ कम्पनी में परिवर्तित हो गया। कौर्नेलियस वैंडरबिल्ट ने पहले ही समझ लिया था कि रेलों का रोजगार कुशलतापूर्वक करने के लिए लाइनों को एक कर देने की आवश्यकता है। सातवें दशक में उसने तेरह रेलवे लाइनों को मिलाकर एक कर दिया। यह लाइन न्यूयार्क सिटी से बफ़ैलो तक जाती थी। इन दोनों के बीच की दूरी ३०० मील थी। आगामी दशक में उसने शिकागो और डेट्रौइट की लाइनों को अपने हाथ में कर लिया और न्यूयार्क सैण्ट्रल सिस्टम को जन्म दिया। अन्य भी अनेक मेल हो रहे थे और शीघ्र ही राष्ट्र की बड़ी बड़ी रेलवे लाइनें ट्रंक लाइनों और 'सिस्टमों' में संगठित हो गईं जिनका सञ्चालन आधा दर्जन व्यक्ति कर रहे थे।

इन नये व्यावसायिक संगठनों का केन्द्र शहरों में रहता था। पूँजी का विशाल संग्रह, व्यापारिक और आर्थिक संस्थाएँ, फैलते हुए रेलवे यार्ड, विशाल धुआँधार कारखाने और मजदूरों और क्लर्कों की फ़ौजें इत्यादि समस्त प्रेरक आर्थिक शक्तियाँ इन्हीं में केन्द्रित रहती थीं। देहात से और समुद्रपार से जो लोग भरती होकर आते थे उनसे गाँव क़स्बों में और क़स्बे शहरों में परिणत हो जाते थे। १८३० में १५ में से केवल एक आदमी ८ हज़ार या इससे ऊपर की आबादियों में रहता था; १८६० में प्रति ६ में से एक; और १८९० में प्रति १० में से तीन। १८६० में किसी भी शहर की आबादी १० लाख नहीं थी, परन्तु ३० वर्ष पीछे न्यूयॉर्क की आबादी १५ लाख और शिकागो और फ़िलाडेलफ़िया की आबादी १०-१० लाख से ऊपर हो गई थी। इन तीन दशकों में फ़िलाडेलफ़िया और बाल्टिमोर की आबादी दुगनी, कैन्सास सिटी और डेट्रौइट की चौगुनी, क्लीवलैण्ड की छःगुनी और शिकागो की दस-गुनी हो गई। अन्य अनेक आबादियाँ जो गृह-युद्ध के प्रारम्भ में गाँवों से भी छोटी थीं, उनकी आबादी पचास या इससे भी अधिक गुना बढ़ गई।

ये सब परिवर्तन महत्त्वपूर्ण थे परन्तु उनके विषय में यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि उनका इस काल के राजनीतिक जीवन पर ऐसा उल्लेखनीय प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि अमेरिकन जनता के सामने समस्याएँ बहुसंख्यक थीं तथापि एक प्रसिद्ध इतिहासकार के लेखानुसार "१८६५ और १८९७ के मध्य में संघीय कानूनी पुस्तकों में दो या तीन ही ऐसे कानून जोड़े गये थे, जो मानवी सम्बन्धों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने वाले राजनीतिक अधिकारों का प्रदर्शन करते और सम्बन्धित नागरिक का ध्यान आकृष्ट करते हों।"

१८८४ में ग्रोवर क्लीवलैण्ड प्रेजिडेण्ड चुना गया जो कि डेमोक्रैट था। युद्ध के बाद वही ऐसा प्रेजिडेण्ट था जो उन परिवर्तनों की दिशा को और महत्त्व को समझता था और जिसने उनके कारण उत्पन्न समस्याओं से उलझने का प्रयत्न किया। उदाहरणार्थ, रेलवे लाइनों में अनेक बुराइयों का सुधार करने की आवश्यकता थी। बड़ी मात्रा में माल भेजने वालों को दरों पर बट्टा देकर थोड़ी मात्रा में माल भेजने वालों के विरुद्ध जो भेद-भाव बरता जाता था वह विशेषतः हानिकारक था। इसके अतिरिक्त, कुछ रेलें कुछ माल भेजने वालों से कुछ स्थानों के बीच में दूरी का विचार किये बिना अन्यों की तुलना में मनमाने तौर पर ऊँची दर वसूल करती थीं। जिन शहरों के मध्य कई रेलें चलती थीं उनमें आपसी मुक़ाबले के कारण भाड़े की दर कम रहती थी और जिन स्थानों के बीच केवल एक लाइन चलती थी उनमें दर बहुत अधिक चढ़ जाती थी। रेलें भी प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए सम्मिलित योजनाओं की परीक्षा करती थीं। ऐसी ही एक योजना—पूलिंग—द्वारा प्रतिस्पर्धी कम्पनियाँ सारी आमदनी को एक जगह इकट्ठा करके पूर्वसम्मत शर्तों के अनुसार आपस में बाँट लेती थीं। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया त्यों-त्यों रेलों की इन कार्रवाइयों के विरुद्ध जनता का रोष बढ़ता गया और कुछ स्टेटों ने नियम बनाकर इन्हें रोकने का यत्न किया। यद्यपि इनका कुछ लाभ हुआ परन्तु यह समस्या स्वभावतः राष्ट्रव्यापी थी और इस कारण कांग्रेस द्वारा कार्रवाई करने की आवश्यकता थी। इसी का परिणाम 'इण्टर-स्टेट कॉमर्स ऐक्ट' हुआ जिस पर प्रेजिडेण्ट क्लीवलैण्ड ने १८८७ में हस्ताक्षर किये। यह क़ानून अत्यधिक दरों का, दरों में बट्टा देने का और भेद-भाव बरतने का विरोध करता था और नियम-भंग को रोकने के लिए तथा रेलों की दरों और कार्रवाइयों का नियन्त्रण करने के लिए एक 'इण्टरस्टेट कॉमर्स कमीशन' की भी स्थापना करता था।

क्लीवलैण्ड तटकर में सुधार का भी उत्साही पुरस्कर्ता था। यद्यपि ऊँचे तटकरों का आरम्भ युद्धकाल में एक तात्कालिक आवश्यकता के कारण किया गया था परन्तु अब वह राष्ट्रीय नीति का एक स्थायी अंग बन चुके थे। क्लीवलैण्ड



१८७९ का सनफ्रान्सिस्को, कैलिफ़ोर्निया। गृह-युद्ध के तुरन्त पश्चात् के वर्षों में जो स्थान या ग्राम व्यापार की चौकी मात्र थे वे बड़े-बड़े नगरों में परिवर्तित हो गए।

इन्हें अनुचित और रहन सहन का व्यय बहुत अधिक बढ़ा देने तथा ट्रस्टों के शीघ्र-शीघ्र निर्माण के लिए उत्तरदायी मानता था। वर्षों से तटकर राजनीतिक समस्या नहीं रहा था। परन्तु १८८० में डैमोक्रैटों ने माँग की कि 'तटकर केवल आमदनी के लिए' लगाया जाय और शीघ्र ही इसके लिए अधिकाधिक पुकार मचने लगी। १८८७ में कांग्रेस के नाम अपना वार्षिक सन्देश भेजते समय, इस उत्तेजक विषय को न छेड़ने की चेतावनियाँ मिलने पर भी, क्लीवलैण्ड ने अमेरिकन उद्योग की विदेशी प्रतिस्पर्धा से रक्षा करने के सिद्धान्त की निन्दा करके राष्ट्र को आश्चर्यचकित कर दिया।

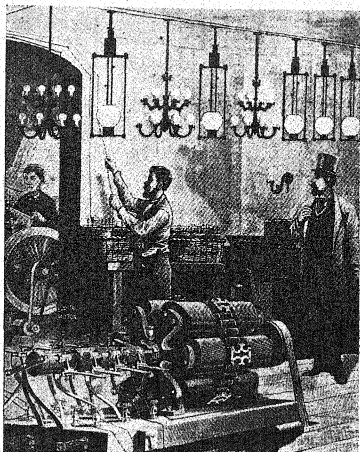
प्रेज़िडेण्ट के आगामी चुनाव में यही प्रश्न मुख्य बन गया और रिपब्लिकन उम्मीदवार बैंजमिन हैरिसन संरक्षण के सिद्धान्त का समर्थन करके चुनाव जीत गया। उसके शासन ने अपनी चुनाव-प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के लिए नये क़ानून बनाने आरम्भ कर दिये और १८९० में 'मैकिनली तटकर बिल' पास हुआ। यह क़ानून न केवल स्थापित उद्योगों की रक्षा करता था अपितु आरम्भिक उद्योगों की सहायता करता था और अत्यन्त भारी तटकर लगाकर नयों की सृष्टि करता था। नये तटकर की जो ऊँची दरें रखी गई थीं उनका परिणाम शीघ्र ही फुटकर बाज़ार में ऊँचे मूल्यों के रूप में प्रकट हुआ और असन्तोष व्यापक हो गया।

इस काल में जनता का ध्यान ट्रस्टों की ओर अधिकाधिक गया। नौवें दशक में हैनरी जॉर्ज और एडवर्ड बैलैमी सरीखे सुधारक इनके विरुद्ध तीव्र प्रहार कर रहे थे और अब बड़े-बड़े कौर्पोरेशन न केवल विरोध का ही लक्ष्य बन गये अपितु वे एक राजनीतिक समस्या भी हो गए। १८९० में शारमन

ऐण्टि-ट्रस्ट ऐक्ट पास हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य एकाधिकारों को तोड़ना था। यह स्टेटों के मध्य व्यापार को रोकने वाले सब गठबन्धनों का निषेध करता था और नियमों के उल्लंघन के लिए कठोर दण्डों की व्यवस्था करता था। इसके पास होने के बाद तुरन्त तो प्रायः कुछ परिणाम नहीं निकला, परन्तु दस वर्ष पीछे थियोडोर रूजवैल्ट ने अपने शासनकाल में इसके प्रभावशाली प्रयोग द्वारा 'ट्रस्ट तोड़ने वाला' नाम पा लिया।

इन उल्लेखनीय प्रवृत्तियों के बावजूद गृह-युद्ध के बाद नई शताब्दी आरम्भ होने तक के काल में राजनीतिक उपलब्धि प्रायः शून्य रही। इन वर्षों में अमेरिकन जनता की शक्ति अन्यत्र ही केन्द्रित रही। इसका फल पश्चिम के इतिहास में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ। १८६५ में सीमाप्रदेश की रेखा प्रायः मिसिसिपी नदी की तटवर्ती स्टेटों की पश्चिमी सीमा के साथ चलती थी। केवल कैन्सास और नेब्रास्का के पूर्वी प्रदेशों को सम्मिलित करने के लिए यह रेखा मुड़ती थी। अग्रणी लोगों के खेतों की इस सीमा के पीछे अब भी बहुत-सी खाली भूमि पड़ी थी और उसके आगे अब भी बहुत-से अनघिरे मैदान पड़े थे। उसके आगे लगभग एक हजार मील तक पर्वतमालाओं का विशाल विस्तार था। इनमें अनेकों में चांदी, सोने और अन्य धातुओं की समृद्ध खानें भी थीं। नये मैदान और रेगिस्तान प्रशान्त सागर की ओर तटवर्ती जंगली पहाड़ियों और समुद्र तक फैले हुए थे। कैलिफ़ोर्निया के बसे हुए जिलों और कुछ बिखरी हुई बस्तियों के अतिरिक्त इस ओर विस्तृत प्रदेश में केवल इण्डियन ही आबाद थे।

परन्तु केवल चौथाई शताब्दी पीछे यह सारा देश स्टेटों और प्रदेशों में बंट गया। इनमें बस्ती बसाने की गति को १८६२ के होमस्टैड ऐक्ट ने बहुत तीव्र कर दिया। इसके अनुसार जो नागरिक जमीन पर आबाद होकर उसे सुधारने का जिम्मा लेता उसको १६० एकड़ का खेत मुफ्त मिलता था। १८८० तक इस प्रकार लगभग ५६० लाख एकड़ भूमि व्यक्तियों की निजी सम्पत्ति बन चुकी थी। इण्डियनों के साथ युद्ध समाप्त हो गये थे। खानों में काम करने वाले जगह जगह टनल बनाते हुए समस्त पहाड़ी प्रदेश में घूम चुके थे और उन्होंने नैवाडा, मौण्टैना और कोलोराडो में छोटी-छोटी बस्तियां बसा ली थीं। पशु-पालकों ने घास की विस्तृत भूमि का लाभ उठाकर विस्तृत प्रदेश पर अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया था। भेड़ पालने वाले भी घाटियों और पहाड़ों के उतारों में पहुँच गये थे।



१८८० का एक वैद्युतिक प्रकाश-यन्त्र। ऐडिसन का नवविकसित वैद्युतिक लैम्प अमेरिकन जीवन का रूप पहले ही बदल चुका था, क्योंकि घरों, बाज़ारों और सार्वजनिक भवनों में प्रकाश के लिए बिजली का प्रयोग होने लगा था।

उनके पीछे मैदानों और घाटियों में किसान आये और उन्होंने पूर्व और पश्चिम के बीच के रिक्त स्थान को भर दिया। वहां अब ५० या ६० लाख किसान खेती कर रहे थे।

बस्तियां बसाने की प्रक्रिया में रेलों ने भी सहायता दी थी। १८६२ में कांग्रेस ने यूनियन पैसिफ़िक रेलरोड को पट्टा दिया और इस कम्पनी ने अपनी लाइन काउन्सिल ब्लफ्स (आयोवा) से पश्चिम की ओर बढ़ा दी। इसी समय सैण्ट्रल पैसिफ़िक रेलवे कम्पनी ने सैक्रामैण्टो (कैलिफ़ोर्निया) से पूर्व की ओर लाइन बनाना आरम्भ किया। ज्यों-ज्यों ये लाइनें एक-दूसरे के समीप होती गईं त्यों-त्यों समस्त देश में हलचल बढ़ती गई। अन्त को १० मई १८६९ को दोनों लाइनें यूटॉ में मिल गईं। जहां पहले अटलांटिक से पैसिफ़िक तक यात्रा करने में महीना-भर श्रम करना पड़ता था, अब वहां उसका अंशमात्र समय लगने लगा। महाद्वीप में रेलों का जाल धीरे-धीरे फैलता गया। १८८४ में चार बड़ी लाइनें केन्द्रीय

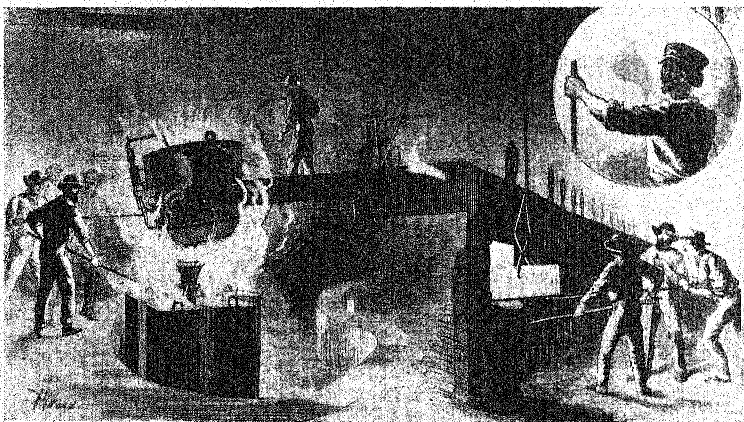
मिसिसिपी घाटी को प्रशान्त महासागर से मिला रही थीं।

सुदूर पश्चिम की ओर आबादी का प्रथम बड़ा प्रसार पहाड़ी प्रदेशों में हुआ। सोना १८४८ में कैलिफ़ोर्निया में दस वर्ष पीछे कोलोराडो और नैवाडा में, सातवें दशक में, मौण्टैना और वायोमिंग में और आठवें दशक में डैकोटा प्रदेश की ब्लैक हिल्स में मिला। इन सब प्रदेशों में खनकों ने ही प्रवेश का द्वार खोला, बस्तियां बसाईं और वहां अधिक स्थायी निवास की नींव डाली। जब ये लोग पहाड़ियों में खुदाई कर रहे थे तब कुछ निवासियों का ध्यान इस प्रदेश में खेती और पशु-पालन की सम्भावनाओं की ओर गया। कुछ बस्तियां तो अपना ध्यान एकमात्र खानों की ओर लगाये रहीं, परन्तु अन्त को मौण्टैना और कोलोराडो, वायोमिंग और आइडाहो और कैलिफ़ोर्निया का वास्तविक धन वहां की घास में और भूमि की पैदावार में सिद्ध हुआ।

टैक्सास में पशु-पालन चिरकाल से एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय चला आ रहा था। युद्ध के पश्चात् अध्यवसायी लोग टैक्सास के अपने लम्बे सींगों वाले जानवरों को अनघिरे प्रदेश में से उत्तर की ओर ले जाने लगे। ये पशु रास्ते में चरते हुए जब कैन्सास में रेलवे स्टेशनों पर पहुँचे तब ये यात्रारम्भ के समय की अपेक्षा बहुत मोटे और विशालकाय हो चुके थे। यह लम्बी हांक शीघ्र ही एक नियमित घटना बन गई और मार्गों पर सैकड़ों मीलों तक उत्तर की ओर जाने वाले पशुओं के रेवड़-ही-रेवड़ दिखाई पड़ते थे। यह रोजगार शीघ्र ही मिसूरी-पार के प्रदेशों में भी फैल गया और कोलोराडो, वायोमिंग, कैन्सास, नेब्रास्का और डैकोटा के प्रदेशों में बहुत बड़े-बड़े गोठ बन गए। पश्चिमी नगर कसाईखानों और मांस तैयार करने के केन्द्रों के रूप में फलने-फूलने लगे।

गोठों ने रहन-सहन का एक नया आकर्षक ढंग आरम्भ किया और ग्वाले उस प्रदेश के प्रधान व्यक्ति बन गये। यूनाइटेड स्टेट्स के पच्चीसवें प्रेजिडेण्ट थियोडोर रूज़वैल्ट ने डैकोटा के अनुभवों की स्मृतियों में लिखा है, "हम घोड़े और बन्दूक की सहायता से स्वतन्त्र और कठोर जीवन बिताते थे। मध्य ग्रीष्म ऋतु में जब सामने के बड़े मैदान जलती हुई धूप में तमतमाते और कांपते हुए दीखते थे तब हम काम में मस्त रहते थे और रात के समय घोड़ों पर सवार होकर शरद के अंत में एकत्रित पशुओं की रक्षा करते हुए हमें शरीर को जमा

इस्पात बनाने की इंग्लैण्ड में आविष्कृत बेसेमर विधि का प्रयोग अमेरिका में व्यापक रूप में होने लगा था। यह विधि सुपीरियर झील के समीप मेसाबी पहाड़ियों से प्रचुर परिमाण में निकलने वाली धातुओं के लिए विशेषतया उपयुक्त थी



देने वाली सर्दी का भी अनुभव होता था''''परन्तु कठोर जीवन हमारे लिए स्वाभाविक था और श्रम में गर्व का अनुभव करते हुए जीवन का आनन्द हमें ही प्राप्त था।''

१८६६ से १८८८ तक सब मिलाकर लगभग ६० लाख पशु सर्दी बिताने के लिए मैदानों में ले जाये गए। वस्तुतः १८८५ में पशु-पालन चोटी पर पहुँच गया था। इस प्रदेश में चरागाह अब पशुओं के हाँकों के लायक नहीं रहे थे और यहाँ रेलों का जाल भी फैलने लगा था। पशु-पालकों के कुछ ही पीछे किसानों की गाड़ियाँ चूं-चूं करतीं आ रही थीं। होमस्टैड ऐक्ट के अनुसार उन्होंने लकड़ियों से अपनी-अपनी भूमि की हदबन्दी कर ली और खेतों को काँटेदार तारों से घेरकर जिन भूमियों पर पशु-पालकों ने कानून-विरुद्ध अधिकार कर लिया था उनमें से उन्हें निकाल दिया। १८८६ और १८८७ की भयंकर शीत ऋतुओं में खुले मैदानों की कड़कड़ाती सरदी ने पशुओं को नष्ट कर दिया। और अद्भुत साहसिक "जंगली पश्चिम" नियमित बस्तियों और गेहूँ, मकई और जई के खेतों में परिवर्तित हो गया।

सारे देश के समान पश्चिम का मुख्य व्यवसाय कृषि ही था। जिस प्रकार व्यवसाय युद्ध के बाद के दशकों में विकसित हुए थे उसी प्रकार अब कृषि में क्रान्ति हो रही थी। परिणामतः हाथ की खेती यन्त्रों की खेती में और साधारण निर्वाह योग्य खेती व्यापारिक परिमाण की खेती में बदल गई। सच तो यह है कि १८६० से १६१० तक के ५० वर्ष में यूनाइटेड स्टेट्स में खेतों की संख्या २० लाख से बढ़कर ६० लाख पर पहुँची और खेती का क्षेत्रफल ४० करोड़ एकड़ से बढ़कर ८८ करोड़ हो गया। गेहूँ का उत्पादन १७ करोड़ ३० लाख से बढ़कर ६३ करोड़ ५० लाख बुशल हो गया। मकई ८३ करोड़ ८० लाख बुशल से बढ़ कर २८८ करोड़ ६० लाख बुशल हो गई और रुई ३८ लाख ४१ हजार गाँठों से बढ़ कर १ करोड़ १६ लाख ६ हजार गाँठ हो गई। १८६० के बाद तीस वर्षों में जितनी भूमि खेती के नीचे आई उतनी यूनाइटेड स्टेट्स के समस्त पूर्व इतिहास में कभी नहीं आई थी। इसी अवधि में देश की आबादी दुगनी से अधिक बढ़ गई। अधिकतर वृद्धि शहरों में हुई परन्तु अमेरिकन किसान ने भी पर्याप्त अन्न और रुई, पर्याप्त गोमांस और सुअरमांस और पर्याप्त ऊन का उत्पादन किया, जिससे कि वह न केवल अमेरिकन श्रमिकों की आवश्यकता ही पूरी कर सका अपितु अधिकाधिक परिमाण में इन वस्तुओं का निर्यात भी करने लगा।

इस असाधारण सफलता का कारण प्रायः पश्चिम की ओर विस्तार था। खेती के कामों में यन्त्रों और विज्ञान का उपयोग भी एक अन्य कारण था। सन् १८०० का किसान हाथ से दराती का उपयोग करके दिन-भर में आधे एकड़ से अधिक गेहूँ काटने की आशा नहीं कर सकता था। तीस वर्ष पीछे वह क्रैडिल दराती द्वारा दिन-भर में दो एकड़ काट सकता था, परन्तु १८४० में सायरस मैकॉर्मिक ने अपने यन्त्र द्वारा एक दिन में पाँच या छः एकड़ काट डालने का चमत्कार कर दिखलाया। वह दूरदर्शी व्यक्ति नये बसे हुए शिकागो नगर में चला गया और वहाँ उसने अपना रीपर बनाने का कारखाना खोला। १८६० तक वह ढाई लाख रीपर बेच चुका था।

अब खेती के अन्य यन्त्र भी बहुत जल्दी-जल्दी बनते गए—आप-से-आप तार से गट्ठे बाँधने और कूटने की, तथा काटने और कूटने की क्रिया एक साथ करने वाली मशीन 'कम्बाइन' भी बनी। सच तो यह है कि खेतों के प्रत्येक काम में मशीन किसान की सहायता करने लगी। अन्न बोने, काटने, दाने को भूसे से अलग करने, छिलका उतारने, दूध से क्रीम निकालने, खाद फैलाने, आलू बोने, घास सुखाने, अण्डे सेने और सैकड़ों अन्य काम करने वाले यन्त्रों के आविष्कारों ने किसान का श्रम हलका कर दिया और उसकी दक्षता बढ़ा दी। खेती के अधिकतर यन्त्र तो पश्चिम में ही खप गए। पूर्व के खेत इतने छोटे और उनकी खेती इतनी विविध थी कि उनमें ये महंगी मशीनें लगाना प्रायः निरर्थक था। दक्षिण में रुई और तम्बाकू के खेत भी यन्त्रों के उपयोग के अनुकूल शीघ्र नहीं बन सकते थे।

खेती में यन्त्रों के उपयोग के अतिरिक्त विज्ञान भी कम सहायक नहीं हुआ। १८६२ में मौरिल लैण्ड-ग्राण्ट कॉलिज ऐक्ट पास होने के साथ ही कांग्रेस ने प्रत्येक स्टेट को कृषि और व्यवसाय के कॉलिज खोलने के लिए भूमि बाँट दी। ये संस्थाएँ शिक्षण का और वैज्ञानिक खेती में खोज का कार्य करती थीं। बाद को कांग्रेस ने देश भर में खेती के परीक्षणों के केन्द्र खोलने के लिए और अन्य प्रकार के अन्वेषण-कार्य करने के लिए कृषि-विभाग को प्रचुर धन दिया। नयी शताब्दी के आरम्भ तक देश-भर के वैज्ञानिक कृषि-अन्वेषण की योजनाओं पर जुटे हुए थे।

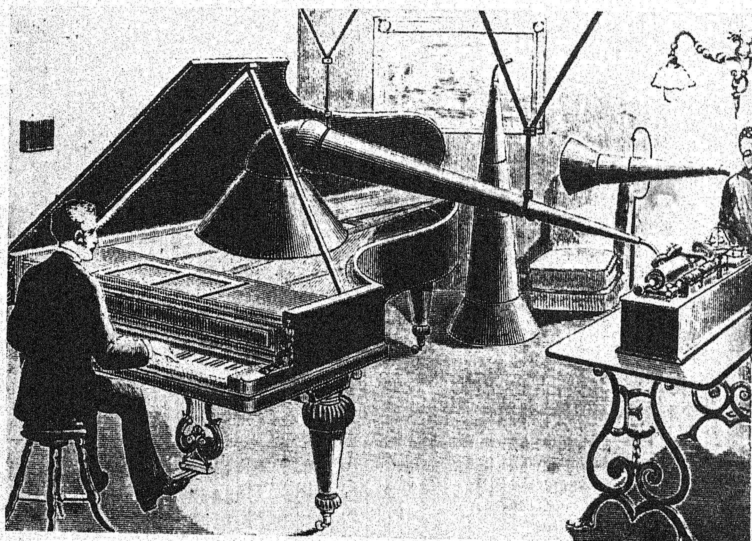
मार्क कार्लटन नामक एक वैज्ञानिक कृषि-विभाग की ओर से रूस गया। वहाँ उसने रस्ट नामक रोग का और अनावृष्टि का

सामना करने में समर्थ गेहूँ की खेती शीत ऋतु में होती देखी। उसका बीज वह अपने देश में ले आया और आज यूनाइटेड स्टेट्स में आधे से अधिक गेहूँ इसी प्रकार का पैदा होता है। मैरियन डौरसैट ने सुअरों में फैलने वाले भीषण कौलेरा रोग का इलाज निकाला। जौर्ज मोलर ने पशुओं के खुरपका-मुँहपका रोग का इलाज निकाला। एक अन्वेषक उत्तरी अफ्रीका से काफ़िर नाम की मक्की लाया। एक अन्य अन्वेषक तुर्किस्तान से पीले फूलों वाली एलफ़ाल्फ़ा (लूसर्न-रिजका) लाया। लूथर बरबैंक ने कैलिफ़ोर्निया में बीसियों नये फल और सब्जियाँ पैदा कीं। स्टीवन बैबकौक ने विस्कौन्सिन में दुग्ध-परीक्षण की ऐसी विधि निकाली जिससे दुग्धस्थ स्नेह का परिमाण मालूम हो जाता था। अलाबामा के टस्केगी इन्स्टिट्यूट में प्रसिद्ध नीग्रो वैज्ञानिक जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने मूंगफली, शकरकन्द और सोया-बीन के सैकड़ों नये उपयोग निकाले।

अमेरिकन किसान को उन्नीसवीं शताब्दी में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। विशालतम कृषि-विस्तार की शताब्दी के अन्त में किसान की कठिनाई एक भारी समस्या बन गई थी। इसके कारण अनेक थे: जमीन की उपजाऊ शक्ति का ह्रास, ऋतु की अनिश्चितता, प्रमुख फ़सलों का अतिउत्पादन, स्वात्मनिर्भरता की न्यूनता और कानून द्वारा पर्याप्त संरक्षण-सहायता का अभाव। दक्षिण की भूमि को तम्बाकू और रुई की खेतियों ने बहुत पहले ही अनुत्पादक बना दिया था। परन्तु पश्चिम में और मैदानों में भी भूमि को कटाव, आँधियों और कीड़ों से नुक़सान पहुँच रहा था।

मिसिसिपी नदी के पश्चिम में खेती का द्रुत यान्त्रीकरण विशुद्ध लाभ सिद्ध नहीं हुआ था। इससे उत्साहित होकर

यह उपकरण पियानो-संगीत के फ़ोनोग्राफ़-रिकार्ड भरने के लिए १८९० के आसपास प्रयुक्त हो रहा था। यह एक ऐसे यन्त्र से विकसित किया गया था, जिसमें राँगे की पत्ती का सिलिंडर था और जो हाथ से घुमाया जाता था। इसका आविष्कार एक दशक पहले ऐडिसन ने किया था।



बहुत-से किसानों ने अपनी खेती अदूरदर्शितापूर्वक विस्तृत कर ली। इसके कारण उनका ध्यान केवल प्रमुख फ़सलों पर केन्द्रित हो गया। इससे बड़े किसानों को छोटे किसानों के मुक़ाबिले में बहुत सुविधा हो गई और बहुत बड़े परिमाण में खेत ठेकों पर उठाये जाने लगे और बड़ी-बड़ी खेतियां की जाने लगीं। ये सब समस्याएँ तब तक अनसुलझी रहीं जब तक भूमि-संरक्षण की आधुनिक विधियां सर्वत्र न अपना ली गईं।

इससे भी अधिक उलझनभरी परन्तु शीघ्र ही सुलझ सकने योग्य समस्या मूल्यों की थी। किसान को अपनी पैदावार दुनिया के प्रतिस्पर्धापूर्ण बाजार में बेचनी पड़ती थी परन्तु वह अपनी रसद, सामान और घर की वस्तुएँ, प्रतिस्पर्धा से संरक्षित बाजार में खरीदता था। उसे अपने गेहूँ, रुई या गोमांस का जो मूल्य मिलता था उसका निश्चय विदेशों में होता था। परन्तु वह अपने मशीनी हल या खाद या कांटेदार तारों का जो मूल्य देता था उसका निश्चय तट-करों के संरक्षण में बैठकर बड़े बड़े ट्रस्ट करते थे। १८७० से १८९० तक खेती की पैदावारों के मूल्य अनियमित रूप में गिरते चले गए और अमेरिका की समस्त कृषि-पैदावार का मूल्य केवल पचास करोड़ डालर ही बढ़ा। इसके विपरीत उसी अवधि में कारखानों में तैयार माल का मूल्य ६ अरब डालर बढ़ गया।

इस आर्थिक विषमता के कारणों पर विचार करने और उनके उपाय सुझाने के लिए किसानों के संगठन बन गए। इसमें अधिकतर १८६७ में स्थापित 'ग्रेञ्ज' (चौपाल) के नमूने पर बने। कुछ ही वर्षों में प्रायः प्रत्येक स्टेट में ग्रेञ्ज बन गये और उनकी सदस्यता साढ़े सात लाख से ऊपर पहुँच गई। आरम्भ में ये संगठन मुख्यतया किसान के अकेलेपन को दूर करने के लिए बने थे। परन्तु अनिवार्यतः उनके सदस्यों का ध्यान व्यापार और राजनीति की ओर चला गया। आपसी बातचीत के बाद कार्य की बारी आई और शीघ्र ही बहुत-से ग्रेञ्जों ने सहकारी हाट-व्यवस्था, सहकारी दूकानें और कारखाने स्थापित कर दिये। मध्य-पश्चिम की कई स्टेटों में उन्होंने धारासभाओं के सदस्य चुने और रेलों और गोदामों का नियन्त्रण करने वाले क़ानून पास कराये। बहुत-से ग्रेञ्जों के व्यापारिक प्रयत्न असफल हो गए। उसी समय आठवें दशक के अंत में खेतों में समृद्धि की लहर-सी आ गई। फलतः ग्रेञ्जों का महत्त्व आप ही घट गया। परन्तु इनके कारण जो आन्दोलन आरम्भ हुआ था वह किसानों की एकता के रूप में पुनर्जाग्रत हो गया और इसका आरम्भ ९वें दशक में तथा १०वें दशक के पहले वर्षों में हुआ। एक बार फिर कठिन समय आया। मैदानों में सूखा पड़ गया और गेहूँ तथा रुई के मूल्य गिर गए। इससे एकता के आन्दोलन को बहुत प्रोत्साहन मिला। यह इतना लोकप्रिय हुआ कि १८९० तक इसके सदस्य लगभग २० लाख हो गए। शिक्षण-कार्यक्रमों के अतिरिक्त इन्होंने राजनीतिक सुधारों की भी मांग की। शीघ्र ही ये संगठन साहसिक राजनीतिक दल में परिवर्तित हो गये और पौपुलिस्ट्स नाम से ये पुरानी रिपब्लिकन और डैमोक्रैटिक पार्टियों का बलपूर्वक विरोध करने लगे।

सच तो यह है कि अमेरिकन राजनीति में पौपुलिस्ट आन्दोलन सरीखा अन्य कोई आन्दोलन कभी हुआ ही नहीं। यह आन्दोलन मैदानों और रुई की खेतियों में फैल गया। १८९० के चुनाव में नई पार्टी दक्षिण तथा पश्चिम की बारह स्टेटों में अधिकारारूढ़ हो गई और इसने लगभग बीस सेनेटर और रिप्रेज़ेण्टेटिव चुनकर कांग्रेस में भेजे। इस सफलता से उत्साहित होकर पौपुलिस्टों ने व्यापक सुधारों की मांग की, जिनमें इनकम टैक्स, किसानों के लिए ऋण की राष्ट्रीय व्यवस्था, रेलों पर सरकार का स्वामित्व, मजदूरों के लिए आठ घण्टे का दिन और चांदी के सिक्के यथेष्ट मात्रा में ढलवाकर मुद्रा के चलन में वृद्धि की मांगें भी सम्मिलित थीं।

१८९२ के चुनाव में पौपुलिस्टों ने पश्चिम और दक्षिण में अपना बल और प्रभाव दिखलाया। प्रेजिडेण्ट पद के उनके उम्मीदवार को दस लाख से अधिक वोट मिले परन्तु जीत डैमोक्रैटिक उम्मीदवार ग्रोवर क्लीवलैण्ड की हुई। चार वर्ष पश्चात् शक्तिशाली पौपुलिस्ट प्रायः सर्वत्र डैमोक्रैटिक पार्टी के साथ मिल गए। पौपुलिस्टों से प्रभावित होकर नये डैमोक्रैटिक नेताओं ने मुद्रा के प्रश्न को प्रधान राजनीतिक समस्या का रूप देना आरम्भ कर दिया।

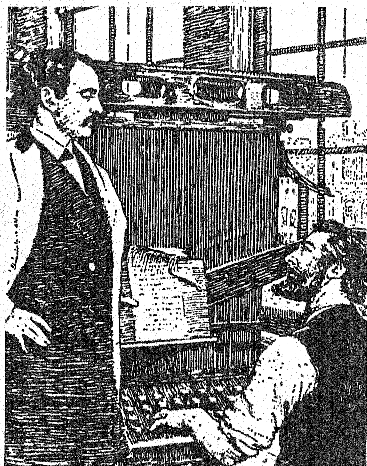
जब से यूनाइटेड स्टेट्स नया देश बना तब से उसकी मुद्रा का आधार दो धातुएं रही थीं, अर्थात् जितना भी सोना और चांदी टकसाल में लाया जाता था सरकार उसकी मुद्राएं ढाल देती थी। १८७३ में कांग्रेस ने अपनी मुद्रा-पद्धति का पुनर्गठन किया और अन्य बातों के साथ उसने चांदी के डालरों को अधिकृत सिक्कों में से निकाल दिया। चांदी दुर्लभ थी अतः उसकी ओर लोगों का बहुत-कम ध्यान गया। सच तो यह है कि ४० वर्ष से चांदी के डालरों का चलन बहुत था ही नहीं।

यह अवस्था एकदम बदल गई। पश्चिम की पहाड़ी स्टेटों में चांदी की नई खानें निकल आईं। साथ ही कई यूरोपियन देशों ने चांदी के सिक्कों का चलन बन्द कर दिया। एकदम ही चांदी असाधारण मात्रा में उपलब्ध हो गई।

इस काल में देश अनेक कठिनाइयों में से गुजर रहा था। दक्षिण और पश्चिम के ग्रामीण नेताओं ने प्रचलित मुद्रा की न्यूनता को अपने कष्टों का मूल समझकर पूर्वी व्यावसायिक केन्द्रों के मजदूर संगठनों की सहायता से यह मांग की कि चांदी की मुद्रा यथापूर्व असीम मात्रा में ढाली जाय। उनका विश्वास था कि प्रचलित मुद्रा का परिमाण बढ़ जाने से खेती की पैदावार का मूल्य ऊँचा हो जायगा और कारखानों के मजदूरों को ऊंची मजदूरी मिलने लगेगी। यह भी दलील दी गई कि इस प्रकार कर्जदार अपने कर्ज आसानी से अदा कर सकेंगे। दूसरी ओर परम्परा-प्रेमियों को निश्चय था कि एक बार मुद्रा-स्फीति शुरू हो जाने पर उसे रोका नहीं जा सकेगा और सरकार स्वयं दिवालिया हो जायगी। वे निश्चयपूर्वक कहते थे कि स्थिरता का एकमात्र उपाय स्वर्ण-मान है।

चांदी-पक्षपाती डैमोक्रैटों और पुराने पौपुलिस्टों को नेब्रास्का का विलियम जैनिंग्स ब्रायन नामक एक नेता भी मिल गया। उसी को उन्होंने १८९६ के चुनाव में प्रेजिडेण्ट पद के लिए अपना उम्मीदवार बनाया। वह बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली वक्ता था। वह तुरन्त ही लाखों को अपना भक्त बना लेता था। परन्तु उसकी पार्टी में फूट थी और उसके विरोधी बलवान् थे। चुनाव में विलियम मैकिनली ५ लाख से अधिक वोटों से जीत गया। परन्तु ब्रायन के आन्दोलन के फलस्वरूप एक मुद्रा-सम्बन्धी नीति को छोड़कर पौपुलिस्टों और ग्रामीण डैमोक्रैटों के सभी विचारों को बाद में कानून का रूप मिल गया।

इस आन्दोलन से इस बात का प्रमाण मिल गया कि स्टेटों में गृह-युद्ध के पश्चात् यूनियन कितनी दृढ़ हो चुकी थी। यद्यपि किसानों की शिकायतें गुलामों के मालिकों की शिकायतों से कम वास्तविक नहीं थीं, तो भी पृथक् हो जाने की किसी ने कोई बात नहीं की। यह राष्ट्रीय एकता १८९८ में स्पेन के साथ जो युद्ध छिड़ा उससे और भी स्पष्ट हो गई। शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी गोलार्ध में स्पेन के प्रधान उपनिवेशों ने जो विद्रोह किया था उससे स्पैनिश सरकार ने कुछ भी नहीं सीखा था। उसने छोटे क्यूबा द्वीप पर अपना स्वेच्छाचारी शासन यथापूर्व जारी रखा। वहाँ का व्यापार



टाइप-कम्पोज़िंग मशीन लिनोटाइप के आविष्कर्त्ता मर्जेन्थेलर द्वारा न्यूयॉर्क 'ट्रिब्यून' के सम्पादक रीड के सामने उसका प्रदर्शन। उसने ही १८८६ में पहले-पहल इसका प्रयोग किया था।

यूनाइटेड स्टेट्स के साथ बढ़ता जा रहा था। १८९५ में क्यूबन लोगों का भड़कता हुआ क्रोध स्वतन्त्रता के युद्ध के रूप में फूट पड़ा। यूनाइटेड स्टेट्स में इस विद्रोह की प्रगति को ध्यान और चिन्तापूर्वक देखा जाने लगा, प्रेजिडेण्ट क्लीवलैण्ड ने तटस्थता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया परन्तु तीन वर्ष पीछे मैकिनली शासन के समय यूनाइटेड स्टेट्स का युद्धपोत मेन हवाना बन्दरगाह में शान्तिपूर्वक खड़ा हुआ भी नष्ट कर दिया गया और २६० आदमी मारे गए। इससे एकदम देशभक्ति का उबाल आ गया। मैकिनली ने कुछ समय तो शान्ति रखने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ ही महीनों में और अधिक विलम्ब निरर्थक समझकर उसने सैनिक हस्तक्षेप की सिफ़ारिश कर दी।

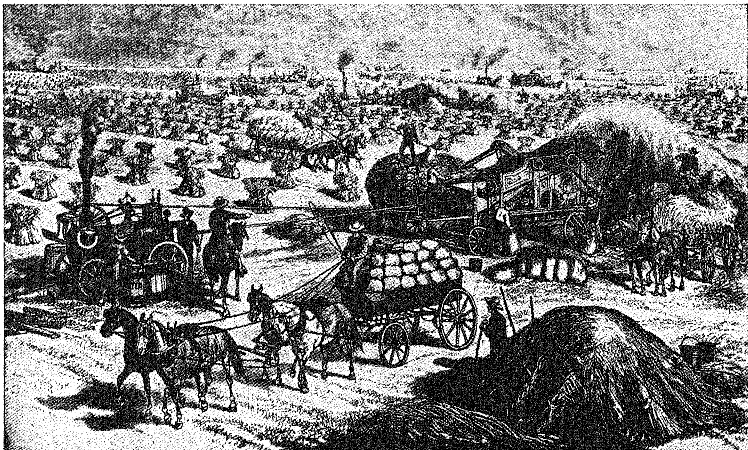
सैनिक कार्रवाई द्रुत गति से हुई और निर्णायक सिद्ध हुई। वह केवल चार महीने चली। किसी भी स्थान पर अमेरिकनों को पीछे नहीं हटना पड़ा। युद्ध-घोषणा के एक

ही सप्ताह पश्चात् कमोडोर जॉर्ज ड्यूई, हाँगकाँग से छः जहाजों का अपना बेड़ा लेकर फ़िलिपीन्स की ओर चल पड़ा। उसको आज्ञा दी गई थी कि वह वहाँ खड़े स्पैनिश बेड़े को अमेरिकन समुद्र में कार्रवाई करने से रोके। प्रातःकाल से पूर्व ही उसने मनीला खाड़ी के तोपखाने पर आक्रमण कर दिया। दोपहर तक उसने एक भी अमेरिकन जान खोये बिना समस्त स्पैनिश बेड़ा नष्ट कर दिया। इधर क्यूबा में एक सिंगिल आर्मी कोर के बराबर सेना सैण्टियागो के समीप उतारी गई। उसने शीघ्र ही कई लड़ाइयाँ जीत लीं और बन्दरगाह पर गोलाबारी की। चार सशस्त्र स्पैनिश क्रूजर सैण्टियागो की खाड़ी से निकल-कर भागे परन्तु कुछ ही घण्टों में वे तोड़-फोड़कर लकड़ी के ढेर कर दिये गए।

जुलाई के जिस गरम दिन सैण्टियागो पर विजय का समाचार अमेरिका पहुँचा उस दिन बोस्टन से सनफ्रांसिस्को तक सीटियाँ बजाई गईं और झण्डे फहराये गए। समाचार-पत्रों ने अपने सम्वाददाता क्यूबा और फ़िलिपीन्स को दौड़ाये और इन लेखकों ने राष्ट्र के नये वीरों की ख्याति का डंका पीट दिया। इनमें प्रमुख मनीला का यशस्वी जॉर्ज ड्यूई और 'रफ़ राइडर्स' नामक स्वयंसेवक घुड़सवारों का नेता थियोडोर रूज़वेल्ट था। उसने क्यूबा में ही यह स्वयंसेवक सेना बनाई थी। शीघ्र ही स्पेन ने शान्ति की प्रार्थना की और १० दिसम्बर १८९८ को एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये गए। इसके अनुसार स्पेन ने क्यूबा तब तक के लिए यूनाइटेड स्टेट्स को सौंप दिया जब तक कि वहाँ स्वतन्त्र शासन स्थापित न हो जाय। उसने प्वेर्टोरीको और गुआम द्वीप युद्ध के हरजाने के रूप में और फ़िलिपीन्स दो करोड़ डालर मूल्य लेकर यूनाइटेड स्टेट्स को दे दिये।

फ़िलिपीन्स में पहुँचते ही यूनाइटेड स्टेट्स को चीन के साथ व्यापार बढ़ाने की बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं, परन्तु १८९४-९५ में जापान द्वारा चीन के पराजित होने के पश्चात् कई यूरोपियन राष्ट्रों ने चीन में सामुद्रिक अड्डे और ठेके के प्रदेश लेकर अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्र स्थापित कर लिए थे। उन्होंने न केवल व्यापार के एकाधिकार प्राप्त कर लिए थे अपितु साधारणतया रेलवे-निर्माण में पूँजी लगाने और आसपास

अन्न कूटने के लिए भाप के इंजन का प्रयोग किसान १८९० से पूर्व ही करने लगे थे। यहाँ प्रदर्शित डैकोटा प्रदेश सरीखे घास के अनुपजाऊ मैदानों के बड़े-बड़े भागों का शीघ्र-शीघ्र विकास यन्त्रों द्वारा ही हुआ।



के प्रदेश में खानें खोदने की सुविधाएँ भी अपने लिए प्राप्त कर ली थीं। अब से पहले भी पूर्व के साथ अपने कूटनीतिक सम्बन्धों में अमेरिकन सरकार सदा सब राष्ट्रों के लिए समान व्यापारिक अधिकारों पर बल देती आई थी। सितम्बर १८९९ में सेक्रेटरी ऑव् स्टेट जॉन हे ने सब सम्बन्धित शक्तियों के नाम एक गश्ती पत्र भेजा। उन्होंने चीन में सब राष्ट्रों के लिए मुक्त-द्वार का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया अर्थात् जिन प्रदेशों पर उनका अधिकार था उनमें सबको समान तट-कर, समान बन्दरगाह-कर और रेलवे-भाड़ा-दर आदि की समान व्यापारिक सुविधाएँ दी गईं।

परन्तु १९०० में चीनियों ने विदेशियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जून में विद्रोहियों ने पीपिंग पर अधिकार करके वहाँ के वैदेशिक दूतावासों को घेर लिया। हे ने तुरन्त ही सब शक्तियों को सूचना दी कि यूनाइटेड स्टेट्स चीनी प्रादेशिक एकता अथवा उसके प्रशासनाधिकारों अथवा मुक्त-द्वार का भंग करने का विरोध करेगा। किन्तु विद्रोह शान्त हो जाने पर अमेरिकन कार्यक्रम को पूर्ण करने और क्षति-पूर्ति की अदायगी से चीन की रक्षा करने के लिए उसको अपनी समस्त चतुराई लगा देनी पड़ी। अक्टूबर में ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी ने मुक्त-द्वार नीति और चीनी स्वतन्त्रता की रक्षा का पुनः समर्थन किया। तुरन्त ही अन्य राष्ट्रों ने भी इनका अनुकरण किया।

१९०० में प्रेजिडेण्ट के चुनाव ने अमेरिकन जनता को मैकिनली शासन पर, विशेषतः उसकी विदेश-नीति पर, अपना मत प्रकट करने का अवसर दिया। फ़िलाडेलफ़िया में एकत्र होकर रिपब्लिकनों ने स्पेन के साथ युद्ध की सफल समाप्ति पर, समृद्धि की पुनः स्थापना पर और मुक्त-द्वार की नीति द्वारा नये बाजार प्राप्त करने के यत्न पर प्रसन्नता प्रकट की। चुनाव में मैकिनली का साथी थियोडोर रूजवैल्ट था। उन दोनों का चुना जाना निश्चित था। परन्तु प्रेजिडेण्ट अपनी जीत का आनन्द उठाने के लिए बहुत देर तक जीवित नहीं रहा। सितम्बर १९०१ में बफ़ैलो में जब वह एक व्याख्यान सुन रहा था; तब किसी ने उसे गोली से मार डाला। मैकिनली की मृत्यु के बाद थियोडोर रूजवैल्ट प्रेजिडेण्ट बन गया।

रूजवैल्ट का प्रेजिडेण्ट बनना और अमेरिकन राजनीतिक जीवन के आन्तरिक और वैदेशिक दोनों मामलों में एक नये युग का प्रारम्भ साथ-साथ हुआ। शताब्दी के परिवर्तन के समय अमेरिका अपनी तीन पीढ़ियों की उन्नति का सिंहावलोकन कर सकता था। अब महाद्वीप आबाद हो गया था।

वह यूनाइटेड स्टेट्स अब एक राष्ट्र बनकर संसार की महाशक्तियों में स्थान पा चुका था। उसकी राजनीतिक नींव दृढ़ हो चुकी थी। कृषि और उद्योग में बड़ी-बड़ी मंजिलें तय हो चुकी थीं। निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षण का आदर्श पूरा हो चुका था। लेखन और प्रकाशन की स्वतन्त्रता के आदर्श की निरन्तर रक्षा हो रही थी। धार्मिक स्वतन्त्रता का आदर्श भी पूरा हो रहा था। इतने पर भी विचारवान् अमेरिकन अपनी सामाजिक, आर्थिक और राज-नीतिक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थे, क्योंकि इस समय बड़े-बड़े व्यापारी पहले के किसी भी समय की अपेक्षा अधिक प्रभाव-शाली हो रहे थे। बहुधा स्थानीय और म्युनिसिपल शासन की बागडोर भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञों के हाथ में आ जाती थी। समाज के प्रत्येक पहलू पर भौतिकवाद की भावना का विष व्याप रहा था।

इन बुराइयों का जनता ने पूरी आवाज से प्रतिवाद किया, जिसके कारण लगभग १८९० से प्रथम विश्व-युद्ध तक के काल में अमेरिकन राजनीति और विचारों को एक विचित्र स्वरूप प्राप्त हो गया। औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भ-काल से ही किसान शहरों और बढ़ते हुए उद्योगपतियों के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहे थे। १९वीं शताब्दी के छठे दशक से ही सुधारक लोग लिहाज और सिफ़ारिश की प्रचलित पद्धति की तीव्र निन्दा कर रहे थे। उस पद्धति द्वारा सफल राज-नीतिक नेता सरकारी नौकरियाँ अपने समर्थकों में बाँट देते थे। ३० वर्ष के संघर्ष के पश्चात् १८८३ में सुधारकों ने पेण्डिल्टन सिविल सर्विस बिल पास करवा लिया। इसके पश्चात् सरकारी नौकरियों में भरती केवल योग्यता के आधार पर होने लगी और इस प्रकार राजनीतिक सुधार का आरम्भ हो गया। कारखानों के मजदूर भी अन्यायों की शिकायत कर रहे थे। पहले उन्होंने अपनी रक्षा के लिए "श्रमिकों के सरदारों" (नाइटों) का संगठन किया। १८६९ से आरम्भ होकर उनकी सदस्यता उल्लेखनीय रूप में बढ़ते-बढ़ते नवें दशक के मध्य में सात लाख तक पहुँच गई। यह संगठन शिथिल हो गया परन्तु इसका स्थान इससे भी अधिक प्रभावशाली संगठन अमेरिकन श्रम-संघ (अमेरिकन फ़ेडरेशन ऑव् लेबर) ने ले लिया। १९०० तक संगठित मजदूर अमेरिका में ऐसी

शक्ति बन चुके थे कि कोई भी राजनीतिक कार्यकर्ता उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता था।

इस युग में प्रायः प्रत्येक प्रसिद्ध व्यक्ति ने अपनी ख्याति अंशतः सुधार-आन्दोलन के साथ सम्बन्ध जोड़कर ही प्राप्त की थी। इस समय के सब नेता सुधारक थे, जो कि सामयिक समस्याओं के विषय में आन्दोलन करते थे। १८वीं शताब्दी के ग्रामीण लोकतन्त्र से जो रीति-रिवाज और सिद्धान्त चले आ रहे थे वे २०वीं शताब्दी के शहरी राष्ट्र के लिए अपर्याप्त सिद्ध हुए। औद्योगिक युग में अमेरिका के सामने अव्यवस्था की जो समस्याएँ आईं उनके मुख्य कारण थे, समाज की जटिलता और परस्पराश्रितता तथा बड़े-बड़े कौर्पोरेशनों के निर्माण के कारण उत्तरदायित्व का व्यक्तियों में केन्द्रित न रहना। इस परिस्थिति में सुधार करने के लिए कुछ लेखकों ने अपनी प्रतिभा को इधर लगाया। समाचार-पत्र और लोकप्रिय पत्रिकाएं इस कार्य में सबसे आगे आये। उपन्यासकारों ने भी इसमें योग दिया और इस आन्दोलन को महात्वाकांक्षी राजनीतिक सुधारकों ने व्यावहारिक रूप दिया। यूनाइटेड स्टेट्स का नया प्रेजिडेण्ट भी इनमें शामिल था। सुधार-आन्दोलन १९०२ से १९०८ तक बहुत तीव्रता से चला। बरसों पहले १८७३ में मार्क ट्वेन ने अपने ग्रन्थ '*दि गिल्डेड एज*' में अमेरिकन समाज की सूक्ष्म आलोचना की थी। अब ट्रस्टों, अर्थव्यवस्था, मिलावटी भोजन और रेलों के विषय में *मैक्लुअर*, *ऐव्रीबोडी* और *कौलियर* की पत्रिकाओं में बहुत कठोर लेख प्रकाशित हुए। अप्टन सिनक्लेयर ने '*जंगल*' नामक उपन्यास प्रकाशित किया जिसमें शिकागो के पैकिंग हाउसों की अस्वास्थ्यकर अवस्थाओं का नग्न-चित्र खींचा गया था और बतलाया गया था कि किस प्रकार राष्ट्र के समस्त मांस की सप्लाई एक बीफ़ ट्रस्ट की मुट्ठी में है। थियोडोर ड्राइसर के '*फाइनैन्शियर*' और '*टाइटैन*' नामक पत्रों ने बड़े व्यापारियों की चालबाजियों का समझना और भी सरल कर दिया। फ्रैंक नौरिस के ग्रन्थ '*दि पिट*' ने भूमि-सम्बन्धी शिकायतों को स्पष्ट किया। लिंकन स्टैफ़ैन्स के ग्रन्थ '*दि शेम ऑव् दि सिटीज*' ने राजनीतिक भ्रष्टाचार का परदा फाड़कर दिखला दिया। "परदा फ़ाश करने वाला साहित्य" लोगों को जाग्रत करने में अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ।

समझौता न करने वाले लेखकों की लगातार चोटों और जाग्रत जनता ने राजनीतिक नेताओं को व्यावहारिक उपाय करने के लिए विवश कर दिया। कई स्टेटों ने ऐसे क़ानून बनाये जिनका प्रयोजन लोगों के रहन-सहन और काम करने की अवस्थाओं में सुधार करना था। २०वीं शताब्दी के प्रथम १५ वर्षों में जितने सामाजिक क़ानून बने उतने समस्त अमेरिकन इतिहास में पहले कभी नहीं बने थे। बाल-श्रम क़ानून अधिक दृढ़ कर दिये गए और कई नये बनाये गए। श्रमिक बालकों की आयु की सीमा ऊँची कर दी गई, काम के घण्टे घटाये गए, रात का काम वर्जित कर दिया गया और उनका स्कूल जाना आवश्यक ठहराया गया। इस समय प्रायः सब बड़े नगरों और लगभग आधी स्टेटों में सार्वजनिक कामों में ८ घण्टे का दिन किया जा चुका था। जोखिम के कामों में भी काम का समय क़ानून द्वारा नियन्त्रित कर दिया गया। कारखानों में काम करते हुए मजदूरों की शारीरिक हानि हो जाने पर उसकी क्षतिपूर्ति का जिम्मेदार मालिकों को ठहराया गया। सरकारी आय के भी अनेक नये क़ानून बनाये गए जिनके द्वारा उत्तराधिकार, बड़ी आमदनी और जायदाद अथवा कौर्पोरेशनों की कमाई पर कर लगाकर शासन का बोझ उन लोगों पर डालने का यत्न किया गया जो कर अदा करने में समर्थ थे।

यह स्पष्ट था कि सुधारक जिन समस्याओं के लिए आन्दोलन कर रहे थे उनमें से अधिकतर तब तक नहीं सुलझ सकती थीं जब तक कि कार्रवाई राष्ट्रव्यापी परिमाण में न की जाय। यह बात प्रेजिडेण्ट थियोडोर रूजवैल्ट ने बहुत स्पष्टता से अनुभव की। रूजवैल्ट एक राजनीतिक, वास्तविकतावादी, उत्साही राष्ट्रीयतावादी और ईमानदार रिपब्लिकन था। टॉमस जैफ़र्सन के पश्चात् वह सबसे अधिक ज्ञानवान्, अनुभवी और कर्मठ प्रेजिडेण्ट था। वह पशु-चालक और एक स्टेट का गवर्नर भी रह चुका था। वह बड़ा शिकारी था और उसने पुस्तकें लिखी थीं। न्यूयॉर्क की धारा-सभा का वह सदस्य रहा था। न्यूयॉर्क सिटी की पुलिस में अधिकारी रह चुका था, जल-सेना में रहा था और क्यूबा के युद्ध में लड़ा था। उसका अध्ययन असाधारण रूप से व्यापक था और प्रत्येक विषय पर उसका अपना मत था। ऐंड्रू जैक्सन के समान उसमें जनता का विश्वास प्राप्त करने की और अपने सब संघर्षों को नाटकीय रूप देने की प्रतिभा थी। एक ही वर्ष में उसने दिखला दिया कि अमेरिका में हो रहे महान् परिवर्तनों को वह समझता है और

जनता के साथ न्याय करने के लिए कृतसंकल्प है।

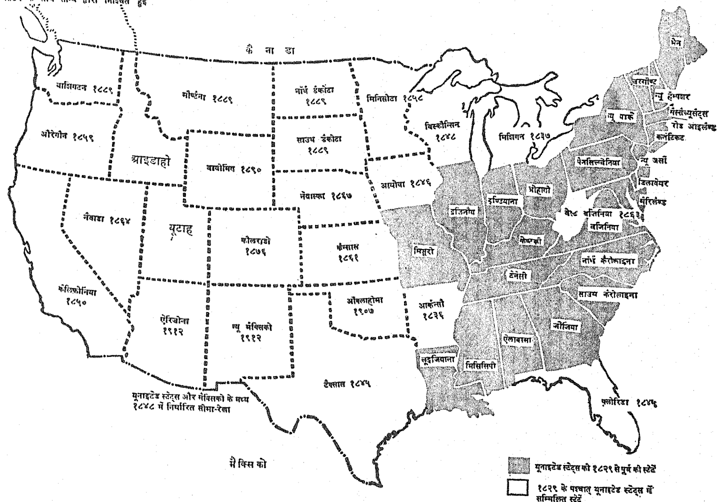
ट्रस्ट-विरोधी क़ानूनों पर अमल कराने के लिए रूज़वैल्ट ने ट्रस्टों पर अधिकाधिक सरकारी निरीक्षण रखे जाने की नीति आरम्भ की। रेलवे लाइनों पर इस प्रकार के निरीक्षण का होना उसके शासन की एक उल्लेखनीय सफलता थी। वह स्वयं रेलों के नियन्त्रण को 'प्रमुख समस्या' कहता था। उसने दो क़ानून इसी प्रयोजन से बनवाये। १६०३ के एलकिन्स ऐक्ट ने रेलवे संचालकों के लिए प्रकाशित किराया-दरों पर चलना क़ानूनी रूप से अनिवार्य कर दिया और इन दरों पर बट्टा लेने-देने के लिए रेलवे अधिकारियों के साथ-साथ माल भेजने वाले भी अपराधी ठहराये गए। इस क़ानून द्वारा सरकार ने अपराधी कम्पनियों के विरुद्ध सफलतापूर्वक मुक़दमे चलाये। बाद को कांग्रेस ने व्यापार और श्रम का एक नया विभाग खोलकर उसका एक सदस्य मन्त्रिमण्डल में बढ़ा दिया। इस विभाग के एक ब्यूरो को बड़ी-बड़ी व्यापारिक कम्पनियों के मामलों की जाँच करने का अधिकार दिया गया। उदाहरणार्थ, १६०७ में मालूम हुआ कि अमेरिकन शुगर रिफ़ाइनिंग कम्पनी ने सरकार को धोखा देकर आयात तट-कर की बहुत बड़ी राशि हज़्म कर ली है। इस सम्बन्ध में क़ानूनी कार्रवाई करके ४० लाख डालर से ऊपर की राशि वसूल की गई और कम्पनी के कई अधिकारियों को सज़ा हुई। इसी वर्ष इण्डियाना की स्टैण्डर्ड ऑइल कम्पनी को शिकागो ऐण्ड ऑल्टन रेलरोड से माल भेजने पर गुप्त रीति से बट्टा लेने के कारण अपराधी ठहराया गया। इस समय की भावना इस बात से व्यक्त हो सकती है कि १४६२ मुक़दमों में सब मिलाकर २६२ लाख ४० हज़ार डालर जुर्माना किया गया।

१६०४ में ही थियोडोर रूज़वैल्ट रिपब्लिकन लोगों का देवता बन चुका था। प्रगतिशील डैमोक्रैट भी अपनी पार्टी के उम्मीदवार की अपेक्षा उसकी ओर अधिक आकृष्ट हो गये थे। १६०४ के चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की जीत का एक कारण देश की बढ़ती हुई समृद्धि भी था। अपनी इस भारी जीत से उत्साहित होकर प्रेज़िडेण्ट ने सुधार-कार्य को और भी आगे बढ़ाने के नवीन निश्चय के साथ अपना पद ग्रहण किया। अपने प्रथम वार्षिक सन्देश में उसने रेलों का नियन्त्रण और भी कठोरता से करने के लिए कहा और जून १६०६ में हैपबर्न ऐक्ट पास हुआ। इस ऐक्ट द्वारा इण्टर-स्टेट कौमर्स कमीशन को दरों का नियन्त्रण करने के लिए वास्तविक अधिकार प्राप्त हो गये, उसका अधिकार-क्षेत्र बढ़ गया और रेलवे कम्पनियों ने जहाज़ों की लाइनों और कोयला कम्पनियों पर जो दख़ल किया हुआ था वह उन्हें छोड़ देना पड़ा। रूज़वैल्ट के कार्यकाल की समाप्ति पर किराया-दरों में बट्टा लेने देने की प्रथा प्रायः समाप्त हो चुकी थी और रेलों को एक सार्वजनिक संस्था के रूप में माना जाने लगा था।

कांग्रेस के अन्य कई क़ानूनों द्वारा संघीय नियन्त्रण का सिद्धान्त और भी आगे बढ़ाया गया। सुधारक आन्दोलन के कारण १६०६ के 'प्योर फ़ूड लॉ' द्वारा औषधियों अथवा खाद्यों के तैयार करने में किसी भी "हानिकारक औषधि, रासायनिक अथवा परिरक्ष द्रव्य" का प्रयोग निषिद्ध कर दिया गया। इस कार्रवाई को एक और क़ानून द्वारा और भी दृढ़ किया गया। यह क़ानून संघीय शासन को अन्तःस्टेट व्यापार में मांस बेचने वाली संस्थाओं के निरीक्षण का अधिकार देता था।

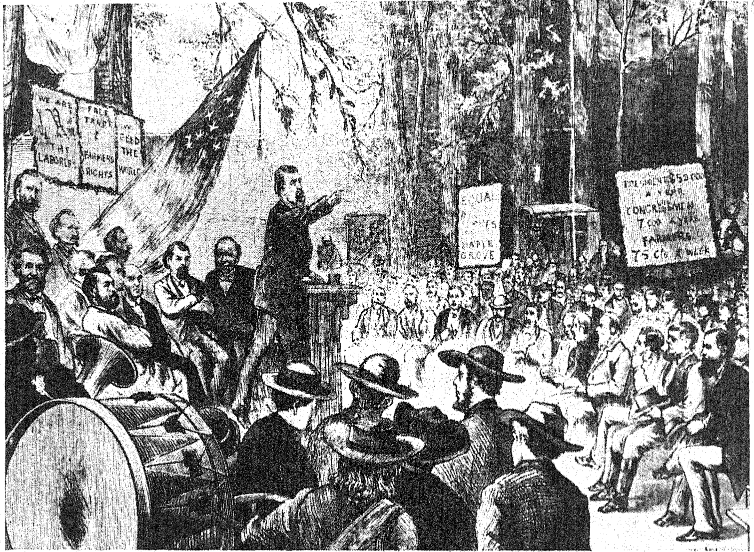
रूज़वैल्ट शासन का अति महत्त्वपूर्ण कार्य राष्ट्र के प्राकृतिक साधनों की रक्षा करना था। कच्चे माल के दोहन और विनाश को रोकना आवश्यक था और भूमि के बहुत बड़े-बड़े टुकड़े जो बेकार समझे जा रहे थे पुनः उपयोगी बनाने के लिए उचित ध्यान दिये जाने की अपेक्षा रखते थे। १६०१ में कांग्रेस को प्रथम सन्देश भेजते हुए रूज़वैल्ट ने जंगल और पानी की समस्याओं को "यूनाइटेड स्टेट्स की सम्भवतः सबसे महत्त्वपूर्ण आन्तरिक समस्याएँ" बतलाया था। उसने भूमि के संरक्षण, सुधार और सिंचाई के लिए एक सुसंगत दूरव्यापी कार्यक्रम की आवश्यकता बतलाई। उसके पूर्वाधिकारियों ने जहाँ ४७० लाख एकड़ भूमि जंगल के लिए सुरक्षित रखी थी वहाँ रूज़वैल्ट ने इसे बढ़ाकर २६५० लाख एकड़ कर दिया और आग से जंगलों का विनाश रोकने और वृक्षहीन भागों में पुनः वृक्ष लगाने का व्यवस्थित प्रयत्न आरम्भ कर दिया। १६०७ में उसने एक "इनलैण्ड वाटरवेज़ कमीशन" नियुक्त करके उसे नदियों, भूमि और जंगल के परस्पर सम्बन्धों, जलशक्ति के विकास और जलीय यातायात के प्रश्नों का पूर्ण अध्ययन करने का काम सौंपा। इस कमीशन की सिफ़ारिशों के परिणामस्वरूप ही राष्ट्रीय संरक्षण सम्मेलन की योजना बनी और उसी वर्ष रूज़वैल्ट ने सब स्टेटों के गवर्नरों, मन्त्रिमण्डल के सदस्यों और राजनीति, विज्ञान और शिक्षा—इन क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्तियों को उक्त सम्मेलन में

महाद्वीप यूनाइटेड स्टेट्स



निमन्त्रित किया। इस सम्मेलन ने राष्ट्र का ध्यान भूमि-संरक्षण की समस्या पर केन्द्रित किया। इसने कुछ सिद्धान्तों का एक घोषणापत्र निकाला जिसमें न केवल जंगलों की रक्षा पर अपितु पानी और खनिज पदार्थों की रक्षा और भूमि के कटाव तथा सिंचाई के प्रश्नों पर भी ध्यान दिये जाने के लिए बल दिया गया था। इसकी सिफ़ारिशों में निजी भूमियों में वृक्षों की कटाई पर नियन्त्रण, यातायात योग्य जलधाराओं का सुधार और नदी तटवर्ती प्रदेशों के संरक्षण भी सम्मिलित थे। इसके फलस्वरूप बहुत-सी स्टेटों ने संरक्षण कमीशन नियत किये और १९०९ में एक नैशनल कंजरवेशन असोसिएशन इस विषय पर जनता को शिक्षित करने के लिए बनाया गया। १९०२ में एक रिक्लेमेशन ऐक्ट बनाया गया जिसने कि बड़े-बड़े बाँध और जलाशय बनाने का सरकार को अधिकार दिया और शीघ्र बड़े-बड़े सूखे मैदान हरे-भरे और खेती योग्य हो गए।

१९०८ का चुनाव आन्दोलन समीप आने पर रूजवैल्ट अपनी लोकप्रियता की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। परन्तु अभी तक कोई भी प्रेजिडेण्ट निरन्तर दो बार से अधिक उक्त पद पर नहीं रहा था। रूजवैल्ट ने इस परम्परा को भंग करने में संकोच किया और उसने विलियम हॉवर्ड टैफ़्ट का समर्थन किया जो कि नया प्रेजिडेण्ट चुना गया। टैफ़्ट ने, जो रूजवैल्ट का ही कार्यक्रम जारी रखने के लिए उत्सुक था, कई काम किये। उसने ट्रस्टों के खिलाफ़ कार्रवाई जारी रखी, अन्तः स्टेट कॉमर्स कमीशन को दृढ़ कर दिया, डाकघरों में सेविंग्स बैंक खोले, डाक द्वारा पार्सल भेजने की व्यवस्था की, सिविल सर्विस का विस्तार किया और संघीय संविधान में दो संशोधन किये जाने की बात उठाई। १७वाँ संशोधन १९१३ में स्वीकृत हुआ। इसके द्वारा सेनेटरों के सीधे निर्वाचन की व्यवस्था की गई और १६वें संशोधन द्वारा संघीय सरकार को



१८६७ में संगठित किसानों की ग्रेन्जों (चौपालों) को शीघ्र ही एक निश्चित राजनीतिक रूप प्राप्त हो गया। वे उम्मीदवारों को चुनने और सदस्यों को सहयोग-पूर्वक बढ़ने के लिए उत्साहित करने लगे।

इनकम टैक्स लगाने का अधिकार दिया गया। परन्तु उसने संरक्षण के लिए नये तटकर स्वीकार कर लिये, उसने ऐरिज़ोना राज्य के उदार संविधान के कारण यूनियन में उसके प्रवेश का विरोध किया और अपने दल के अतिपरम्पराभक्त लोगों पर अधिकाधिक भरोसा किया। इन कार्रवाइयों से उदार विचार के लोग खिन्न हो गये और उसकी सफलताओं पर पानी फ़िर गया।

१९१० में टैफ़्ट की पार्टी में फूट पड़ गई और प्रबल बहुमत से कांग्रेस का नियन्त्रण फिर डैमोक्रैटों के हाथों में आ गया। दो वर्ष पश्चात् प्रेजिडेण्ट के चुनाव में न्यूजर्सी का गवर्नर वुडरो विल्सन रिपब्लिकन उम्मीदवार टैफ़्ट के विरुद्ध खड़ा हुआ। रूज़वैल्ट को रिपब्लिकन कनवेन्शन ने अपना उम्मीदवार बनाने से इनकार कर दिया, इसलिए उसने एक तीसरी पार्टी प्रोग्रेसिव्ज़ नाम से संगठित की और वह उसकी ओर से प्रेजिडेण्टी के लिए खड़ा हुआ। इस तीव्र संघर्ष में विल्सन ने अपने दोनों प्रतिस्पर्धियों को हरा दिया। उसका निर्वाचन उदार विचारों की जीत थी, क्योंकि वह डैमोक्रैटों को स्थिरतापूर्वक सुधार के मार्ग पर चलाना अपना पवित्र कर्तव्य समझता था। उसके नेतृत्व में कांग्रेस ने क़ानून-निर्माण के ऐसे कार्यक्रम को हाथ में लिया जो कि व्यापकता और महत्त्व की दृष्टि से अमेरिकन इतिहास में अत्यन्त उल्लेखनीय है। कांग्रेस का प्रथम कार्य तट-कर में सुधार था। विल्सन ने कहा था, "तट-कर बदले ही जाने चाहिएँ। जिस चीज़ में विशेषाधिकार की गन्ध भी आती हो हमें उसे समाप्त कर देना चाहिए।" अण्डरवुड तट-कर क़ानून पर ३ अक्टूबर १९१३ को हस्ताक्षर हुए। इसके द्वारा अनेक वस्तुओं पर

तट-कर काफ़ी घटा दिये गए और एक सौ से अधिक वस्तुओं पर से कर सर्वथा उठा दिये गए। यह क़ानून रहन-सहन का व्यय घटाने की दिशा में एक वास्तविक प्रयत्न था।

डैमोक्रैटिक कार्यक्रम का दूसरा अंग बैंकिंग और मुद्रा-प्रणालियों का पुनर्गठन था। राष्ट्र बहुत देर से ऋण और मुद्रा में लचकीलेपन के अभाव के कारण कष्ट उठा रहा था। बैंकिंग प्रणाली का सुधार किये जाने की चिरकाल से आवश्यकता थी। विल्सन कहता था, "नियन्त्रण जनता का होना चाहिए, व्यक्तियों का नहीं, और वह सरकार के हाथ में रहना चाहिए, जिससे कि बैंक व्यापार, वैयक्तिक कार्यों और कार्यारम्भों के सहायक रहें, मालिक नहीं।" २३ दिसम्बर १९१३ को फ़ैडरल रिज़र्व ऐक्ट द्वारा ये आवश्यकताएँ पूरी कर दी गईं। इसके द्वारा देश को बारह जिलों में बाँटकर प्रत्येक में एक-एक फ़ैडरल रिज़र्व बैंक स्थापित किया गया। ये फ़ैडरल बैंक उन सब बैंकों की नक़दी जमा करने का स्थान बनाये गए, जिन्होंने कि इस प्रणाली में भाग लेना स्वीकार किया। उनका प्राथमिक कार्य बैंकों के बैंक की भाँति काम करना था। इस-लिए अस्थायी कठिनाई के समय स्थानीय बैंकों की सहायता के लिए इस प्रकार एकत्रित धन का उपयोग करने की इजाज़त दी गई। मुद्रा की उपलब्धि अधिक सुलभ करने के लिए यह व्यवस्था की गई कि फ़ैडरल रिज़र्व बैंक बाज़ार की माँग पूरी करने के लिए नोट जारी कर दिया करे। इस अवस्था का निरीक्षण एक फ़ैडरल रिज़र्व बोर्ड के हाथ में रखा गया।

अगला महत्त्वपूर्ण कार्य ट्रस्टों को नियमित करना था। अनुभव से ज्ञात हो चुका था कि यह नियन्त्रण पद्धति रेलों के इण्टर स्टेट कॉमर्स कमीशन से मिलती-जुलती होनी चाहिए।

१८९३ में यूनाइटेड स्टेट्स का २२ वाँ प्रेज़िडेण्ट ग्रोवर क्लीवलैण्ड अपने पद की शपथ लेते हुए। उसके दोनों कार्य-काल सिविल सर्विस में सुधार, रेलरोडों की कुप्रथाओं के निवारण और ऊँचे तट-करों में परिवर्तन के लिए विख्यात हैं।





थियोडोर रूज़वेल्ट, यूनाइटेड स्टेट्स का २६वाँ प्रेज़िडेण्ट। उसकी गणना देश के अत्यन्त आकर्षक और स्फूर्तिवान् ऐतिहासिक व्यक्तियों में की जाती है। उसने बड़े-बड़े व्यापारिक संगठनों, रेल-रोडों और भूमि-रक्षा की पद्धतियों में सुधार पर बहुत ध्यान दिया।

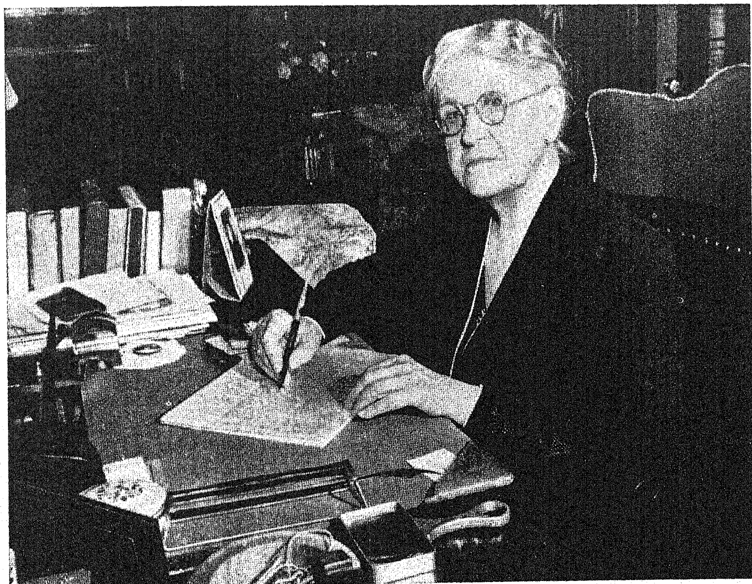
इसलिए कौर्पोरेशनों की बुराइयों की जाँच करने का काम एक फ़ैडरल ट्रेड कमीशन को सौंपा गया। उसे अधिकार दिया गया कि वह स्टेटों के मध्य व्यापार में "प्रतिस्पर्धा के अनुचित साधनों" को रोक सकता है। एक अन्य क़ानून क्लेटन ऐण्टि-ट्रस्ट ऐक्ट द्वारा कौर्पोरेशनों की ऐसी अनेक कार्रवाइयाँ रोकी गईं—एकही डाइरेक्टर-मण्डल का कई कम्पनियों में होना, ग्राहकों के हाथ माल बेचते हुए मूल्य में भेद-भाव और एक ही कौर्पोरेशन द्वारा उसी प्रकार के अन्य कौर्पोरेशनों के हिस्सों का स्वामित्व।

मजदूरों और किसानों को भी भुलाया नहीं गया। एक फ़ैडरल फ़ार्म लोन ऐक्ट द्वारा किसानों को सस्ती ब्याज-दर पर ऋण देने की व्यवस्था की गई। क्लेटन ऐक्ट में एक नियम यह भी रखा गया कि मजदूरों के झगड़ों में अदालतों से इञ्जंक्शन न लिया जाय। १६१५ का सीमैन्स ऐक्ट समुद्र में और झीलों तथा नदियों में चलने वाले जहाजों के कर्मचारियों के कार्य और जीवन की दशाएँ सुधारने के लिए बनाया गया। १६१६ में फ़ैडरल वर्किंगमैन्स कम्पैन्सेशन ऐक्ट पास करके काम करते हुए असैनिक सेवाओं के कर्मचारियों की स्थायी शारीरिक असमर्थता हो जाने पर उन्हें भत्ता देने की व्यवस्था की गई। उसी वर्ष ऐडम्सन ऐक्ट पास करके रेलवे मजदूरों के लिए आठ घण्टे का दिन नियत किया गया।

इन सुधारों से उन लोगों की विचार-धारा का परिचय मिलता है जो कि अपना नेता प्रेजिडेण्ट विल्सन को मानते थे। यद्यपि अमेरिकन प्रेजिडेण्टों में वह एक उल्लेखनीय व्यक्ति था परन्तु उसमें उन प्रभावपूर्ण गुणों का अभाव था जो प्रतिस्पर्धापूर्ण राजनीति के कठिन क्षेत्र में सफलता के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक होते हैं। विल्सन राजनीतिक विचारधाराओं का एक विद्यार्थी और विचारक था। राजनीतिक

विज्ञान पर उसके लेख वस्तुतः अमेरिका में इस विषय के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। विल्सन संसार का निरीक्षण असाधारण मानसिक तटस्थता से करता था। वह एक तत्त्व-दर्शी विद्यार्थी की तरह घटनाओं के मूलकारणों के जानने और पथ-प्रदर्शक सिद्धान्तों की खोज करने का प्रयत्न करता था। जनता का उसमें विश्वास उसकी निःस्वार्थता और तीक्ष्ण बुद्धि के कारण था, उसके व्यक्तित्व के प्रति लगाव के कारण नहीं, यद्यपि उसके निकटवर्ती लोग उसे बहुत प्रेम करते थे। इतिहास में विल्सन का मूल्य उसकी विद्वत्ता अथवा सामाजिक सुधार के लिए उसके उत्साह से नहीं, अपितु उस विचित्र भाग्य चक्र से लगाया जाता है जिसने कि उसको युद्ध-कालिक प्रेज़िडेण्ट और प्रथम विश्व-युद्ध की बाद की दुःसाध्य शान्ति के निर्माता के स्थान पर ले जाकर बिठा दिया था। विल्सन के द्वितीय कार्यकाल में जो प्रबल शक्तियाँ प्रकट हुईं उनके कारण अमेरिकन राष्ट्र में मौलिक परिवर्तन हो गए। अमेरिका को प्रथम बार संसार की एक महाशक्ति के रूप में जिम्मेदारियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

कैरी चैपमैन कैट ने अमेरिकन स्त्रियों को मताधिकार दिलाने का आन्दोलन १८६० से निरन्तर जारी रखा। उसके प्रयत्न के ही परिणामस्वरूप १९२० में संविधान में संशोधन करके स्त्रियों को मताधिकार प्रदान किया गया।



अमेरिका और आधुनिक संसार

"संसार के स्वतन्त्र राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हमारी सहायता चाहते हैं।"
—हैरी एस० ट्रूमैन,
कांग्रेस के नाम सन्देश, १२ मार्च, १९४७

१९१४ में युद्ध भड़क उठने के समाचार से अमेरिका की जनता को भारी धक्का लगा। प्रारम्भ में तो युद्ध दूर प्रतीत हो रहा था, किन्तु उसमें प्रचण्डता आने के थोड़े दिनों बाद ही अमेरिकन नेताओं और जनसाधारण को यह अनुभव होने लगा कि उनके आर्थिक और सामाजिक जीवन पर उसका अधिकाधिक प्रभाव पड़ रहा है। अमेरिकन उद्योग, जो कुछ मन्द पड़ गया था, १९१५ में पश्चिमी मित्रों की युद्ध-सामग्री की माँग के कारण फिर से फूलने-फलने लगा। दोनों पक्षों के प्रचार से जनता का क्रोध भड़क उठा और खुले समुद्र में अमेरिकन जहाजों के विरुद्ध की गई ब्रिटिश और जर्मन कार्रवाइयों का विल्सन सरकार ने तीव्र प्रतिवाद किया। परन्तु ज्यों-ज्यों मास बीतते गए, त्यों-त्यों अमेरिकन और जर्मन नेताओं के झगड़े अधिकाधिक सामने आने लगे।

फ़रवरी १९१५ में जर्मनी के सैनिक नेताओं ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश द्वीपों के आसपास के समुद्र में किसी भी व्यापारिक जहाज को नष्ट कर देंगे। प्रेजिडेंट विल्सन ने चेतावनी दी कि यूनाइटेड स्टेट्स खुले समुद्र पर व्यापार के परम्परागत अधिकार को छोड़ना नहीं चाहता और घोषणा की कि अमेरिका के जहाजों अथवा मनुष्यों के नाश के लिए यह राष्ट्र जर्मनी को ही एकमात्र उत्तरदायी ठहराएगा। जर्मन सरकार ने उत्तर दिया कि मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी के गिर्द घेरा डाल रखा है। पनडुब्बी के खुले प्रयोग से भी युद्ध करने का यह ढंग (घेराबन्दी) अधिक निर्दयतापूर्ण है। जहाँ घेराबन्दी से असंख्य नगर वासियों को भूखों मरने का डर है, वहाँ पनडुब्बी की लड़ाई का प्रभाव उन्हीं पर पड़ता है जो जान-बूझकर अटलांटिक में प्राणों पर खेलना चाहते हैं। पनडुब्बी की लड़ाई चमत्कार दिखा रही थी; जब कि घेराबन्दी का प्रभाव धीमा और शान्त था। जब १९१५ के वसन्त में ब्रिटेन का जहाज लुसिटैनिया डुबो दिया गया, तब अमेरिका की जनता के क्रोध का ठिकाना न रहा। इस जहाज में १२०० आदमी डूब गए, जिनमें १२८ अमेरिकन भी थे।

युद्धकालीन क्षोभ के कारण प्रेजिडेंट विल्सन निरन्तर एक ही नीति का अनुसरण नहीं कर सका। जैफ़र्सन के समय से लेकर उस समय तक किसी अन्य प्रेजिडेंट ने शान्ति के कार्य के लिए इतनी अधिक लगन नहीं दिखाई थी, जितनी विल्सन ने। परन्तु उसे यह भी विश्वास हो गया था कि जर्मन सफलता का अर्थ होगा—यूरोप में सैनिक शक्ति की विजय। इस से न केवल अमेरिका की सुरक्षा ही संकट में पड़ जायगी, अपितु विश्व-शान्ति का उसका स्वप्न भी अमूर्त ही रह जाएगा। पनडुब्बी की क्रूरतापूर्ण लड़ाई से यह भय और पक्का हो रहा था परन्तु ४ मई, १९१६ को जब जर्मन सरकार ने यह वचन दिया कि आज से पनडुब्बी की लड़ाई अमेरिका की माँग के अनुसार सीमित कर दी जायगी, तब यह जान पड़ने लगा कि पनडुब्बी की समस्या हल हो गई है। पार्टी के इस नारे के बल पर ही कि "उसने हमें युद्ध से बाहर रखा" विल्सन उस वर्ष के चुनाव में विजयी होकर दूसरी बार प्रेजिडेंट बन गया। जनवरी, १९१७ में सेनेट के सामने भाषण देते हुए उसने 'विजय-विहीन शान्ति' की माँग की और घोषणा की कि ऐसी शान्ति ही स्थायी रह सकती है।

नौ दिन पीछे जर्मन सरकार ने सूचना दी कि पनडुब्बी की व्यापक लड़ाई फिर शुरू की जायगी। इस नोटिस से यूनाइटेड स्टेट्स में समझा गया कि युद्ध अनिवार्य है। अमेरिका के पाँच जहाज डुबोए जा चुके थे। २ अप्रैल १९१७ को विल्सन ने कांग्रेस से युद्ध-घोषणा करने की प्रार्थना की। तुरन्त

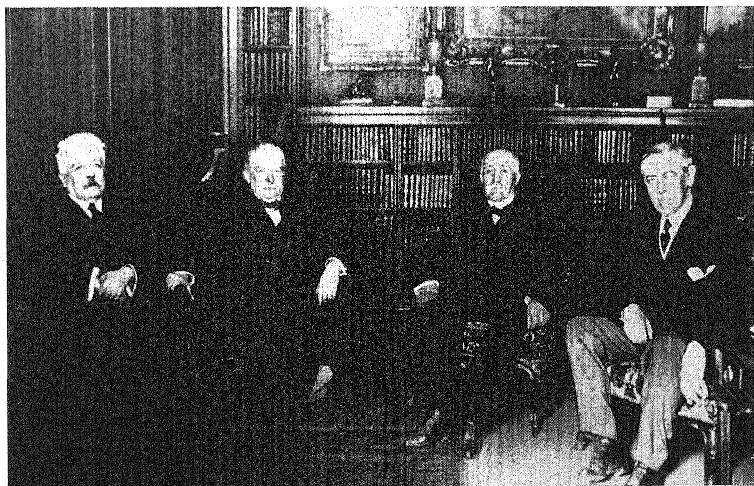
ही अमेरिका की सरकार समस्त सैनिक और असैनिक साधनों को युद्ध के लिए संगठित करने में जुट गई। शीघ्र ही अमेरिका के बन्दरगाहों से एक के बाद दूसरा बेड़ा रवाना होने लगा और अक्टूबर १९१८ तक फ्रांस में अमेरिकन सैनिकों की संख्या १७,५०,००० से ऊपर पहुँच गई।

सर्वप्रथम अमेरिका की नौ-शक्ति ने ही पनडुब्बी की नाकाबन्दी तोड़ने में ब्रिटेन की सहायता करने का कठिन काम किया। तदनंतर १९१८ की गरमियों में जर्मनों के चिर-प्रतीक्षित आक्रमण में अमेरिकन स्थल-सेना ने निर्णायक भाग लिया। नवम्बर में १० लाख से अधिक अमेरिकन सैनिकों ने म्यूज आर्गोन के विशाल क्षेत्र पर आक्रमण करने में महत्त्व-पूर्ण भाग लेकर जर्मनों की हिंडनबर्ग लाइन को, जिस पर उन्हें नाज था, तोड़कर रख दिया।

युद्धकालीन नेता के तौर पर विल्सन बहुत ही प्रभाव-शाली था। मित्रराष्ट्रों के युद्ध के उद्देश्यों की सजीव परिभाषा करके युद्ध को शीघ्र समाप्त करने में उसने बहुत बड़ी सहायता की। आरम्भ से ही उसने इस बात पर बल दिया कि यह युद्ध जर्मन जनता के विरुद्ध नहीं, अपितु उनकी स्वेच्छाचारी सरकार के विरुद्ध किया जा रहा है। जनवरी १९१८ में उसने सेनेट के सामने न्याययुक्त शान्ति के आधार रूप अपने सुप्रसिद्ध १४ सूत्र रखे। उसने अन्तर्राष्ट्रीय गुप्त समझौतों के परित्याग की, सब राष्ट्रों द्वारा समुद्र का उपयोग करने की स्वतन्त्रता की गारण्टी की, राष्ट्रों के मध्य आर्थिक बाधाएँ हटाए जाने की, राष्ट्रों की सैनिक-शक्ति कम करने की और उपनिवेशों की जनता के हितों का ध्यान रखते हुए उनके बारे में निर्णय करने की माँग की। अन्य सूत्रों का उद्देश्य यूरोप के राष्ट्रों को स्वतन्त्रता की रक्षा का तथा अबाधित आर्थिक विकास का विश्वास दिलाना था। विल्सन का चौदहवाँ सूत्र 'राष्ट्र-संघ का निर्माण' ही शान्ति का मुख्य आधार था। इसका लक्ष्य था "छोटे बड़े राज्यों को समान राजनीतिक स्वतन्त्रता और राष्ट्र की अखंडता की गारंटी दिलाना।"

१९१८ की गरमियों में जब जर्मन सेनाएँ पीछे धकेली

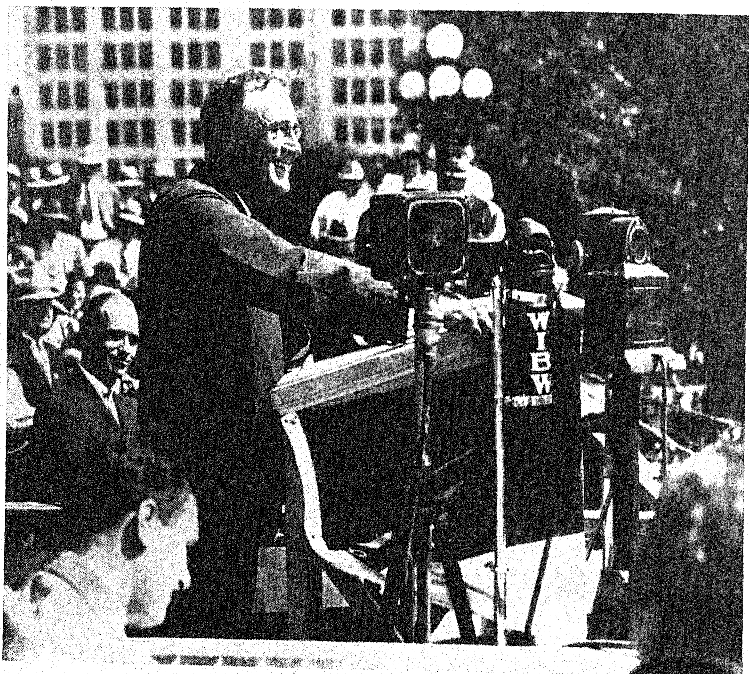
१९१९ के पेरिस शान्ति सम्मेलन में एकत्र प्रतिनिधियों ने सन्धि करने का अधिकार ४ व्यक्तियों को प्रदान कर दिया था: ये हैं (बाएं से दाएं) ऑर्लैंण्डो (इटली), लॉयड जॉर्ज (ब्रिटेन), क्लेमान्शो (फ्रान्स) और विल्सन (यूनाइटेड स्टेट्स)।



जा रही थीं, तब जर्मन सरकार ने विल्सन के चौदह सूत्रों के आधार पर संधि करने की अपील की। प्रेजिडेंट ने मित्रराष्ट्रों से सलाह की और उन्होंने जर्मन-प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस आधार पर ११ नवम्बर को अस्थायी संधि हो गई।

विल्सन को आशा थी कि अन्तिम सन्धि पारस्परिक समझौते से होगी, परन्तु उसे भय था कि युद्ध के कारण क्रुद्ध मित्रराष्ट्र कठोर माँगें करेंगे। उसका विचार ठीक निकला। उसे निश्चय हो गया कि विश्व-शान्ति की उसकी सबसे बड़ी आशा अर्थात् राष्ट्रसंघ की स्थापना तब तक पूरी नहीं हो सकती, जब तक मित्रराष्ट्रों की मांगों के सम्बन्ध में रिआयतें न की जायँ। इसलिए उसने पेरिस की शांति-वार्ता में एक-एक करके सभी सूत्र सौदे में खो दिये। हाँ, कुछ बातों के न होने देने में विल्सन अवश्य सफल रहा—उसने इटली को फ्यूम न देने दिया, समूचे राइनलैंड को जर्मनी से अलग करने की क्लेमान्शो की मांग का प्रतिरोध किया, फ्रांस में सार का प्रदेश न मिलने दिया और जर्मनी से युद्ध का सारा व्यय वसूल करने के प्रस्ताव को विफल कर दिया। अन्त में उसके रचनात्मक प्रस्तावों में केवल लीग की

फ्रैंकलिन डिलानो रूज़वेल्ट १९३२ में प्रेज़िडेण्ट के चुनाव का आन्दोलन करते हुए मध्य-पश्चिमी स्टेट कैन्सास में किसानों से 'न्यू डील' की प्रतिज्ञा कर रहा है। वह अपने वैयक्तिक आकर्षण और उदार नीति के कारण चुनाव जीत गया।



स्थापना का ही प्रस्ताव रह गया और इस प्रस्ताव पर भी विल्सन को एक कठोर व्यंग्य का सामना करना पड़ा क्योंकि उसके देश ने लीग की सदस्यता भी ठुकरा दी। संकट के समय में उसकी राजनीतिक सूझ ने भी उसका साथ न दिया। उससे यह बड़ी भारी भूल हो गयी कि वह शान्ति-कमीशन में अपने विरोधी दल—रिपब्लिकन पार्टी—के एक भी प्रमुख सदस्य को पेरिस नहीं ले गया। वापस आकर उसने यह अपील की कि अमेरिका को लीग में शामिल रहना चाहिए किन्तु उसने वे सामान्य सुझाव भी ठुकरा दिये जिनका मान लेना रिपब्लिकन बहुमत वाली सेनेट से संपुष्टि पाने के लिये आवश्यक था। वाशिंगटन में हारकर उसने अपना मामला जनता के सामने रखने के लिए देश भर का दौरा किया और उत्तम वाक्पटुता से अपने पक्ष का समर्थन किया। सन्धि कराने के प्रयत्नों और अपने पद की युद्धकालीन व्यस्तता से श्रान्त-क्लान्त विल्सन प्युएब्लो (कोलोराडो) में २५ सितम्बर १६१६ को एक ऐसे रोग का शिकार हो गया जिससे वह कभी मुक्त नहीं हो सका। मार्च १६२० में सेनेट ने अपना अन्तिम मत देकर 'वर्साई की सन्धि' और 'लीग-निर्णय' दोनों को ठुकरा दिया। उस दिन से यूनाइटेड स्टेट्स पृथकता की नीति अधिकाधिक अपनाता गया। विल्सन के साथ ही आदर्शात्मक मनोवृत्ति का अंत हो गया और उदासीनता-युग शुरू हुआ।

यद्यपि ओहायो के गवर्नर, जेम्स एम० कॉक्स ने विल्सन शासन में प्रमुख भाग नहीं लिया था, तथापि १६२० के प्रेजिडेन्ट के चुनाव में विल्सन की पार्टी ने उसे ही मनोनीत कर दिया। रिपब्लिकनों द्वारा मनोनीत वारेन जी० हार्डिंग की भारी विजय ने यह सिद्ध कर दिया कि जनसाधारण विल्सन की नीति के विरोधी हैं। यद्यपि हार्डिंग ने चुनाव-संघर्ष के समय लीग के बारे में अपना स्पष्ट मत प्रकट नहीं किया था, तथापि उसकी तथा उसके अन्य रिपब्लिकन् उत्तराधिकारियों की विदेश-नीति सामान्यतया पृथकता की ही रही।

यह पहला चुनाव था जिसमें राष्ट्र-भर की स्त्रियों ने प्रेजिडेन्ट-पद के उम्मीदवार के लिए मत दिए। युद्धकाल में विल्सन ने स्त्रियों को मताधिकार दिये जाने के लिए संघीय संविधान में संशोधन करने की जोरदार अपील की थी और युद्ध-कार्यों में अमेरिकन स्त्रियों के सहयोग ने उनकी नागरिक क्षमताओं तथा मताधिकार दोनों को नाटकीय रूप दे दिया। कांग्रेस ने जून १६१६ में उन्नीसवां संशोधन राज्यों के समक्ष पेश किया। राज्यों ने शीघ्र ही अपनी स्वीकृति दे दी। फलतः स्त्रियाँ भी अगले वर्ष के निर्वाचन में मतदान कर सकीं।

देश के शहरी क्षेत्र तो प्रायः समृद्ध थे। इसी समृद्धि से पुष्ट हुई अमेरिकन सरकार की नीति तीसरे दशक में मुख्यतः अनुदार रही। यह इस विश्वास पर आधारित थी कि यदि सरकार निजी व्यापार को पनपाने के लिए भरसक यत्न करे तो धीरे-धीरे समृद्धि सब वर्गों में फैल जायगी।

इस प्रकार रिपब्लिकन नीति का उद्देश्य अमेरिकन उद्योग के लिए अत्यधिक अनुकूल वातावरण पैदा करना था। १६२२ और १६३० के तटकर ऐक्टों ने करों को और ऊँचा कर दिया। इससे अमेरिकन निर्माताओं को देश के बाजार में एक के बाद दूसरे क्षेत्र में एकाधिकार प्राप्त हो गया। इनमें दूसरे ऐक्ट अर्थात् १६३० के स्मूट हौले ऐक्ट के अनुसार दरें इतनी ऊँची हो गयी थीं कि एक हजार से अधिक अमेरिकन अर्थ-शास्त्रियों ने प्रेजिडेण्ट हूवर से प्रार्थना की कि वे इसे वीटो कर दें क्योंकि दूसरे राष्ट्र भी इस ऐक्ट के कारण उत्तेजित होकर बदले की कार्रवाई करेंगे और यह ऐक्ट महँगा पड़ेगा। बाद की घटनाओं से उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। संघीय शासन ने भी कर घटाने का कार्यक्रम आरम्भ कर दिया। वित्त मन्त्री एंड्रू मैलन का विश्वास था कि ऊँचे आय-कर के कारण धनी लोग नये-नये उद्योगों में धन नहीं लगाएँगे। कांग्रेस ने १६२१ और १६२६ के मध्य कई एक क़ानून बनाकर उसके इन प्रस्तावों का समर्थन किया कि युद्धकालीन आय-कर, अतिरिक्त लाभ-कर और कॉर्पोरेशन-कर या तो सर्वथा हटा दिए जायँ या बहुत कम कर दिये जायँ।

तीसरे दशक-भर निजी व्यापार को अच्छा प्रोत्साहन मिला। युद्धकाल में राष्ट्र की रेलें सरकार के कठोर नियन्त्रण में थीं। वे १६२० के ट्रांसपोर्टेशन ऐक्ट के अनुसार फिर से कम्पनियों के हवाले कर दी गई थीं। व्यापारी जहाज जो १६१७ से १६२० तक सरकार की मिलकियत थे और सरकार द्वारा ही चलाए जा रहे थे, अब ग़ैर-सरकारी लोगों के हाथ बेच दिये गए। निर्माण-ऋण, डाक ले जाने के लाभदायक ठेके और अन्य प्रकार की परोक्ष आर्थिक सहायता भी दी गई। सम्भवतः निजी व्यापार को प्रमुख सहारा विद्युत्-शक्ति के क्षेत्र से प्राप्त हुआ। सरकार ने युद्धकाल में नाइट्रेट के दो बड़े कारखाने मसल शोल्ज पर लगाए। इस नदी पर कई बाँध बनाये

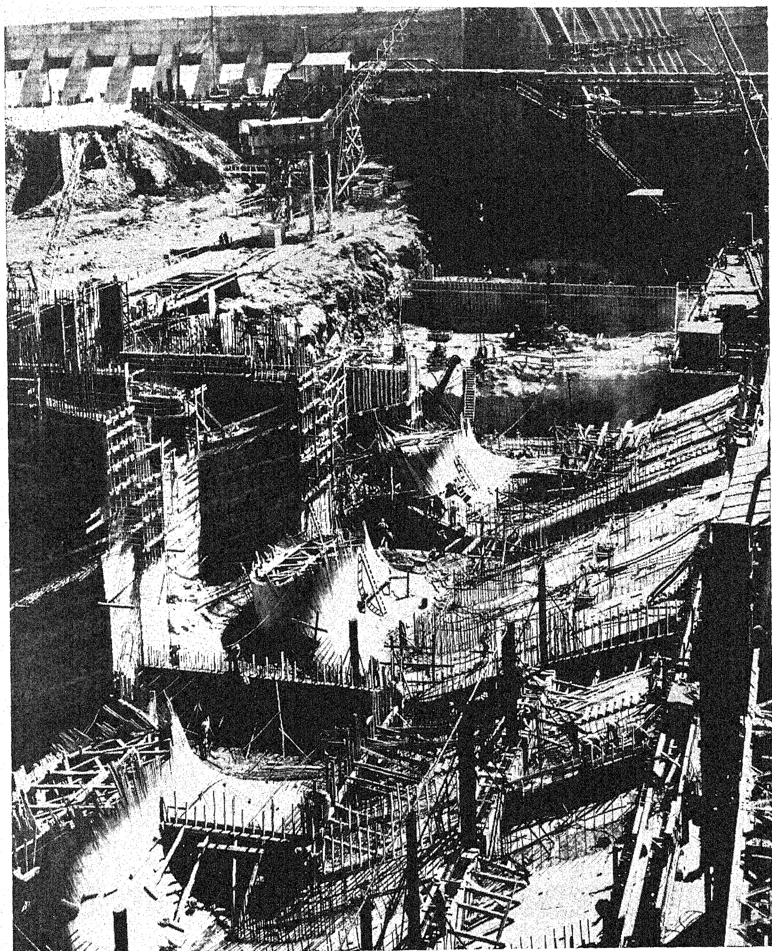
गए जहाँ बिजली पैदा की जा सके। १६२८ में कांग्रेस की दोनों सभाओं ने सार्वजनिक उद्योग के लिए विद्युत्-शक्ति के उत्पादन तथा विक्रय का कानून पास किया, परन्तु प्रेजिडेण्ट हूवर ने कटु आलोचना के साथ उसे अस्वीकार करते हुए लौटा दिया। बाद को फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट के शासन-काल में मसल शोल्ज़ योजना को टेनेसी घाटी योजना में परिणत कर दिया गया।

इसी समय किसानों की ओर से रिपब्लिकन शासन की अधिकाधिक आलोचना होती रही, क्योंकि तीसरे दशक की सुख-समृद्धि में किसानों को सबसे कम भाग मिला था। १६०० से १६२० तक का काल कृषि की सामान्य समृद्धि और खेती की बढ़ती क़ीमतों का था। युद्धकाल में अमेरिकन कृषि-उत्पादन की अपूर्व माँग से कृषि की पैदावार को असाधारण प्रोत्साहन मिला था। जिस भूमि पर पहले कभी खेती नहीं हुई थी या जो चिरकाल से अनजोती पड़ी थी, वह भी जोत में ले ली गई थी। अमेरिकन खेतों के दाम दुगने और कई क्षेत्रों में तिगुने हो जाने के कारण जिस माल और जिन मशीनों को कृषक पहले कभी नहीं खरीद सके थे, अब खरीदने लगे थे। परन्तु १६२० के अन्त में युद्धकालीन माँग के एकदम बन्द हो जाने से व्यापार की दृष्टि से की जाने वाली खेती लाभदायक नहीं रही। १६३०-३६ की मन्दी ने इस गम्भीर स्थिति को और भी अधिक गम्भीर बना दिया।

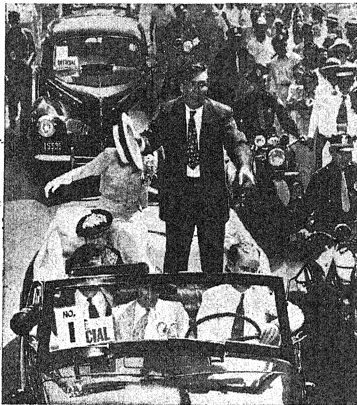
अमेरिकन कृषि में मन्दी आने के अनेक कारण थे, परन्तु उनमें सबसे प्रमुख कारण विदेशी मण्डियों का हाथ से निकल जाना था। यूनाइटेड स्टेट्स अपने आयात-तटकर के कारण जिन क्षेत्रों से माल नहीं खरीद रहा था, उन क्षेत्रों में अमेरिकन किसान अपनी पैदावार आसानी से नहीं बेच सकते थे। आर्जेण्टीना और आस्ट्रेलिया के पशुपालकों की, कनाडा और पोलैंड के शूकर-माँस तैयार करने वालों की, आर्जेण्टीना, आस्ट्रेलिया, कनाडा, रूस और मंचूरिया के अनाज पैदा करने वालों की, तथा भारत, चीन, रूस और ब्राजील के रूई पैदा करने वालों की पैदावारें अमेरिकन निर्यात का स्थान ले रही थीं। संसार के बाजार धीरे-धीरे अमेरिका के लिए बन्द हो रहे थे।

तीसरे दशक में एक और नई बात हुई। विदेशियों के आगमन पर प्रतिबन्ध लगाने से अमेरिका की नीति में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन की सूचना मिली। बीसवीं शताब्दी के पहले पन्द्रह वर्षों में १,३०,००,००० से ऊपर लोग यूनाइटेड स्टेट्स में आए। कुछ काल से निर्बाध आगमन के विरुद्ध जनता की भावना तीव्र होती जा रही थी। अतः कई एक कानूनों द्वारा, जिनका अन्तिम रूप १६२४ का "कोटा लॉ" था, आगन्तुकों की वार्षिक संख्या १,५०,००० तक सीमित कर दी गई। इस क़ानून के अनुसार विदेशों से चुने हुए आगन्तुक आने लगे। यह प्रवाह अब उत्तरी तथा पश्चिमी यूरोप के स्थान पर अधिकतया दक्षिणी और पूर्वी यूरोप से आया। क्योंकि संख्या बहुत कम कर दी गई थी, अतः विश्व-इतिहास का वह महान् जन-प्रवाह जो दूसरे देशों से यहाँ बसने के लिए तीन शताब्दियों से चला आ रहा था, रुक गया। १८२० से १६२६ तक ३,२०,००,००० से अधिक व्यक्ति यूरोप से यूनाइटेड स्टेट्स में आकर बस गये थे।

जब आगंतुकों के प्रवाह का अन्त होने लगा, तब अमेरिका से यूरोप को अल्प परिमाण में एक उल्लेखनीय निर्गमन की लहर आरम्भ हुई। वे निर्गन्तुक मनीषी एवं लेखक थे। उनकी यह यात्रा विदेश में जा बसने का आन्दोलन न होकर केवल राष्ट्रीय असफलताओं की आलोचना थी। यूनाइटेड स्टेट्स को कला और विचारशीलता के लिए उपयुक्त स्थल न समझकर और इससे असन्तुष्ट होकर वे मुख्यतया पेरिस में जा बसे। उस समय की समृद्धि ही इस आरोप को सिद्ध कर रही थी कि यूनाइटेड स्टेट्स की संस्कृति प्रायः भौतिकवादी है। कदाचित् इससे भी अधिक उत्तेजित करने वाला आरोप तो उनके प्यूरिटन-पन्थी होने का था। इस प्यूरिटन-पन्थ का चिह्न था—शराब के बनाने और बेचने का निषेध जो लगभग सौ वर्ष के आन्दोलन के बाद १६१६ में संविधान में अठारहवें संशोधन द्वारा किया गया था। निषेध के पक्षपातियों का आशय था कि इसके द्वारा अमेरिका से सुरापान-गृहों तथा मद्यपान का बहिष्कार हो जायगा, परन्तु इसके कारण हजारों अवैध सुरापान-गृह खुल गए और शराब के तस्कर व्यापारियों को लाभदायक काम मिल गया। इसके अतिरिक्त ऐसे क़ानून को, जो स्थान-स्थान पर भंग किया जा रहा हो, बनाए रखना नैतिक दृष्टि से पाखण्ड था। इसकी कड़ी आलोचना करना ही अमेरिकन साहित्य की प्रमुख विशेषता हो चुकी थी। पत्रकार तथा आलोचक एच० एल० मैंकेन, जो अमेरिकन जीवन और अमेरिकन चरित्र की दिल खोलकर निन्दा करता था, बहुत ही लोकप्रिय हो गया था। मेन स्ट्रीट और बैबिट जैसे उपन्यासों के द्वारा सिन्क्लेयर लूइस ने अमेरिका के मध्य-वर्ग के जीवन का व्यंग्यपूर्ण वर्णन करके राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत



फोर्ट लौडन बाँध का निर्माण। यह टेनेसी घाटी की विशाल योजना का ही एक भाग है। इस योजना का लक्ष्य उक्त घाटी के ४५ लाख निवासियों के लाभार्थ वेगवती टेनेसी नदी को बाँधना था।



१९४० के चुनाव में यद्यपि फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट तीसरी बार भी जीत गया, परन्तु अपने प्रतिद्वन्द्वी स्फूर्तिवान वेण्डल विल्की के कारण उसे सख्त मुक़ाबला करना पड़ा।

करने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। कितनी विडम्बना है कि अमेरिकनों द्वारा अमेरिका की ये आलोचनाएँ उसके सर्वश्रेष्ठ समृद्धि काल में की गईं। किन्तु मन्दी और उसके बाद विदेशों से आ रही सैनिकवाद और तानाशाही की विभीषिका के कारण अमेरिकी मनीषी फिर अपने देश को लौट आए और देश की मानवीय और लोकतन्त्री परम्पराओं और उसके विशाल भौतिक साधनों की ओर उनका आदर और प्रेम फिर बढ़ गया।

तीसरे दशक में ऐसा लगता था कि समृद्धि चिरकाल तक बनी रहेगी; १९२९ की पतझड़ में शेयर बाजार के एकदम गिरने के बाद भी बड़े-बड़े नेताओं की ओर से आशापूर्ण भविष्यवाणियाँ की जाती रहीं, परन्तु मन्दी शीघ्रता और दृढ़ता से बढ़ती गई; लाखों व्यक्तियों की शेयरों में लगी हुई जीवन-भर की पूँजी नष्ट हो गई; दूकानें बन्द हो गईं, कारखाने उठ गए, बैंक टूट गए और लाखों बेकार काम की खोज में निराश, मन-मारे भटकने लगे। १८७०-७९ की चिरविस्मृत मन्दी को छोड़कर ऐसी मन्दी अमेरिकन राष्ट्र ने इससे पूर्व और कभी अनुभव नहीं की थी।

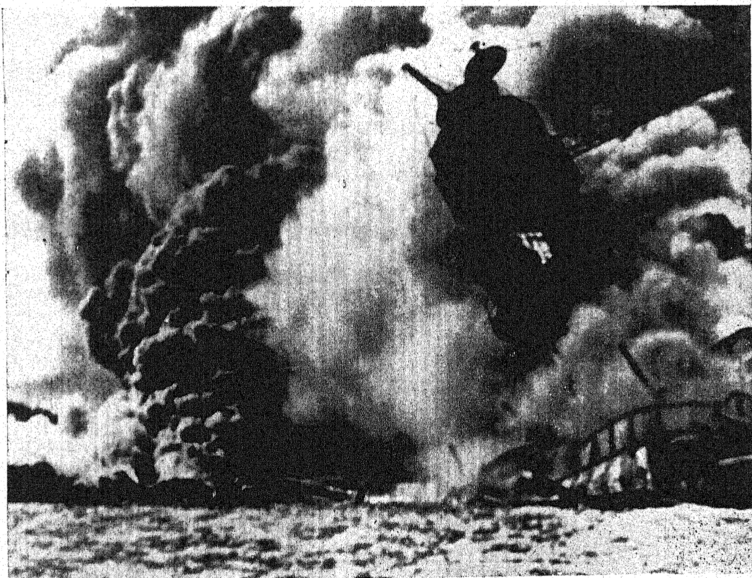
प्रारम्भिक धक्के के बाद लोग फिर से सम्भलकर ज्यों ही अपनी कठिनाइयों के कारणों की जाँच करने लगे, त्यों ही वे हानिकर प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हुईं, जो १९२०-२९ की समृद्धि के सामने उन्हें नहीं दीख पड़ी थीं। इस आपत्ति का मुख्य कारण यह था कि अमेरिकन उद्योग की उत्पादक शक्ति में और अमेरिकन जनता में उसकी खपत की सामर्थ्य में बहुत बड़ा अन्तर था। युद्धकाल में तथा उसके बाद उत्पादन विधियों में बड़े-बड़े आविष्कार हुए। फलतः अमेरिकन उद्योग का उत्पादन अमेरिकन श्रमिकों और किसानों की क्रयशक्ति से बहुत बढ़ गया। धनिकों और मध्यवर्ग के पास इतनी अधिक पूँजी थी कि सुरक्षित धन्धों में लगाने के बाद भी वह बची पड़ी थी। जिन आघातों के कारण सट्टे की कमजोर इमारत गिर पड़ी, उनमें शेयर-बाजार का एकदम गिर जाना सबसे पहला था।

१९३२ में प्रेज़िडेण्ट का चुनाव-आन्दोलन भारी मन्दी के कारणों तथा उसे दूर करने के सम्भावित उपायों के सम्बन्ध में होने वाले विवाद के रूप में सामने आया। हर्बर्ट हूवर ने, जो दुर्भाग्य से शेयर-बाजार की गिरावट से केवल आठ मास पूर्व ही प्रेजिडेण्ट बना था, उद्योग को उचित गति से फिर चालू करने का अनथक प्रयत्न किया, परन्तु उसे ये प्रयत्न संघीय सरकार की कर्तव्योचित परम्परा की सीमा के अन्दर रहकर करने पड़े, इसलिए वह कोई प्रभावशाली पग न उठा सका। विरोध में डेमोक्रैट फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट ने, युक्तियाँ दीं कि अमेरिकन अर्थव्यवस्था की त्रुटियों के कारण ही मन्दी पैदा हुई थी और ये त्रुटियां तीसरे दशक की रिपब्लिकन नीतियों के कारण और भी गम्भीर हो गई थीं। प्रेजिडेण्ट हूवर ने इसके उत्तर में कहा कि अमेरिकन अर्थव्यवस्था का आधार ठोस है, परन्तु विश्वव्यापी मन्दी के प्रभाव से ही वह अस्तव्यस्त हुई है। इस विश्वव्यापी मन्दी के कारणों को हमें विश्व-युद्ध में खोजना होगा। हूवर की राय थी कि स्वाभाविक उपायों का ही सहारा लेकर अर्थ-व्यवस्था को सुधरने दिया जाय, परन्तु रूजवेल्ट का मत था कि संघीय सरकार को चाहिए कि वह अपने अधिकार को साहसपूर्ण परीक्षणात्मक उपायों के लिए काम में लाए। चुनाव में रूजवेल्ट की अत्यधिक वोटों से विजय हुई।

सामयिक समस्याओं का सामना नये प्रेजिडेण्ट ने पूर्ण विश्वास और हँसी-खुशी से किया। इससे लोग शीघ्र ही उसके

झण्डे-तले आ खड़े हुए। उसे पदारूढ़ हुए थोड़ा ही समय हुआ था कि न्यू डील, जो सुधारों का एक अद्भुत गोरखधन्धा था, पर्याप्त उन्नति कर चुका था। कुछ सुधार पचास वर्षों से किए जा रहे थे। वस्तुतः उन्हीं में तीव्रता लाने के लिए यह कार्य किया गया। यह कहा जा सकता है कि न्यू डील ने यूनाइटेड स्टेट्स में एक तरह से उन्हीं सुधारों का सूत्रपात किया जिन से अँग्रेज़, जर्मन, फ्राँसीसी और स्कैंडेनेवियाई एक पीढ़ी से अधिक से परिचित थे। इसके अतिरिक्त यह (डील) उदासीन मनोवृत्ति के त्याग की वर्षों से चली आ रही प्रवृत्ति का चरम रूप था। इस प्रवृत्तिके मूल चिह्न १८८०-८६ के रेल-नियमों और विल्सन-थियोडोर रूज़-वेल्ट काल के राष्ट्रीय एवं स्टेट-सम्बन्धी सुधार-कानूनों की बाढ़ में दिखाई पड़ते हैं। इसमें नवीनतम बात यह थी कि जो काम अन्यत्र कई पीढ़ियों में किया गया था, वह इसके द्वारा बहुत वेग से सम्पादित हुआ। न्यू डील के अनेक सुधारों के मसविदे उतावली से तैयार किये गए थे और उन पर अमल भी नरमी से किया गया था; उनमें कुछ ऐसे थे जो वस्तुतः परस्पर-विरोधी थे। यद्यपि न्यू डील के निर्णय और उस पर अमल करने में बहुत शीघ्रता बरती गई, किन्तु न्यू डील के क्रियान्वित किये जाने के काल में सार्वजनिक आलोचना और विवाद करने की लोकतन्त्री विधि में न तो कोई बाधा ही डाली गई और न उस पर कोई प्रतिबन्ध ही लगाया गया। सच तो यह है कि उसके शासन में प्रत्येक नागरिक की दिल-चस्पी अधिक हो गई।

इधर तो वाशिंगटन डि० को० में शान्ति की बातचीत चल रही थी और उधर ७ दिसम्बर १९४१ को जापानियों ने हवाई में पर्ल के समुद्री अड्डे पर अकस्मात् वायु-आक्रमण करके यूनाइटेड स्टेट्स के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इस घटना से १३ करोड़ अमेरिकनों ने मिलकर एकवर्गाधिकारवाद की विभीषिका को समाप्त कर डालने का दृढ़ संकल्प कर लिया।





जनवरी १६४३ में कैसाब्लांका में यू० स्टे० के प्रेज़िडेण्ट फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट और इंग्लैंड के प्रधान मन्त्री विन्सटन चर्चिल की कान्फ्रेन्स हुई। उसके पश्चात् वे प्रेस के प्रतिनिधियों से मिल रहे हैं।

जब रूजवेल्ट ने प्रेज़िडेण्ट-पद की शपथ ली तब राष्ट्र की बैंकिंग-प्रणाली तथा उधार-पद्धति दोनों ही निकम्मी-सी थीं। व्यापार के लिए अच्छे-अच्छे सुदृढ़ बैंक फिर से खोले जाने लगे। माल का मूल्य बढ़ाने और देनदारों की कुछ सहायता करने के लिए परिमित मुद्रास्फीति की नीति का अनुसरण किया गया। नई सरकारी एजेन्सियों द्वारा उद्योग और कृषि को उधार देने की अधिक उदार सुविधाएँ दी गईं। सेविंग्ज बैंक में जमा ५००० डालर तक की रक़म बीमा द्वारा सुरक्षित कर दी गई। शेयर-बाजार में सिक्योरिटियाँ बेचने की पद्धति पर कठोर नियम लागू किये गए।

कृषि के क्षेत्र में दूरव्यापी सुधार किए गये। तीन वर्ष पीछे जब सुप्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) ने ऐग्रिकल्चरल ऐडजस्टमेण्ट ऐक्ट को (जो कांग्रेस द्वारा १६३३ में पास किया गया था) असांविधानिक बतलाकर रद्द कर दिया, तो कांग्रेस ने किसानों की सहायता के लिए एक अधिक प्रभावशाली क़ानून बनाया। इसके अनुसार सरकार ने उन किसानों को नक़द सहायता देने की व्यवस्था की, जो अपनी भूमि के कुछ भाग में भूमि-संरक्षण करने वाली फसलें बोयें या कार्यक्रम के दूरव्यापी कृषि-लक्ष्यों की पूर्ति में सरकार से सहयोग करें। १६४० तक लगभग साठ लाख किसान इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो चुके थे और उन्हें संघ से सहायता मिल रही थी। इसी तरह इस नये ऐक्ट के अनुसार फ़ालतू फ़सल पर ऋण देने की, गेहूँ का बीमा करने की और राष्ट्र तथा कृषक दोनों के लिए एक सुनियोजित "अक्षय अन्न-भण्डार" की व्यवस्था की गई। इन उपायों से पैदावार का मूल्य बढ़ गया और किसान की आर्थिक स्थिरता सम्भव प्रतीत होने लगी।

पट्टे पर ज़मीन जोतने वालों को भी स्वतन्त्र किसान बनाने का यत्न किया गया। संघीय सरकार ने पट्टेदारों को खेत खरीदने के लिए आसान शर्तों पर आर्थिक सहायता दी। उसने भूमि पर लिये ऋण को अदा करने के लिए भी धन

दिया और इस तरह भूमि बन्धक रखने वालों की सहायता की। नये बने कमोडिटी क्रेडिट कारपोरेशन द्वारा किसानों को सीधे ऋण दिया जाने लगा। इसी समय सैक्रेटरी ऑव् स्टेट कौर्डेल हल के अधीन परस्पर आदान-प्रदान के समझौतों के द्वारा कुछ विदेशी मण्डियों पर फिर से अधिकार करने का यत्न किया गया। इन समझौतों का लक्ष्य उस आर्थिक निरंकुशता को तोड़ना था, जिसकी ओर यूनाइटेड स्टेट्स उच्च तटकरों के समय में झुकता जा रहा था। जून १९३४ के ट्रेड ऐग्रीमैण्ट्स ऐक्ट की धाराओं के अधीन सेक्रेटरी हल ने कैनाडा, क्यूबा, फ्रांस, सोवियत यूनियन और बीसेक अन्य देशों के साथ राष्ट्रहित में बिना शर्त पारस्परिक व्यापार-विनिमय की सन्धियाँ कीं। एक वर्ष के अन्दर अमेरिका का व्यापार बहुत कुछ सुधर गया और १९३९ में कृषि की आय सात वर्ष पहले की अपेक्षा दुगनी से अधिक हो गई।

रूजवेल्ट के शासन-काल के पहले वर्षों में उद्योग के लिए बनाया गया न्यू डील कार्यक्रम परीक्षणात्मक दशा में से गुजरा। १९३३ में नैशनल रिकवरी ऐडमिनिस्ट्रेशन स्थापित किया गया, जिसका आधार यह विचार था कि उत्पादन को सीमित करके तथा ऊँचे मूल्य नियत करके संकट टाला जा सकता है; परन्तु मई १९३५ में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा उक्त संस्था को असांविधानिक घोषित किये जाने से पूर्व ही लोग इसे असफल समझने लगे थे। इस समय तक शासन की अन्य नीतियों से प्रेरणा पाकर पूर्वस्थिति प्राप्त करने के लिए आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था। शासक-वर्ग ने अपनी नीति शीघ्र

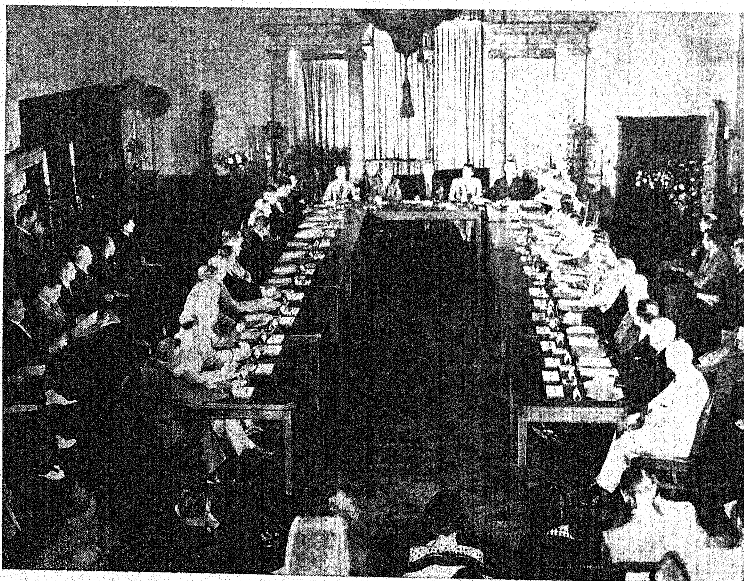
कई मास लगातार तैयारी के बाद फ्रान्स के तट पर ६ जून १९४४ को चढ़ाई की गई। प्रारम्भिक ध्येय कान, कैराँटाँ और शेरबूर थे।



ही बदल दी और शासन के कार्य इस विचार के आधार पर होने लगे कि कुछ व्यापारों में मूल्य-निर्धारण से राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था को हानि हुई है और इससे पूर्वस्थिति प्राप्त करने में भी बाधा पड़ी है।

परन्तु इसी समय में पूर्वस्थिति प्राप्त करने की दिशा में बहुत प्रगति हो चुकी थी। बेकारों की सहायता, सार्वजनिक निर्माण-कार्य तथा राष्ट्रीय साधनों के संरक्षण के लिए संघीय सरकार ने अरबों डालर खर्च किये। इन उन्नतिपरक व्ययों द्वारा अमेरिकन औद्योगिक उत्पादन के लिए देश के अन्दर माँग पैदा की गई। संगठित श्रमिकों ने भी न्यू डील के काल में अमेरिकन इतिहास में पहली बार काफी अधिक लाभ उठाया। नै० रि० ए० के सेक्शन ७ अ के अनुसार श्रमिकों को सामूहिक रूप से सौदा करने का अधिकार दिया गया था, किन्तु नै० रि० ए० के निष्क्रिय हो जाने के कारण जुलाई १६३५ में उसके स्थान पर नये श्रम-नियम बनाने के लिए कांग्रेस ने नैशनल लेबर रिलेशन्स ऐक्ट पास किया। इसके अधीन सामूहिक सौदे की प्रक्रिया का निरीक्षण करने के लिए एक लेबर बोर्ड (श्रमिक बोर्ड) स्थापित किया गया। चुनावों का प्रबन्ध भी श्रमिक बोर्ड द्वारा किया जाने लगा और श्रमिकों को विश्वास दिला दिया गया कि नियोजकों के साथ अपने झगड़े निपटाने के लिए वे किसी भी संगठन को अपना प्रतिनिधि बना सकते हैं। "अमेरिकन फ़ेडरेशन ऑव् लेबर" (अमेरिकी श्रम-संघ) जिसका सिद्धान्त कारीगरों के संगठन बनाना था, असंगठित श्रमिकों को संगठित करने में मन्दगति रहा। जब कुछ श्रमिक-संगठन इस दशा से असन्तुष्ट हो गये, तो उन्होंने इसे छोड़ दिया और "कांग्रेस ऑव् इंडस्ट्रियल

अमेरिकन, ब्रिटिश और सोवियत प्रतिनिधि वाशिंगटन डि० को० के समीप डम्बर्टन ओक्स में सम्मिलित हुए। कई सप्ताह तक युद्धोत्तर कालिक समस्याओं पर विचार के पश्चात् उन्होंने एक अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन बनाने की योजना तैयार की।



ऑर्गेनिज़ेशन्स" (औद्योगिक संघटन कांग्रेस) नामक नया संघटन बना लिया और श्रमिकों को, विशेषतः ऑटोमोबील और इस्पात-जैसे मौलिक उद्योगों में, सफलतापूर्वक संघटित करने का काम अद्भुत रीति से चालू कर दिया। औ० सं० कां० की प्रतिस्पर्धा से प्रेरित होकर अ० श्र० सं० भी उन्नति करने लगा। इस प्रकार १९२९ की संगठित श्रमिकों की संख्या ४०,००,००० से बढ़कर १९४८ में १,६०,००,००० हो गई। श्रमिकों की शक्ति केवल उद्योग में ही नहीं बढ़ी, बल्कि राजनीति में भी बढ़ी, परन्तु श्रमिक दो मुख्य दलों के ढाँचे के अन्दर रहकर ही प्रायः अपनी शक्ति का प्रयोग करते थे। डैमोक्रैटिक पार्टी को यद्यपि रिपब्लिकन पार्टी की अपेक्षा श्रमिक यूनियनों से अधिक सहायता प्राप्त होती रही, फिर भी मज़दूर-पार्टी नाम से किसी स्वतन्त्र दल का जन्म नहीं हुआ।

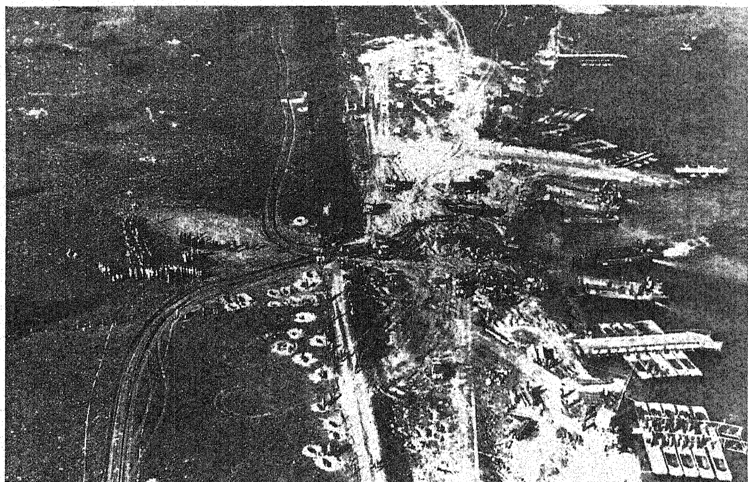
बुढ़ापे की बेकारी और पराश्रितता के भय को, जिसकी चर्चा देर से चल रही थी, १९३५ के सोशल सिक्योरिटी ऐक्ट द्वारा दूर कर दिया गया। इसके अनुसार विविध श्रमिकों को पैंसठ वर्ष की अवस्था में कार्य-निवृत्त होने पर साधारण भत्ता देने का निश्चय किया गया। श्रमिकों तथा नियोजकों के चन्दे से इस काम के लिए बीमा-फंड इकट्ठा किया गया। संघ द्वारा लगाये गए अनिवार्य वेतन-कर से प्राप्त धनराशि से स्टेटों को सभी आयु के कार्यक्षम श्रमिकों के लिए बेकारी की क्षति-पूर्ति की व्यवस्था करनी थी। १९३८ तक हर एक स्टेट में किसी-न-किसी प्रकार का "बेकारी-बीमा" चालू हो गया।

बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में बार-बार सूखा पड़ने के कारण "ऑम्निबस फ्लड कन्ट्रोल बिल" पास किया गया। इसके अनुसार बहुत से बड़े-बड़े तालाब, बिजली पैदा करने के लिए बाँध और हजारों छोटे-छोटे बाँध बनाने की व्यवस्था की गई। अनेक प्रदेशों में भूमि के कटने से भू-भाग पर गहरे, भद्दे गढ़े बन गये थे। विशेषतः मध्यपश्चिम के मैदानों में भूमि-कटाव को रोकने के लिए एक बहुत बड़ा भूमि-संरक्षण कार्यक्रम तेजी से चालू किया गया। इसमें वृक्षों की बड़ी संरक्षक पट्टी का लगाना भी शामिल था। इसके अन्तर्गत अन्य महत्त्व-पूर्ण काम थे—नदी को गन्दा होने से रोकना, मछली, हिंस्र पशुओं तथा पक्षियों के रक्षा-स्थानों का निर्माण, पत्थर के कोयले, पेट्रोलियम, शेल, गैस, सोडियम और हेलियम की खानों का संरक्षण, कुछ चरागाहों की भूमि में खेती का निषेध और राष्ट्रीय जंगलों का विस्तार आदि।

इन सब कार्यों में सम्भवतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण टेनेसी घाटी योजना (टेनेसी वैली औथौरिटी) की स्थापना थी, जिसने कि सामाजिक और आर्थिक परीक्षणों के लिए एक बहुत बड़ी प्रयोग शाला को तैयार कर दिया। अलाबामा में मसल शोल्स पर मुख्य बाँध बनाने के अतिरिक्त सहायक धाराओं पर भी नौरिस, पिकविक, चिकामौगा आदि बाँध बनाये गए। इन बाँधों का उपयोग जलीय यातायात को सुधारने, बाढ़ का नियंत्रण करने और नाइट्रेट का उत्पादन करने के लिए ही नहीं किया गया, अपितु बिजली उत्पन्न करने के लिए भी किया गया। सरकार ने लगभग पाँच हजार मील लम्बे बिजली के तार लगाये और आसपास की बस्तियों को बहुत सस्ती दर पर बिजली दी, ताकि इसकी खपत बढ़े। टे० वै० औ० की एक सहायक कम्पनी ने ग्रामों में बिजली फैलाने के लिए आर्थिक सहायता दी। टे० वै० औ० ने अल्प लाभ की खेती बन्द कर दी, किसानों को नई भूमि प्राप्त करने में सहायता दी, कृषि-सम्बन्धी परीक्षण किये और सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा मनोरंजन की सुविधाओं की व्यवस्था की।

न केवल रिपब्लिकन पार्टी की, अपितु बहुत बार स्वयं डैमोक्रैटिक पार्टी की भी आलोचना के अत्यधिक दबाव के नीचे ही न्यू डील का लगभग सारा काम चलाया गया। १९३६ के चुनाव में प्रेजिडेण्ट रूज़वेल्ट के विरोधी, कन्सास के गवर्नर एल्फ्रेड लैंडॉन ने न्यू डील को बुरा बतलाया, किन्तु इस बार रूज़वेल्ट की १९३२ की विजय से भी अधिक निर्णायक विजय हुई।

१९३२ से १९३८ तक प्रत्येक पत्र-पत्रिका में न्यू डील की नीतियों के प्रभाव की चर्चा होती रही। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, यह बात स्पष्ट होती गई कि सरकार-सम्बन्धी अमेरिकी विचार बदल रहा है अर्थात् लोग अधिकाधिक इस मन्तव्य को अपना रहे हैं कि जनता की उन्नति का उत्तरदायित्व सरकार पर बहुत अधिक है। न्यू डील के कुछ आलोचक कहते थे कि सरकार के कर्तव्य को इतने बड़े पैमाने पर बढ़ाने का परिणाम यही होगा कि जनता की सारी स्वतन्त्रता नष्ट हो जायगी। प्रेजिडेण्ट रूज़वेल्ट तथा उसके अनुयायी इस युक्ति पर बल देते थे कि जिन कानूनों से आर्थिक अवस्था सुधरती है, उनसे स्वतन्त्रता तथा लोकतन्त्र सुदृढ़ होंगे। १९३८ के रेडियो-भाषण में प्रेजिडेण्ट ने अमेरिकन जनता को बताया—"कई अन्य महान् राष्ट्रों से लोकतन्त्र लुप्त हो चुका है; यह



राइन नदी के पूर्वी तट का आकाश से लिया हुआ चित्र। नौवीं अमेरिकन सेना ने नदी यहीं पार की थी। बाईं ओर तट के समीप जो गढ़े दीखते हैं, नौकाओं का पुल बनाने वाले, जर्मन आक्रमणों से अपनी रक्षा उनमें छिपकर करते थे।

इसलिए नहीं कि उन देशों के लोग लोकतन्त्र को नापसन्द करते थे, बल्कि इसलिए कि वे बेकारी और रक्षा के अभाव से तंग आ गये थे और सरकार में योग्य नेता के अभाव, शासन की गड़बड़ी एवं निर्बलता के कारण विवश होकर अपने बच्चों को भूख से तड़पते नहीं देख सकते थे। अन्त में निराश होकर इस आशा से कि खाने को कुछ मिल जाय, उन्होंने स्वतन्त्रता का बलिदान करना ही उचित समझा। हम अमेरिका-निवासी जानते हैं कि हमारी लोकतान्त्रिक परम्पराओं की रक्षा की जा सकती है और उन्हें क्रियान्वित किया जा सकता है। परन्तु उनकी रक्षा करने के लिए हमें···सिद्ध करना होगा कि लोकतान्त्रिक शासन का क्रियात्मक रूप जनता को निरापद रखने में समर्थ है···अमेरिका के लोग किसी भी मूल्य पर अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने के सम्बन्ध में एकमत हैं और उस रक्षा की पहली पंक्ति आर्थिक सुरक्षा ही है।"

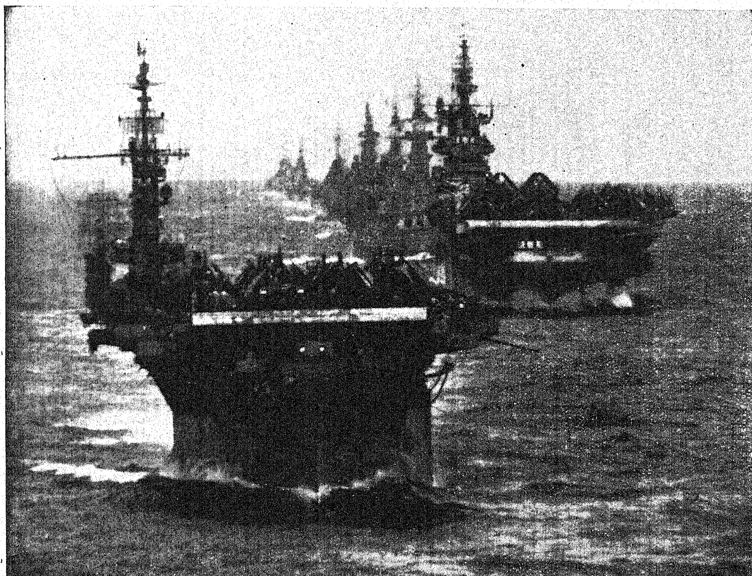
फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट का आन्तरिक कार्यक्रम दसेक वर्ष पहले के विल्सन के कार्यक्रम की भाँति ही प्रभावोत्पादक था, किन्तु उसके दूसरे कार्यकाल के प्रारम्भ में ही वह कार्यक्रम वैदेशिक मामलों की दुहाई मचने के कारण पीछे पड़ गया। समुद्र पार शान्ति, कानून और अन्ततः अमेरिका की सुरक्षा के लिए भी नया भय उपस्थित हो गया था—वह था जापान, इटली और जर्मनी का एकवर्गाधिकारवाद, जिसकी ओर साधारण अमेरिकन का ध्यान नहीं गया था। १९३१ में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया और चीनियों के प्रतिरोध को कुचल डाला; एक वर्ष पीछे उसने मंचूकुओ का कठपुतली राज्य स्थापित किया। फ़ासिज़्म का अनुसरण करते हुए इटली ने लिबिया में अपनी सीमाएँ बढ़ा लीं और १९३५-३६ में इथियोपिया को अपने अधीन कर लिया। जर्मनी ने, जहाँ ऐडोल्फ़ हिटलर ने नैशनल सोशलिस्ट पार्टी को संगठित करके शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी, राइनलैंड को फिर अपने अधिकार में कर लिया और बड़े पैमाने पर शस्त्रीकरण आरम्भ कर दिया।

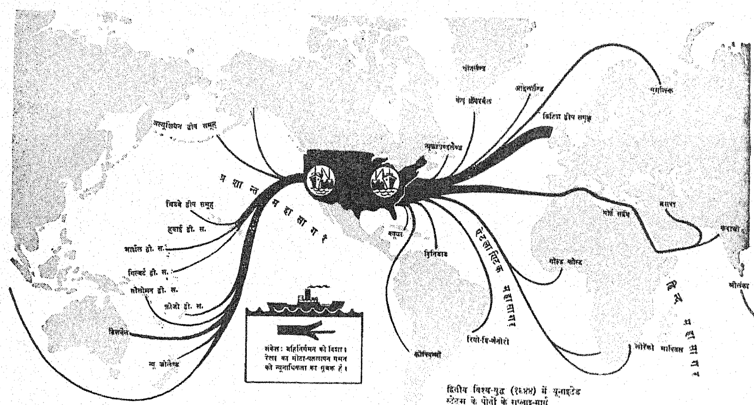
ज्यों-ज्यों एकवर्गाधिकारवाद का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट

होता गया और जर्मनी, इटली और जापान एक के बाद दूसरे छोटे राष्ट्र पर आक्रमण करते गये, त्यों-त्यों अमेरिका की आशंका क्रोध में परिणत होती गई। १६३८ में जब हिटलर ने आस्ट्रिया को राइख में मिलाकर चैकोस्लोवाकिया के सूडेटन-लैन्ड की माँग की, तब जान पड़ने लगा कि किसी भी क्षण युद्ध छिड़ सकता है। अमेरिका के लोगों की आँखें पहले विश्व-युद्ध की निष्फलता से, जिसे वह लोकतन्त्र की पवित्र लड़ाई समझते थे, खुल चुकी थीं। उन्होंने जतला दिया था कि किसी भी अवस्था में कोई भी युद्ध कर रहा राष्ट्र हमसे सहायता की आशा न रखे। १६३५ से १६३७ तक खंडशः पास किये गए तटस्थता-कानून के अनुसार अमेरिका न तो किसी युध्यमान राष्ट्र से व्यापार कर सकता था और न ही उसे ऋण दे सकता था। अन-अमेरिकी युद्ध में यूनाइटेड स्टेट्स को उलझने से रोकना ही इसका उद्देश्य था, फिर चाहे इससे कितनी भी हानि क्यों न हो।

प्रेजिडेण्ट रूजवेल्ट और सेक्रेटरी ऑव् स्टेट हल दोनों ने इस कानून का आरम्भ से ही विरोध किया था। अब प्रेजिडेण्ट रूज़वेल्ट ने अमेरिका की जनता को उपर्युक्त शक्तियों द्वारा किये जा रहे विनाश का अनुभव कराने तथा अमेरिका को नैतिक और भौतिक शस्त्रों से सुसज्जित करने का काम हाथ में लिया। उसने अमेरिका की जल-सेना को सशक्त बनाने के लिए बहुत काम किया। उसने मंचूकुओ की कठपुतली सरकार को मानने से इन्कार कर दिया। हल के साथ मिलकर उसने भले पड़ोसी की नीति के आधार पर पश्चिमी गोलार्ध के राष्ट्रों में ठोस एकता स्थापित करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। जब पारस्परिक लाभ के आधार पर हल द्वारा की

प्रशान्त महासागर की विस्तृत सामरिक कार्रवाइयों में अनगिनत दुर्ग-बद्ध द्वीपों को जीतने के लिए यूनाइटेड स्टेट्स को जलीय बेड़े की अनिवार्य आवश्यकता थी। तृतीय बेड़े के एक भाग के रूप में वायुयान-वाहक आगे आगे चल रहे हैं।





द्वितीय विश्व-युद्ध (१९४४) में यूनाइटेड स्टेट्स के पोतों के सप्लाइ-मार्ग

गईं व्यापारिक सन्धियों की १९३५ में पुनः पुष्टि की गई, तब यूनाइटेड स्टेट्स ने दक्षिण अमेरिका के छः राष्ट्रों के साथ भी सन्धियाँ कर लीं, जिनमें सबने प्रतिज्ञा की कि बलपूर्वक किए गये कोई भी प्रादेशिक परिवर्तन उन्हें स्वीकार न होंगे।

जब एकवर्गाधिकारवादियों की नीति अधिक आक्रमण-परक हो गई और हिटलर ने पोलैंड, डेनमार्क, हॉलैंड, नॉरवे, बेल्जियम और फ्रांस पर चढ़ाई कर दी, तब अमेरिकन भावना कठोर हो गई। अमेरिकनों की पहली प्रवृत्ति यह थी कि यूरोपीय युद्ध से अलग रहा जाय; परन्तु कुछ समय के बाद उन्हें विश्वास हो गया कि जिस शक्ति-समूह से हरएक की सुरक्षा ख़तरे में है, उससे उनकी सुरक्षा को भी ख़तरा है। जब १९४० की गरमियों में ब्रिटेन पर वायु-आक्रमण प्रारम्भ हुए, तब शायद ही कोई अमेरिकन ऐसा होगा जो मन से निष्पक्ष रहा हो। यूनाइटेड स्टेट्स ने लैटिन अमेरिका के गणराज्यों के साथ मिलकर पश्चिमी गोलार्ध में अवस्थित लोकतन्त्री राष्ट्रों के अधीन प्रदेशों को सामूहिक संरक्षण प्रदान किया। यूनाइटेड स्टेट्स और कनाडा ने मिलकर एक संयुक्त रक्षा-बोर्ड बनाया। कांग्रेस ने बढ़ते हुए संकट का सामना करने के लिए पुनः शस्त्रीकरण के निमित्त बहुत बड़ी राशियाँ स्वीकृत कीं। सितम्बर १९४० में अमेरिका के इतिहास में प्रथम शान्तिकालिक अनिवार्य भरती कानून पास किया गया।

प्रेजिडेण्ट के १९४० के चुनाव-आन्दोलन से यह सिद्ध हो गया कि अमेरिकनों के विचारों में अत्यधिक एकता है। रूज़वेल्ट के विरोधी, वैंडेल विल्की ने प्रेजिडेण्ट की विदेश-नीति का समर्थन किया। वह रूज़वेल्ट के आन्तरिक कार्यक्रम के अधिक भाग से भी सहमत था; उसके पास चुनाव के लिए कोई महत्त्वपूर्ण मुद्दा भी नहीं था। इसलिए नवम्बर के चुनाव में रूज़वेल्ट ने फिर प्रभावशाली बहुमत प्राप्त किया। अमेरिका के इतिहास में पहली बार एक ही व्यक्ति तीसरी बार अमेरिका का प्रेजिडेण्ट निर्वाचित हुआ।

बहुत से अमेरिकन चिन्ता के साथ यूरोपीय युद्ध के रंग-ढंग देख ही रहे थे कि सुदूरपूर्व में तनाव बढ़ गया। जापान इस अवसर से लाभ उठाकर अपनी स्थिति को सामरिक दृष्टि से अधिक उन्नत करना चाहता था। इसलिए उसने साहस-पूर्वक एक 'नई व्यवस्था' की घोषणा कर दी। इसके अनुसार वह सुदूरपूर्व और प्रशान्त महासागर पर अपना प्रभुत्व जमाने लगा। ब्रिटेन विरोध करने में असमर्थ था, इसलिए शंघाई से पीछे हट गया और थोड़े समय के लिए उसने बर्मा मार्ग

को बन्द कर दिया। १६४० की गरमियों में जापान ने हिन्द-चीन सरकार की दुर्बलता का लाभ उठाकर वहाँ हवाई अड्डों के निर्माण की अनुमति ले ली। जब जापानी सितम्बर में रोम-बर्लिन धुरी के साथ मिल गये तब यूनाइटेड स्टेट्स ने लोहे की कतरन के जापान भेजने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

१६४० में ऐसा प्रतीत होता था कि जापानी सम्भवतः ब्रिटिश मलाया और डच पूर्वी द्वीप-समूह के तेल, राँगा और रबड़ के लिए दक्षिण की ओर मुड़ें। जुलाई १६४१ में जब विशी सरकार ने जापानियों को हिन्दचीन के शेष भाग पर अधिकार करने दिया, तभी यूनाइटेड स्टेट्स ने जापानी सम्पत्ति को जब्त कर लिया। जनरल तोजो की सरकार बनने के बाद १६ नवम्बर को साबूरो कुरूसू एक विशेष दूत के रूप में यूनाइटेड स्टेट्स आया। कुरूसू ने बताया कि मुझे इसलिए भेजा गया है ताकि मैं शान्तिमय समझौता कराऊँ। ६ दिसम्बर को प्रेजिडेण्ट रूजवेल्ट ने जापान के सम्राट् को शान्ति-सन्धि के निमित्त एक वैयक्तिक अपील भेजी। ७ दिसम्बर को प्रातः जापानी उत्तर मिल गया और वह था पर्ल बन्दरगाह के अमेरिकन सुरक्षित युद्ध-शिविर पर बमों की वर्षा के रूप में।

जैसे-जैसे हवाई, मिडवे, वेक और गुआम (द्वीपों) पर जापानी आक्रमणों के, जो प्रेजिडेण्ट रूजवेल्ट के शब्दों में 'अकारण किये हुए कायरतापूर्ण' आक्रमण थे, विवरण अमेरिकी रेडियो द्वारा ऊँचे स्वर में प्रसारित किये गए, वैसे-वैसे ही अमेरिकी जनता का अविश्वास क्रोध में परिणत होता गया। ८ दिसम्बर को कांग्रेस ने जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। उसके तीन ही दिन बाद जर्मनी और इटली ने भी यूनाइटेड स्टेट्स के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।

युद्ध का श्रीगणेश करना अमेरिकनों की दृष्टि में उनके आदर्शों की भारी हार थी। उन्होंने न तो कभी युद्ध को पसन्द किया था और न ही सैनिक प्रवृत्ति को अपनाया था। यूनाइटेड स्टेट्स के संविधान के अनुसार अमेरिकन जीवन पर यथासम्भव असैनिक नियन्त्रण की छाप लगाई गई थी। अतः अमेरिका-भर में इस युद्ध को भीषण और अशुभ, परन्तु देश के इतिहास की दिशा में आवश्यक परिवर्तन समझा गया। कोई अमेरिकन यह नहीं समझ सकता था कि युद्ध का लक्ष्य स्थायी शान्ति के अतिरिक्त कुछ और भी हो सकता है। ६ दिसम्बर को जब प्रेजिडेण्ट रूजवेल्ट ने युद्ध-सम्बन्धी अपना सन्देश अमेरिकन लोगों को दिया, तब उसने उन्हें स्मरण कराया कि "वह सच्चा लक्ष्य, जिसके पाने का हम यत्न कर रहे हैं, युद्ध के बीभत्स क्षेत्र से कहीं ऊँचा और आगे है। जब हम बल का प्रयोग करते हैं, जैसा अब हमें करना पड़ रहा है, तो हमारा यह दृढ़ संकल्प रहता है कि इस बल का प्रयोग अन्ततोगत्वा भलाई के लिए और उपस्थित बुराई के विरुद्ध हो। हम अमेरिकन निर्माणकर्ता हैं, विध्वंसक नहीं।"

राष्ट्र ने तेजी से अपनी जनशक्ति और समस्त औद्योगिक क्षमता के समुचित संघटन के प्रयत्न शुरू कर दिये। ६ जनवरी १६४२ को प्रेजिडेण्ट रूजवेल्ट ने जिन उत्पादन-लक्ष्यों की घोषणा की, वे साधारण समय में तो राष्ट्र को अवश्य ही चौंका देते। उसने एक ही वर्ष में ६०,००० वायुयानों, ४५,००० टैंकों, २०,००० विमानवेधी तोपों और १८० लाख टन वजनी व्यापारिक जहाजों के निर्माण किए जाने की माँग की। राष्ट्र के सभी काम—किसी-न-किसी रूप में नये और व्यापक नियन्त्रण के नीचे आ गए। असाधारण धन-राशि एकत्र की गई। नये-नये उद्योग चलाये गए। जहाजों तथा वायुयानों को विशाल परिमाण में बनाने के लिए आश्चर्यजनक नई विधियाँ निकाली गईं। आबादी का बड़े पैमाने पर स्थान-परिवर्तन हुआ। अनिवार्य भरती के कई कानूनों के कारण यूनाइटेड स्टेट्स की सशस्त्र सेनाओं की कुल संख्या एक करोड़ इक्यावन लाख तक पहुँच गई। १६४३ के अन्त तक लगभग साढ़े छः करोड़ स्त्रियाँ और पुरुष या तो सैनिक बन चुके थे या अन्य आवश्यक सामरिक कार्यों में संलग्न थे।

यूनाइटेड स्टेट्स के युद्ध में फँस जाने के बाद शीघ्र ही यह निर्णय किया गया कि चूँकि शत्रु की शक्ति यूरोप में केन्द्रित है, इसलिए पश्चिमी मित्र-राष्ट्रों के अत्यावश्यक सैनिक प्रयत्न भी यूरोप में ही केन्द्रित होने चाहिएँ। इस समय प्रशान्त महासागर के समर-क्षेत्र को गौण समझा गया। इसके बावजूद १६४२ के निराशापूर्ण वर्ष में अमेरिका को सर्वप्रथम कुछ महत्त्वपूर्ण सफलताएँ मिलीं। ये प्रशान्त-महासागर में की गई उसकी कार्रवाइयों का ही फल थीं। ये सफलताएँ मुख्यतया जल-सेना द्वारा तथा वाहक-पोतों से उड़ने वाले वायुयानों द्वारा प्राप्त की गई थीं। मई १६४२ को कोरल समुद्र के युद्ध में हुई भारी हानियों के कारण जापानी जलसेना को आस्ट्रेलिया पर प्रहार करने का विचार छोड़ देना पड़ा। जून में नौसेना के वायुयानों ने मिडवे द्वीप से परे जापानी जहाजी बेड़े को भारी हानि पहुँचाई।



इस प्रसिद्ध फ़ोटोग्राफ़ में, यू. स्टे. के जलसैनिक, प्रशान्त महासागर के सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण द्वीप ईवोजिमा पर अमेरिकन झंडा गाड़ रहे हैं। इसे जीतने में ६० हज़ार जलसैनिकों को आक्रमण के पश्चात् २६ दिन लग गये थे।

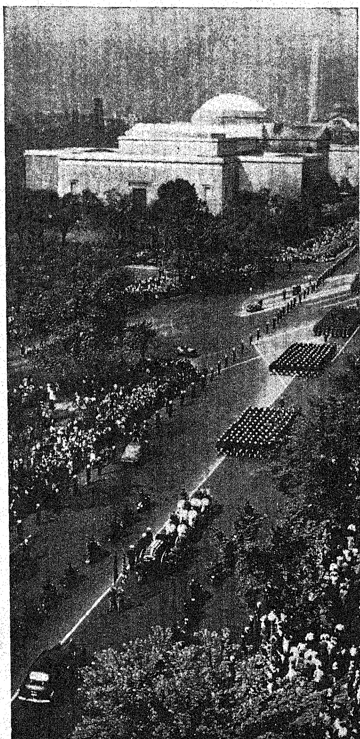
अगस्त में जल तथा स्थल-सेनाओं की सम्मिलित कार्रवाई के फलस्वरूप अमेरिकन ग्वाडल कैनाल पर उतर गए और बिस्मार्क समुद्र की लड़ाई में उनकी जीत हुई।

इसी समय यूरोप के युद्धस्थल की ओर सैनिक सामग्री निरन्तर भेजी जाने लगी। १९४२ के वसन्त और ग्रीष्म में अमेरिकन सामग्री से सबल होकर अंग्रेजी सेना ने जर्मन आक्रमण को विफल कर दिया और रोमेल को ट्रिपोली में धकेलकर स्वेज के संकट का अंत कर दिया। ७ नवम्बर १९४२ को एक अमेरिकन सेना फ्रैंच नॉर्थ अफ्रीका के किनारे उतरी। भीषण लड़ाई के बाद इटली और जर्मनी को बुरी तरह हराया गया, ३,४९,००० जन बन्दी बना लिये गए और १९४३ के मध्य ग्रीष्म तक भूमध्यसागर के दक्षिणी तट से फासिस्ट दल-बल का सफाया कर दिया गया। सितम्बर में, मार्शल बदोग्लियो के नेतृत्व में बनी इटली की नई सरकार ने सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये और अक्टूबर में इटली ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। अभी इटली में प्रचण्ड लड़ाई हो ही रही थी कि मित्र-सेनाओं ने जर्मन रेलवे की पटरियों, कारखानों और शस्त्रों के ठिकानों को नष्ट करने लिए आक्रमण किए। प्लोएश्टी (रूमानिया) में स्थित जर्मनी के तेल के जखीरों पर प्रहार किया गया।

१९४३ के अन्त में पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध छेड़ने का निर्णय किया गया, ताकि जर्मनी को इटली में जूझ रही सेना से कहीं अधिक जर्मन-सेना रूसी मोर्चे से हटाकर इधर भेजनी पड़े। जनरल ड्वाइट डी० आइजनहॉवर को सर्वोच्च सेनापति नियुक्त किया गया और विशाल सैनिक तैयारियाँ करने में शीघ्रता की गई। ६ जून को, जब सोवियत बराबर प्रत्याक्रमण कर रहा था, अमेरिकन और ब्रिटिश आक्रमणकारी सेना उत्कृष्ट वायुसेना के संरक्षण में नॉर्मंडी के समुद्रतट पर उतर गई। उतरने के स्थान पर अधिकार कर लिया गया। और अधिक सैनिक वहाँ पहुँचाए गए। संडासी चाल से आक्रमण करने के कारण जर्मन-सेना की कई टुकड़ियाँ कई स्थानों पर घेर ली गईं और अन्त में मित्र सेनाएँ फ्रांस को पार करती हुई जर्मनी में घुसने लगीं; २५ अगस्त को पेरिस पर फिर से अधिकार कर लिया गया। जर्मनी के द्वारों पर कड़े प्रतिरोध के कारण मित्र-सेनाओं को देर लगी; परन्तु फरवरी तथा मार्च १९४५ में पश्चिम से धड़ाधड़ सैनिक आने लगे और जर्मन सेनाएँ डगमगाती हुईं पूर्व की ओर पीछे हटती गईं। ८ मई को थर्ड राइख ने अपनी बची-खुची जल, स्थल तथा वायुसेना के साथ आत्मसमर्पण कर दिया।

इसी समय अमेरिकन सेना ने प्रशान्त महासागर में बहुत प्रगति कर ली थी। एक ओर जब अमेरिका और आस्ट्रेलिया की सेनाएँ सोलोमन, न्यू ब्रिटेन, न्यू गिनी,

एक अश्व वाहित गोलाबारूद-सन्दूक में स्व. फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट का शव १४ अप्रेल १९४५ को ह्वाइट हाउस ले जाया जा रहा है। शोकातुर जनता दोनों ओर खड़ी है।



बूगैनविल आदि द्वीपों में लड़ती-भिड़ती उत्तर की ओर बढ़ रही थीं, तो दूसरी ओर उनकी बढ़ती हुई जल-सेनाएँ जापान के रसद मार्ग को काटती चली जा रही थीं। अक्टूबर १६४४ में फिलिपीन समुद्र में जलसेना को विजय प्राप्त हो गई। ईवोजिमा और ओकिनावा के विरुद्ध की जा रही कार्रवाई से यह संकेत मिल गया था कि यद्यपि जापान की स्थिति अत्यन्त निराशाजनक है, फिर भी वह सम्भवतः दीर्घ-काल तक प्रतिरोध करेगा; परन्तु जब हीरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराये गए तो अगस्त में युद्ध का अकस्मात् अन्त हो गया और जापान ने २ सितम्बर १६४५ को विधिपूर्वक आत्मसमर्पण कर दिया।

मित्रों के सैनिक प्रयत्नों के साथ-साथ कई एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी हुए, जिनमें युद्ध-जनित राजनीतिक पहलुओं पर विचार किया गया। इनमें पहला सम्मेलन अगस्त १६४१ को प्रेजिडेण्ट रूज़वेल्ट और प्रधान मन्त्री चर्चिल के बीच उस समय हुआ जब यूनाइटेड स्टेट्स सक्रिय रूप से संघर्ष में शामिल नहीं हुआ था और ब्रिटेन तथा रूस की सैनिक-स्थिति बहुत संकटपूर्ण दिखाई दे रही थी। न्यू फ़ाउंडलैण्ड के निकट रूज़वेल्ट और चर्चिल युद्धपोतों पर मिले और उन्होंने अटलांटिक घोषणा-पत्र नाम से एक उद्देश्य-पत्र प्रकाशित किया। इसमें निम्नलिखित उद्देश्यों को स्वीकार किया गया था: प्रादेशिक विस्तार न किया जाय; जनता की इच्छा के प्रतिकूल किसी भी प्रदेश की सीमाओं में परिवर्तन न किया जाय; सभी लोगों को अपनी मरजी की शासन-पद्धति चुनने का अधिकार हो; स्वशासन से वंचित जनता को स्वशासन का अधिकार मिले; सभी राष्ट्रों में पारस्परिक आर्थिक सहयोग हो; सभी लोग युद्ध, भय तथा अभाव से सुरक्षित हों; समुद्र सब के लिए खुला रहे; अन्तर्राष्ट्रीय-सम्बन्धों में शक्ति का प्रयोग वर्जित किया जाय।

अंग्रेजों और अमेरिकनों की अगली बड़ी कान्फ्रेन्स जनवरी १६४३ में कैसाब्लैंका में हुई। वहाँ निर्णय किया गया कि धुरी-राष्ट्रों और उनके पिट्ठू बॉलकन राष्ट्रों के साथ 'बिना शर्त आत्मसमर्पण' की शर्त के अलावा और किसी भी शर्त पर सन्धि नहीं की जायगी। रूज़वेल्ट के मस्तिष्क से निकली हुई इस शर्त का प्रयोजन यही था कि सभी युद्धरत राष्ट्रों की जनता को विश्वास दिला दिया जाय कि फासिस्टवाद और नाजीवाद का प्रतिनिधित्व करने वालों के साथ सन्धि की बातचीत नहीं की जायगी; ऐसे प्रतिनिधियों के साथ कोई ऐसा सौदा नहीं किया जायगा जिसका उद्देश्य उनकी अवशिष्ट सत्ता को बचाना हो। जर्मनी, इटली और जापान की जनता के समक्ष सन्धि की अन्तिम शर्तें तभी रखी जायँगी जब उनके सैनिक अधिपति अपनी पूरी हार मान लेंगे।

अगस्त १६४३ में क्विबेक में अंग्रेजों और अमेरिकनों की कान्फ्रेन्स में जापान के विरुद्ध कार्रवाई पर तथा सैनिक और कूटनीतिक महत्त्व के अन्य पहलुओं पर विचार-विनिमय किया गया। दो महीने बाद ब्रिटेन, यूनाइटेड स्टेट्स और रूस के विदेश-मन्त्रियों ने मास्को में मन्त्रणा की; उन्होंने बिना शर्त आत्मसमर्पण नीति का पुनः समर्थन किया; इटली में फ़ासिस्ट-वाद को समाप्त कर देने और आस्ट्रिया को पुनः स्वतन्त्र कर देने की माँग की और शान्ति के निमित्त युद्धोत्तरकाल में राष्ट्रों के परस्पर मिलकर काम करने का अनुमोदन किया। काहिरा में रूज़वेल्ट, चर्चिल और च्यांगकाईशेक का सम्मेलन हुआ और उसमें जापान को पेश की जाने वाली शर्तें तय की गईं। इनके अनुसार जापान के लिए आवश्यक था कि वह भूतकाल में किये आक्रमणों से हुए लाभों का परित्याग करे। २८ नवम्बर को तेहरान में रूज़वेल्ट, चर्चिल और स्टालिन ने मास्को कान्फ्रेन्स की शर्तों की पुनः पुष्टि की और संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्थायी शान्ति स्थापन की माँग की। लगभग दो वर्ष पीछे फरवरी १६४५ में जब विजय निश्चित दिखाई दे रही थी, वे याल्टा में फिर मिले और कुछ अन्य विषयों पर समझौता किया, जर्मनी के आत्मसमर्पण करने के बाद तुरन्त ही रूस ने जापान के विरुद्ध युद्ध करने का एक गुप्त समझौता किया; पोलैण्ड की पूर्वी सीमा १६१६ की कर्जन लाइन ही मोटे तौर पर निश्चित की गई; स्टालिन ने माँग की कि जर्मनी से क्षतिपूर्ति के रूप में पैदावार वसूल की जाय, परन्तु रूज़वेल्ट और चर्चिल ने इस माँग का विरोध किया, इसलिए निर्णय स्थगित कर दिया गया; मित्रराष्ट्रों के जर्मनी पर अधिकार करने और युद्ध-अपराधियों पर अदालत में विचार करने तथा दण्ड देने के बारे में विशेष प्रबन्ध किये गए; बन्धन-मुक्त प्रदेशों के लिए अटलांटिक घोषणापत्र के सिद्धान्तों की पुनः पुष्टि की गई। इस बात पर तत्काल मतैक्य हो गया कि संयुक्त-राष्ट्र-संघ का सुरक्षा-परिषद् के स्थायी सदस्य राष्ट्रों को उन मामलों में, जो उनकी सुरक्षा पर कुप्रभाव डालते हों, निषेधाधिकार (वीटो) प्राप्त हो। काफ़ी मत-भेद के बाद यह

स्वीकार कर लिया गया कि सभी राष्ट्र यूनाइटेड नेशन्स असेम्बली में सोवियत यूनियन को दो अधिक वोट दिलाने का, जो उसे यूक्रेन और बाइलो रूस की बड़ी आबादियों के आधार पर प्राप्त होने चाहिएँ, समर्थन करेंगे।

याल्टा से लौटने के केवल दो मास बाद ही जब फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट जॉर्जिया में "लिटिल व्हाइट हाउस" में छुट्टी बिता रहा था, मस्तिष्क में रक्तस्राव के कारण उसका देहान्त हो गया। अमेरिकन इतिहास में ऐसे बहुत ही थोड़े व्यक्ति होंगे जिनकी मृत्यु पर देश-विदेश में इतना अधिक शोक मनाया गया होगा। कुछ समय के लिए तो अमेरिकनों को ऐसा लगा मानो यह भारी क्षति पूरी ही न हो सकेगी। परन्तु लोकतान्त्रिक नेतृत्व किसी एक व्यक्ति पर आश्रित नहीं रहता; इसलिए कुछ ही समय बाद रूजवेल्ट का उत्तराधिकारी हैरी एस. ट्रूमैन न्यू डील में प्रतिपादित गृह तथा विदेशनीति के प्रमुख उद्देश्यों के आधार पर प्रभावशाली नेतृत्व करने लगा।

जुलाई १९४५ में जब ब्रिटेन, यूनाइटेड स्टेट्स और सोवियत यूनियन की कान्फ्रेन्स फिर पोट्सडम में हुई, तब जर्मनी आत्मसमर्पण कर चुका था। कान्फ्रेन्स हो ही रही थी कि ब्रिटेन का आम चुनाव हो गया। फलतः कान्फ्रेन्स के प्रथमार्ध तक तो चर्चिल और क्लीमेंट एटली दोनों ही उपस्थित रहे, परन्तु अन्तिम बातचीत के अवसर पर अकेला एटली ही रह गया। यद्यपि इसमें प्रशान्त महासागर के युद्ध के कुछ पहलुओं पर अवश्य चर्चा हुई, परन्तु सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य जर्मनी पर अधिकार करने की नीति तथा जर्मनी के भविष्य का कार्यक्रम तैयार करना था। इस बात पर सब एकमत थे कि जर्मनी के पास पर्याप्त औद्योगिक शक्ति बची रहनी चाहिए ताकि वह शान्तिकाल में अपनी आर्थिक व्यवस्था ठीक रख सके, परन्तु उसके पास आवश्यकता से अधिक शक्ति नहीं रहनी चाहिए, ताकि वह फिर युद्धार्थ सैन्यशक्ति का पुनर्निर्माण न कर सके। यह भी निश्चय हुआ कि प्रसिद्ध नाजियों पर अदालतों में मुकदमा चलाया जाय और जहाँ यह प्रमाणित हो जाय कि उन्होंने नाजी योजना के अनुसार निरर्थक हत्या में भाग लिया है, उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाय। इस बात पर भी मतैक्य हो गया कि जिस जर्मन-पीढ़ी को नाजियों के अधीन शिक्षा दी गई है, उसे अवश्य नई शिक्षा प्रदान की जाय और यह भी तय हो गया कि जर्मनी के लोकतान्त्रिक राजनीतिक जीवन को फिर से किन उदार सिद्धान्तों पर स्थापित किया जाय। जर्मनी के विरुद्ध क्षतिपूर्ति के दावों पर वादविवाद में बहुत समय लग गया। यह तय कर दिया गया कि रूस अपने अधिकृत जर्मन प्रदेश से औद्योगिक मशीनें और सम्पत्ति, तथा पश्चिमी अधिकृत प्रदेशों से भी कुछ सम्पत्ति ले जाय; परन्तु १० अरब डालर की क्षतिपूर्ति का रूसी दावा, जो याल्टा में पहले ही बताया जा चुका था, विवाद का विषय बना रहा। पोट्सडम में हुए निश्चय के अनुसार नवम्बर १९४५ में न्यूरम्बर्ग में अपराधियों के मुकदमे चालू हो गए। मुकदमों की सुनवाई दस मास से अधिक तक होती रही। अन्त में तीन को छोड़कर शेष सभी को दण्डित कर दिया गया।

पोट्सडम में जब बातचीत चल रही थी, उस समय ५१ राष्ट्रों के प्रतिनिधि सनफ्रान्सिस्को में बैठे संयुक्तराष्ट्र-संघ की रूप-रेखा तैयार कर रहे थे। आठ सप्ताह तक काम करने के पश्चात् संयुक्त राष्ट्रीय घोषणापत्र (यूनाइटेड नेशन्स चार्टर) सम्पूर्ण कर लिया गया। यह एक ऐसे विश्व-संघटन की रूप-रेखा था, जिसमें एक ऐसी संस्था का विधान था जो अन्तर्राष्ट्रीय मत-भेदों पर शान्तिपूर्वक विचार करे। यह शान्तिमय विश्व की आशा था।

अमेरिकन सरकार को देश की आवश्यक आन्तरिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इनमें अनेकों इतनी हाल की हैं कि उनका ठीक-ठीक ऐतिहासिक मूल्य आँका जाना कठिन है। सैन्य-विघटन, उद्योगों को पुनः अपने पूर्वरूप में परिवर्तित करना, औद्योगिक झगड़े और श्रमिक समस्याएँ, मूल्यों और किरायों का नियन्त्रण, सम्पूर्ण अमेरिकन श्रम-शक्ति को काम में लगाये रखने के लिए सर्वोच्च संघीय नीति का निर्माण करना—इत्यादि विषयों का ट्रूमैन-शासन को सामना करना पड़ा। परन्तु ज्योंही युद्धोत्तरकालीन व्यवस्था की तात्कालिक कठिनाइयाँ दूर हो गईं, यह स्पष्ट हो गया कि युद्ध के पश्चात् अमेरिका की आर्थिक अवस्था ऐसी अच्छी हो गई है, जैसी उसके इतिहास में इससे पहले कभी नहीं हुई थी। इसके अतिरिक्त इस बढ़ी हुई आय का प्रभाव यह हुआ कि थोड़ी आमदनी वाले परिवारों की अवस्था सुधर गई।

राष्ट्र तथा संसार के सम्मुख उपस्थित समस्याओं में सब से आवश्यक और दूर-व्यापी समस्या परमाणुशक्ति के विकास और नियन्त्रण की थी। जुलाई १९४६ में परमाणुशक्ति पर देश के अन्दर नियन्त्रण रखने के लिए कांग्रेस ने पाँच व्यक्तियों



१२ अप्रेल, १९४५ को फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट के देहावसान के पश्चात् हैरी एस० ट्रूमैन प्रेज़िडेण्ट बना और ८ मई, १९४५ को वह जर्मनी के बिना शर्त आत्मसमर्पण की घोषणा कर रहा है।

का 'यूनाइटेड स्टेट्स अणुशक्ति कमीशन' नियुक्त किया। इस बात का विशेष निर्देश कर दिया गया कि इसका नियन्त्रण सैनिकों के हाथ में न होकर असैनिक नागरिकों के हाथ में रहे। जून में संयुक्तराष्ट्र-संघीय परमाणुशक्ति कमीशन की प्रारम्भिक बैठकों में बर्नार्ड बरूच ने यूनाइटेड स्टेट्स की ओर से एक प्रस्ताव रखा कि, संसार की सुरक्षा के लिए भयावह सम्भावनाओं वाली अणुशक्ति-सम्बन्धी कार्रवाइयों पर नियन्त्रण करने के लिए तथा अणुशक्ति से सम्बन्धित अन्य सभी कार्रवाइयों पर नियन्त्रण, निरीक्षण रखने और लाइसेन्स देने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय प्राधिकारी संस्था स्थापित की जाय। यह सुझाव रखा गया कि परमाणुबम को ग़ैर क़ानूनी घोषित किया जाय और इस अन्तर्राष्ट्रीय प्राधिकारी संस्था को यह अधिकार हो कि वह समझौता के उल्लंघनकर्ता को दण्ड दे सके। यूनाइटेड स्टेट्स ने वायदा किया कि हम उस समय बम बनाना बन्द कर देंगे, बमों का संग्रह समाप्त कर देंगे और संसार को उसका वैज्ञानिक रहस्य बता देंगे, जब अन्तर्राष्ट्रीय प्राधिकारी-संस्था प्रभावशाली काम करने लगेगी। अमेरिकन सरकार ने जिस व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण का समर्थन किया, सोवियत के प्रवक्ता ग्रोमिको ने उसका विरोध किया। उस ने बरूच-योजना की उस शर्त पर विशेष आपत्ति की जिस के अनुसार नये परमाणुशक्ति कमीशन की कार्रवाइयों को वीटो करने का अधिकार किसी भी राष्ट्र को नहीं दिया गया था। इसके स्थान में उसने यह प्रस्ताव पेश किया कि अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण अथवा निरीक्षण की शर्त रखे बिना ही सभी राष्ट्र परमाणु-शस्त्रों का परित्याग कर दें। परमाणुशक्ति कमीशन के बहुमत ने १०—० वोटों से यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा प्रस्तुत योजना को स्वीकार कर लिया, परन्तु सोवियत रूस और पोलैंड ने मत-दान में भाग नहीं लिया। जिस अल्पसंख्यक दल ने पहले अमेरिका के इन प्रस्तावों को अस्वीकार किया था, वही दल कमीशन के बहुमत द्वारा बाद में किये निर्णयों की अपेक्षा इन

प्रस्तावों पर ही बराबर प्रहार करता रहा। १९४७ के पूरे वर्ष-भर समितियों का कार्य प्रगति करता रहा। अमेरिकनों की खोज अब एक विस्तृत जाँच-पड़ताल का अंग बन गई और यूनाइटेड स्टेट्स का प्रतिनिधि-वर्ग पूर्वनिश्चित व्यवस्था का प्रस्तोता न रहकर बहुसंख्यक दल का सहकारी सदस्य-मात्र रह गया। परमाणुशक्ति के नियन्त्रण और निःशस्त्रीकरण के अन्य पहलुओं पर विवाद होते होते यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि शान्ति का मार्ग तब तक साफ़ नहीं हो सकता, जब तक इन का तथा अन्य मत-भेदों का समाधान न हो जाय।

जब यूरोप का अधिकाधिक भाग सोवियत पक्षपाती सरकारों के अधीन होता गया और वहाँ ऐसी परिस्थितियाँ मिलीं जिन में वहाँ की जनता को स्वतन्त्रतापूर्वक चुनाव का अधिकार भी नहीं रहा, तब यूनाइटेड स्टेट्स को बहुत चिन्ता हुई। १९४७ के वसन्त तक इन में फ़िनलैंड, पोलैंड, हंगरी, चैको-स्लोवाकिया, युगोस्लाविया, रूमानिया और बलगारिया तथा जर्मनी और आस्ट्रिया के रूसाधिकृत प्रदेश सम्मिलित थे। १९४७ के वसन्त में जब यूनान में संकट के कारण सोवियत का प्रभाव बढ़ता प्रतीत हुआ, तो प्रेजिडेण्ट ट्रूमैन यूनान और टर्की की आर्थिक तथा सैनिक सहायता के निमित्त चालीस करोड़ डालर के कार्यक्रम को स्वीकृत कराने के लिए कांग्रेस के समक्ष उपस्थित हुआ। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा—"मुझे विश्वास है कि यूनाइटेड स्टेट्स की नीति अवश्य ही उन स्वतन्त्र लोगों की सहायता करने की होनी चाहिए, जो सशस्त्र अल्पसंख्यकों या बाह्य दबावों से पराधीन किये जाने के प्रयत्नों का प्रतिरोध कर रहे हैं।" नीति-सम्बन्धी यह वक्तव्य, जिसे 'ट्रूमैन सिद्धान्त' कहते हैं, यूनाइटेड स्टेट्स में विवाद का विषय बन गया, किन्तु

२६ जून १९४५ को इक्यावन राष्ट्रों ने संयुक्तराष्ट्रीय घोषणापत्र स्वीकार किया। सनफ्रान्सिस्को में दो महीने की बैठकों के पश्चात् सब प्रतिनिधियों ने आक्रमण का अन्त करनेवाले इस घोषणापत्र का समर्थन करने की प्रतिज्ञा की।





जापानी जनरल युमेज़ु, टोकियो की खाड़ी में अमेरिकन जहाज़ मिसूरी पर आत्म-समर्पणपत्र पर हस्ताक्षर कर रहा है और उच्चतम मित्र सेनापति जनरल डगलस मैकार्थर (बाएँ) तथा अन्य मित्र सेनाधिकारी खड़े देख रहे हैं।

१५ मई को कांग्रेस ने इस धनराशि के लिए स्वीकृति दे दी।

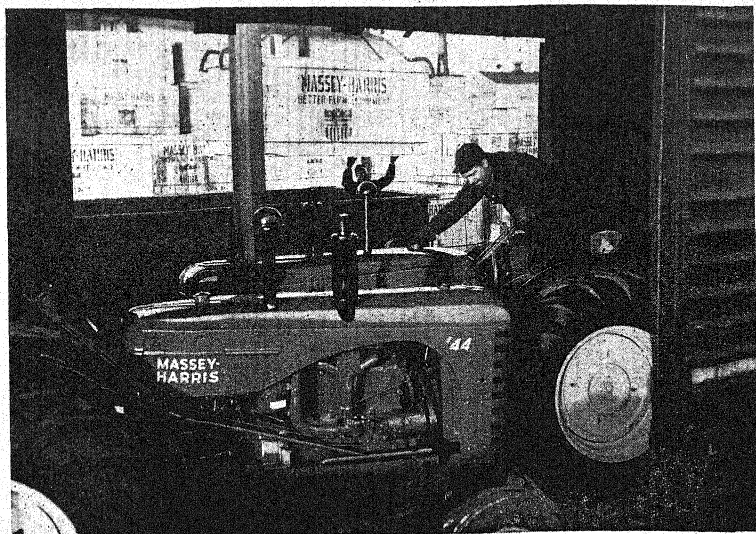
यूरोप के राष्ट्रों में केवल यूनान और टर्की को ही आर्थिक सहायता की आवश्यकता न थी। एक ओर यूनाइटेड स्टेट्स था जिस की आर्थिक अवस्था सुदृढ़ थी, दूसरी ओर यूरोप के वे राष्ट्र थे जो युद्ध-जनित क्षति के पूरा करने का यत्न कर रहे थे। दोनों के इस अन्तर ने यूनाइटेड स्टेट्स के उत्तरदायित्व और राजनीतिज्ञतापूर्ण कार्रवाई की आवश्यकता को विशेष महत्त्व दे दिया। ५ जून १९४७ को सेक्रेटरी ऑव् स्टेट जॉर्ज सी० मार्शल ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रारम्भिक भाषण में एक नया मार्ग सुझाया। उस ने कहा—"सामान्य आर्थिक अवस्था पुनः प्राप्त किये बिना संसार के देशों में राजनीतिक स्थिरता और स्थायी शान्ति नहीं हो सकती। इसलिए यह युक्तियुक्त ही है कि यूनाइटेड स्टेट्स संसार की आर्थिक दशा को सामान्य स्तर पर लाने के लिए अपनी शक्ति-भर सहायता करे। हमारी नीति किसी देश के अथवा किसी सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं है, बल्कि यह तो भूख, गरीबी, निराशा और अव्यवस्था के विरुद्ध है। इसका उद्देश्य तो संसार में कार्य-साधक आर्थिक व्यवस्था को पुनरुज्जीवित करना है, ताकि ऐसी राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ पैदा हो जायँ, जिन में स्वतन्त्र संस्थाएँ जीवित रह सकें।"

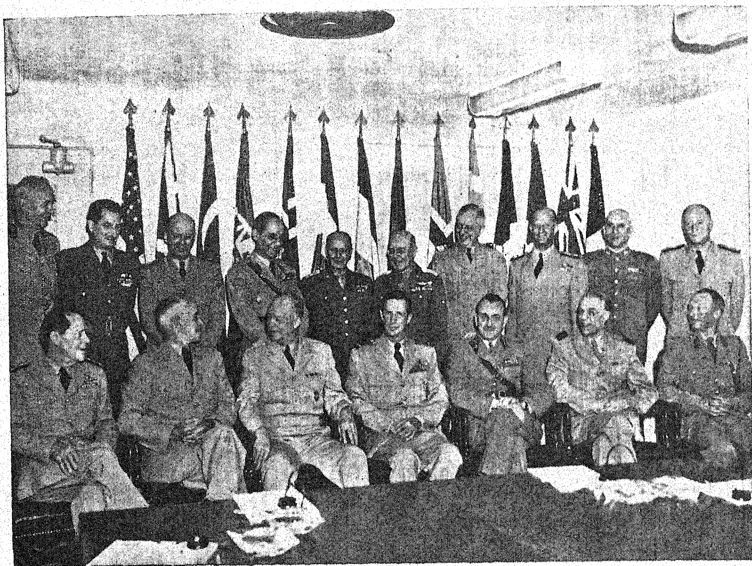
मार्शल की यह धारणा थी कि उनकी योजना में जिस आर्थिक सहायता की माँग की गई है, उससे सोवियत यूनियन

तथा उसके प्रभावाधीन राष्ट्रों के समेत सारा यूरोप लाभ उठाए। यद्यपि ब्रिटेन और फ्रांस ने उसके निमंत्रण का उत्तर तत्काल उत्साह-पूर्वक दिया और सोवियत यूनियन को सम्मिलित होने को कहा, परन्तु मोलोटोव ने मार्शल-योजना पर "साम्राज्य-वादी षड्यन्त्र" होने का आरोप लगाया। इसी प्रकार यूनाइटेड स्टेट्स में भी इसकी कड़ी आलोचना की गई, क्योंकि सेनेट के अनेक सदस्यों ने इसके लिए आवश्यक अमित धन अमेरिका द्वारा व्यय करने पर आपत्ति की। यह विवाद तब समाप्त हुआ जब पहले पृथकता-नीति के पूर्वपक्षपाती, मिशिगन के रिपब्लिकन सेनेटर आर्थर एच० वैंडनबर्ग ने मार्शल का समर्थन किया और अपने बहुत-से साथियों को इस पक्ष में शामिल करके द्विदलीय विदेश-नीति के सिद्धान्त की सुदृढ़ पुष्टि की। अप्रेल १९४८ में कांग्रेस ने एक ऐक्ट पास किया जिस के अनुसार यूरोपीय पुनरुत्थान कार्यक्रम तैयार किया गया। इसके अधीन यूनाइटेड स्टेटस यूरोप के अठारह देशों को चतुर्वर्षीय योजना के अनुसार आर्थिक सहायता देने को प्रतिज्ञाबद्ध हो गया। पहले वर्ष के लिए ५ अरब डालर दिये गए। अप्रेल १९४९ में यू० पु० का० का जब १ वर्ष पूरा हुआ तो पश्चिमी यूरोप में निरन्तर हो रहे पुनरुत्थान के स्पष्ट चिह्न दीख रहे थे। उदाहरणार्थ, कारखानों और खानों का समस्त उत्पादन १९४७ के आँकड़ों से १४ प्रतिशत अधिक हो गया था और युद्धपूर्व के सबसे सामान्य वर्ष-१९३८ के प्रायः बराबर था। अप्रेल १९४८ से १९५० के अन्त तक दस अरब डालर का माल और सेवाएँ भेजी जा चुकी थीं।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के आरम्भ में ही अधिकांश अमेरिकनों को स्पष्ट हो गया कि अमेरिका की राजनीतिक, सामाजिक तथा नैतिक पृथकता का पूर्णतया अंत हो चुका है। समूचा राष्ट्र देश के अन्दर शक्ति बढ़ाने वाले उन सुधारों में लगा हुआ

मार्शल योजना का उद्देश्य यह था कि इसमें भाग लेने वाले देशों को यूनाइटेड स्टेट्स से अत्यावश्यक खाद्य पदार्थ, कच्चा माल और मशीनरी मिल जाय। इस चित्र में खेती का ट्रैक्टर दिखाया गया है जो यूरोपीय पुनरुत्थान कार्यक्रम के अधीन यूरोप को भेजने के लिए तैयार किया जा रहा है।





दिसम्बर १९५० में उत्तरी अटलांटिक समझौता की विदेश-मन्त्रि परिषद् ने जनरल ड्वाइट डी० आइज़नहॉवर को यूरोपीय मित्र देशों की सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति चुना। इस चित्र में बाईं ओर से तीसरे स्थान पर आइज़नहॉवर उत्तरी अटलांटिक सन्धि संघटन के सदस्य देशों के प्रतिनिधियों की बैठक में भाग ले रहा है।

था,' जिन का आरम्भ न्यू डील के युग में हुआ था। विदेश में, यह सर्वोपरि पश्चिमी यूरोप को, आर्थिक दृष्टि से स्वस्थ और राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध था क्योंकि यह संसार के उज्ज्वल भविष्य के लिये महत्त्वपूर्ण था। जनवरी १९४९ में कांग्रेस को चिरस्मरणीय सन्देश भेजते हुए प्रेजिडेण्ट ट्रूमैन ने स्वतन्त्र राष्ट्रों की सहायता जारी रखने की माँग की और लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों में अमेरिका के विश्वास की पुनः पुष्टि की। उसने कहा—"लोकतन्त्र ही संसार के लोगों में ऐसी जीवनशक्ति का संचार कर सकता है जो न केवल अत्याचारी मनुष्य पर, अपितु भूख, दुःख, निराशा जैसे पुरातन शत्रुओं पर भी विजय पाने के लिए उन्हें क्रियाशील बना दे। घटना क्रम ने हमारे लोकतन्त्र का प्रभाव बढ़ाकर अमेरिका पर नया उत्तरदायित्व डाल दिया है।"

उन पुस्तकों की सूची जिनकी सहायता और सहारा लेकर इस 'अमेरिकन इतिहास की रूपरेखा' की रचना की गयी

BASSETT, JOHN SPENCER :
A Short History of the United States
The Macmillan Co., 1927

BEARD, CHARLES A. *and* MARY R. :
The Rise of American Civilization
The Macmillan Co., 1939

CURTI, MERLE :
The Growth of American Thought
Harper and Brothers, 1943

HAMM, WILLIAM A. :
The American People D. C. Heath and Co., 1939

HICKS, JOHN D. :
The American Nation
Houghton Mifflin Co., 1941

HOCKETT, HOMER C. :
Political and Social History of the United States (1492–1828) The Macmillan Co., 1925

MORISON, SAMUEL ELIOT *and* COMMAGER, HENRY STEELE :
The Growth of the American Republic (*up to* 1865)
Oxford University Press, 1942

The Growth of the American Republic (1865–1942)
Oxford University Press, 1942

MUZZEY, DAVID :
The United States of America—From the Civil War Ginn and Co., 1924

NETTELS, CURTIS PUTNAM :
Roots of American Civilization Crofts, 1938

NEVINS, ALLAN :
A Brief History of the United States
Oxford University Press, 1942

NEVINS, ALLAN :
Ordeal of the Union
Charles Scribner's Sons, 1947

NEVINS, ALLAN *and* COMMAGER, HENRY STEELE :
A Short History of the United States
Random House, 1943

SCHLESINGER, ARTHUR MEIER :
Political and Social Growth of the United States, 1852–1933 The Macmillan Co., 1939

WRIGHT, LOUIS B. :
The Atlantic Frontier Alfred A. Knopf, 1947

Encyclopedia Americana, 1948 edition
Americana Company New York and Chicago

The New International Year Book, 1946
Funk and Wagnalls Co. New York and London

चित्र इन की कृपा से मिले : वॉड्सवर्थ ऐथीन्यम; न्यूयार्क हिस्टौरिकल सोसाइटी; पेनसिलवेनिया ऐकेडमी ऑफ़ फ़ाइन आर्ट्स; केर्टलिनस लिथोग्राफ़िक मैन्युफ़ैक्चरिंग कम्पनी; येल यूनिवर्सिटी आर्ट गैलरी; न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी; डिपार्टमेण्ट ऑफ़ पब्लिक बिल्डिंग्स, बोस्टन, मैस्सैच्यूसैट्स; हिस्टौरिकल सोसाइटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया; इण्टरनैशनल हारवेस्टर एक्सपोर्ट कम्पनी; स्टेट हाउस, सैक्रामेण्टो, कैलिफ़ोर्निया; टेनेसी वैली ऑथोरिटी; डिपार्टमेण्ट ऑफ़ दि आर्मी; डिपार्टमेण्ट ऑफ़ दि नेवी; डिपार्टमेण्ट ऑफ़ दि ट्रैज़री।

यूनाइटेड स्टेट्स इनफ़ॉर्मेशन सर्विस द्वारा वितरित